CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३१२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



ईशावास्य उपनिषद्

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशी भाषामें बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर जिला फ़ैज़ाबाद ने पण्डित गङ्गादत्त जोशी और पण्डित रामदत्त जोशी की सहायता से अनुवाद किया—

तिसको

श्रीमान् परमधार्म्मिक शुभगुणनिधान मुन्शी प्रयाग नारायणजी ने सर्वलोकहितार्थ

पहिली बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के यन्त्रालय में मुद्रित किया

सन् १९०० ई०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केनोपनिषद् भाषा टीका सहित, क़ीमत =)

सामवेदीय तलबकार शाखीय भाषा टीका सरल मध्य देशी हिन्दी भाषामें है—जिसको पण्डित यमुनाशङ्कर ने राजशास्त्री मि. हिरचन्द की सहायता से अनुवाद किया इसमेंभी पदों के अन्वय पूर्वक भावार्थ स्पष्ट कियाहै और ऐसा टीका कियाहै कि अल्पज्ञ मनुष्यों के भी समझ में आजावे ॥

ईशावास्य उपनिषद् भाषा टीकासहित, क़ी० —)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित—जिसमें मन्त्रों के अर्थ समझने के लिये पदों के अन्वय किये गये और फिर पदार्थकी रीति पर समझाकर भावार्थ स्पष्ट किया गया ॥

प्रश्नोपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत ≈)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीका सहित—इस में भी सब ऊपर के लिखे हुये अलङ्कारहैं शिष्य के पूछे हुये अच्छे प्रश्नों का उत्तर गुरूने बताकर ब्रह्मरूप लखायाहै ॥

मांडूक्योपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत ॥=)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषा टीका सहित—जिसमें ॐकार स्वरूप का प्रतिपादन व ब्रह्म और आत्माकी अभेदताका निरूपण चार प्रकरणों में अच्छी तरह से किया है ॥

कठवल्लीउपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत ≈)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीका सहित—इसमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम् । यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः । षट्चक्रादिविचारसारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तंवन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् २ ॥

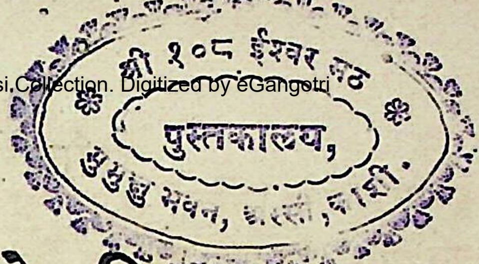
दो० करौं वन्दना ब्रह्मको । जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल । मिटै अन्ध तमकूप ॥
नाम रूप जासैं नहीं । नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं । रहितत्रिविधपरिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद । ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको । लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो । सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते । जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट । अकबर पुरहै गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू । जालिम सिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होनेके लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौकाहै जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्कालमें होंगे जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगई है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसटीका में पहिले मूलमन्त्र है फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है और दक्षिण हस्तकी ओर पदार्थसहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफका लिखा हुआ ऊपर से नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशिय भाषा में मिलेगा और यदि बायेंतरफ से दहिने तरफ को पढ़ाजावे तो हर एक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलैगा जहांतक होसकाहै प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागया है इस टीका के पढ़ने से संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पायाहै और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसी के शब्दोंहीं से सिद्ध कियागयाहै अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्रके अर्थ स्पष्ट करने के लिये रखागया है और उसपदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै ताकि पाठक जनोंको विदित होजावे कि यह पद मूलका नहीं है । इस टीकाको बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फैजाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मोड़ाख्य नगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धताहो उससे टीकाकर्ता को सूचनाकरैं ताकि अशुद्धता दूर होजावे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



अथ ईशावास्योपनिषद् ॥

हरिः ॐ यजुर्वेदीयवाजसनेयसंहितायाम्
ईशावास्योपनिषत् तत्र आरम्भशान्तिः

मूल ॥

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदायुः ॥ १ ॥

पदच्छेद

भद्रम् कर्णेभिः शृणुयामदेवाः भद्रम् पश्येम अक्षभिः यजत्राः स्थिरैः अङ्गैः तुष्टुवांसः तनूभिः व्यशेमहि देवहितम् यत् आयुः ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यजत्राः =	हे पूजनकरने वालों की रक्षाकरनेवाले	+ भवत् प्रसादात् =	तुम्हारी कृपासे
		कर्णेभिः =	कानोंद्वारा
		भद्रम् =	कल्याणको
देवाः =	देवताओ	शृणुयाम =	सुनैं हम

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ च = और
अक्षभिः = नेत्रोंद्वारा
भद्रम् = कल्याणको
पश्येम = देखैं हम
च = और
स्थिरैः = स्थिर याने दृढ़
अङ्गैः = अंगोंकरके
च = और
+ स्थिराभिः = स्थिर याने दृढ़
तनूभिः = शरीरोंकरके
+ युष्माकम् = आपकी
तुष्टुवांसः = सदा स्तुति करतेहुये
वयं = हम
आयुः = आयुको
यत् = जोकि
देवहितम् = देवतों का हितहै याने यज्ञ दान आदिसे देवतों का हित करनेवालाहै
व्यशेमहि = प्राप्तहोवैं
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः = हमारे तापत्रय की शान्तिहोवै अर्थात् आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविकरूप जो दुःखत्रय हैं उनका नाशहोवै

ॐहरिःॐ

मूल ॥

ईशावास्यमिदꣳसर्वं यत्किंचजगत्याञ्जगत् तेन त्यक्तेनभुञ्जीथा मागृधःकस्यस्विद्धनम् ॥ १ ॥

पदच्छेद

ईशा वास्यम् इदम् सर्वम् यत् किञ्च जगत्याम् ज-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गत् तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मागृधः कस्यस्वित् धनम् ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्किञ्च	जो कुछ
जगत्याम्	जगत् बिषे
जगत्	नामरूपात्मक जगत् है
+ तत्	सो
इदम्	यह
सर्वम्	सब
ईशा	ईश्वर करके
वास्यम्	आच्छादित है
तेन	तिससे
त्यक्तेन	त्यागकरके याने पृथक् होकर
+ स्वात्मानम्	अपने आत्माको
भुञ्जीथाः	रक्षाकरै
+ च	और
कस्यस्वित्	किसीके भी
धनम्	विषय भोगरूपधनकी
मागृधः	आकांक्षा न करै

यह प्रथम मंत्रका उपदेश उत्तम अधिकारी मुमुक्षु के लिये है॥

मूल॥

कुर्व्वन्नेवेहकर्म्माणि जिजीविषेच्छतछं समाः
एवन्त्वयिनान्यथेतोऽस्ति नकर्म्मलिप्यतेनरे॥ २॥

पदच्छेद

कुर्व्वन् एव इह कर्माणि जिजीविषेत् शतम् समाः एवम् त्वयि न अन्यथा इतः अस्ति न कर्म्म लिप्यते नरे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इह	= इससंसारमें	अन्यथा	= और कोई उपाय
कर्माणि	= निष्काम कर्मों को	न	= नहीं
एव	= अवश्यही	अस्ति	= है
कुर्वन्	= करते हुये	एवम्	= इस प्रकार करते हुये
शतम्	= सौ	त्वयि	= तुझ
समाः	= वर्ष	नरे	= मनुष्य विषे
जिजीविषेत्	= जीनेकी इच्छाकरै	कर्म	= कर्म्म
इतः	= इसके सिवाय	न	= नहीं
		लिप्यते	= लिपायमान होगा।

नोट–लिप्यते यह वर्तमान काल है परंतु अर्थ भविष्यत्काल काही देताहै और इस मन्त्र का उपदेश मध्यमाधिकारी मुमुक्षु के प्रति है ॥ २॥

मूल ॥

असुर्य्यानामतेलोका अन्धेनतमसावृताः
तांस्तेप्रेत्याभिगच्छन्ति येकेचात्महनोजनाः ॥३॥

पदच्छेद

असुर्य्याः नाम ते लोकाः अन्धेन तमसा आवृताः तान् ते प्रेत्य अभिगच्छन्ति ये के च आत्महनः जनाः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ये	जो	आत्महनः	आत्महत्यारे याने अपने आत्माकोनहीं उद्धार करनेवाले
लोकाः	लोक	जनाः	जनहैं
अन्धेन	अदर्शनात्मक	ते	वे
तमसा	अज्ञान से	तान्	उन लोकों को
आवृताः	आवृत हैं	प्रेत्य	मरकरके
ते	वे	अभिगच्छन्ति	प्राप्त होते हैं
असुर्य्याः	असुरों के योग्य		
नाम	प्रसिद्ध हैं		
च	और		
ये	जो		
के	कोई		

नोट—इस मंत्रका उपदेश सकामकर्मियों के निंदाके प्रति है॥

मूल॥

अनेजदेकम्मनसो जवीयोनैतद्देवा आप्नुवन्पूर्वमर्शत् तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपोमातरिश्वादधाति॥ ४॥

पदच्छेद

अनेजत् एकम् मनसः जवीयः न एतत् देवाः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप्नुवन् पूर्वम् अर्शत् तत् धावतः अन्यान् अत्येति तिष्ठत् तस्मिन् अपः मातरिश्वा दधाति ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एतत्	यह आत्मा
अनेजत्	अचलहै
तिष्ठत्	विकाररहितहै
एकम्	अद्वैतहै
मनसः	मनसे
जवीयः	आगे जानेवालाहै
पूर्वम्	पहलेसेही
अर्शत्	गयाहुवाहै
+ यत्	जिसको
देवाः	चक्षुरादि इन्द्रिय अभिमानीदेवताभी
न	नहीं
आप्नुवन्	प्राप्तहोते हैं
तत्	वही आत्मा
धावतः	शीघ्र चलते हुये
अन्यान्	औरोंको यानी मनआदिकों को
अत्येति	उल्लंघन करता है यानी पीछे छोड़ देता है
+ च	और
तस्मिन्	उसी चेतन आत्मा बिषे
मातरिश्वा	सूत्रात्मा प्राण वायु
अपः	अग्नि आदित्य आदि और सबप्राणियों के ज्वलन दहन आदि सब कर्मों को
दधाति	धारण करता है याने सबको अपने अपने कर्मों बिषे प्रेरणा करता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोट—आप्नुवन्भूतकालहै परंतु अर्थ वर्त्तमानकाल देताहै॥

मूल॥

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वदन्तिके तदन्तरस्यसर्वस्य तदु सर्वस्यास्यबाह्यतः॥ ५॥

पदच्छेद

तत् एजति तत् न एजति तत् दूरे तद्वत् अन्तिके तत् अन्तः अस्य सर्वस्य तत् उ सर्वस्य अस्य बाह्यतः॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्	सोई आत्मा
एजति	चलता है उपाधी करके
तत्	सोई आत्मा उपाधी विना
न	नहीं
एजति	चलता है
तत्	सोई आत्मा
दूरे	अविद्वानों से दूर है
तद्वत्	वैसेही
अन्तिके	विद्वानों के समीप है
च	और
तत्	सोई आत्मा
अस्य	इस
सर्वस्य	संपूर्ण जगत्के
अन्तः	अभ्यन्तर विषे स्थित है
उ	और
तत्	सोई आत्मा
अस्य	इस
सर्वस्य	सब जगत् के
बाह्यतः	बाहर है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूल ॥

यस्तुसर्वाणिभूतान्यात्मन्येवानुपश्यति सर्व
भूतेषुचात्मानं ततोनविचिकित्सति ॥ ६ ॥

पदच्छेद

यः तु सर्वाणि भूतानि आत्मनि एव अनुपश्यति
सर्वभूतेषु च आत्मानम् ततः न विचिकित्सति

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तु	= और	अनुपश्यति	= देखताहै
यः	= जोज्ञानी पुरुष	+सः	= वह
सर्वाणि	= सब	ततः	= इसप्रकारके दर्शन से
भूतानि	= भूतोंको	न	= नहीं
आत्मनि	= आत्मामें	विचिकित्सति	= सन्देह को प्राप्त होताहै याने संशय विपर्यय से रहित हुआ जीवन्मुक्त होताहै
एव	= निश्चयकरके		
अनुपश्यति	= देखताहै		
च	= और		
सर्वभूतेषु	= सम्पूर्णभूतों में		
आत्मानम्	= आत्माको		

मूल ॥

यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः
तत्रकोमोहः कःशोकएकत्वमनुपश्यतः ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेद ॥

यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मा एव अभूत् विजानतः तत्र कः मोहः कः शोकः एकत्वम् अनुपश्यतः ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यस्मिन्	= जिसकाल में	एकत्वम्	= एकत्व को याने अभेद
विजानतः	= ज्ञानवान् को	अनुपश्यतः	= देखनेवाले पुरुष को
सर्वाणि	= संपूर्ण	कः	= कहां
भूतानि	= भूत	मोहः	= मोह है
आत्मा	= आत्मा	च	= और
एव	= ही	कः	= कहां
अभूत्	= सिद्ध होताहै याने प्रतीत होताहै	शोकः	= शोकहै किन्तु मोह शोकरहित होता है ॥
तत्र	= तिस काल में		

नोट—अभूत् भूतकालहै परंतु अर्थ वर्त्तमान का देताहै ॥

मूल ॥

सपर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम् कविर्म्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ ८ ॥

T·

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेद ॥

सः पर्य्यगात् शुक्रम् अकायम् अव्रणम् अस्नाविरम् शुद्धम् अपापविद्धम् कविः मनीषी परिभूः स्वयम्भूः याथातथ्यतः अर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	वह पूर्वोक्त आत्मा
पर्य्यगात्	व्यापक है
शुक्रम्	प्रकाशक है
अकायम्	लिंगशरीर रहित है
अव्रणम्	छिद्ररहित है
अस्नाविरम्	नाड़ी रहित है
शुद्धम्	निर्मल है
अपापविद्धम्	पापरहित है
कविः	त्रिकाल दर्शी है
मनीषी	सर्वज्ञ है
परिभूः	सबके ऊपर है
स्वयम्भूः	स्वयं विद्यमान है
च	और
शाश्वतीभ्यः	अनंतकालस्थायी है
+ सः एव	वही
समाभ्यः	ब्रह्मा आदि प्रजापतियों के लिये
याथातथ्यतः	यथा उचित
अर्थान्	अग्निहोत्रादिकर्मों को
व्यदधात्	विधान करता भया ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूल ॥

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ॥
ततोभूयइवते तमोय ऽउसम्भूत्याछं रताः ॥ ९ ॥

पदच्छेद ॥

अन्धम् तमः प्रविशन्ति ये असम्भूतिम् उपासते
ततः भूयः इव ते तमः ये उ सम्भूत्याम् रताः ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ये	जोकोई
असम्भूतिम्	प्रकृतिको
उपासते	उपासना करते हैं
+ ते	वे
अन्धम्	अदर्शनात्मक
तमः	अज्ञान बिषे
प्रविशन्ति	प्रवेशकरते हैं याने गिरते हैं
उ	और
ये	जो कोई
सम्भूत्याम्	कार्यब्रह्म हिरण्यगर्भबिषे
रताः	रत्तहैं
ते	वे
ततः	उससे भी
भूयःइव	अधिकतर
तमः	अन्धकार याने अज्ञान बिषे
+ प्रविशन्ति	प्रवेश करतेहैं ॥

मूल ॥

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् इति
शुश्रुमधीराणांयेनस्तद्विचचाक्षिरे ॥ १० ॥

T·

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेद ॥

अन्यत् एव आहुः सम्भवात् अन्यत् आहुः असम्भवात् इति शुश्रुम धीराणाम् ये नः तत् विचचक्षिरे ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सम्भवात्	सम्भूति करके
अन्यत् एव	औरही
+फलम्	फल
आहुः	कहते हैं
च	और
असम्भवात्	असम्भूति करके
अन्यत्	औरही
+फलम्	फल
आहुः	कहते हैं
ये	जो कोई
नः	हमारेलिये
तत्	उस सम्भूति और असम्भूति के फलको
विचचक्षिरे	कहतेभये
+तेषाम्	तिन
धीराणाम्	धीरपुरुषों के
+वचनम्	वचनको
इति	इसप्रकार
शुश्रुम	हमलोगों ने श्रवण किया है ॥

मूल ॥

सम्भूतिञ्चविनाशञ्चयस्तद्वेदोभयꣳसहविनाशेन मृत्युन्तीर्त्वासम्भूत्यामृतमश्नुते ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेद ॥

संभूतिम् च विनाशम् च यः तत् वेद उभयम् सह विनाशेन मृत्युम् तीर्त्वा सम्भूत्या अमृतम् अश्नुते ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	जो कोई	सः	वह
तत्	उस	विनाशेन	असंभूति-द्वारा
उभयम्	दोनों	मृत्युम्	मृत्यु को
सम्भूतिम्	सम्भूति	तीर्त्वा	तर करके
च	और	असंभूत्या	सम्भूतिद्वारा
विनाशम्	असम्भूतिको	अमृतम्	अमरभावको
सह	एकही	अश्नुते	प्राप्त होताहै ॥
वेद	जानता है		

नोट—असंभूति प्रकृति को कहते हैं उसका उपासक प्रकृतिबिषे लय होता है इसलिये वह जन्म मरण भावसे अमर समझा गया है = सम्भूति हिरण्यगर्भ को कहते हैं उसका उपासक अणिमा आदि सिद्धियोंको प्राप्त होताहै इसलिये वह भी मरणभावसे रहित समझागयाहै ॥ ११ ॥

मूल ॥

अन्धन्तमः प्रविशन्तियेऽविद्यामुपासते ततो भूयइवतेतमोयऽउविद्यायाꣳरताः ॥ १२ ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेद ॥

अन्धम् तमः प्रविशन्ति ये अविद्याम् उपासते
ततः भूयः इव ते तमः ये उ विद्यायाम् रताः ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ये	जो कोई विवेकी पुरुष
अविद्याम्	अविद्या के आश्रय अग्नि होत्रादि सकाम कर्मों को
उपासते	स्वर्गादि फल के निमित्त उपासना करते हैं
+ ते	वे
अन्धम्	अदर्शनात्मक
तमः	अज्ञानावृत शरीर में
प्रविशन्ति	प्रवेशकरते हैं
उ	और
ये	जो कोई
विद्यायाम्	सकामकर्म त्यागकरके केवल देवतों के भेद भाव उपासना विषे
रताः	तत्परहैं
ते	वे
ततः	उस अंधतम से भी
भूयः इव	अत्यंत
तमः	अन्धकारको
प्रविशन्ति	प्राप्तहोतेहैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूल ॥

अन्यदेवाहुर्विद्याया अन्यदाहुरविद्याया इति शुश्रुमधीराणांयेनस्तद्विचचक्षिरे ॥ १३ ॥

पदच्छेद ॥

अन्यत् एव आहुः विद्यायाः अन्यत् आहुः अवि-द्यायाः इति शुश्रुम धीराणाम् ये नः तत् विचचक्षिरे ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
विद्यायाः	= विद्याका
अन्यत्एव	= औरही
+ फलम्	= फल
आहुः	= कहते हैं
अविद्यायाः	= अविद्याका
अन्यत्एव	= औरही
+ फलम्	= फल
आहुः	= कहते हैं
इति	= ऐसा
तेषाम्	= उन

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
धीराणाम्	= बुद्धिमान्पुरुषों के
+ वचनम्	= वचनको
शुश्रुम	= हमने सुनाहै
ये	= जिन्होंने
नः	= हमारेलिये
तत्	= उसको याने कर्म्म और ज्ञानको
विचचक्षिरे	= उपदेश कियाहै

मूल ॥

विद्याञ्चविद्याञ्चयस्तद्वेदोभयꣳसह अविद्यया मृत्युन्तीर्त्वाविद्ययामृतमश्नुते ॥ १४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेद ॥

विद्याम् च अविद्याम् च यः तत् वेद उभयम् सह अविद्यया मृत्युम् तीर्त्वा विद्यया अमृतम् अश्नुते ॥

अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वय	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	= और	वेद	= जानताहै
यः	= जोकोई	+ सः	= वह पुरुष
विद्याम्	= विद्या याने देवताओंकी अभेद उपासना	अविद्यया	= अविद्याद्वारा याने कर्म्मों द्वारा
च	= और	मृत्युम्	= मृत्यु को
अविद्याम्	= अविद्या याने अग्निहोत्रादि निष्कामकर्म	तीर्त्वा	= तरकरके
तत्	= उन	विद्यया	= विद्याद्वारा याने अहंग्रह उपासनाद्वारा
उभयम्	= दोनोंको	अमृतम्	= अमरभावको
सह	= एकहीपुरुष करके अनुष्ठानकरने योग्य	अश्नुते	= प्राप्त होताहै॥

मूल ॥

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् तत् त्वम्पूषन्नपावृणु सत्यधर्म्माय दृष्टये ॥ १५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य अपिहितम् मुखम्
तत् त्वम् पूषन् अपावृणु सत्यधर्म्माय दृष्टये ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पूषन	हेपोषणकर्त्ता सूर्य	पात्रेण	पात्रकरके
सत्यस्य	सत्य परमात्माके	अपिहितम्	आच्छादित है
तत्	उस	त्वम्	तू
मुखम्	द्वारको	सत्यधर्माय	मुझसत्य धर्म्मा के
× यत्	जो	दृष्टये	दर्शनकेअर्थ
हिरण्मयेन	तेजोमय	अपावृणु	खोलदे

मूलम् ॥

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह । तेजो यत्ते रूपङ्कल्याण तमन्तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि १६ ॥

पदच्छेदः

पूषन् एकर्षे यम सूर्य्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह तेजः यत् ते रूपम् कल्याणतमम् तत् ते पश्यामि यः असौ पुरुषः सः अहम् अस्मि ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पूषन्	हेपोषण कर्त्ता	एकर्षे	हेएकचलनेवाला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यम = हे सर्वकेसंयम न कर्त्ता
सूर्य = हे सर्व्वरसके स्वीकार कर्त्ता सूर्य
प्राजापत्य = हे प्रजापति के पुत्र
+ स्वान् = अपने
रश्मीन् = किरणों को
व्यूह = अलगकर
च = और
तेजः = तेजको
समूह = एकत्रकर
तु = ता कि
यत् = जो
ते = तुम्हारा

कल्याण तमम् = { कल्याण तम
रूपम् = रूपहै
तत् = तिसको
ते = तुम्हारे
×प्रसादेन = प्रसाद से
पश्यामि = देखूं मैं
यःअसौ = जो यह
× त्वयि = तेरेबिषे
परिपूर्णः = परिपूर्ण
पुरुषः = पुरुष है
सः = सोई
असौ = यह
अहम् = मैं
अस्मि = हूं

नोट—सूर्य्य भगवान् का उपासक सूर्य्य भगवान् की प्रार्थना मरते समय ऊपर कहेहुये प्रकार करताहै ॥

मूलम् ॥

वायुर निल ममृत मथेदं भस्मात छं शरीरम् । ॐ क्रतो स्मर कृत छं स्मर क्रतो स्मर कृत छं स्मर ॥ १७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

वायुः अनिलम् अमृतम् अथ इदम् भस्मान्तम् शरीरम् ओम् क्रतो स्मर कृतम् स्मर क्रतो स्मर कृतम् स्मर ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	= इसकालमें
वायुः	= प्राण वायु
अनिलम्	= सूत्रआत्माको
+ च	= और
अमृतम्	= लिंगशरीर
+स्वकारणम्	= अपनेकारण तत्वको
+प्राप्येत	= प्राप्तहो
च	= और
इदम्	= यह
शरीरम्	= स्थूलशरीर
भस्मान्तम्	= अन्त भस्म भावको

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+भूयात्	= प्राप्तहो
+ च	= और
क्रतो	= हेमन
ओम्	= ॐकारको
स्मर	= स्मरण कर
× च	= और
कृतम्	= कियेहुये कर्म्मोंको
स्मर	= स्मरण कर
क्रतो	= हेमन
कृतम्	= कियेहुये कर्म्मोंको
स्मर	= स्मरण कर
स्मर	= स्मरण कर

नोट–सूत्रात्मा प्राणका उपासक मरते समय ऊपर कहेहुये प्रकार ॐकार को स्मरण करताहै ॥

मूलम् ॥

अग्ने नय सुपथा ण्ये अस्मान् विश्वानि देव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वयु नानि विद्वान् युयोध्यस्मज्जुहु राण मेनो भूयि ष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥ १८ ॥

पदच्छेदः

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् युयोधि अस्मत् जुहुराणम् एनः भूयिष्ठाम् ते नमउक्तिम् विधेम ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
देव =	हे प्रकाशात्मक देव	अस्मत् =	हमारे
अग्ने =	हे अग्नि	जुहुराणम् =	कुटिल वचनात्मक
विश्वानि =	सर्व	एनः =	पापको
वयुनानि =	कर्म्मोंको	युयोधि =	नाशकर
विद्वान् =	जाननेवाला तू	ते =	तेरे अर्थ
अस्मान् =	हम कर्म कर्त्ताओं को	भूयिष्ठाम् =	बहुत से
राये =	कर्मफलके अर्थ	नमउक्तिम् =	नमस्कार के वचन
सुपथा =	शुभमार्ग से	विधेम =	कहते हैं हम
नय =	लेचल		
+ च =	और		

नोट—अग्नि देवताका उपासक मरण कालमें अपने मनमें अग्नि देवताकी प्रार्थना करताहै ॥ १८ ॥

इति वाजसनेय संहितायाम् ईशावास्योपनिषत् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ईशावास्योपनिषद्

शुद्धिपत्रिका

अशुद्धिः	शुद्धिः	मन्त्र	पृष्ठ	
यत्किंच	यत्किञ्च	१	२	
एवन्त्व	एवंत्वयि	२	३	
विचिकित्सति	विजुगुप्सते	६	८	पाठान्तर
भस्मात थं]	भस्मान्त थं	१७	१८	
णये	राये	१८	१९	
हुणए	हुराण	१८	२०	

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी ऊपर लिखे हुये के अनुसार भावार्थ स्पष्ट कियागया और समझने की सुगमताके लिये गुरु शिष्य सम्बाद पूर्वक पूर्ण ज्ञान लखाया है ॥

मुंडकउपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत ≈)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित–जिसमें वादी प्रतिवादी के प्रश्नोत्तर से ब्रह्मका निर्णय व जगदुत्पत्ति व प्रत्येक अन्नादि का संभव व अग्निहोत्रादि क्रियाओंका बिधान मन्त्रों द्वारा बर्णित है ॥

तैत्तिरीयोपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत।–)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीकासहित–जिसमें तैत्तिरीय शाखा के प्रकट होनेका उदाहरण और स्वरमात्रा व वर्णों के उच्चारणकी शिक्षाका नियम व वर्णों के संबन्धरूप संहिताकी उपासना व बुद्धि व लक्ष्मीकी कामनावाले पुरुषोंके अर्थ साधन जप और हवनादि की क्रियायें बर्णित हैं ॥

ऐतरेयोपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत ≈)॥।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित–जिसमें आत्मा व ब्रह्मका निरूपण और प्राण व प्रणवकी उपासना की व्याख्या व संन्यासादि आश्रमों के लक्षण व धर्म अच्छे प्रकार बर्णित हैं ॥

उपनिषद्सार, क़ीमत –)॥ पु०

मुंडक, मांडूक्य, तैत्तरीय, ऐतरेय, श्वेताश्वर, ईशावास्य, केन, कठ, प्रश्न, छांदोग्य, बृहदारण्यक, कौषीतकि, ब्राह्मण और मैत्री की भाषा टीका राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्दने रचनाकर अपने पुत्र पौत्र मित्र बान्धव योग्य अधिकारियों के निमित्त छपवायाहै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केनोपनिषद् भाषा टीका सहित, क़ीमत =)

सामवेदीय तलबकार शाखीय भाषा टीका सरल मध्य देशी हिन्दी भाषामें है—जिसको पण्डित यमुनाशङ्कर ने राजशास्त्री मि- हिरचन्द की सहायता से अनुबाद किया इसमेंभी पदों के अन्वय पूर्वक भावार्थ स्पष्ट कियाहै और ऐसा टीका कियाहै कि अल्पज्ञ मनुष्यों के भी समझ में आजावे ॥

ईशावास्य उपनिषद् भाषा टीकासहित,क़ी० –)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित—जिस- में मन्त्रों के अर्थ समझने के लिये पदों के अन्वय किये गये औ फिर पदार्थकी रीति पर समझाकर भावार्थ स्पष्ट किया गया ॥

प्रश्नोपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत =)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीका सहित—इस में भी सब ऊपर के लिखे हुये अलङ्कारहैं शिष्य के पूछे हुये अच्छे प्रश्नों का उत्तर गुरूने बताकर ब्रह्मरूप लखायाहै ॥

मांडूक्योपनिषद्भाषाटीका सहित,क़ीमत ॥=)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषा टीका सहित- जिसमें ॐकार स्वरूप का प्रतिपादन व ब्रह्म और आत्माकी अ- भेदताका निरूपण चार प्रकरणों में अच्छी तरह से किया है ॥

कठवल्लीउपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत =)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीका सहित—इसमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम् । यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः । षट्चक्रादिविचार-सारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तंवन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् २ ॥

दो० करौं वन्दना ब्रह्मको । जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल । मिटै अन्ध तमकूप ॥
नाम रूप जामें नहीं । नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं । रहितत्रिविधपरिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद । ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको । लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो । सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते । जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट । अकबर पुरहै गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू । जालिम सिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होनेके लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौकाहै जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्कालमें होंगे जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगई है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसटीका में पहिले मूलमन्त्र है फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है और दक्षिण हस्तकी ओर पदार्थसहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफका लिखा हुआ ऊपर से नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशिय भाषा में मिलेगा और यदि बायेंतरफ से दहिने तरफ को पढ़ाजावे तो हर एक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलैगा जहांतक होसकाहै प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागया है इस टीका के पढ़ने से संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पायाहै और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसी के शब्दोंहीं से सिद्ध कियागयाहै अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्रके अर्थ स्पष्ट करने के लिये रक्खागया है और उसपदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै ताकि पाठक जनोंको विदित होजावै कि यह पद मूलका नहीं है । इस टीकाको बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फैजाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मोड़ाख्य नगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धताहो उससे टीकाकर्ता को सूचनाकरैं ताकि अशुद्धता दूर होजावै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामवेदब्राह्मणभागे ॥

अथ केनोपनिषद् ॥

मूलम् ॥

ॐ केनेषितंपततिप्रेषितंमनःकेनप्राणःप्रथमःप्रैतियुक्तःकेनेषितांवाचमिमांवदन्तिचक्षुःश्रोत्रंकउदेवोयुनक्ति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

केन इषितम् पतति प्रेषितम् मनः केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः केन इषिताम् वाचम् इमाम् वदन्ति चक्षुः श्रोत्रम् कः उ देवः युनक्ति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
केन	= किस करके	+च	= और
इषितम्	= इच्छाकियागया	केन	= किस करके
+च	= और	युक्तः	= प्रेरा हुआ
केन	= किस करके	प्राणः	= प्राण
प्रेषितम्	= प्रेरा हुआ	यः	= जो
मनः	= मन	+सृष्टि कार्ये	= सृष्टि कार्यविषे
पतति	= गिरताहैयानेविषयों के सन्मुख दौड़ता है	प्रथमः	= प्रथम है
		कर्मसु	= कर्मों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रैति = प्रवृत्त होताहै	उ = और
च = और	चक्षुः = नेत्र को
केन = किसकरके	+ च = और
इमाम् = इस	श्रोत्रम् = श्रोत्र को
इषिताम् = प्रेरित	कः = कौन
वाचम् = वाणी को	देवः = देवता
+ जनाः = मनुष्य	युनक्ति = { विषयोंके अभिमुख प्रेरणा करता है
वदन्ति = उच्चारण करते हैं	

नोट—ब्रह्मजिज्ञासुवों के उद्धारार्थ श्रीमान् परमात्मा इस केनउपनिषद् विषे गुरु शिष्य के संवादद्वारा ब्रह्मविद्याका उपदेश करता है ॥

और इसी उपनिषद् के प्रथममन्त्र विषे शिष्य जिज्ञासुका गुरु के प्रति प्रश्नहै और द्वितीय मन्त्र से लेकर प्रथम खण्डकी समाप्ति पर्यंत उत्तर है ॥

मूलम् ॥

श्रोत्रस्यश्रोत्रं मनसोमनोयद्वाचोहवाचं सउ प्राणस्यप्राणश्चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्यधीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृताभवन्ति ॥ २ ॥

पदच्छेदः

श्रोत्रस्य श्रोत्रम् मनसः मनः यत् वाचः ह वाचम् सः उ प्राणस्य प्राणः चक्षुषः चक्षुः अतिमुच्य धीराः प्रेत्य अस्मात् लोकात् अमृताः भवन्ति

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	जो
श्रोत्रस्य	श्रोत्रका
श्रोत्रम्	श्रोत्रहै
+ यत्	जो
मनसः	मनका
मनः	मन है
उ	और
+ यत्	जो
वाचः	वाकका
ह	भी
वाचम्	वाक है
सः	सोई
प्राणस्य	प्राणका
प्राणः	प्राण है
सः	सोई
चक्षुषः	चक्षुका
चक्षुः	चक्षु है
+तमात्मानंज्ञात्वा	उस अपने आत्मा को जानकर
+ अनात्मभावम्	देह इन्द्रियआदिविषे आत्मभावको
अतिमुच्य	भली प्रकार त्याग के
धीराः	विवेकी पुरुष
अस्मात्	इस
लोकात्	लोकसे
प्रेत्य	छूटकरयाने देहत्यागकर
अमृताः	अमरभाव को
भवन्ति	प्राप्तहोते हैं

मूलम्॥

नतत्रचक्षुर्गच्छतिनवाग्गच्छति नोमनोनविद्मोनविजानीमो यथैतदनुशिष्यादन्यदेवतद्विदितादथोऽविदितादधि इतिशुश्रुमपूर्वेषांयेनस्तद्व्याचचक्षिरे ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

न तत्र चक्षुः गच्छति न वाक् गच्छति नो मनः न विद्मः न विजानीमः यथा एतत् अनुशिष्यात् अन्यत् एव तत् विदितात् अथो अविदितात् अधि इति शुश्रुम पूर्वेषाम् ये नः तत् व्याचचक्षिरे ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्र	तिसब्रह्मविषे
चक्षुः	चक्षु
न	नहीं
गच्छति	प्रवेशकरसक्ता है
+ तत्र	तिसविषे
वाक्	बाणी
न	नहीं
गच्छति	प्रवेशकरसक्तीहै
मनः	मन
न	नहीं
गच्छति	प्रवेशकरसक्ताहै
यथा	जिसप्रकार
एतत्	इसब्रह्मको

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अनुशिष्यात्	उपदेशकरैं
+ तत्	उसको
न	नहीं
विद्मः	जानतेहैंहम
+ च	और
न	नहीं
विजानीमः	जानतेहैंहम सम्यक्प्रकार
इति	ऐसा
पूर्वेषां	पूर्व
+ आचार्याणां	आचार्य्योंके
वचनम्	वचनको
शुश्रुम	हमनेसुनाहै
ये	जिनोने

GC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् = उसब्रह्मको	अन्यत् = पृथक्है
नः = हमारेलिये	अथो = और
व्याचचक्षिरे = कहाहै कि	अविदितात् = अविदितसे
तत् = वहब्रह्म	एव = भी
विदितात् = विदितसे	अधि = पृथक्है

मूलम् ॥

यद्वाचानभ्युदितं येनवागभ्युद्यते तदेवब्रह्मत्वं विद्धि नेदंयदिदमुपासते ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

यत् वाचा अनभ्युदितम् येन वाक् अभ्युद्यते तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत् = जो	एव = ही
वाचा = बाणी कर के	त्वम् = तू
अनभ्युदितम् = प्रकाशित नहीं है	ब्रह्म = ब्रह्म
च = और	विद्धि = जान
येन = जिस करके	इदम् = यह
वाक् = बाणी	ब्रह्म = ब्रह्म
अभ्युद्यते = प्रकाशित होती है	न = नहीं है
तत् = तिसको	यत् = जिसको
	इदम् = ये लोक
	उपासते = उपासनाकरतेहैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनोमतं तदेवब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

यत् मनसा न मनुते येन आहुः मनः मतम् तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	जो
मनसा	मनकरके
न	नहीं
मनुते	मननहोता है
च	और
येन	जिस करके
मनः	मन
मतम्	विषयकिया हुआअर्थात् अपने कार्य करने में सामर्थ होता है उसीको
आहुः	ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म कहते हैं
तत्	तिसको
एव	ही
त्वम्	तू
ब्रह्म	ब्रह्म
विद्धि	जान
इदम्	यहब्रह्म
न	नहीं है
यत्	जिसको
इदम्	ये लोक
उपासते	उपासनाकरते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

यच्चक्षुषानपश्यति येनचक्षूंषि पश्यति तदेवब्रह्म त्वं विद्धि नेदंयदिदमुपासते ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

यत् चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	जिसको	त्वम्	तू
चक्षुषा	चक्षुकरके	ब्रह्म	ब्रह्म
न	नहीं	विद्धि	जान
पश्यति	देखता है	इदम्	यहब्रह्म
+ च	और	न	नहीं है
येन	जिसकरके	यत्	जिसको
चक्षूंषि	चक्षुवों को	इदम्	ये लोक
पश्यति	देखता है	उपासते	उपासना करते हैं
तत्	उसी को		
एव	निश्चयकरके		

मूलम् ॥

यच्छ्रोत्रेणनशृणोति येनश्रोत्रमिदंश्रुतम्तदेव ब्रह्मत्वंविद्धिनेदंयदिदमुपासते ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यत् श्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्रम् इदम् श्रुतम् तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
यत्	जिसको	तत्	उसी को
श्रोत्रेण	श्रोत्र करके	एव	ही
न	नहीं	त्वम्	तू
शृणोति	श्रवण करताहै	ब्रह्म	ब्रह्म
+च	और	विद्धि	जान
येन	जिस करके	इदम्	यह
इदम्	यह	+ब्रह्म	ब्रह्म
श्रोत्रम्	श्रोत्रइन्द्रिय	न	नहीं है
श्रुतम्	सुनागया है याने सुननेको समर्थ होताहै	यत्	जिस्को
		इदम्	ये लोक
		उपासते	उपासना करते हैं

मूलम् ॥

यत्प्राणेननप्राणिति येनप्राणःप्रणीयतेतदेव ब्रह्मत्वंविद्धिनेदंयदिदमुपासते ॥ ८॥

पदच्छेदः

यत् प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	= जो
प्राणेन	= प्राणापानादि पंचवृत्ति रूप प्राण करके
न	= नहीं
प्राणिति	= ग्रहण किया जाता है
+च	= और
येन	= जिस करके
प्राणः	= पंचवृत्तिरूप प्राण
प्रणीयते	= ग्रहण किया जाता है
तत्	= उसी को
एव	= निश्चयकरके
त्वम्	= तू
ब्रह्म	= ब्रह्मव्यापक चेतन
विद्धि	= जान
इदम्	= यह दृष्टिगोचर
न	= ब्रह्म नहीं है
यत्	= जिसको
इदम्	= ये लोक
उपासते	= उपासना करते हैं

इति प्रथमः खण्डः ॥

मूलम् ॥

यदिमन्यसेसुवेदेतिदभ्रमेवापिनूनं त्वंवेत्थब्रह्मणोरूपंयदस्यत्वं यदस्यदेवेष्वथनुमीमांस्यमेव तेमन्येविदितम् ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यदि मन्यसे सुवेद इति दभ्रम् एव अपि नूनम् त्वम् वेत्थ ब्रह्मणः रूपम् यत् अस्य त्वम् यत् अस्य देवेषु अथ नु मीमांस्यम् एव ते मन्ये विदितम्

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+गुरुःशिष्यंप्रतिवदति	गुरुशिष्यके प्रति कहताहै कि
यदि	अगर
इति	ऐसा
मन्यसे	मानता है तू कि
ब्रह्म	ब्रह्मको
सुवेद	भली प्रकार जानताहूं मैं
तू	तो
दभ्रम् एव	अल्प
अपि	ही
नूनम्	निश्चयकरके
त्वम्	तू
ब्रह्मणः	ब्रह्मके
रूपम्	रूपको
वेत्थ	जानताहै
+च	और
+यदि	अगर
यत्	जो
अस्य	इसब्रह्मके
रूपम्	रूपको
त्वम्	तू
+अध्यात्मोपाधिषु	अध्यात्म उपाधियों बिषे याने देहइन्द्रिय अंतःकरण विशिष्ट जीवक्षेत्रज्ञ आत्मा बिषे
वेत्थ	जानता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च = और
यत् = जो
अस्य = इस ब्रह्मके
रूपम् = रूपको
देवेषु = ब्रह्माविष्णु शिवआदि देवता उपाधिपरिच्छिन्न शरीरों बिषे
+वेत्थ = जानता है
अथनु = तौभी
ते = तुझको
मीमांस्यमएव = विचारकरने के योग्य है क्योंकि अल्पही तू जानता है फिर भी विचारकरना चाहिये इसकेश्रवण पश्चात् शिष्य विचार करके फिर गुरु समीपआकर अपने अनुभवको कहता है कि
अहम् = मैं
+अद्य = अब
ब्रह्म = ब्रह्मको
विदितम् = जानाहुआ
इति = ऐसा
मन्ये = मानताहूं

मूलम् ॥

नाहंमन्येसुवेदेति नोनवेदेतिवेदच योनस्तद्वेदतद्वेद नोनवेदेतिवेदच ॥ २॥

पदच्छेदः

न अहम् मन्ये सुवेद इति नो न वेद इति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेद च यः नः तत् वेद तत् वेद नो न वेद इति वेद च

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
परन्तु	परंतु
अहम्	मैं
सुवेद	भलीप्रकार ब्रह्मकोजानताहूं
इति	ऐसा
न	नहीं
मन्ये	मानताहूं
+ च	और
ब्रह्म	ब्रह्मको
न	नहीं
वेद	जानताहूं
इति	ऐसाभी
न	नहीं
वेद	समुझताहूं

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	जो
नः	हममेंसे
तत्	उसब्रह्मको
वेद	विचार करकेजानताहै
तत्	वही
वेद	जानताहै
न	नहीं
वेद	जानताहै
इति	ऐसा
नो	नहीं
च	और
वेद	जानताहै
इति	ऐसाभी
नो	नहीं

नोट—तत्सार यहहै कि अगर शिष्य समझताहो कि मैं ब्रह्मको जानताहूं तो ठीक नहीं क्योंकि ज्ञाता चैतन्य होताहै तो चैतन्य आप बना और ब्रह्मको जड़ बनाया सो श्रुतिस्मृति विरुद्धहै और अगर ऐसा कहै कि मैं ब्रह्मको नहीं जानताहूं तोभी ठीकनहीं क्योंकि जब वह ब्रह्मको जान सकै तब कहसक्ताहै कि मैं ब्रह्मको नहीं

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानसक्काहूं जो अपना रूपहै उसबिषे जानना और न जानना दोनों नहीं होसक्केहैं- ॥ २ ॥

मूलम् ॥

यस्यामतंतस्यमतंमतंयस्यनवेदसः अविज्ञातं विजानतांविज्ञातमविजानताम् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

यस्य अमतम् तस्य मतम् मतम् यस्य न वेद सः अविज्ञातम् विजानताम् विज्ञातम् अविजानताम् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यस्य	जिसको
+ ब्रह्म	ब्रह्म
अमतम्	अज्ञात है
तस्य	उसीको
+ तत्	वह
मतम्	ज्ञात है
च	और
यस्य	जिसको
मतम्	ज्ञात है
सः	वह पुरुष
+कथयति	कहताहै कि
+ अहम्	मैं
न	नहीं
वेद	जानताहूं

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
	क्योंकिब्रह्मज्ञानका विषय नहीं है
+अतःएव	इसी लिये
विजानताम्	जाननेवाले को
+ ब्रह्म	ब्रह्म
अविज्ञातम्	अविज्ञातहै
+ च	और
अविजानताम्	नहींजाननेवालेको
+ ब्रह्म	ब्रह्म
विज्ञातम्	विज्ञात है

T .

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

प्रतिबोधविदितंमतममृतत्वंहिविन्दते आत्मनोविन्दतेवीर्यंविद्ययाविन्दतेऽमृतम् ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

प्रतिबोधविदितम् मतम् अमृतत्वम् हि विन्दते आत्मना विन्दते वीर्यम् विद्यया विन्दते अमृतम्

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ तत्	वह ब्रह्म
प्रतिबोध विदितम्	अंतःकरण कीअहंवृत्ति सेप्रकाशित है
इति	ऐसी
मतम्	ज्ञानी पुरुष की संमति है
+अतः एव	इस लिये
+आत्मदर्शी	ज्ञानीपुरुष
अमृतत्वम्	मोक्षको
हि	निश्चय करके
विन्दते	प्राप्तहोताहै
+च	और
आत्मना	ब्रह्म
विद्यया	विद्याकरके
वीर्यम्	सामर्थ्यको
विन्दते	प्राप्तहोताहै
+ च	और
अमृतम्	अमरभाव को
विन्दते	प्राप्तहोताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

इहचेदवेदीदथसत्यमस्तिनचेदिहावेदीन्महती विनष्टिःभूतेषुभूतेषुविचिन्त्यधीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृताभवन्ति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

इह चेत् अवेदीत् अथ सत्यम् अस्ति न चेत् इह अवेदीत् महती विनष्टिः भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः प्रेत्य अस्मात् लोकात् अमृताः भवन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
चेत्	अगर
इह	इसी जन्ममें
+ब्रह्म	ब्रह्मको
अवेदीत्	जानताभया
अथ	तो
सत्यमस्ति	सफल है
+च	और
चेत्	यदि
इह	इसीजन्म में
न	नहीं
अवेदीत्	जानताभया
तू	तो

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
महती	महान्
विनष्टिः	विनाश को प्राप्त होताहै यानेवारंवार जन्मता मरता रहता है
भूतेषुभूतेषु	सबभूतों में
आत्मानम्	अपनेप्रत्यक् आत्मा को
विचिन्त्य	स्थितजान कर
धीराः	धीरपुरुष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्मात् = इस			होते हैं याने
लोकात् = लोकसे		भवन्ति =	जन्म मरण
प्रेत्य = देह त्यागकर			भावसेरहित
अमृताः = अमर			होजाते हैं

इतिद्वितीयःखण्डः ॥

एक समय अग्नि वायु और इन्द्र देवता असुरों को पराजय करके किसी एक पहाड़ पर बैठकर परस्पर सहित अभिमान गप मारतेथे और कहतेथे कि हम लोग कैसे लड़े और शत्रुओं को मारा और भगादिया इस अहंकार को परमात्मा सह न सका और देवताओं का अभिमान दूरकरने के अर्थ और उनके कल्याण के लिये यक्षका रूप धारण कर जहां वे सब बैठेथे समीप आकर दिखलाई दिया जब उन देवताओंने यक्षके अद्भुत रूपको देखा तो आश्चर्य्य को प्राप्तहो परस्पर विचारनेलगे कि कौन यह अलौकिक पूजनीयहै उसके पासजाकर देखना चाहिये तब उन तीनों देवताओं में से प्रथम अग्निदेवता गया फिर वायु देवता गया और हार मानकर दोनों लौट आये सबके पीछे इन्द्र देवता गया और जब उसका अभिमान दूर हुआ तब परमात्मा यक्ष के रूपको तिरोभाव करके उमानामक ब्रह्मविद्या के रूपको धारण कर उस इन्द्र को दर्शन दिया और फिर सबको उपदेश किया कि तुम सबों में स्वशक्ति कुछ भी नहींहै मेरीशक्ति लेकर सब शक्तिमान् हो रहेहो तुम लोग वृथा अहंकार करतेथे और असुरों को तुमने अपनी शक्ति करके नहीं जीता जब मैंने अपनी शक्ति तुमलोगों में प्रवेश किया तब तुम जीतको प्राप्त हुये उसी तरह जब मैं तुमलोगों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में से अपनी शक्ति को खींच लेता हूं और असुरों को देताहूं तब तुमलोग हारमानकर भागतेहो और असुर जीत जातेहैं यह आख्यायि अगले मंत्रों से जाहिर होताहै ॥

मूलम् ॥

ब्रह्महदेवेभ्योविजिग्येतस्यहब्रह्मणो विजयेदेवाअमहीयन्ततऐक्षन्तास्माकमेवायं विजयोऽस्माकमेवायंमहिमेति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

ब्रह्म ह देवेभ्यः विजिग्ये तस्य ह ब्रह्मणः विजये देवाः अमहीयन्त ते ऐक्षन्त अस्माकम् एव अयम् विजयः अस्माकम् एव अयम् महिमा इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ब्रह्म	ब्रह्म
ह	ही
देवेभ्यः	देवतोंके लिये
विजिग्ये	विजयको प्राप्तकरताभया
तस्य	तिस
ह	ही
ब्रह्मणः	ब्रह्मके
विजये	विजयमें
देवाः	देवतालोक
अमहीयन्त	महिमा को प्राप्तहोते भये
च	और
ते	सोई देवता
ऐक्षन्त	जानतेभये कि
अस्माकम्	हमारा ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एव = निश्चय कर के
अयम् = यह
विजयः = विजयहै
च = और

अस्माकम् = हमाराही
एव = निश्चयकरके
अयम् = यह
महिमा = महिमाहै

मूलम् ॥

तद्धैषांविजज्ञौ तेभ्योहप्रादुर्बभूवतन्नव्यजानन्त किमिदंयक्षमिति ॥ २ ॥

पदच्छेदः

तत् ह एषाम् विजज्ञौ तेभ्यः ह प्रादुर्बभूव तत् न व्यजानन्त किम् इदम् यक्षम् इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्	वह ब्रह्म
ह	निश्चय करके
एषाम्	इन देवताओंको
विजज्ञौ	अभिमानी जानता भया
च	और
तेभ्यः	तिन देवताओं के अभिमान दूरकरनेकेअर्थ
ह	निःसन्देह

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
प्रादुर्बभूव	प्रगट होताभया
तत्	तिस ब्रह्मको
+ ते	वह देवता
न	नहीं
व्यजानन्त	जानतेभये कि
किम्	कौन
इति	ऐसा
इदम्	यह
यक्षम्	पूजनीय है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

तेऽग्निमब्रुवन् जातवेद एतद्विजानीहिकिमे तद्यक्षमिति तथेति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

ते अग्निम् अब्रुवन् जातवेदः एतत् विजानीहि किम् एतत् यक्षम् इति तथा इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ते	वे देवता
अग्निम्	अग्नि से
अब्रुवन्	कहते भये कि
जातवेदः	हे अग्नि
एतत्	इसको
विजानीहि	जानतूकि
किम्	कौन
इति	ऐसा
एतत्	यह
यक्षम्	यक्षहैयाने पूज्य है
तथाइति	बहुतअच्छा ऐसाउत्तरअग्निदेवताने दिया

मूलम् ॥

तदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीति अग्निर्वाअहमस्मीत्यब्रवीज्जातवेदावाअहमस्मीति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

तत् अभ्यद्रवत् तम् अभ्यवदत् कः असि इति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अग्निः वै अहम् अस्मि इति अब्रवीत् जातवेदाः वै अहम् अस्मि इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ यदा	जब
तत्	उसयक्षके सन्मुख
अग्निः	अग्निदेवता
अभ्यद्रवत्	जाताभया
इति	तब
तम्	उससे
यक्षम्	यक्ष
अभ्यवदत्	पूछता भया कि
कः	कौन
असि	तू है
+ सः	वह
अभ्यवदत्	कहता भया कि
अग्निः	अग्निदेवता
वै	निश्चयकरके
अहम्	मैं
अस्मि	हूं
वै	और
जातवेदाः	जातवेदाभी
अहम्	मैं
अस्मि	हूं
इति	ऐसा
अब्रवीत्	कहताभया

मूलम् ॥

तस्मिँस्त्वयिकिंवीर्यमित्यपीदꣳ सर्वंदहेयं यदिदंपृथिव्यामिति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

तस्मिन् त्वयि किम् वीर्यम् इति अपि इदम् सर्वम् दहेयम् यत् इदम् पृथिव्याम् इति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मिन्	तिस
त्वयि	तेरे विषे
किम्	क्या
वीर्य्यम्	सामर्थ्य है
इति	ऐसा
+ यक्षम्	यक्ष
+ अब्रवीत्	कहताभया
अपि	संभवहै कि
इदम्	इस
सर्वम्	संपूर्णजगत्को

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
दहेयम्	मैंजलादूं
+ च	और
यत्	जो कुछ
इदम्	यह
पृथिव्याम्	पृथिवीविषेहै
तत्अपि	उसकोभी
+दहेयम्	जलादूं
इति	ऐसा
+अग्निः	अग्निदेवता
+आह	कहताभया

मूलम् ॥

तस्मैतृणंनिदधावेतद्दहेति तदुपप्रेयायसर्वजवेन तन्नशशाक दग्धुं सःततएवनिववृतेनैतदशकंविज्ञा- तुंयदेतद्यक्षमिति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

तस्मै तृणम् निदधौ एतत् दह इति तत् उप- प्रेयाय सर्वजवेन तत् न शशाक दग्धुम् सः ततः एव निववृते न एतत् अशकम् विज्ञातुम् यत् एतत् यक्षम् इति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ तत्	वह
+ यक्षम्	यक्ष
तस्मै	तिस अग्नि के सन्मुख
तृणम्	एक तृणको
निदधौ	रखता भया
+ च	और
इति	ऐसा
आह	कहता भया कि
एतत्	इसको
दह	दहनकर
सः	सो अग्नि
तत्	उस तृणके
उपप्रेयाय	समीप जाता भया
+ परन्तु	परंतु
सर्वजवेन	अपनी सर्वशक्तिकरके भी
तत्दग्धुम्	उसकेजलानेको

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
नशशाक	नहींसामर्थ्य होताभया
+ तदा	तब
सः	वह अग्नि
ततः	उस यक्षके समीपसे
निववृतेएव	लौटताभया
+ च	और
इति	ऐसा(अपने साथियोंसे)
+ आह	कहता भया कि
एतत्	इसके
विज्ञातुम्	जाननेकोकि
तत्	कौन
एतत्	यह
यक्षम्	यक्षहै
नअशकम्	मैं नहीं समर्थ होताभया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

अथवायुमब्रुवन् वायवेतद्विजानीहि किमेतद्यक्ष
मिति तथेति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

अथ वायुम् अब्रुवन् वायो एतत् विजानीहि
किम् एतत् यक्षम् इति तथा इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	= तिसके अनंतर	विजानीहि	= जानतू कि
वायुम्	= वायुसे	किम्	= कौन
अब्रुवन्	= सब कहते भये कि	इति	= ऐसा
वायो	= हे वायु	एतत्	= यह
एतत्	= इसको	यक्षम्	= पूजनीय है
		तथाइति	= वायुने कहा बहुत अच्छा

मूलम् ॥

तदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीति वायुर्वाअहम
स्मीत्यब्रवीन्मातरिश्वावाअहमस्मीति ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

तत् अभ्यद्रवत् तम् अभ्यवदत् कः असि
इति वायुः वै अहम् अस्मि इति अब्रवीत् मात-
रिश्वा वै अहम् अस्मि इति

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वायुः	वायुदेवता
तत्	उसयक्ष के समीप
अभ्यद्रवत्	शीघ्र जाता भया
+तदा	तब
तम्	उस से
यक्षम्	यक्ष
अभ्यवदत्	पूछता भया कि
कः	कौन
असि	तू है
वायुः	वायु
अहम्	मैं

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वै	निश्चयकरके
अस्मि	हूं
इति	ऐसा
सः	वह
अब्रवीत्	कहताभया
च	और
मातरिश्वा	मातरिश्वा याने अन्त-रिक्ष गामी
वै	भी
अहम्	मैं
अस्मि	हूं
इति	ऐसा
अब्रवीत्	बोलताभया

मूलम् ॥

तस्मिँस्त्वयि किंवीर्यमित्यपीदꣳ सर्वमाददीयं यदिदं पृथिव्यामिति ॥ ९ ॥

पदच्छेदः

तस्मिन् त्वयि किम् वीर्य्यम् इति अपि इदम् सर्वम् आददीयम् यत् इदम् पृथिव्याम् इति

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मिन्	= तिस
त्वयि	= तुझबिषे
किम्	= क्या
वीर्यम्	= पराक्रमहै
इति	= ऐसा
अब्रवीत्	= पूछताभया
वायुः	= वायुदेवता
इति	= ऐसा
अब्रवीत्	= उत्तर देता भया कि

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	= जो कुछ
इदम्	= यह
पृथिव्याम्	= पृथिवी में चराचरहै
इदम्	= उस
सर्वम्	= सब को
अपि	= ही
आददीयम्	= मैं धारण करसक्ताहूं

मूलम् ॥

तस्मै तृणं निदधावेतदादत्स्वेति तदुपप्रेयाय सर्वजवेन तन्न शशाकादातुं स तत एव निववृते नै तदशकं विज्ञातुं यदेतद्यक्षमिति ॥ १० ॥

पदच्छेदः

तस्मै तृणम् निदधौ एतत् आदत्स्व इति तत् उपप्रेयाय सर्वजवेन तत् न शशाक आदातुम् सः ततः एव निववृते न एतत् अशकम् विज्ञातुम् यत् एतत् यक्षम् इति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
यक्षम्	यक्ष
तस्मै	उस वायुके सम्मुख
तृणम्	एक तृणको
निदधौ	रखताभया
च	और
इति	ऐसा
आह	कहताभयाकि
एतत्	इसको
आदत्स्व	उठा
+ तदा	तब
वायुः	वायुदेवता
तत्	उस तृणके
उपप्रेयाय	समीपजाता भया
+ परन्तु	परन्तु
सर्वजवेन	सर्वपुरुषार्थ करके
अपि	भी
तत्	उस तृणके
आदातुम्	उठानेको
न	नहीं

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
शशाक	समर्थहोता भया
तदा	तब
सः	वह वायु
ततः	उस यक्षके समीप से
एव	निश्चयकरके
निवदृते	लौटताभया
+ च	और
+ आह	सब देवतों से कहता भया कि
एतत्	इसके
विज्ञातुम्	जानने को
+ अहम्	मैं
न	नहीं
अशकम्	समर्थ होता भया कि
यत्	कौन
एतत्	यह
इति	ऐसा
यक्षम्	यक्ष है

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

अथेन्द्रमब्रुवन्मघवन्नेतद्विजानीहि किमेतद्यक्ष मितितथेति तदभ्यद्रवत्तस्मात्तिरोदधे ॥ ११ ॥

पदच्छेदः

अथ इन्द्रम् अब्रुवन् मघवन् एतत् विजानीहि किम् एतत् यक्षम् इति तथा इति तम् अभ्यद्रवत् तस्मात् तिरोदधे

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	तिसकेअनंतर
इन्द्रम्	इन्द्रसे
अब्रुवन्	सब देवताकहतेभये कि
भगवन्	हे इन्द्र
एतत्	इसको
विजानीहि	जानतू कि
किम्	कौन
एतत्	यह
यक्षम्	यक्ष है
तथाइति	बहुत अच्छा कहके
सः	वह इन्द्र
तत्	उसयक्षके समीप
अभ्यद्रवत्	जाताभया
तस्मात्	उस इन्द्रसे
+ तत्	वह
+ यक्षम्	यक्ष
तिरोदधे	तिरोधान याने अदृश्यहोताभया

मूलम् ॥

स तस्मिन्नेवाकाशेस्त्रियमाजगाम बहुशोभमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नामुमां हैमवतीं ताᳬं होवाच किमेतद्यक्षमिति १२॥

पदच्छेदः

सः तस्मिन् एव आकाशे स्त्रियम् आजगाम बहुशोभमानाम् उमाम् हैमवतीम् ताम् ह उवाच किम् एतत् यक्षम् इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	= वह इन्द्र	आजगाम्	= प्राप्तहोता भया
तस्मिन्एव	= तिसही	च	= और
आकाशे	= आकाश में	ताम्	= तिससे
बहुशोभमानाम्	= अत्यन्त शोभायुक्त	ह	= ही
उमाम्	= उमा नाम वाली	उवाच	= पूछताभया कि
हैमवतीम्	= हिमाचल कन्या	किम्	= कौन
स्त्रियम्	= देवी के समीप	एतत्	= यह
		इति	= ऐसा
		यक्षम्	= यक्षथा

इतितृतीयः खण्डः

नोट—जब यक्ष इन्द्रदेवके आनेपर अन्तर्द्धान होगया तब इन्द्र अत्यन्त पश्चात्तापवान् होताभया तब यह यक्ष उसको अहंकार रहित देखकर उसपर अनुग्रह करके साक्षात् ब्रह्म विद्या उमारूप होकर उसके समीप प्रकट होताभया॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

सा ब्रह्मेतिहोवाचब्रह्मणोवा एतद्विजयेमहीय ध्वमितिततोहैव विदाञ्चकार ब्रह्मेति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

सा ब्रह्म इति ह उवाच ब्रह्मणः वै एतत् वि-जये महीय ध्वम् इति ततः ह एव विदाञ्चकार ब्रह्म इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सा	वहउमा
उवाच	कहतीभई
तत्	वह
ब्रह्म	ब्रह्म
एव	हीथा
इति	ऐसा
इन्द्रः	इन्द्र
ततः	तत्पश्चात्
विदाञ्चकार	जानताभ-या
तत्	वहयक्ष
ब्रह्म ह	ब्रह्महीथा
+च	और
ब्रह्मणःवै	ब्रह्मकेही
विजये	विजयमें
इतिएतत्	ऐसेइस
महीयध्वम्	महिमाकोतुमसबप्राप्तहुयेहो
इति	इसप्रकार

मूलम् ॥

तस्माद्वाएतेदेवा अतितरामिवान्यान्देवान्यद्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्निर्वायुरिन्द्रस्तेह्येनन्नेदिष्ठं यस्पृशुस्तेह्येनत्प्रथमो-
विदाञ्चकारब्रह्मेति ॥ २ ॥

पदच्छेदः

तस्मात् वै एते देवाः अतितराम् इव अन्यान् देवान् यत् अग्निः वायुः इन्द्रः ते हि एनम् नेदिष्टम् यस्पृशुः ते हि एनत् प्रथमः विदाञ्चकार ब्रह्म इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	= जिसकारण	ते	= वे
अग्निः	= अग्नि	इति	= इसप्रकार
वायुः	= वायु	एनत्	= इसब्रह्म को
इन्द्रः	= इन्द्र	प्रथमः	= प्रथम
एते	= येसब	हि	= निश्चयपूर्वक
देवाः	= देवता	विदाञ्चकार	= जानतेभये
एनत्	= इस	तस्मात्	= तिसीकारण
नेदिष्टम्	= समीपस्थब्रह्मको	ते	= वे
हि	= भलीप्रकारसे	वै	= निश्चयकरके
यस्पृशुः	= स्पर्शकरतेभये याने दर्शन करते भये	अन्यान्	= और
च	= और	देवान्	= देवतों से
		अतितराम् इव	= अत्यन्तश्रेष्ठहैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

तस्माद्वाइन्द्रोऽतितरामिवान्यान्देवान्सह्येनन्ने दिष्टंपस्पर्शसह्येनत्प्रथमोविदाञ्चकारब्रह्मेति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

तस्मात् वै इन्द्रः अतितराम् इव अन्यान् देवान् सः हि एनत् नेदिष्टम् पस्पर्श सः हि एनत् प्रथमः विदाञ्चकार ब्रह्म इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
हि	= जिसकारण
सः	= वह इन्द्र
एनत्	= इस
नेदिष्टम्	= समीपस्थब्रह्मको
पस्पर्श	= स्पर्श करता भया याने दर्शन करताभया
+च	= और
हि	= जिसकारण
सः	= वह
इति	= ऐसे
एनत्	= इस

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ब्रह्म	= ब्रह्मको
प्रथमः	= प्रथम
विदाञ्चकार	= उमाके उपदेशसे जानताभया
तस्मात्	= तिसीकारण
सः	= वह
वै	= निश्चयपूर्वक
अन्यान्	= और
देवान्	= देवतों से
अतितराम् इव	= अतिशय श्रेष्ठ है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

तस्यैषआदेशोयदेतद्विद्युतोव्यद्युतदाइतीति न्यमीमिषदाइत्यधिदैवतम् ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

तस्य एषः आदेशः यत् एतत् विद्युतः व्यद्यु-तत् आ इति इति न्यमीमिषत् आ इति अ-धिदैवतम्

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इति	ऐसा	+ उपदेशः	उपदेश है
यत्	जो	+ सः	सो
तस्य	उसब्रह्मका	एतत्	यह
एषः	यह	विद्युतः	बिजलीके
आदेशः	दृष्टान्तक उपदेश है	व्यद्युतत्	चमकनेके
च	और	आ	तुल्य है
इति	ऐसा	+ अथवा	या
+ तस्य	उसका	न्यमीमिषत्	पलकमारने के
+ यत्	जो	आ	तुल्य है
अधिदैवतम्	देवता विषयक		

उपमासे रहित ब्रह्मका जिस उपमानकरके उपदेश है उसीका नाम आदेश है शास्त्रमें स्वयंप्रकाश ब्रह्म कहाहै सो जैसे बिजुली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकबार चमककरके छिप जाती है उसी प्रकार ब्रह्मभी एकबार अपने प्रकाशको दिखाकर इन्द्रसे तिरोभूत होताभया याने छिप गया एक तो इस प्रकारका उपदेशहै दूसरा जैसे बिजुली अपने प्रकाश करके पुरुषोंके नेत्रों को मुंदवा देतीहै तैसे ब्रह्मभी देखतेहुये देवतोंके नेत्रोंको मुंदवाकर तिरोभाव होताभया यह अधिदैवत उपदेश है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

अथाध्यात्मं यदेतद्गच्छतीव च मनोऽनेन चैतदुपस्मरत्यभीक्ष्णं सङ्कल्पः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

अथ अध्यात्मम् यत् एतत् गच्छति इव च मनः अनेन च एतत् उपस्मरति अभीक्ष्णम् सङ्कल्पः

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	और
अथ	देवताविषयक उपदेशके पश्चात्
यत्	जिसब्रह्मको
एतत्	यह
मनः	मन
गच्छति	विषयकरता है वृत्ति व्याप्तिकरके
अनेन	इसीमनकरके
एतत्	उसब्रह्मको
+मुमुक्षुः	मुमुक्षु
अभीक्ष्णम्	अत्यन्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपस्मरति = समीपवर्त्ति होकरस्मरण करताहै	सङ्कल्पः = मनसम्बंधी
एतत् = यही	अध्यात्मम् = अध्यात्म उपदेश है

मूलम् ॥

तद्धतद्वनंनामतद्वनमित्युपासितव्यं सयएतदेवं वेदाभिहैनं सर्वाणिभूतानिसंवाञ्छन्ति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

तत् ह तद्वनम् नाम तद्वनम् इति उपासितव्यम् सः यः एतत् एवम् वेद अभि ह एनम् सर्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्	वह ब्रह्म	यः	जो
ह	निश्चयकरके	एतत्	इसब्रह्मको
नाम	प्रसिद्ध	एवम्	इसप्रकार
तद्वनम्	पूजनीय है	वेद	जानता है
तद्वनम्	सबकापूजनीयहै	एनम्	उसको
इति	ऐसा	सर्वाणि	सब
उपासितव्यम्	उपासना करने योग्यहै	भूतानि	प्राणी
सः	वह	अभि	सब प्रकारसे
		ह	निश्चयकरके
		संवांछंति	आदर करते हैं

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

उपनिषदं भो ब्रूहीत्युक्ता त उपनिषद्ब्राह्मीं वाव त एव त उपनिषदमब्रूमेति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

उपनिषदम् भोः ब्रूहि इति उक्ता ते उपनिषद् ब्राह्मीम् वाव ते उपनिषदम् अब्रूम इति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
भोः	हे भगवन्
उपनिषदम्	उपनिषद्को
ब्रूहि	कहो
इति	यह वचन
+ शिष्यः गुरुम् आह	शिष्यगुरुसे कहताभया
+तदा गुरुः उवाच	तब गुरु कहते भये कि
ते	तेरे लिये
उपनिषद्	उपनिषत्
वाव	निश्चयपूर्वक
मया	मुझकरके
उक्ता	कहागया है
ते	तेरे लिये
इति	ऐसा
ब्राह्मीम्	ब्रह्मसंबन्धी
उपनिषदम्	उपनिषद्को
अब्रूम	कहा है हमने

मूलम् ॥

तस्यै तपोदमःकर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम् ॥ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

तस्यै तपः दमः कर्म इति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यम् आयतनम्

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

तस्यै = उस ब्रह्मविद्या की प्राप्तिकेलिये
तपः = तप
दमः = दम
\+ च = और
कर्म = निष्कामकर्म
इति = इत्यादि
\+उपायाः सन्ति = उपाय हैं
\+ च = और

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

वेदाः = चारों वेद
सर्वाङ्गानि = छयों वेदांग
प्रतिष्ठा = चरण हैं उस ब्रह्मविद्याके
च = और
सत्यम् = सत्य
आयतनम् = घर है याने सत्यब्रह्म विद्याके निवास का स्थान है

मूलम् ॥

योवाएतामेवंवेदापहत्यपाप्मानमनन्ते स्वर्गे लोकेज्येयेप्रतितिष्ठतिप्रतितिष्ठति ॥ ९ ॥

पदच्छेदः

यः वै एताम् एवम् वेद अपहत्य पाप्मानम् अनन्ते स्वर्गे लोके ज्येये प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	जो
वै	निश्चयकरके
एताम्	इस ब्रह्मविद्याको
एवम्	इसप्रकार
वेद	जानता है
+ सः	वह पुरुष
पाप्मानम्	पापोंको

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अपहत्य	नाशकरके
अनन्ते	अविनाशी
ज्येये	सर्वात्म
स्वर्गेलोके	सुखरूपब्रह्मविषे
प्रतितिष्ठति	प्राप्तहोताहै
प्रतितिष्ठति	अवश्यही प्राप्तहोताहै

इतिचतुर्थःखण्डः

इतिकेनोपनिषत्समाप्ता ॐहरिः ॐ

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केन उपनिषद्

शुद्धिपत्रिका

अशुद्धिः	शुद्धिः	मू-अन्व.	पृष्ठ	मन्त्र	खण्ड
युक्ति	युनक्ति	मूलम्	१	१	१
आत्मनो	आत्मना	मू.	१४	४	२
४	५	०	१५	५	२
सः	स	मू.	२१	६	३
यसृशु	पस्पर्शु	मू.	३८	२	४

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी ऊपर लिखे हुये के अनुसार भावार्थ स्पष्ट कियागया और समझने की सुगमताके लिये गुरु शिष्य सम्वाद पूर्वक पूर्ण ज्ञान लखाया है ॥

मुंडक उपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत =)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित– जिसमें वादी प्रतिवादी के प्रश्नोत्तर से ब्रह्मका निर्णय व जगदुत्पत्ति व प्रत्येक अन्नादि का संभव व अग्निहोत्रादि क्रियाओंका विधान मन्त्रों द्वारा वर्णित है ॥

तैत्तिरीयोपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत ।–)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीकासहित–जिसमें तैत्तिरीय शाखा के प्रकट होनेका उदाहरण और स्वरमात्रा व वर्णों के उच्चारणकी शिक्षाका नियम व वर्णों के संबन्धरूप संहिताकी उपासना व बुद्धि व लक्ष्मीकी कामनावाले पुरुषोंके अर्थ साधन जप और हवनादि की क्रियायें वर्णित हैं ॥

ऐतरेयोपनिषद् भाषाटीकासहित, क़ीमत =)॥।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित –जिसमें आत्मा व ब्रह्मका निरूपण और प्राण व प्रणवकी उपासना की व्याख्या व संन्यासादि आश्रमों के लक्षण व धर्म अच्छे प्रकार वर्णित हैं ॥

उपनिषद् सार, क़ीमत –)॥ पु०

मुंडक, मांडूक्य, तैत्तरीय, ऐतरेय, श्वेताश्वर, ईशावास्य, केन, कठ, प्रश्न, छांदोग्य, बृहदारण्यक, कौषीतकि, ब्राह्मण और मैत्री की भाषा टीका राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्दने रचनाकर अपने पुत्र पौत्र मित्र बान्धव योग्य अधिकारियों के निमित्त छपवायाहै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छान्दोग्य उपनिषद् भाषा टीका, क़ीमत॥=)॥

पंडित यमुनाशङ्करजी कृत टीका भाषा ॥

ब्राह्मधर्मदोखंड में, ग़ैरमतबा क़ीमत १) पु०
तथा प्रथमखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ॥=) पु०
तथा द्वितीयखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ।=) पु०

यह अत्युत्तम उपनिषद् है इसको पंडित लक्ष्मणप्रसादजी ने बंगाली भाषा से हिन्दी भाषा में उल्थाकिया है मूलश्लोक और भाषा टीका समेत है ॥

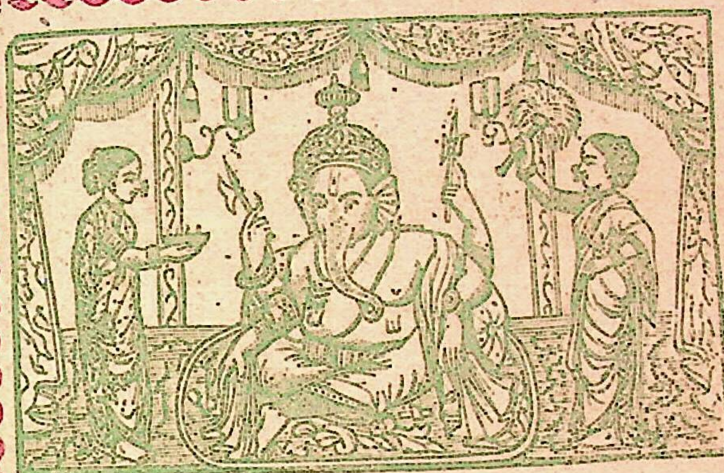
(वेदान्त)

योगवाशिष्ठ दोभागों में, क़ीमत ५॥) पु०
श्रीमद्भागवत भाषाटीकासंयुक्त ७) रु० पु० ॥

इस ग्रन्थ के उत्तम होनेमें कदापि सन्देह नहींहै-इसका भाषा तिलक ब्रजबोली में बहुतही प्याराहै आशय प्रत्येक श्लोकों का है क्यों न हो इस के तिलककार महात्मा ब्रजवासी अङ्गदजी शास्त्रीहैं-यह तिलक ऐसा सरलहै कि इसके द्वारा अल्प संस्कृतज्ञ पुरुषों का पूराकार्य निकल सक्ताहै-संस्कृत पाठकभी इससे श्लो-कोंका पूराआशय समझ सक्तेहैं इसबार यह ग्रन्थ टैपके अक्षरों में उम्दा काग़ज़ सफ़ेद चिकना में छापागयाहै और विशेष वि-द्वान् शास्त्रियों के द्वारा शुद्ध कराया गया है जिससे बम्बई की छपीहुई पुस्तकसे किसी काम में न्यून नहीं है उम्दा तसावीर भीप्रत्येक स्कन्धमें युक्तहैं-आशाहै कि इस अमूल्य रत्न के लेने में महाशय लोग विलम्ब न करेंगे ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



कठवल्ली उपनिषद्

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशी भाषा में बाबू जालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर जिला फ़ैज़ाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल व लखनऊ व पोस्टमास्टर जनरल रियासत गवालियर ने पण्डित गङ्गादत्त जोशी और पण्डित रामदत्त जोशी की सहायता से अनुवाद किया—

तिसको

श्रीमान् परमधार्मिक शुभगुणनिधान मुन्शी प्रयाग नारायणजी ने सर्वलोकहितार्थ

दूसरी बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के यन्त्रालय में मुद्रित कराया

सन् १९०६ ई० ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदंप्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम् । यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः । षट्चक्रादिविचारसारकुशला नन्दन्ति योगीश्वरास्तंवन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करौं वन्दना ब्रह्मको । जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल । मिटै अन्ध तमकूप ॥
नाम रूप जामें नहीं । नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं । रहितत्रिविधपरिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद । ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको । लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो । सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते । जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट । अकबरपुर है गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू । जालिमसिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है, इसके पार होने के लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौका है, जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं, और होते जाते हैं, और भविष्यत्काल में होंगे, जो मुमुक्षुजन हैं, उनके हितार्थ यह भाषाटीका रचीगई है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसटीका में पहिले मूलमन्त्र है, फिर पदच्छेद है, फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है, और दक्षिण हस्तकी ओर पदार्थ लिखा है, यदि वाम तरफ़ का लिखा हुआ ऊपरसे नीचेतक पढ़ाजावे तो संस्कृत अन्वय मिलेगा और यदि दक्षिण हस्तके तरफ़वाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशीय भाषामें मिलेगा, और यदि बायें तरफ़ से दहिने तरफ़ को पढ़ाजावे तो हर एक संस्कृत पद का अर्थ भाषा में मिलेगा, भावार्थ भी सविस्तार लिखागया है ताकि पाठकजनों को ब्रह्मका साक्षात् ज्ञान होजावै जहांतक होसकाहै प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागयाहै, इस टीका के पढ़ने से संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा, इस टीकामें मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पाया है, और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसीके शब्दोंहीसे सिद्ध कियागया है, अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है, हां कहीं कहीं ऊपर से संस्कृत पद मन्त्र के अर्थ स्पष्ट करने के लिये रक्खागया है, और उस पदके प्रथम यह + चिह्न लगादिया गयाहै ताकि पाठकजनों को विदित होजावै कि यह पद मूलका नहीं है। इस टीका को बाबू जालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद साबिक हेड पोस्टमास्टर नैनीताल व लखनऊ व वर्तमान काल में पोस्ट मास्टर जनरल रियासत ग्वालियर सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मोड़ाख्य नगर के रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरण कमल में अर्पण करताहै और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धताहो उससे टीकाकर्ता को सूचनाकरैं ताकि अशुद्धता दूर होजावै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ कठवल्ली उपनिषद् ॥



मूलम् ॥

(१) उशन्हवैवाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस ॥ १ ॥

पदच्छेदः

उशन् ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसम् ददौ तस्य ह नचिकेताः नाम पुत्रः आस ॥

अन्वयः पदार्थ

हवै = निश्चय करके
उशन् = यज्ञके फल की इच्छा करता हुआ
वाजश्रवसः = वाजश्रवा का पुत्र उद्दालकऋषि
सर्ववेदसम् = सब धन को विश्वजित् यज्ञ में
ददौ = देताभया
तस्य = तिसका
ह = ही
नचिकेताः = नचिकेता
नाम = नाम
पुत्रः = एक पुत्र
आस = था ॥

भावार्थ ।

यजुर्वेदीय काठकोपनिषद् द्वारा ब्रह्मविद्याका निरूपण करते हैं ब्रह्मविद्याकी प्राप्तिका साधन होनेसे इसग्रंथका नामभी उपनिषद्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, उपनिषद्का अर्थ ब्रह्मविद्या है, ये दोनों पर्याय शब्दहैं ॥ उपनिषद् करके कथन करीहुई जो ब्रह्मविद्याहै उसकी स्तुत्यर्थ और बोधकी सुगमतार्थ कथारूपसे वर्णन करतेहैं ॥ वाज नाम अन्नकाहै तिस अन्नके अतिदान करने से हुवाहै यश जिसका उसी का नामहै वाजश्रवा उस वाजश्रवा ऋषिकी जो संतानहो उस का नामहै वाजश्रवसा ॥ उद्दालकऋषि बहुत अन्नदान करता था इसलिये उसका दूसरा नाम वाजश्रवसा होताभया, वह उद्दालक ऋषि यज्ञके फलकी इच्छा करके विश्वजित् नामक यज्ञकरने को यजन करताभया, और उस यज्ञमें सर्वधनको ब्राह्मणों के प्रति दक्षिणा देताभया, और जो सुंदर २ दूध देनेवाली गौवें थीं उन को अपने पुत्रके लिये यज्ञ करने से पूर्वही अलग रखलेताभया ॥ और जो गौवें वृद्धार्थी उनको निष्फल जानकर यज्ञमें दक्षिणा के अर्थ ब्राह्मणों के प्रति देताभया, उस उद्दालकका नचिकेता एक छोटा पांच बरसका लड़का था, वह पिताके कुटिल व्यवहार को देखकर और यज्ञसे पिताको अनिष्टफलकी प्राप्ति को जानकर उसको वेदोक्त यथार्थ वाक्योंमें श्रद्धा उत्पन्न होतीभई, और उस नचिकेताने अपने मनमें विचार किया कि इसप्रकारके कुटिल व्यवहार करने से मेरे पिता को श्रेष्ठ यज्ञफलकी प्राप्ति न होगी, इसलिये मुझको उचित है कि मैं उसके हटानेका उपाय करूं, ऐसा संकल्प उसको उस कालमें होताभया जिस कालमें उसका पिता ऋत्वगादि ब्राह्मणों के प्रति दक्षिणा में उन गौवों को देरहाथा ॥ १ ॥

नोट—वाज नाम अन्नका है, तिस अन्न के दान करनेसे हुआ है श्रव याने यश जिसको तिसका नामहै वाजश्रवा, तिसका जो पुत्र है उसका नामहै वाजश्रवसा उसीका नाम उद्दालक भी है, वह उद्दालक यज्ञके फल की इच्छा करताहुआ विश्वजित् नामक यज्ञ में सर्वस्व दक्षिणा देता भया ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(२) तꣳ ह कुमारꣳ सन्तं दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धाऽऽविवेश सोऽमन्यत ॥ २ ॥

पदच्छेदः

तम् ह कुमारम् सन्तम् दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धा आविवेश सः अमन्यत ॥

अन्वयः पदार्थ

तम् = तिस नचिकेता को
कुमारंसंतम् = कुमार अवस्था होतसन्ते
ह = भी
दक्षिणासु = दक्षिणा में गौओं को
नीयमानासु = ले जानेपर
श्रद्धा = श्रद्धा
आविवेश = होतीभई
+च = और
सः = वह
अमन्यत = विचार करताभया

भावार्थ ।

तꣳहेति–नचिकेता गौवों को देखकर अपने चित्तमें विचार करता है कैसी वह गौवें हैं ॥ २ ॥

नोट–वह नचिकेता जिसकी आयु पांच वर्ष से अधिक न थी ऐसा शोचता भया कि वेदोक्त यज्ञ के विगुण व्यतिक्रम होने से अनिष्ट फलकी प्राप्ति होती है, जब ऐसी बुद्धि उस की हुई तब वह पिताके अनिष्टफल की निवृत्ति के वास्ते विचार करताहै जैसे कि दूसरे मन्त्र में लिखाहै ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(३) पीतोदकाजग्धतृणादुग्धदोहानिरिन्द्रियाः ॥
अनन्दानाम ते लोकास्तान्स गच्छति ता ददत् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

पीतोदकाः जग्धतृणाः दुग्धदोहाः निरिन्द्रियाः अनन्दाः नाम ते लोकाः तान् सः गच्छति ताः ददत् ॥

अन्वयः — पदार्थ

पीतोदकाः = पान करलियाहै जल जिन्होंने याने आगे जल पान करने की शक्ति नहीं है जिनको
जग्धतृणाः = खालियाहै घास जिन्होंने याने अब घास खानेकी शक्ति नहीं है जिनको
दुग्धदोहाः = दुहि लियागया है दुग्ध जिनका याने आगे को प्रसूतयोग्य नहीं हैं जो
निरिन्द्रियाः = निष्फल होगई हैं इन्द्रियां जिनकी याने मरने के समीपहैं जो
ताः = ऐसी गौवों को
+यः = जो पुरुष
ददत् = देता है
ते = वे
+ये = जो
अनन्दाः = आनन्दरहित
नाम = नामवाले
लोकाः = लोक हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तान् = तिनको
सः = वह
गच्छति = प्राप्त होताहै ॥

पीतोदका इति–पानकरलिया है पूर्वही जल जिन्होंने अर्थात् अब उनको जलपीनेकी सामर्थ्य नहीं है ॥ जग्धतृणाः ॥ भक्षण करलियाहै घास को जिन्होंने अर्थात् अब घास खानेकी सामर्थ्य जिनमें नहीं है ॥ दुग्धदोहाः ॥ पूर्वही दोहन करलियागया है दूध जिनका याने अब उनमें दूध देनेकी शक्ति नहीं रही है ॥ निरिन्द्रियाः ॥ गर्भके धारण करने की शक्ति से हीन हैं जो अर्थात् अतिबूढ़ी जो होगई हैं ॥ तान् ॥ ऐसी गौवों को जो दक्षिणामें देता है वह पुरुष ॥ अनन्दानाम ॥ असुखरूप जो लोकहैं अथवा योनि हैं उनमें वह दानका कर्त्ता जाता है ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

(४) सहोवाच पितरं तत कस्मै मान्दास्यसीति द्वितीयं तृतीयन्तꣳहोवाच मृत्यवे त्वा ददामीति ४॥

पदच्छेदः

सः ह उवाच पितरम् तत कस्मै माम् दास्यसि इति द्वितीयम् तृतीयम् तम् ह उवाच मृत्यवे त्वा ददामि इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सः	= वह नचिकेता	कस्मै	= किसके प्रति
ह	= निश्चयकरके	माम्	= मुझको
पितरम्	= पितासे	दास्यसि	= देगा तू
उवाच	= कहताभया कि	इति	= इसप्रकारसे
तत	= हे तात हे पिता	+यदा	= जब

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वितीयम् = दूसरी
तृतीयम् = तीसरी बार
+सः = वह नचिकेता
ह = हठकरके
उवाच = कहताभया
त्वा = तुझको
मृत्यवे = मृत्युके प्रति
ददामि = देऊंगा। मैं
इति = ऐसा तब
+उद्दालकः = उद्दालक
आह = कहताभया

भावार्थ ।

सहोवाचेति–पिताके अनिष्टफल के दूरकरने के लिये नचिकेता अपने पितासे कहता है हे तात ! किस ऋत्विग् के प्रति मेरे को आप दक्षिणामें देवोगे, ऐसा जब नचिकेताने पितासे कहा तब पिता नहीं बोला, फिर जब दूसरी तीसरी बार नचिकेताने पितासे कहा कि मेरेको किसके प्रति देवोगे, तब पिताने क्रोधित होकर कहा तुझको मृत्युके प्रति मैं दूंगा, पिताके इसप्रकारके वचन को श्रवण करके नचिकेता अपने मनमें चिंतवन करता है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

(५) बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः किंस्विद्यमस्य कर्तव्यं यन्मयाद्य करिष्यति ॥५॥

पदच्छेदः

बहूनाम् एमि प्रथमः बहूनाम् एमि मध्यमः किंस्वित् यमस्य कर्तव्यम् यत् मया अद्य करिष्यति ॥

अन्वयः	पदार्थ
बहूनाम्	बहुतेरों में
प्रथमः	प्रथम
एमि	होता हूं मैं
+च	और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहूनाम् = बहुतेरों में	कर्तव्यम् = प्रयोजन है
मध्यमः = मध्यम	यत् = जो
एमि = होता हूं मैं	मया = मुझकरके
किंस्वित् = क्या	अद्य = अब
यमस्य = यमराज का	करिष्यति = सिद्धहोगा

भावार्थ ।

बहूनामिति–पिताने मेरेको ऐसा क्यों कहा कि मैं तुमको यमप्रति दूंगा, शायद वह क्रोधके वशमें होकर ऐसा कहा होगा क्योंकि ॥ बहूनाम् ॥ बहुतेरे पुत्रों और शिष्यों के मध्यमें मैं प्रथमहूं याने श्रेष्ठहूं क्योंकि बिना आज्ञा गुरुकी और पिताकी मैं न कहीं जाताहूं और न किसी कामको करताहूं, पिता और गुरुकी सेवामें परायण रहताहूं, और बहुतेरे शिष्यों और पुत्रों के मध्यमें मैं मध्यमहूं, कनिष्ठ नहीं हूं, क्योंकि गुरुकी सेवामें तत्पर रहताहूं, और पिताकी आज्ञा को उल्लंघन नहीं करताहूं, तब फिर मुझ ऐसे श्रद्धासम्पन्न पुत्रका त्याग करना पिताको अयुक्त है, और यमके पास मेरे जानेसे यमका भी कोई उपकार नहीं मालूम होता है, मुझको अपने पिताके लिये यम महाराजके प्रति क्या इष्ट कर्तव्य है, मेरा त्याग मेरा पिता व्यर्थही करता है॥ ५॥

नोट–ऐसा नचिकेता अपने पिताके कहनेपर अपने मनमें विचार करता भया और जब उद्दालक को शापके पीछे पश्चात्ताप होनेलगा तब नचिकेता अगले मन्त्रमें समझाता है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

(६) अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथापरे सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिव जायते पुनः ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथा अपरे सस्यम् इव मर्त्यः पच्यते सस्यम् इव जायते पुनः ॥

अन्वयः पदार्थ

+हे तात = हे पिता
यथा = जैसे
पूर्वे = पूर्व तुम्हारे पिता पितामह आदि वर्तते थे उनको
अनुपश्य = देखो
तथा = तैसेही
अपरे = अन्य जो शिबि दशरथादि हुये हैं उनको
प्रतिपश्य = अच्छीतरहसे देखो अर्थात् जैसे वे लोक अपने वचनोंको पालते थे वैसेही आप भी अपने वचनको पालन करो
सस्यम् इव = धानके वृक्षके समान
मर्त्यः = मनुष्य भी
पच्यते = परिपक्क होकर नाश होताहै
+च = और
सस्यम् इव = धानके वृक्षवत्
पुनः = फिर
+मनुष्यः = मनुष्य मरकरके
जायते = उत्पन्न होता है ॥

भावार्थ ।

इधर उद्दालकऋषि के चित्तमें बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि हा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने क्या किया क्यों मैंने अपने गुणवान् पुत्रका वृथाही त्याग कर दिया॥इतने में नचिकेता आकर अपने पिताको जब शोकातुर देखा तब विचार करनेलगा कि अब वह उपाय करना चाहिये जिससे पिताका वचन मिथ्या न हो ऐसा विचार करके नचिकेता पिताके प्रति कहताहै ॥ अनुपश्येति ॥ हे पिता ! जिस प्रकार आपके पिता और पितामह आदिकोंने अपने वचनकी पालनाकी है,और जिसप्रकार और महात्मा व राज ऋषि लोक दशरथादिकों ने अपने वचन कीपालनाकी हैं, उसीप्रकार आपभी अपने वचनकी पालनाकरैं,मेरेको यमराजके पास जानेकेलिये आज्ञादीजिये,वचन को मिथ्या करने से कोई भी अजर अमर नहीं होता है, उलटाही अनर्थ को प्राप्तहोता है, इसलिये आप अपने वचन को सत्यकरो, मेरेको यमपुरी में जानेकी आज्ञा दो यह शरीरादिक सब अनित्य हैं खेतियोंकी तरह हैं, अर्थात् जैसे एक खेती पककर नष्ट होजाती, दूसरी बोई जाती है, इसी तरह मनुष्योंके भी पुराने शरीर नष्ट होकर नये उत्पन्न होते हैं, यह जो जन्ममरणरूपी काल चक्र है, सो सदैव चलताही रहता है, ऐसा विचारकर आप मेरेको अब यमके पास जानेके लिये आज्ञा दीजिये, और अपने वाक्य को सत्य करिये ॥ ६ ॥

नोट–नचिकेता पितासे कहता है कि जैसे तुम्हारे पिता पितामहादि अपने वचनों की पालना करते आये हैं,औरदशरथादिकों ने जैसे किया हैं,वैसे आपभी अपने वचनकी पालना करो,अर्थात् हमको यमपुरी जानेकी आज्ञा देवो,यह शरीर तो धान के वृक्षवत् उत्पत्ति नाश होताही रहताहै, मेरे में मोह को त्यागकर यमपुरी भेजनेवाले वचन को आज्ञा देकर सत्य करो,॥ ६ ॥ जब पिताने नचिकेताको यमराजके पास जाने की आज्ञादी तब वह शरीरसहित पितृभक्तिके प्रभावसे यमपुर में गया और जब यमपुरीके द्वार

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर पहुँचा तब उसको मालूम हुआ कि यमराज किसी कार्य के प्रति देशान्तर को गये हैं, तब तिस के द्वारपर खड़ारहा, जब यमराज की स्त्री को मालूम हुआ कि एक अतिथि ब्राह्मण हमारे द्वारपर निराहार खड़ा है, तब उसने आकर बड़े सत्कार से भोजन करने के लिये कहा तब, नचिकेताने कहा कि विना यमराज के भेंट किये मैं अन्न जलका ग्रहण नहीं करूंगा, जब तीन रात्रि दिन नचिकेता निराहार खड़ारहा, और चौथे दिन यमराज आये, तब उनकी स्त्रीने नचिकेताके आनेका समाचार कहा, और मन्त्र पढ़कर उनको समझाती हैं कि—

मूलम् ॥

(७) वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो गृहान् तस्यैताꣳशान्तिं कुर्वन्ति हर वैवस्वतोदकम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

वैश्वानरः प्रविशति अतिथिः ब्राह्मणः गृहान् तस्य एताम् शान्तिम् कुर्वन्ति हर वैवस्वत उदकम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
वैवस्वत	= हे विवस्वत सूर्य के पुत्र हे भगवन्	प्रविशति	= प्रवेशकरताहै
+यथा	= जैसे	+तथा एव	= वैसाही
वैश्वानरः	= वैश्वानर अग्नि	+एषः	= यह
गृहान्	= घरों में	अतिथिः	= अतिथि
		ब्राह्मणः	= ब्राह्मण अग्निरूप
		+तव द्वारे	= तुम्हारेद्वारपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+स्थितः = स्थित है	एताम् = इस
उदकम् = जलको	+तैजसीम् = तेजको
हर = ले जावो	शान्तिम् = शान्ति
+च = और	+कुरु = करो ॥
तस्य = उसके	

भावार्थ ।

वैश्वानर इति—जब कि नचिकेताने अपने पिता को अनेक युक्तियों और प्रमाणों करके समझाया, तब पिता उद्दालकने उसको यमपुरी जानेकी आज्ञा दिया, नचिकेता पिताके तपके प्रभाव से अपने शरीरके सहित यमराजपुरी को गया, और राज-गृहके द्वारपर जाकरके उसने महाराज यम के भृत्यों से कहा मेरे पिताने मेरेको यमके भेटार्थ भेजा है, ऐसा यमसे जाकर के कहो, भृत्योंने कहा यमराज किसी कार्य्य के लिये देशान्तर को गये हैं, उनकी स्त्री और पुत्र घरमें हैं, हम उनसे जाकर कहतेहैं, भृत्योंने यमकी स्त्री और पुत्रों से कहा कि एक ब्राह्मणका बालक अतिथि होकर तुम्हारे द्वारपर खड़ाहै, ऐसा सुनकर अतिथि सत्कारके लिये वे सब दौड़ आये, और नचिकेतासे भोजनादिकों के करनेकी प्रार्थनाकी, नचिकेता ने कहा मेरा प्रयोजन यमराजके साथ है, जबतक यमराज नहीं आवैंगे, तबतक मैं भोजनादिकों को ग्रहण नहीं करूंगा, ऐसा कहकर तीनदिन, तीन रात्री, निराहार वहांपर खड़ारहा, अतिथि को निराहार देखकर यमके नगरनिवासियों ने भी तीन दिनतक उपवास किया, चौथे दिन जब यमराज अपने घर आये तब उनसे उनकी स्त्री इसप्रकार कहती है ॥ वैश्वानरः ॥ हे वैवस्वत यम महराज ! एक अतिथि ब्राह्मण अग्निरूप होकर आपके घरमें प्रवेश करना चाहताहै, वह द्वारपर खड़ाहै, उसका सत्कार, पाद्य अर्घादिकों करके करिये, श्रेष्ठपुरुषों का धर्म अतिथिका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्कार करताहै, जो अतिथि का सत्कार नहीं करताहै, उसको दोष जैसा आगेवाले मंत्रमें लिखाहै होताहै ॥ ७ ॥

नोट–जिसके द्वारपर अथिति भूखा रहजावै, उसका जो फल है, उसको अगले मन्त्र में यमराज की स्त्री कहती है ॥

मूलम् ॥

(८) आशाप्रतीक्षेसङ्गतꣳसूनृताञ्चेष्टापूर्ते पुत्र पशूꣳश्च सर्वान् एतद्वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

आशा प्रतीक्षे सङ्गतम् सूनृताम् च इष्टापूर्ते पुत्र पशून् च सर्वान् एतत् वृङ्क्ते पुरुषस्य अल्पमेधसः यस्य अनश्नन् वसति ब्राह्मणः गृहे ॥

अन्वयः	पदार्थ
यस्य	= जिस
अल्पमेधसः	= अल्पबुद्धिवाले
पुरुषस्य	= पुरुष के
गृहे	= गृह बिषे
अनश्नन्	= भूखा
ब्राह्मणः	= ब्राह्मण
अतिथिः	= अतिथि
वसति	= वास करता है

अन्वयः	पदार्थ
एतत्	= उसका भूखा रहना
तस्य	= उस गृहस्थ पुरुष के
आशा प्रतीक्षे	= स्वर्गादि सुख तथा मनन किये हुये सुख की इच्छा को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सङ्गतम् = सत्सङ्गके फलको	च = और
सूनृतम् = प्रियवाणी बोलनेके फलको	सर्वान् = सब
इष्टापूर्ते = इष्टपूर्त कर्मको	पुत्रपशून् = पुत्र और पशुओं को
	वृङ्क्ते = नाश करताहै ॥

भावार्थ ।

आशाप्रतीक्षे इति–जैसे अशान्ताग्नि घरको जला देताहै तैसे असत्कृत अतिथिभी सम्पूर्ण सामग्री के सहित घरको जला देताहै ॥ आशाप्रतीक्षे ॥ परोक्ष स्वर्गादिकों की इच्छाका नाम आशा, है और अपरोक्ष राज्यादि सुखकी इच्छाका नाम प्रतीक्षा है ॥ देवताकी उपासना जन्य जो फलहै, उसका नाम संगतहै, और प्रियभाषण से जो फल होताहै, उसका नाम सूनृतहै, और अग्निहोत्रादि यागजन्य जो फलहै,उसका नाम इष्टहै, और वापी कूपादिकोंके बनवाने से जो फल होता है, उसका नाम पूर्त्त है, ॥ इन सबका और पुत्र और पशुवोंकाभी नाश उस अल्पबुद्धिवाले पुरुषके गृहमें होजाताहै, जिसके द्वारपर अतिथि आकर भूखा रहजाताहै, इसलिये हे यम ! आप शीघ्र जाकर प्रथम इस अतिथि ब्राह्मण का सत्कार करिये ॥ ८ ॥

नोट–जब यमराज महाराज ने अपनी स्त्री से ऐसा सुना तब शीघ्र द्वारपर जाकर नचिकेता से कहते भये ॥

मूलम् ॥

तिस्रोरात्रीर्यदवात्सीर्गृहेमेऽनश्नन् ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात्प्रतित्रीन् वरान् वृणीष्व ॥ ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

तिस्रः रात्रीः यत् अवात्सीः गृहे मे अनश्नन् ब्रह्मन् अतिथिः नमस्यः नमः ते अस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मे अस्तु तस्मात् प्रति त्रीन् वरान् वृणीष्व ॥

अन्वयः	पदार्थ
ब्रह्मन्	हे ब्रह्मन्
तिस्रः	तीन
रात्रीः	राततक
मे	मेरे
गृहे	घरमें
यत्	जो
अनश्नन्	भूखा
अतिथिः	अतिथिहोकर
अवात्सीः	रहा तू
+ततः	तिस कारणसे
नमस्यः	पूजनीय है तू
नमः	नमस्कार
ते	तेरे प्रति
अस्तु	होवै
ब्रह्मन्	हे ब्रह्मन्
+यतः	जिससे
मे	मेरे लिये
स्वस्ति	कल्याण होवै
तस्मात्	तिसलिये
प्रति	तीन रातों के बदले
त्रीन्	तीन
वरान्	वरोंको
वृणीष्व	मांगले तू ॥

भावार्थ।

यमराज महाराज तुरन्त अतिथि ब्राह्मणके पास जाकर कहने लगे ॥ तिस्रोरात्रीर्यदिति ॥ हे ब्राह्मण ! आप तीनरात्री अन्ना- दिकों के विनाही मेरे द्वारपर अतिथि होकर खड़ेरहे इसलिये मैं आपको नमस्कार करताहूं, आप मेरे अपराधको क्षमाकरके तीन वर इच्छा पूर्वक मांगिये, मैं वारंवार आपको नमस्कार करताहूं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जो कुछ मेरी अयोग्यताहो, उसको अपने अन्तःकरणसे दूर करिये, और आशीर्वाद दीजिये कि मेरा भद्रहो ॥ ६ ॥

नोट-नचिकेता से यमराज कहते हैं कि जो तू अतिथि होकर तीन रात्री मेरे द्वारपर भूखा खड़ा रहाहै इसवास्ते तीनवर तू मांगले सो नचिकेता अब वरों को मांगता है ॥

मूलम् ॥

(१०) शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्याद्वीत मन्युर्गौतमो माभिमृत्यो त्वत्प्रसृष्टं माऽभिवदेत् प्रतीतएतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे ॥ १० ॥

पदच्छेदः

शान्तसङ्कल्पः सुमनाः यथा स्यात् वीतमन्युः गौतमः मा अभि मृत्यो त्वत्प्रसृष्टम् मा अभिवदेत् प्रतीतः एतत् त्रयाणाम् प्रथमं वरं वृणे ॥

अन्वयः	पदार्थ
शान्तसङ्कल्पः	शान्तहुआ है सङ्कल्प जिसका
सुमनाः	शुद्ध हुआ है चित्त जिसका
वीतमन्युः	दूर होगयाहै क्रोधजिसका
यथा	ऐसा

अन्वयः	पदार्थ
गौतमः	उद्दालक मेरा पिता
त्वत्प्रसृष्टः	तुझकरकेछूटे हुये
मा अभि	मुझसे
मृत्यो	हे भगवन्
प्रतीतः	प्रसन्न
स्यात्	हो
च	और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिवदेत् = सम्भाषणकरै	प्रथमम् = प्रथम
त्रयाणाम् = तीनोंवरोंमेंसे	वरं = वरको
एतत् = इस	वृणे = मांगताहूं मैं ॥

भावार्थ ।

शांतसंकल्प इति-यमराज की आज्ञा सुनकर नचिकेता कहता है ॥ शान्तसंकल्पः ॥ हे मृत्यो महराज ! आपके पास आनेसे मेरे पिता गौतमको जो ऐसी चिंता होरही है कि मेरे पुत्रकी यमके पास जानेसे क्या जाने कैसी अनिष्टदशा हुई होगी सो वह उनका संकल्प दूर होजावे, और प्रसन्न मनहों, और जो उनका क्रोध मेरे ऊपर हुआथा वहभी शान्त होजावे, और जब मैं आपका भेजाहुवा अपने घरको जाऊं तब मेरे पिताको ऐसा मालूमहो कि यह वही मेरा पुत्रहै, और पूर्ववत् मेरेमें प्रीतिकरै, और यह प्रेत होकर यमराजके पाससे नहीं आयाहै, यह प्रथम वर तीनों वरोंमेसे मांगताहूं ॥ १० ॥

॥ नोट-नचिकेता कहता है कि हे मृत्यो भगवान् गौतम जो मेरा पिताहै उसको जो यह चिन्ता होरही है कि मेरे पुत्रकी यम के पास जानेपर क्या जाने कैसी दशा होरही है सो इस सङ्कल्प से वह रहित होकर प्रसन्न चित्तहो और मेरेपर जो उसका क्रोधहुआ था वह भी दूर होजावे, और जब मैं तुम्हारे यहां से फिर पिता के पास वापिस जाऊं तब वह पूर्ववत् मेरे को जाने कि यह मेरा पुत्र है, यह पहला वर मैं मांगता हूं उसके जवाब में मृत्यु भगवान् कहते हैं कि-

मूलम् ॥

(११) यथापुरस्ताद्भविताप्रतीतऔद्दालकिरारुणिर्मत्प्रसृष्टः सुखꣳरात्रीः शयितावीतमन्युस्त्वा ददृशिवान्मृत्युमुखात्प्रमुक्तम् ॥ ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यथा पुरस्तात् भविता प्रतीतः औद्दालकिः आरुणिः मत्प्रसृष्टः सुखम् रात्रीः शयिता वीतमन्युः त्वाम् ददृशिवान् मृत्युमुखात् प्रमुक्तम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
यथा	= जैसे
पुरस्तात्	= पहले
+ आसीत्	= था
+ तथा	= वैसाही
औद्दालकिः	= उद्दालक
आरुणिः	= अरुणका पुत्र
वीतमन्युः	= क्रोधसेरहित होता हुआ
+ च	= और
प्रतीतः	= प्रसन्न होता हुआ
भविता	= रहैगा
+ च	= और
त्वाम्	= तुझको
मृत्युमुखात्	= मृत्युके मुखसे
प्रमुक्तम्	= छुटाहुआ
ददृशिवान्	= देखकर
मत्प्रसृष्टः	= मेरेप्रसाद से
सुखम्	= सुखपूर्वक
रात्रीः	= रातोंतक
शयिता	= सोवैगा ॥

भावार्थ।

यथापुरस्तादिति–यमराज भगवान् कहते हैं हे नचिकेतः ! औद्दालकिऋषि, तुम्हारा पिता, है जब तुम मेरे पाससे जावोगे, तब पूर्ववत् प्रीतियुक्त तुमसे मिलैगा, और ऐसा उसको विश्वास भी होगा कि यह वही मेरा पुत्र है, और मेरे प्रसादसे वह रात्री में सुखपूर्वक शयन करनेवालाभी होगा अर्थात् चिंतासे रहित होकर नींदभर सोवैगा और मृत्युके मुखसे छूटाहुवा तुमको देखकर क्रोधसे शांतहोगा ॥ ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१२) स्वर्गेलोकेनभयं किञ्चनास्ति नतत्रत्वंन जरयाबिभेति उभेतीर्त्वाअशनापिपासेशोकाति गोमोदतेस्वर्गलोके ॥ १२ ॥

पदच्छेदः

स्वर्गे लोके न भयम् किञ्च न अस्ति न तत्र त्वम् न जरया बिभेति उभे तीर्त्वा अशनापिपासे शोकातिगः मोदते स्वर्गलोके ॥

अन्वयः	पदार्थ
स्वर्गेलोके	स्वर्गलोकमें
किञ्चन	कुछभी
भयम्	भय
न	नहीं
अस्ति	है
+ च	और
तत्र	तहां
त्वम्	तुम मृत्युभी
न	नहीं
असि	हो
+ च	और
+ तत्र	तहां
जरया	जराअवस्थाकरके
कः	कोई पुरुष
न बिभेति	भयको नहीं प्राप्तहोताहै
+ च	और
अशना पिपासे	क्षुधा और पिपासा
उभे	दोनोंको
तीर्त्वा	तरकरके
शोकातिगः	शोकसेरहितहोताहुआ
स्वर्गलोके	स्वर्गलोकमें
मोदते	हर्षको प्राप्त होता है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

स्वर्गेलोकइति ॥ स्वर्गकी प्राप्तिका साधनभूत जो अग्नि है, तिसके पूछने की कामनावाला होकर प्रथम स्वर्ग के स्वरूपको नचिकेता पूंछता है॥स्वर्गेलोके॥ स्वर्गलोक से यहांपर ब्रह्मलोक का ग्रहणहै, ऐसे स्वर्गलोकमें जो रहते हैं, उनको रोगादिकों से जन्य किञ्चित् भी भय नहीं होता है, और न आप हे मृत्युभगवान् ! उस ब्रह्मलोक में रहकर किसीका नाश करते हैं, और न उस लोकमें जराअवस्थाका भयहै, और क्षुधा पिपासा सतातीहै, इनसबको अतिक्रमण करके पुरुष उसलोक में आनन्द को भोगता है ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

(१३) स त्वमग्निछं स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्र ब्रूहि तछं श्रद्दधानाय मह्यम् स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

सः त्वम् अग्निम् स्वर्ग्यम् अध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि तछं श्रद्दधानाय मह्यम् स्वर्गलोकाः अमृतत्वम् भजन्ते एतत् द्वितीयेन वृणे वरेण ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सः	= वह	अग्निम्	= अग्निको
उवाच	= कहता भया कि	अध्येषि	= जानते हो
मृत्यो	= हे मृत्युभगवन्	+ तु	= तो
		तम्	= उसको
+ यदि	= अगर	मह्यम्	= मुझ
त्वम्	= आप	श्रद्दधानाय	= श्रद्धावान् के लिये
स्वर्ग्यम्	= स्वर्ग साधक		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रब्रूहि = कहो
× यं ज्ञात्वा = जिसको जानकर
स्वर्गलोकाः = स्वर्गनिवासी
अमृतत्वम् = अमरभावको
भजन्ते = प्राप्त होते हैं
एतत् = इसीको
द्वितीयेन = दूसरे
वरेण = वर करके
वृणे = मांगता हूं ॥

भावार्थ ।

सत्वमग्निमिति–पूर्वोक्त गुणों करके युक्त स्वर्गसाधनभूत जो अग्नि है और जिसको आप जानते हैं उसविद्या को हे मृत्यो ! आप मुझ श्रद्धावान् नचिकेता के प्रति कहिये और तिसके अंग को भी मेरेप्रति कहिये और जिस अग्निविद्या करकेकर्मी स्वर्गलोकमें जाकर अमर होजाते हैं तिस को आप कृपाकरके मुझे दीजिये यह दूसरा वर मैं मांगता हूं ॥ १३ ॥

मूलम् ॥

(१४) प्रते ब्रवीमितदुमे निबोध स्वर्ग्यमग्निं नचिकेतः प्रजानन् अनन्तलोकाप्तिमथोप्रतिष्ठाम् विद्धि त्वमेनन्निहितं गुहायाम् ॥ १४ ॥

पदच्छेदः

प्रते ब्रवीमि तत् उ+मे निबोध स्वर्ग्यम् अग्निम् नचिकेतः प्रजानन् अनन्तलोकाप्तिम् अथो प्रतिष्ठाम् विद्धि त्वम् एनम् निहितम् गुहायाम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
नचिकेतः	= हे नचिकेता	अग्निम्	= अग्निको
× अहम्	= मैं	प्रजानन्	= जानताहुवा
स्वर्ग्यम्	= स्वर्गसाधक	प्रते	= तेरे प्रति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रवीमि = कहताहूं
तत् = उसको
मे = मुझसे
निबोध = जान तू
उ = और
अनन्तलोकाप्तिम् = स्वर्गमेंपहुँचानेवाली
अथो = और
प्रतिष्ठाम् = सबका आश्रयभूत
× च = और
गुहायाम् = हृदयरूपी गुहामें
निहितम् = स्थित
एनम् = इस अग्नि को
त्वम् = तू
विद्धि = जान ॥

भावार्थ ।

प्रतेब्रवीमीति–नचिकेताकी प्रार्थना सुनकर भगवान् यमराज नचिकेताके प्रति अग्निविद्याका उपदेश करतेहैं ॥ प्रतेब्रवीमि ॥ हे नचिकेता ! स्वर्गका साधक जो अग्निविद्याहै उसको मैं जानता हूं, उसको मैं कहताहूं, अबतुम एकाग्रमन करके उस अग्निविद्या को मेरे से सुनो, वह अग्नि नाशसे रहित स्वर्गलोककी प्राप्तिका साधन है, वही विराट्रूप जगतकी प्रतिष्ठाहै, वही विद्वानों के हृदयरूपी गुहामें स्थितहै, उसी करके कर्मी देवगतिको प्राप्त होते हैं ॥१४॥

मूलम् ॥

(१५) लोकादिमग्निन्तमुवाचतस्मैयाइष्टकाया वतीर्वायथा वासचापितत्प्रत्यवदद्यथोक्तमथास्यमृत्युःपुनरेवाहतुष्टः ॥ १५ ॥

पदच्छेदः

लोकादिम् अग्निम् तम् उवाच तस्मै याः इष्टकाः यावतीः वा यथा वा सः च अपि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् प्रत्यवदत् यथोक्तं अथ अस्य मृत्युः पुनः एव आह तुष्टः ॥

अन्वयः	पदार्थ
लोकादिम्	लोकोंकेआदि कारण
अग्निम्	अग्निको
च	और
याः	जो
इष्टकाः	ईंट के कुंड
यावतीः	जितनी होनी चाहिये उसको
वा	और
यथा	जिसप्रकार काहोना चाहिये
तम्	तिस सबको
तस्मै	नचिकेताके प्रति

अन्वयः	पदार्थ
तुष्टः	प्रसन्नचित्त
मृत्युः	यमभगवान्
उवाच	कहतेभये
अथच	और
सः	वहनचिकेता
अपि	भी
तत्	उसको
पुनः	फिर
एव	वैसाही
प्रत्यवदत्	कहताभया
यथोक्तम्	जैसाकियम महाराज ने
अस्य	उसके बारे में
आह	कहा था ॥

भावार्थ ।

लोकादिमिति–पृथिव्यादि लोकोंका सिद्ध करनेवाला प्रथम शरीर जो विराट् है, उसका साधक अग्नि है, तिसको नचिकेताके प्रति यमराजने कहा और हवनकुण्डमें जितनी ईंट लगती है उनके स्वरूप को और गिनती को भी यमने कहा, और कुण्ड बनाकर जिस प्रकार उसमें अग्निस्थापन कीजाती है तिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विधि को भी यमने कहा, फिर नचिकेता से पूंछा कि हे नच-केता! तुमने मेरी उपदेश कीहुई विद्या को भली प्रकार जाना या नहीं, हे नचिकेता! यदि तुम मुझ उपदेशकृत अग्निविद्या को समुझगये होतो कहो तब नचिकेताने कहा कि मैं सम्पूर्ण आप करके कहीहुई अग्निविद्या को जान लिया और यह कह करके जिसरीति से यमने नचिकेताके प्रति अग्निविद्या कहा था उसी रीतिसे नचिकेताने यमराज को सुनादिया यमराज सुन करके बड़े प्रसन्नहुये और आगेवाले मन्त्रमें उसको एक और वर देने को कहा ॥ १५ ॥

नोट-जैसा यमराज भगवान् ने अग्निका विधान वर्णन कियाथा वैसेही नचिकेता समुझकर उनको सुनाताभया ॥

मूलम् ॥

(१६) तमब्रवीत् प्रीयमाणो महात्मा वरन्तवेहाद्य ददामि भूयः तवैव नाम्ना भवितायमग्निःसृङ्कां चेमामनेकरूपां गृहाण ॥ १६ ॥

पदच्छेदः

तम् अब्रवीत् प्रीयमाणः महात्मा वरम् तव इह अद्य ददामि भूयः तव एव नाम्ना भविता अयम् अग्निः सृङ्काम् च इमाम् अनेकरूपाम् गृहाण ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तम्	तिसनचिकेतासे	+इदम्	यह
प्रीयमाणः	प्रसन्नहोकर	वरम्	वर
महात्मा	यमराज	तव	तुझको
अब्रवीत्	कहतेभयेकि	भूयः	और
		ददामि	देताहूं कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इह = संसार में
अद्य = अब
अयम् = यह
अग्निः = अग्नि
तवएव = तेरेही
नाम्ना = नामकरके
भविता = प्रसिद्धहोगी
च = और
इमाम् = यह
अनेकरूपाम् = विचित्ररूपवाली
सृङ्काम् = माला
गृहाण = ग्रहणकर ॥

भावार्थ ।

तमब्रवीदिति–नचिकेता से उदारचित्त यमराजभगवान् कहते हैं हे नचिकेता! हम तुम्हारी प्रज्ञा को देख तुमसे अति प्रसन्न हैं, तीनवर हमने तुमको देनेको कहा था, उनमें से दो वर हम तुमको देचुके हैं, एक वर बाकी है, उसके सिवाय हम प्रसन्न होकर अपनी तरफ से तुमको चतुर्थ वर देते हैं, संसार में तुम्हारेही नामसे यह अग्निविद्या प्रसिद्ध होगी, अर्थात् सबलोक इसको नचिकेतसंज्ञक अग्नि कहेंगे, यह माला जो अनेक प्रकारकी हम तुम्हारे प्रति देते हैं, इसको तुम ग्रहण करो नचिकेताने यमराज करके दीहुई मालाको ग्रहण किया १६ ॥

मूलम् ॥

(१७) त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्यसन्धिं त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू ब्रह्मयज्ञं देवमीड्यं विदित्वा निचाय्येमाᳫं शान्तिमत्यन्तमेति ॥ १७ ॥

पदच्छेदः

त्रिणाचिकेतः त्रिभिः एत्य सन्धिम् त्रिकर्मकृत् तरति जन्म मृत्यू ब्रह्मयज्ञम् देवम् ईड्यम् विदित्वा निचाय्य इमाम् शान्तिम् अत्यन्तम् एति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः		पदार्थ
त्रिभिः	=	तीनों माता पिता और आचार्यद्वारा
त्रिणाचिकेतः	=	तीनबार ग्रहण किया है अग्नि को जिसने ऐसा अग्निका उपासक पुरुष
सन्धिम्	=	अनुसन्धान यानी स्वर वर्ण और मात्रा को
एत्य	=	प्राप्त होकरके
त्रिकर्मकृत्	=	तीनों कर्मोंको अर्थात् यज्ञ अध्ययन और दान को करताहुआ
जन्ममृत्यू	=	जन्ममरणको यानी आवागमनको
तरति	=	पारकरजाता है
+ च	=	और
ब्रह्मजज्ञम्	=	ब्रह्महिरण्यगर्भ से उत्पन्नभये सर्वज्ञ
ईड्यम्	=	स्तुतिकरने योग्य
देवम्	=	वैश्वानर अग्नि आत्मदेव को
विदित्वा	=	जानकर
+ च	=	और
निचाय्य	=	अनुभव करके
इमाम्	=	उस
अत्यन्तम्	=	अत्यन्त
शान्तिम्	=	शान्तिको
एति	=	प्राप्तहोता है

मूलम् ॥

(१८) त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा य एवं विद्वांश्चिनुते नाचिकेतम् स मृत्युपाशान् पुरतः प्रणोद्य शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥ १८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

त्रिणाचिकेतः त्रयम् एतत् विदित्वा यः एवम् विद्वान् चिनुते नाचिकेतम् सः मृत्युपाशान् पुरतः प्रणोद्य शोकातिगः मोदते स्वर्गलोके ॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	जो
विद्वान्	विद्वान्
त्रिणाचिकेतः	त्रिणाचिकेत संज्ञक अग्निका सेवन करनेवाला
एवम्	इसप्रकार
विदित्वा	जानकरके
एतत्	इस
त्रयम्	तीनप्रकार की
नाचिकेतम्	नाचिकेत नामक अग्निको
चिनुते	उपासना करता है
सः	वह
पुरतः	पहिलेही से
मृत्युपाशान्	मृत्युके पाशों को
प्रणोद्य	काटकर
शोकातिगः	शोकरहित होताहुआ
स्वर्गलोके	स्वर्गलोक में
मोदते	प्रसन्न होताहै

भावार्थ ॥

त्रिणाचिकेत इति–यमराजभगवान् अब नाचिकेतसंज्ञक अग्निविद्या के फल को कहते हैं हे नचिकेता ! जो विद्वान् कुण्डके आकार का, उसमें लगेहुये ईंट को, उन के आकार और उनकी संख्या को जानकर त्रिणाचिकेत अग्नि को तीनबार स्थापन करके आत्मभावसे उसकी उपासना करता है वह मृत्युके पाशों से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छूट जाता है अथवा अधर्म अज्ञान और रागादि के पाशों से शरीरपात से पूर्वही उल्लङ्घन करके शोकरहित होकर आनन्द को प्राप्तहोता है ॥ १७ । १८ ॥

मूलम् ॥

(१९) एषतेऽग्निर्नचिकेतः स्वर्ग्योऽयमवृणीथा द्वितीयेन वरेण एतमग्निं तवैव प्रवक्ष्यन्ति जनासस्तृतीयं वरन्नचिकेतो वृणीष्व ॥ १९ ॥

पदच्छेदः ॥

एषः ते अग्निः नचिकेतः स्वर्ग्यः अयम् अवृणीथाः द्वितीयेन वरेण एतम् अग्निम् तव एव प्रवक्ष्यन्ति जनासः तृतीयम् वरम् नचिकेतः वृणीष्व ॥

अन्वयः	पदार्थ
एषः	यह
अयम्	वह
स्वर्ग्यः	स्वर्गसाधक
अग्निः	अग्नि है
नचिकेतः	हेनचिकेता
+ यम्	जिसको
अवृणीथाः	तूपूछताभया
+ इदम्	इसको
द्वितीयेन	दूसरे
वरेण	वरकरके
ते	तेरे लिये
+ दत्तः	दिया मैंने
एतम्	इस
अग्निम्	अग्नि को
तवएव	तेरेही
+ नाम्ना	नाम से
जनासः	लोक
प्रवक्ष्यन्ति	कथन करेंगे
नचिकेतः	हे नचिकेता
अद्य	अब
तृतीयम्	तीसरे
वरम्	वरको
वृणीष्व	मांगलेतू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

एषतेऽग्निरिति–दूसरे वरके प्रकरण को अब समाप्त करते हैं ॥ एषतेऽग्निः ॥ यम कहते हैं हे नचिकेता ! यह स्वर्गका साधनभूत अग्निविद्या को जो तुमने दूसरे वरकरके मांगा था मैंने तुम्हारेप्रति कहा, यह अग्निविद्या संसारमें तुम्हारेही नाम करके लोक कथन करेंगे, अब तुम अपने तीसरे वरको मांगो ॥ १९ ॥

मूलम् ॥

(२०) येयम्प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येकेनायमस्तीतिचैके एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाऽहं वराणामेषवरस्तृतीयः ॥ २० ॥

पदच्छेदः ॥

या इयम् प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये अस्ति इति एके न अयम् अस्ति इति च एके एतत् विद्याम् अनुशिष्टः त्वया अहम् वराणाम् एषः वरः तृतीयः ॥

अन्वयः	पदार्थ
+नचिकेताउवाच	नचिकेतापूछताभयाकि
एके	कोई एक
+आचार्य्याः	आचार्य्य
इति	ऐसा
+वदन्ति	कहते हैं कि
प्रेते	मरेहुये
मनुष्ये	पुरुष में
+आत्मा	आत्मा
अस्ति	है
च	और
एके	कोई आचार्य्य
+इति	ऐसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+वदन्ति = कहते हैं कि
नाऽस्ति = नहीं है
इयम् = यह
या = जो
विचिकित्सा = संशय है
तस्याः = तिसकी
+निवृत्तिः = निवृत्ति
या = जो है
एतत् = उसको
अहम् = मैं
त्वया = आप करके
अनुशिष्टः = शिक्षितहुआ
विद्याम् = जानूं
एषः = यह
तृतीयः = तीसरा
वरः = वर
वराणाम् = वरोंमें से
याचे = मांगताहूं मैं

भावार्थ ॥

येयंप्रेते इति–जो दो वर नचिकेताने यमराजसे पायेहैं, उनको अनित्य जानकर उनसे उपराम होकर और मुमुक्षु बनकर आत्माके याथात्म्यज्ञान को तीसरे वर करके नचिकेता मांगता है ॥ येयमिति ॥ हे महाराज ! जब संसार में प्राणधारी मनुष्य मरजाता है तब उस मृतक शरीर को देखकर कोई ऐसा कहता है कि देहादिसंघात से भिन्न लोकान्तर में गमन करनेवाला आत्मा है सो इस शरीर में से चला गया और कोई ऐसा कहते हैं कि देहादि संघात से व्यतिरिक्त याने भिन्न होकर लोकान्तर में गमन करनेवाला आत्मा नहीं है, वह इसी मृतक शरीर में मौजूद है इस प्रकार संदिग्ध जो आत्मतत्त्व है उसको मैं आपसे जानना चाहताहूं, आप मेरे गुरू हैं, इस तत्त्वज्ञान को तीसरे वर करके मैं आपसे मांगताहूं ॥२०॥

मूलम् ॥

(२१) देवैरत्रापिविचिकित्सितं पुरा न हि सुविज्ञेयमणुरेषधर्मः अन्यं वरं नचिकेतो वृणीष्व मा मोपरोत्सीरतिमासृजैनम् ॥ २१ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

देवैः अत्र अपि विचिकित्सितम् पुरा न हि सुविज्ञेयम् अणुः एषः धर्मः अन्यम् वरम् नचिकेतः वृणीष्व माम् उपरोत्सीः अति मा सृज एनम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
अत्र	इस ब्रह्मविद्या बिषे
देवैः	देवतों करके
अपि	भी
पुरा	पहले से
विचिकित्सितम्	संशय किया गया है
हि	क्योंकि
एषः	यह
अणुः	सूक्ष्म
धर्मः	धर्म
नसुविज्ञेयम्	अच्छे प्रकार जानने को अशक्य है
नचिकेतः	हे नचिकेता
अन्यम्	और
वरम्	वर को
वृणीष्व	मांगले तू
माम्	मुझको
माउपरोत्सीः	मतरोक
+मा	मेरे लिये
एनम्	इस वरको
अतिसृज	छोड़दे तू

भावार्थ ॥

देवैरत्रापीति—नचिकेता के तीसरे वरको सुनकर यमराज भगवान् नचिकेता की परीक्षा करते हैं, इस बातके जानने के लिये कि आया नचिकेता इस आत्मज्ञानरूपी तीसरे वरके योग्य है या नहीं, इसलिये प्रथम इस वरके बदले में और पदार्थोंका लोभ दिखाते हैं, ताकि वह लोभमें फँसकर आत्मविद्याको न चाहै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवैरत्रापि ॥ हे नचिकेता! देवतों को भी इस आत्मतत्त्व विषे संशयही है, वेभी यथार्थ नहीं जानते हैं, तब फिर मनुष्य तिस आत्मतत्त्वको कैसे निस्सन्देह जानेंगे, क्योंकि यह आत्मतत्त्व अति-दुर्विज्ञेय है, और जो सबका अधिष्ठान आत्मा है सो अतिसूक्ष्म है, इसवास्ते हे नचिकेता! आत्मज्ञानसे अतिरिक्त और वरको तुममांगो, इस वरके लेनेमें तुम हमसे हठ मतकरो ॥ २१ ॥

मूलम् ॥

(२२) देवैरत्रापिविचिकित्सितं किल त्वं च मृत्यो यन्न सुविज्ञेयमात्थ वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यो नान्यो वरस्तुल्य एतस्य कश्चित् ॥ २२ ॥

पदच्छेदः ॥

देवैः अत्र अपि विचिकित्सितम् किल त्वम् च मृत्यो यत् न सुविज्ञेयम् आत्थ वक्ता च अस्य त्वादृक् अन्यः न लभ्यः न अन्यः वरः तुल्यः एतस्य कश्चित् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अत्र	= इस विषय में	यत्	= जो
देवैः	= देवतों करके	त्वम्	= आप
अपि	= भी	एनम्	= इसको
विचिकित्सितम्	= संशय किया गया है	नसुविज्ञेयम्	= दुर्विज्ञेय
+तथास्तु	= सो ठीक है	आत्थ	= कहतेहो
च	= और	किल	= सोभीठीकहै
मृत्यो	= हेमृत्युभगवान्	+परन्तु	= परंतु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्य = इसका
वक्ता = कहनेवाला
त्वादृक् = आपकेतुल्य
अन्यः = और कोई
नलभ्यः = मिलनेयोग्य-
नहीं है

च = और
अन्यः = दूसरा
कश्चित् = कोई
वरः = वर
एतस्य = इसके
नतुल्यः = तुल्यभीनहींहै

भावार्थ ॥

देवैरत्रापीति भगवान् यमकी बातोंको श्रवण करके अब नचिकेता कहता है, हे यम ! आप कहते हैं कि देवतोंको भी इस आत्मतत्त्व बिषे संशय है, और फिर यहभी कहते हैं कि आत्मतत्त्व दुर्विज्ञेयहै, इसलिये ऐसा मालूम होताहै कि आत्मतत्त्वका वक्ता और द्रष्टा आपही हैं, आपसे अतिरिक्त और कोई दूसरा नहीं मुझको दिखाई देताहै, और न इस वरके तुल्य और कोई वर मैं देखताहूं, क्योंकि ब्रह्मात्मा से भिन्न सारा प्रपंच अनित्य है ॥ २२ ॥

मूलम् ॥

(२३) शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान् भूमेर्म्महदायतनं वृणीष्व स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि ॥ २३ ॥

पदच्छेदः ॥

शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्तिहिरण्यम् अश्वान् भूमेः महत् आयतनम् वृणीष्व स्वयम् च जीव शरदः यावत् इच्छसि ॥

अन्वयः	पदार्थ
+नचिकेतः	= हे नचिकेता
शतायुषः	= सौवर्षकीआयुवाले

अन्वयः	पदार्थ
पुत्रपौत्रान्	= पुत्रपौत्रों को
वृणीष्व	= मांगलेतू
बहून्	= बहुतसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पशून् = पशुवोंको	वृणीष्व = मांगले
हस्तिहिरण्यम् = हस्ती और द्रव्यों को	च = और
अश्वान् = घोड़ोंको	स्वयम् = तूभी
भूमेः = पृथिवीके	यावत् = जबतक
महत् = बड़े	इच्छसि = इच्छाकरै
आयतनम् = स्थानकोयानेलोकोंको	तावत् = उतने
	शरदः = वर्षोंतक
	जीव = जीतारहै

भावार्थ ॥

शतायुषइति–यमराज नचिकेताके वैराग्यकी परीक्षामें प्रथम भोगोंको दिखाकरके उसको लोभायमान करते हैं ॥ शतायुषः ॥ हे नचिकेता ! सौ बरस जीनेवाले पुत्र और पौत्रोंको तुम मांगलो, बहुतसे हस्ती घोड़े आदिक पशुवोंको मांगलो, और स्वर्णको भी मांगलो, पृथिवीपर चक्रवर्ती राज्यको भी मांगलो, और जीनेकी इच्छापर्यन्त आयु मांगलो ॥ २३ ॥

मूलम् ॥

(२४) एतत्तुल्यं यदि मन्यसे वरं वृणीष्व वित्तं चिरजीविकाञ्च महाभूमौ नचिकेतस्त्वमेधि कामानां त्वा कामभाजं करोमि ॥ २४ ॥

पदच्छेदः ॥

एतत्तुल्यम् यदि मन्यसे वरम् वृणीष्व वित्तम् चिरजीविकाम् च महाभूमौ नचिकेतः त्वम् एधि कामानाम् त्वा कामभाजम् करोमि ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
यदि	अगर
एतत्तुल्यम्	इस वर के तुल्य
नचिकेतः	हे नचिकेता
वित्तम्	धनको
च	और
चिरजीविकाम्	बड़ीआयुको
वरम्	श्रेष्ठ
मन्यसे	समझता है तू
तु	तो
वृणीष्व	मांगले
महाभूमौ	महान्भूमि में
त्वम्	तू
एधि	वृद्धिको प्राप्तहो
कामानाम्	सबभोगोंका
त्वा	तुझको
कामभाजम्	भोग्यके योग्य
करोमि	करताहूं मैं

भावार्थ ॥

एतत्तुल्यमिति–और ऊपर कहेहुये वस्तुके तुल्य औरभी किसी वस्तुको तुम जानतेहो उसको भी हमसे मांगलो, बड़े क़ीमती रत्नादिक को और चिरकाल आयुको मांगलो, और हे नचिकेता ! इस महान्भूमिका तू महाराजाहो और जिस पदार्थ की तुम्हारे में कामना हो उस पदार्थ को तुम मेरे आशीर्वादसे प्राप्तहो ॥ २४ ॥

मूलम् ॥

(२५) ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान् कामांश्छन्दतः प्रार्थयस्व इमा रामाः सरथाः सतूर्या नहीदृशालम्भनीया मनुष्यैःआभिर्मत्प्रताभिः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिचारयस्व नचिकेतो मरणं मानुप्राक्षीः ॥ २५ ॥

पदच्छेदः ॥

ये ये कामाः दुर्लभाः मर्त्यलोके सर्वान् कामान् छन्दतः प्रार्थयस्व इमाः रामाः सरथाः सतूर्याः न हि ईदृशाः लम्भनीयाः मनुष्यैः आभिः मत्प्रत्ताभिः परिचारयस्व नचिकेतः मरणम् मा अनुप्राक्षीः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
ये ये	जो जो	ईदृशाः	वैसीस्त्रियां
कामाः	विषयभोग्य	+इह	इस मनुष्य लोकमें
मर्त्यलोके	मनुष्यलोकमें	मनुष्यैः	मनुष्यों करके
दुर्लभाः	दुर्लभ हैं	नलम्भनीयाः	नहीं प्राप्त होने योग्य हैं
+ तान्	उन	आभिः	इन
सर्वान्	सब	मत्प्रत्ताभिः	मेरीदीहुई अप्सराओं से
कामान्	भोगोंको	परिचारयस्व	अपनी सेवा क-रवा
छन्दतः	इच्छानुसार	नचिकेतः	हेनचिकेता
प्रार्थयस्व	मांगलेतु		
+ यथा	जैसी		
इमाः	ये		
रामाः	अप्सरायें		
सरथाः	सहित रथोंके		
+च	और		
सतूर्याः	सहित बाजों के हैं		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ परन्तु = परंतु
मरणम् = मरणस-
म्बन्धी

+ प्रश्नम् = प्रश्नको
मानुप्राक्षीः = मत पूछ

भावार्थ ॥

येयेकामाइति–यमराज कहते हैं हे नचिकेता ! इस लोकमें जो पदार्थ मनुष्योंको दुर्लभहैं उन सबको इच्छापूर्वक मांगो, और जो स्वर्गीय पुरुषोंके भोगकेलिये सुंदर २ अप्सराहैं उनको भी तुम मांगो, और सुंदर २ रथोंको और अनेकप्रकारके बाजोंको भी तुम मांगो, हे प्रियदर्शन ! अप्सरा मनुष्योंको दुर्लभ हैं, मुझकरके दीहुई अप्सराओंसे तुम अपनी सेवा करावो, और विषयानन्दको प्राप्तहोवो, पर हे नचिकेता ! मरणसम्बन्धी वरको तुम मत मांगो, इस मेरी आज्ञाको उल्लङ्घन मत करो ॥ २५ ॥

मूलम् ॥

(२६) श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत सर्वेन्द्रियाणाञ्जरयन्ति तेजः अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव वाहास्तव नृत्यगीते ॥ २६ ॥

पदच्छेदः ॥

श्वोभावाः मर्त्यस्य यत् अन्तक एतत् सर्वेन्द्रियाणाम् जरयन्ति तेजः अपि सर्वम् जीवितम् अल्पम् एव तव एव वाहाः तव नृत्यगीते ॥

अन्वयः पदार्थ
अन्तक = हे यमराज
हे नाशकर्त्ता
यत् = जो

अन्वयः पदार्थ
श्वोभावाः = ये संशय यु-
क्त भाववाले
पदार्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मर्त्यस्य = मनुष्य के
सर्वेन्द्रियाणाम् = सब इन्द्रियोंके
तेजः = तेजको
जरयन्ति = क्षीण करते हैं
अपि = और
एव = निश्चयकरके
एतत् = यह
सर्वम् = सम्पूर्ण
जीवितम् = आयु
अल्पम् = अल्पही है
+तस्मात् = इसलिये
तव = आपके
वाहाः = रथादिक सवारियां
+ च = और
नृत्यगीते = नाचना गाना
तवएव = आपहीके पास रहैं

भावार्थ ॥

श्वोभावामर्त्यस्येति–यमराजमहाराज जिन २ उत्तम भोगों की प्रशंसा करके नचिकेता को लोभाना चाहते थे उनको अनित्य जानकर उनमें जो दोष है उसको नचिकेता दिखाता है ॥ श्वोभावाः ॥ नचिकेता कहता है हे मृत्यो! जिन भोगोंका आप हमको लोभ दिखातेहो वे सब क्षणभंगुर हैं, याने आज हैं कल नहीं, और जो अप्सरा आदिक हैं वे मनुष्य के इन्द्रियों के तेज को नाश करनेवाली हैं, धर्म, यश, प्रज्ञा आदिकों को नाश करके पुरुष को अनर्थ में डालनेवाली हैं, और मनुष्यकी जो आयु है वहभी अल्पही है, इसलिये ये सब अप्सरा आदिक भोग आपही के पासरहैं, मैं इन नाशी भोगों को नहीं चाहताहूं ॥ २६ ॥

मूलम् ॥

(२७) न वित्तेन तर्पणीयोमनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा जीविष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं वरस्तु मे वरणीयः स एव ॥ २७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

न वित्तेन तर्पणीयः मनुष्यः लप्स्यामहे वित्तम् अद्राक्ष्म चेत् त्वा जीविष्यामः यावत् ईशिष्यसि त्वम् वरः तु मे वरणीयः सः एव ॥

अन्वयः	पदार्थ
मनुष्यः	मनुष्य
वित्तेन	धन करके
नतर्पणीयः	तृप्त होने योग्यनहींहै
वित्तम्	धन को
लप्स्यामहे	पावेंगे हम
चेत्	जब कि
अद्राक्ष्म	देखाहै हमने
त्वा	आपको
च	और
जीविष्यामः	जीतेरहेंगे हम
यावत्	जबतक
ईशिष्यसि	राजकरोगे तुम
तु	परंतु
मे	मेरे
वरणीयः	मांगनेयोग्य
वरः	वर
सःएव	वही मृतक संबन्धी है

भावार्थ ॥

नवित्तेनेति-हे यममहाराज! भोगोंके समुदाय करके कोई मनुष्य तृप्ति को नहीं प्राप्त होताहै, और धनादिकोंकी प्राप्ति तो आपके दर्शनसेही होजायगी, इनके मांगनेकी कुछ आवश्यकता नहीं, और चिरकालतक जीना भी मुझको आप अपना शिष्य जानकर के देवेंगे, इसके मांगनेकी कोईभी जरूरत नहीं, मैं अपना तीसरा वर जो आप से मांगा है वही लूंगा, आप कृपा करके वही वर दीजिये ॥ २७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(२८) अजीर्यताममृतानामुपेत्य जीर्यन्मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन् अभिध्यायन् वर्णरतिप्रमोदानतिदीर्घे जीविते को रमेत ॥ २८ ॥

पदच्छेदः ॥

अजीर्यताम् अमृतानाम् उपेत्य जीर्यन् मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन् अभिध्यायन् वर्णरतिप्रमोदान् अतिदीर्घे जीविते कः रमेत ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अजीर्य्यताम्	जरारहित	वर्णरतिप्रमोदान्	रूपप्राति विषयानन्दको यानी अप्सरादि विषयों को
अमृतानाम्	देवतनको	अभिध्यायन्	विचार करता हुआ
उपेत्य	प्राप्तहोकर	अतिदीर्घे	अतिशय
जीर्य्यन्	जरामरणवान्	जीविते	जीवनेविषे
क्वधःस्थः	पृथिवी में रहनेवाला	रमेत	रमणकरैगा
कः	कौन		
प्रजानन्	विवेकी		
मर्त्यः	पुरुष		

भावार्थ ।

अजीर्यतामिति—जिस पुरुषको उत्तम फलकी प्राप्ति होतीहो तो उस उत्तम फलको त्याग करके निकृष्ट फलकी इच्छा करे तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह मूर्ख है, मैं अपने उत्तम फल कोही लेऊंगा ॥ अजीर्य्यताम् ॥ हे यम ! जरा मरण धर्मवाला जो मनुष्य है वह चिरकालस्थायी जो देवता हैं उनके समीप प्राप्तहोकर और उनसे उत्तम फलकी प्राप्तिकी इच्छा करके फिर कैसे निकृष्ट फलकी कामना करसक्ता है, मैं अपने उसी उत्तम वरको लेऊंगा जिसको कि मैंने मांगा है । मनुष्य जराआदिक दोषों से संयुक्त है और पृथिवीपर सुन्दर स्त्रियों के साथ क्रीड़ा करने से जो हर्ष होता है वह हर्ष दुःखरूप है उनमें और अतिदीर्घ आयु की कामना में कौन बुद्धिमान् पुरुष आसक्त होवैगा ॥ २८ ॥

मूलम् ॥

(२९) यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत् योऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टोनान्यन्तस्मान्नचिकेता वृणीते ॥ २९ ॥

पदच्छेदः ॥

यस्मिन् इदम् विचिकित्सन्ति मृत्यो यत् साम्पराये महति ब्रूहि नः तत् यः अयम् वरः गूढम् अनुप्रविष्टः न अन्यम् तस्मात् नचिकेता वृणीते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यस्मिन्	= जिसमृत-कविषे	साम्पराये	= परलोक की गति विषे
+ च	= और		
यस्मिन्महति	= जिसबड़ी	यत्	= जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इदम् = यह	अनुप्रविष्टः = गुप्त
विचिकित्सन्ति = संशयक-रते हैं	वरः = वर
तत् = तिसको	तस्मात् = तिससे भिन्न
नः = मेरेलिये	अन्यम् = और
ब्रूहि = कहतू	+वरम् = वरको
यः = जो	नचिकेताः = नचिकेता
अयम् = यह	न = नहीं
गूढम् = कठिन	वृणीते = मांगता है ॥
+च = और	

इति प्रथमाध्यायेप्रथमावल्लीसंपूर्णा ॥

भावार्थ ।

यस्मिन्निति–नचिकेता कहता है, हे मृत्यो ! जिस आत्मतत्त्व प्रति देवता भी संशयको प्राप्त हैं, यानी शरीर से अतिरिक्त लोकान्तर, देशान्तर, जन्मान्तर बिषे गमन करनेवाला कोई आत्मा है वा नहीं है, और जिसका निर्णय देवता भी नहीं करसक्ते हैं, तिस आत्मतत्त्वका निर्णय आप मेरेप्रति करिये, मैं जानताहूं कि आत्माका ज्ञान गोप्य है, परन्तु मैं अपने इस गूढ़वरको छोड़कर और किसीवरको नहीं चाहताहूं और न लेऊंगा ॥ २९ ॥

इति कठोपनिषदिप्रथमावल्लिः ॥ १ ॥

मूलम् ॥

(१) ॐ अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे नानार्थे पुरुषꣳसिनीतः तयोः श्रेय आददानस्य साधुभवति हीयतेऽर्थाद्यउ प्रेयोवृणीते १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

अन्यत् श्रेयः अन्यत् उत एव प्रेयः ते उभे नानार्थे पुरुषम् सिनीतः तयोः श्रेयः आददानस्य साधु भवति हीयते अर्थात् यः उ प्रेयः वृणीते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यमराज उवाच	= यमराज बोलते भये कि	तयोः	= उन दोनों में से
श्रेयः	= श्रेययाने विद्या	श्रेयः	= विद्या
अन्यत्	= और ही है	आददानस्य	= ग्रहण करनेवाले का
उत	= और	साधु	= कल्याण
प्रेयः	= प्रेययानेअविद्या	भवति	= होता है
अन्यत् एव	= औरही है	उ	= और
ते	= वे	यः	= जो
उभे	= दोनों	प्रेयः	= अविद्या को
नानार्थे	= भिन्न२प्रयोजन के वास्ते	वृणीते	= ग्रहण करता है
पुरुषम्	= पुरुषको	+स	= वह
सिनीतः	= बांधते हैं	अर्थात्	= पुरुषार्थ से
		हीयते	= हीन होता है ॥

भावार्थ ।

जब यमराज ने नचिकेता की परीक्षा करके जाना कि वह आत्मविद्याका अधिकारी है तब विद्या और अविद्याका विभाग करके नचिकेता के प्रति आत्मविद्याको उपदेश करते हैं ॥ अन्यच्छ्रेयइति ॥ यमराज कहते हैं हे नचिकेता ! मोक्षकाहेतु जो विद्याहै सो पृथक् है और विषय भोगका साधनकर्म पृथक् है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्या, और कर्म यह दोनों भिन्न २ फलवाले होनेसे मोक्ष और विषय भोगका अर्थी जो पुरुष है तिसको बंधायमान करते हैं, उन दोनोंमें से जो श्रेय याने मोक्षका ग्रहण करनेवाला है, उसको मोक्षरूपी नित्यफलकी प्राप्ति होतीहै, और जो अविवेकी अविद्यात्मक कर्मका ग्रहण करनेवाला है उसको निकृष्टनाशी फल मिलताहै और वह मोक्षसे गिरजाताहै याने मोक्षको नहीं प्राप्त होता है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

(२) श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः श्रेयोहिधीरोऽभिप्रेयसोवृणीते प्रेयोमन्दो योगक्षेमाद्वृणीते ॥ २ ॥

पदच्छेदः

श्रेयः च प्रेयः च मनुष्यम् एतः तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः श्रेयः हि धीरः अभिप्रेयसः वृणीते प्रेयः मन्दः योगक्षेमात् वृणीते ॥

अन्वयः	पदार्थ
श्रेयः	श्रेय
च	और
प्रेयः	प्रेय
मनुष्यम्	मनुष्यको
एतः	प्राप्त होते हैं
तौ	उनदोनों को
सम्परीत्य	देखकरके
धीरः	बुद्धिमान् पुरुष (उनको)
विविनक्ति	पृथक् २ करता है
धीरः	धीरपुरुष
श्रेयः	श्रेयको
हि	ही
अभिप्रेयसः	प्रेय से भिन्न
वृणीते	ग्रहण करता है
च	और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन्दः = मन्दबुद्धिवाला पुरुष	योगक्षेमात् = योगक्षेम करके
प्रेयः = प्रेयकोही	वृणीते = ग्रहण करताहै॥

भावार्थ ।

श्रेयश्चेति (प्र०) जब पुरुषकेही आधीन मोक्ष और बन्धन के साधन हैं तब फिर क्योंनहीं पुरुष मोक्षकेही साधनों को करता है ॥ उ० ॥ मोक्ष और विषयभोग अर्थात् ब्रह्मविद्या और कर्मोंका भेदज्ञान लोगोंको नहीं है इसीलिये मोक्षके साधनों को लोक नहीं करते हैं, इसी वार्त्ताको मन्त्रभी कहता है ॥ श्रेयश्चप्रेयश्चेति ॥ श्रेय और प्रेय याने ब्रह्मविद्या और कर्म यह दोनों पुरुष को प्राप्तहोने योग्य हैं, धीरपुरुष उन दोनों के फलको पृथक् २ करके देखता है, और विचार व अल्पपरिश्रम करके साध्य महान् फलवाली जो आत्मविद्या है उसको ग्रहण करता है, और भारी परिश्रम करके साध्य अल्पनाशी फलवाला जो कर्म है, उसको त्यागता है जो अल्पबुद्धिवाला पुरुष है, वह योगक्षेम करके अविद्यारूपी कर्मोंकाही ग्रहण करता है ॥ २ ॥

मूलम् ॥

(३) सत्वं प्रियान् प्रियरूपांश्च कामानभिध्या यन्नचिकेतोऽत्यस्राक्षीः नैताᳯंसृङ्कांवित्तमयीमवाप्तोयस्यां मज्जन्ति बहवोमनुष्याः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

सः त्वम् प्रियान् प्रियरूपान् च कामान् अभिध्यायन् नचिकेतः अत्यस्राक्षीः न एताम् सृङ्काम् वित्तमयीम् अवाप्तः यस्याम् मज्जन्ति बहवः मनुष्याः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
सः	सो
त्वम्	तू
नचिकेतः	हे नचिकेता
प्रियान्	प्रियपुत्र कलत्र धनादिकों को
च	और
प्रियरूपान्	प्रियरूप
कामान्	भोगों को
अभिध्यायन्	विचारता हुआ
अत्यस्राक्षीः	त्यागताभया

अन्वयः	पदार्थ
एताम्	इस
सृङ्काम्	बाहुल्यता
वित्तमयीम्	धनयुक्तकर्मगतिको
यस्याम्	जिसमें
बहवः	बहुत से
मनुष्याः	मनुष्य
मज्जन्ति	डूबते हैं
न	नहीं
अवाप्तः	प्राप्त होता भया तू ॥

भावार्थ ।

सत्वमिति–यम कहते हैं हे नाचिकेता ! तुम मोक्षके अधिकारी हो, तुमने पुत्रादिक और अप्सराआदिक जोकि प्रिय विषय हैं, उनको अनित्य और असार जानकर और उनमें दोष दृष्टि करके उनका त्याग किया है, यह तुम्हारी बड़ी बुद्धिमत्ता है, यह जो मूढ़जनोंकी प्रवृत्तिका विषयभूत धनादिक हैं, और जिसमें अनेक अज्ञानी पुरुष मग्नहोते हैं, उन सबको तुमने त्याग किया है, तुम धन्यहो, धन्यहो ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

(४) दूरमेते विपरीते विषूची अविद्या या च विद्येति ज्ञाता विद्याभीप्सिनन्नचिकेतसंमन्येन त्वाकामा बहवोलोलुपन्तः ॥ ४ ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

दूरम् एते विपरीते विषूची अविद्या च या विद्या इति ज्ञाता विद्याभीप्सिनम् नचिकेतसम् मन्ये न त्वा कामाः बहवः लोलुपन्तः ॥

अन्वयः	पदार्थ
एते	ये दोनों
या	जो
विद्या	विद्या
च	और
अविद्या	अविद्या
इति	करके
ज्ञाता	प्रसिद्ध हैं
ते	वे
दूरम्	अत्यन्त
विपरीते	एकदूसरेसे विरुद्ध धर्मवाली
च	और
विषूची	भिन्न भिन्न फल वाली हैं

अन्वयः	पदार्थ
त्वा	तुझ
नचिकेतसम्	नचिकेता को
विद्याभीप्सिनम्	विद्याका चाहनेवाला
मन्ये	मानता हूं मैं
+ हि	क्योंकि
+ त्वाम्	तुझको
बहवः	बहुत
कामाः	भोग भी
न लोलुपन्तः	नहीं लुभाते भये ॥

भावार्थ ।

दूरमेतइति–विद्या और अविद्या के स्वरूप में और उनदोनों के फलमें जो विरोध है उसको दिखलाते हैं ॥ दूरमेते ॥ यह जो वक्ष्यमाण विद्या और अविद्या हैं, सो दोनों स्वरूपसेही एक दूसरे के विरोधी और परस्पर विलक्षण हैं, और भिन्न२ फलवाली भी हैं, कर्मरूप अविद्या विषय सुखका साधन है, और आत्मज्ञान;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप विद्या मोक्षका साधन है ॥ हे नचिकेता ! इन दोनों के मध्य विषे मैं तुमको विद्या अर्थात् मोक्षका अधिकारी मानताहूं ॥ क्योंकि अनेकप्रकार की जो कामना अप्सरा आदिक विषयभोग हैं उन सबको तुमने त्यागदिया ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

(५) अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

अविद्यायाम् अन्तरे वर्त्तमानाः स्वयम् धीराः पण्डितम्मन्यमानाः दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढाः अन्धेन एव नीयमानाः यथा अन्धाः ॥

अन्वयः	पदार्थ
अविद्यायाम्	अविद्याके
अन्तरे	मध्य विषे
वर्त्तमानाः	वर्त्तते हुये
मूढाः	मूढजन
स्वयम्	अपने को
धीराः	धीर
पण्डितम्	पण्डित
मन्यमानाः	माननेवाले
दंद्रम्यमाणाः	अनेक कुटिलभेषको धारणकरतेहुये
परियन्ति	भ्रमते रहते हैं
यथा	जैसे
अन्धः	अन्धापुरुष
अन्धेनएव	अन्धे करकेही
नीयमानाः	लेगयाहुआ भ्रमताहै तैसे॥

भावार्थ ।

अविद्यामन्तरइति ॥ इसप्रकार मोक्षार्थी नचिकेता की स्तुति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को करके यमराज अब शास्त्रविहित कर्मोंके अनुष्ठान करनेवाले अज्ञानियोंकी निंदा करतेहैं ॥ अविद्यायामन्तरे ॥ अविद्या और अविद्याका कार्य्य जो कर्म है उसके अभिमानी जो अविवेकी मूढ़जन हैं, वे कहते हैं कि अलौकिक बुद्धिमान् हमहीं हैं, और अपने को ही शास्त्री पण्डित मानते हैं, और अपने तुल्य दूसरे किसीको भी नहीं मानते हैं, और अत्यन्त कुटिल मार्ग जो जरा मृत्यु रोग करके दूषितहैं तिसीकी वे इच्छा भी करते हैं, और इसीकारण वे अनेक प्रकारके अनर्थों कोही प्राप्तहोते हैं, जैसे एक अन्धा दूसरे अन्धेको मार्ग दिखलाने के लिये ले जाताहै, और आपभी गड्ढेमें गिरता है और दूसरेको भी गिराता है, तैसे वे पण्डित अभिमानी कर्मीभी हैं, आप तो अनर्थरूपी संसारको प्राप्तहोते ही हैं औरों कोभी अपने साथ ले जाते हैं ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

(६) न साम्परायः प्रतिभाति बालम्प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम् अयं लोको नास्ति पर इति मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

न साम्परायः प्रतिभाति बालम् प्रमाद्यन्तम् वित्तमोहेन मूढम् अयम् लोकः न अस्ति परः इति मानी पुनः पुनः वशम् आपद्यते मे ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
साम्परायः	= शास्त्रोक्तकर्म	बालम्	= अविवेकी
वित्तमोहेन	= धन पुत्रादि मोह करके	प्रमाद्यन्तम्	= प्रमादीको
मूढम्	= मूढ़	नप्रतिभाति	= नहीं प्रकाशता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अयम् = यही
लोकः = लोक है
परः = परलोक
नअस्ति = नहीं है
इति = ऐसा
मानी = मानने वाला पुरुष
पुनःपुनः = बारंबार
मे = मुझयमराजके
वशम् = वशको
आपद्यते = प्राप्त होता है॥

भावार्थ।

नसांपरायइति–पूर्वोक्त मन्त्र करके शास्त्रविहित कर्मों के करनेवालोंकी यमराज ने निंदा की है अब इस मन्त्रकरके निषिद्धकर्मोंके करनेवालों की भी यमराज निंदा करते हैं ॥ नेति॥ सांपराय नाम परलोकका है, तिसकी प्राप्तिका साधन कर्म उपासना आदिक हैं, सो कर्मउपासना आदिक विवेक से शून्य पुरुषों को अच्छे नहीं लगते हैं, क्योंकि वे प्रमादी हैं, और न उनको कर्मउपासना का फल मिलताहै, क्योंकि उनका चित्त स्त्री धनादिकों की प्राप्तिमेंही लगा रहता है, और धनके लोभसे उनके अन्तःकरण आच्छादित हैं, इसी वास्ते वे नास्तिक हैं, क्योंकि वह कहते हैं कि यह जो दृश्यमान स्त्री पुत्रादिकों करके युक्त लोक है वही सत्यहै, जोकि दिखाई नहीं पड़ता है वह असत्है, यमराज भगवान् कहते हैं वे बार २ जन्मते मरते हैं, और पुनः २ मेरेही पास आतेहैं, और मैंहीं उनको तुच्छयोनीमें डालकर शासना देताहूं॥६॥

मूलम् ॥

(७) श्रवणायापिबहुभिर्योनलभ्यः शृण्वन्तोपिबहवोयन्न विद्युराश्चर्य्योवक्ता कुशलोऽस्यलब्धाऽऽश्चर्य्योज्ञाता कुशलानुशिष्टः ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

श्रवणाय अपि बहुभिः यः न लभ्यः शृण्वन्तः अपि बहवः यम् न विद्युः आश्चर्य्यः वक्ता कुशलः अस्य लब्धा आश्चर्य्यः ज्ञाता कुशलानुशिष्टः॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो
बहुभिः	= बहुतों करके
श्रवणाय	= सुननेके लिये
अपि	= भी
नलभ्यः	= नहीं प्राप्तहोने योग्य है
+ च	= और
यम्	= जिसको
शृण्वन्तः	= सुनते हुये
अपि	= भी
बहवः	= बहुतेरे
नविद्युः	= नहीं जानते हैं
इति	= ऐसे
वक्ता	= आत्मा का कहनेवाला
आश्चर्यः	= आश्चर्यरूप है
+ च	= और
अस्य	= इसका
लब्धा	= पानेवाला
कुशलः	= निपुण है
+च	= और
अस्य	= इसका
ज्ञाता	= जाननेवाला
कुशलानुशिष्टः	= श्रोत्रियब्रह्मनेष्ठि आचार्य से शिक्षितहुवा भी
आश्चर्यः	= आश्चर्यरूपहै॥

भावार्थ ।

श्रवणायापीति–यमराज कहते हैं हे नचिकेता ! संसाररूपी चक्रमें भ्रमण करते जो अनेकपुरुष हैं उनमें से कोई बिरलाही तुम्हारे सदृश मोक्षका भागी होताहै, क्योंकि आत्मतत्त्व बड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्विज्ञेय है इसीवास्ते बहुत से पुरुषों को तो यह आत्मतत्त्व श्रवणकरने को भी नहीं मिलताहै, और बहुत से पुरुष नित्यश्रवण भी करते हैं तब भी नहीं जानसक्ते हैं, क्योंकि उनका अन्तःकरण मलीन है, यमराज कहते हैं जैसे इस आत्माका श्रोता दुर्लभ है तैसेही इसका वक्ताभी दुर्लभ है,इस आत्माको श्रवण करके भी जानना कठिन है,जिसने आत्माका साक्षात्कार करलिया है,ऐसा ब्रह्मवित् आचार्य कोई बिरलाही संसार में होता है ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

(८) ननरेणावरेण प्रोक्तएषः सुविज्ञेयोबहुधा चिन्त्यमानोऽनन्यप्रोक्ते गतिरत्र नास्त्यणीयान् ह्यतर्क्यमणुप्रमाणात् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

न नरेण अवरेण प्रोक्तः एषः सुविज्ञेयः बहुधा चिन्त्यमानः अनन्यप्रोक्ते गतिः अत्र न अस्ति अणीयान् हि अतर्क्यम् अणुप्रमाणात् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अवरेण	= अश्रेष्ठतर्की	नसुविज्ञेयः	= नहीं सम्यक् प्रकार जानने योग्य है
नरेण	= पुरुषकरके		
बहुधा	= बहुतप्रकारसे		
प्रोक्तः	= कहाहुआ और	+ च	= और
चिन्त्यमानः	= विचाराहुआ	अनन्यप्रोक्ते	= अद्वैत वादि आचार्यकर के कहे हुये
एषः	= यहआत्मा		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अत्र = इस आत्मा बिषे	+एषः आत्मा = यह आत्मा
गतिः = कोई चिंता या शंका	अतर्क्यम् = तर्करहित
नअस्ति = नहीं है	अणुप्रमाणात् = सूक्ष्म परमाणु से भी
हि = क्योंकि	अणीयान् = सूक्ष्म है ॥

भावार्थ ।

ननरेणेति–आत्माके वक्ता और ज्ञाताकी दुर्लभता में जो कारण है उसको कहतेहैं। जिसने आप अपने आत्माका साक्षात्कार नहीं कियाहै उस बलहीनका कहाहुवा यह आत्मा सम्यक्ज्ञात नहीं होताहै, क्योंकि बहुत प्रकारके वादियोंका जो विवाद है वही आत्मा के जानने में हानिहै, कोई कहता है आत्माहै, कोई कहता नहीं है, कोई उसको कर्त्ता कहता है, कोई अकर्त्ता कहता है, कोई शुद्ध कोई अशुद्ध बताताहै, इसप्रकार बहुत तरहके विवाद हैं, जिसके कारण आत्मा यथार्थ ज्ञात नहीं होताहै ॥ प्र० ॥ तब फिर किस करके कहाहुवा आत्मा सुष्टुज्ञात होताहै? ॥ उ० ॥ अनन्यप्रोक्तेति॥ मैं ब्रह्मसे भिन्न नहींहूं और न मेरेसे ब्रह्म भिन्न है इसप्रकार के ज्ञानवान् आचार्य्य के उपदेश से जो आत्मज्ञान है वह संशयात्मक और विपर्ययात्मक नहीं होताहै, यह आत्मा अतिसूक्ष्म है, इसलिये विना आत्मावित् आचार्य्य के उपदेशसे केवल तर्क करके प्राप्तहोने योग्य नहीं ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

(९) नैषा तर्केण मतिरापनेया प्रोक्तान्येनैव सुज्ञानाय प्रेष्ठयान्त्वमापः सत्यधृतिर्बतासित्वाहङ्नो भूयान्नचिकेतःप्रष्टा ॥ ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

न एषा तर्केण मतिः आपनेया प्रोक्ता अन्येन एव सुज्ञानाय प्रेष्ठ याम् त्वम् आपः सत्यधृतिः बत असि त्वादृक् नः भूयात् नचिकेतः प्रष्टा ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एषा	यह	तत्	वह
मतिः	ब्रह्मविषयिणीबुद्धि	अन्येन	आत्मवेत्ता-करके
तर्केण	तर्ककरके	एव	ही
न	नहीं	प्रोक्ता	उपदेशकीहुई
आपनेया	प्राप्त होनेयोग्यहै	सुज्ञानाय	आत्मज्ञानार्थ
प्रेष्ठ	हेप्रियदर्शन	+भवति	होती है
त्वम्	तू	नचिकेतः	हेनचिकेता
सत्यधृतिः	सत्य धर्माव-लम्बी	त्वादृक्	तेरेसमान
बत असि	श्रेष्ठहै	नः	हमको
याम्	जिसब्रह्मवि-षयिणीबुद्धिको	+अन्यः	अन्य
आपः	प्राप्तहुआहैतू	प्रष्टा	प्रश्नकर्ता
		+अपि	भी
		भूयात्	मिलै ॥

भावार्थ ।

(नैषेति–प्र०) स्वबुद्धि करके भी कोई एक तर्क कुशल पुरुष आत्माको जानलेगा आचार्य्य की क्या आवश्यकता है ॥ उ० ॥ नैषातर्केण ॥ यह जो आत्मविषयिणी बुद्धि है सो तर्ककरके अर्थात् अपनी कल्पनामात्रकरके प्राप्तहोने के योग्य नहीं है हे प्रेष्ठ!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे प्रियतम ! नास्तिकसे भिन्न जो आस्तिक है उसीके उपदेश से यह आत्मज्ञान आत्मा के साक्षात्कार होनेका हेतु होताहै । हे नचिकेता ! मेरी ऐसी इच्छा होतीहै कि जैसे तुम कुशल प्रश्नकर्त्ता हो, ऐसा दूसरा भी मिले, तुम सत्यधृातहो, अर्थात् अपनीधीर्यतासे चलायमान न होनेवाले केवल एक तुमहींहो, तुम्हारे ऐसे प्रश्नका करता मैंने दूसरा कोई नहीं देखाहै ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

(१०) जानाम्यहꣳशेवधिरित्यनित्यं न ह्यध्रुवैः प्राप्यतेहि ध्रुवन्तत् ततो मया नाचिकेतश्चितोऽग्निरनित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम् ॥ १० ॥

पदच्छेदः

जानामि अहम् शेवधिः इति अनित्यम् न हि अध्रुवैः प्राप्यते हि ध्रुवम् तत् ततः मया नाचिकेतः चितः अग्निः अनित्यैः द्रव्यैः प्राप्तवान् अस्मि नित्यम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
शेवधिः	= स्वर्गादिकर्म फल	अध्रुवैः	= अनित्य यज्ञ अग्निहोत्रादिकर्म से
अनित्यम्	= अनित्य है	हि	= निश्चयकरके
इति	= ऐसा	ध्रुवम्	= नित्यसाक्षी आत्मा
अहम्	= मैं	नप्राप्यते	= नहींप्राप्तहोताहै
जानामि	= जानता हूं		
हि	= क्योंकि		

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ततः = इसलिये	चितः = सेवनकी गईहै
मया = मुझकरके	+ च = और
नाचिकेतः = नाचिकेतसंज्ञक	+तस्मात् = इसकारण
अग्निः = अग्नि	+ अहम् = मैं
अनित्यैः = अनित्य	नित्यम् = नित्य यमपदवीको
द्रव्यैः = पशु आदि द्रव्यों करके	प्राप्तवान् = प्राप्तहुआ
	अस्मि = हूँ ॥

भावार्थ ।

जानाम्यहमिति–यमराज कहतेहैं हे नचिकेता! कर्मोंका फलरूप जो निधि है वह अनित्यहै, और ज्ञानसे उत्पन्न जो मोक्षरूपी फलहै वह नित्यहै, यह मोक्षफल अनित्य साधनों याने कर्मोंकरके प्राप्त नहीं होताहै, कर्मोंका अनित्यफल द्रव्य पशुआदिकहैं, उन्हों करके चयनकरी हुई स्वर्गसुखसाधक अग्नि है, तिसी करके मैं चिरस्थायी यमपदवी को प्राप्तहुवाहूं, सोभी अनित्यही है ॥ १० ॥

नोट–यमराज भगवान् कहतेहैं कि मैंने ब्रह्मज्ञानके अनन्तर नचिकेतनामक अग्नि के उपासना द्वारा यमराजपदवी को नित्यजान कर अपनेको प्राप्त कियाहै सो उसको तूत्यागता भया इसलिये हे नचकेता ! तू धन्यहै धन्यहै ॥

मूलम् ॥

(११) कामस्याप्तिञ्जगतः प्रतिष्ठां क्रतोरानन्त्यमभयस्यपारम् स्तोम महदुरगायम्प्रतिष्ठां दृष्ट्वा धृत्या धीरो नचिकेतोऽत्यस्राक्षीः ॥ ११ ॥

 CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

कामस्य आप्तिम् जगतः प्रतिष्ठाम् क्रतोः आनन्त्यम् अभयस्य पारम् स्तोम महत् उरुगायम् प्रतिष्ठाम् दृष्ट्वा धृत्या धीरः नचिकेतः अत्यस्राक्षीः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
कामस्य	= कामनाकी	+च	= और
आप्तिम्	= प्राप्ति को	स्तोम महत्	= स्तुत्य ऐश्वर्य को
+च	= और	+च	= और
जगतः	= जगत् के	उरुगायम्	= भारीगतिको
प्रतिष्ठाम्	= आश्रय को	+च	= और
+च	= और	प्रतिष्ठाम्	= प्रतिष्ठाको
क्रतोः	= यज्ञके	दृष्ट्वा	= देखकरके
आनन्त्यम्	= अनंतफलको	धृत्या	= धैर्यतासे
+च	= और	धीरः	= तूबुद्धिमान्
अभयस्य	= अभय याने स्वर्गके	नचिकेतः	= हेनचिकेता
पारम्	= पार को अर्थात् स्वर्ग की प्राप्ति को	अत्यस्राक्षीः	= त्यागकरता भया ॥

भावार्थ ।

कामस्येति–यम कहतेहैं हे नचिकेता ! संपूर्ण कामनाओं की अवधिको और चराचरात्मक जगत्का आधार जो हिरण्यगर्भ है उसकी यज्ञके अनन्तफलको स्वर्ग की प्राप्ति के तुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त होनेयोग्य भारीगतिको प्रतिष्ठाको देखकरके धीर्यता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्याग करताभया तू धन्य है तेरे बराबर संसार में कोई नहीं है तू ब्रह्मविद्या के योग्य है ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

(१२) तं दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं गुहाहितङ्गह्वरेष्ठं पुराणम् अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति ॥ १२ ॥

पदच्छेदः

तम् दुर्दर्शम् गूढम् अनुप्रविष्टम् गुहाहितम् गह्वरेष्ठम् पुराणम् अध्यात्मयोगाधिगमेन देवम् मत्वा धीरः हर्षशोकौ जहाति ॥

अन्वयः	पदार्थ
तम्	उस
दुर्दर्शम्	दुर्दर्श
गूढम्	सघन
अनुप्रविष्टम्	छिपे हुये
गुहाहितम्	बुद्धिमें रखेहुये
+ च	और
गह्वरेष्ठम्	अन्तःकरण रूपी गुहा में स्थितहुये
पुराणम्	सनातन
देवम्	आत्माको
अध्यात्मयोगाधिगमेन	आत्मविद्या के योग से
मत्वा	अनुभवकरके
धीरः	धीरपुरुष
हर्षशोकौ	हर्षशोकको
जहाति	त्याग करता है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

तंदुर्दर्शमिति—यमराज भगवान् अब नचिकेता के प्रति आत्मलाभ के साधनों को और उनके फलको दिखलाते हैं ॥ तंदुर्दर्शमिति ॥ हे नचिकेता ! जिस आत्मा के जानने की इच्छा करके तुम मुझसे पूछतेहो सो वह आत्मा अध्यात्मयोग करके अधिगम्यहै अर्थात् चित्तकी एकाग्रता करकेही जानाजाता है, और उसको मनके निरोधद्वारा साक्षात्कार करके बुद्धिमान् पुरुष हर्ष शोकसे रहित होजाता है, वह आत्मा असमाहित चित्तवाले पुरुषों करके प्राप्तहोने को अशक्यहै, मायाके कार्यों करके आवृत है, कार्य्य कारण समुदायकोंको रचकरके उसमेंही व्याप्यक होकर स्थित है, और जीवों के बुद्धिरूपी गुहाविषे स्थित है, और सनातन है ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

(१३) एतच्छ्रुत्वा सम्परिगृह्य मर्त्यः प्रवृह्य धर्म्यमणुमेतमाप्य स मोदते मोदनीयꣳ हि लब्ध्वा विवृतꣳहि सद्म नचिकेतसम्मन्ये ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

एतत् श्रुत्वा सम्परिगृह्य मर्त्यः प्रवृह्य धर्म्यम् अणुम् एतम् आप्य सः मोदते मोदनीयम् हि लब्ध्वा विवृतम् हि सद्म नचिकेतसम् मन्ये ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एतत्	= इस	प्रवृह्य	= पृथक्करके
धर्म्यम्	= धर्मकरके प्राप्यआत्माको	+ च	= और
श्रुत्वा	= सुनकरके	एतम्	= इस
संपरिगृह्य	= मननकरके	अणुम्	= अतिसूक्ष्म आत्माको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप्य = प्राप्तहोकरके
+ च = और
मोदनीयम् = हर्ष करनेयोग्य आत्माको
लब्ध्वा = पाकरके
सः = आत्मवेत्ता
मर्त्यः = पुरुष
मोदते = प्रसन्न होताहै

हि = इस लिये
हि = निश्चयकर के
नचिकेतसम् = तुझ नचिकेता को
सद्म = ब्रह्मलोक के द्वार के
विवृतम् = सन्मुख
मन्ये = मानताहूं मैं ॥

भावार्थ ।

एतच्छ्रुत्वेति—मूलके सहित संसारका नाशक जो तत्त्वज्ञानहै तिसको दिखला करके अब आनन्द की प्राप्तिके साधन को कहते हैं ॥ एतच्छ्रुत्वा ॥ इस धर्म्म से प्राप्य सूक्ष्म आत्म तत्त्वको गुरुमुख से श्रवणकरके मननकरके, निदिध्यासनकरके और साक्षात्कार करके विद्वान् हर्षको प्राप्त होताहै हे, नचिकेता ! इसप्रकार के आत्मारूपी मन्दिर में तुम प्रवेश होनेके योग्यहो ॥ १३ ॥

मूलम् ॥

(१४) अन्यत्रधर्मादन्यत्राधर्मादन्यत्रास्मात्कृताकृतात् अन्यत्र भूताच्च भव्याच्च यत्तत्पश्यसि तद्वद ॥ १४ ॥

पदच्छेदः

अन्यत्र धर्मात् अन्यत्र अधर्मात् अन्यत्र अस्मात् कृताकृतात् अन्यत्र भूतात् च भव्यात् च यत् तत् पश्यसि तत् वद ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
+ यत्	= जो
धर्म्मात्	= धर्म से
अन्यत्र	= पृथक् है
+ च	= और
+ यत्	= जो
अधर्मात्	= अधर्म से
अन्यत्र	= पृथक् है
+ च	= और
+ यत्	= जो
अस्मात्	= इस
कृताकृतात्	= कार्य कारणसे
+ अपि	= भी
अन्यत्र	= पृथक् है
+ च	= और
+ यत्	= जो
भूतात्	= भूतकाल से
+ च	= और
भव्यात्	= भविष्यत् काल से
अन्यत्र	= पृथक् है
तत्	= तिसको
+ यदि	= अगर
पश्यसि	= जानतेहो तो आप
तत्	= उसको
वद	= कहिये ॥

भावार्थ ।

अन्यत्रेति—नचिकेता यमराज से पूछताहै ॥ अन्यत्रधर्मात् ॥ हे महाराज ! फल और कारक के सहित यज्ञादिरूप जो धर्म है उससे भी जो पृथक्है, और शास्त्रअहित जो हिंसादिरूप अधर्म्म है उससे भी जो पृथक् है, और हमारी बुद्धिका विषय जो कृत्य अकृत्य है अर्थात् कार्य्यकारण है उससे भी जो प्रथक् है, और भूत भविष्यत् वर्त्तमान् जो तीनकाल हैं उससे भी जो पृथक् है, उस वस्तुको, यदि आप जानतेहों, तो मुझसे कृपाकरके मेरे प्रति कहिये ॥ १४ ॥

नोट—नचिकेता के प्रश्नका उत्तर यमराज भगवान् अगले मन्त्रों में देते हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१५) सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणिच यद्वदन्ति यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य्यञ्चरन्ति तत्तेपदसंग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् ॥ १५ ॥

पदच्छेदः

सर्वे वेदाः यत् पदम् आमनन्ति तपांसि सर्वाणि च यत् वदन्ति यत् इच्छन्तः ब्रह्मचर्य्यम् चरन्ति तत् ते पदम् संग्रहेण ब्रवीमि ओम् इति एतत् ॥

अन्वयः	पदार्थ
सर्वे	सब
वेदाः	वेद
यत्	जिस
पदम्	पदको
आमनंति	प्रतिपादन करते हैं
च	और
सर्वाणि	सब
तपांसि	तपस्या
यत्	जिसको
वदन्ति	प्रतिपादन करते हैं
+च	और
यत्	जिसको
इच्छन्तः	इच्छा करते हुये
+मुमुक्षवः	मुमुक्षुजन
ब्रह्मचर्य्यम्	ब्रह्मचर्य्यको।
चरन्ति	करते हैं
तत्	उस
पदम्	पदको
ते	तेरेलिये
संग्रहेण	संक्षेप से
ब्रवीमि	कहताहूं मैं
एतत्	उसी पदका
ओम्	ओम्
इति	करके भी
+वदन्ति	कहते हैं ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

सर्वेवेदाइति–साधनों से विना तत्त्वज्ञानका होना असंभव है, इसलिये नचिकेता के प्रति प्रथम यमराज आत्मज्ञान के साधनों को कहते हैं ॥ सर्वेवेदाः । सम्पूर्ण वेदान्त जिस आत्मपदको प्रतिपादन करते हैं और संपूर्ण तपरूप कर्म चित्तकी शुद्धिद्वारा जिसपदको प्रतिपादन करते हैं और जिस पदकी प्राप्तिकी इच्छा करके मुमुक्षुजन ब्रह्मचर्य्य को धारण करते हैं, उस आत्मपदको मैं तुम्हारे प्रति कहताहूं॥ हे नचिकेता! ओमित्येतत् ॥ ॐ यह जो अक्षर है सोई ब्रह्मका वाचक है,और सोई ब्रह्मका प्रतीक भी है, इसीलिये यही ब्रह्म है ॥ समाहित चित्तवालों को ॐकार के उच्चारण करने से साक्षीचेतनका ज्ञान होताहै, इसलिये यही ब्रह्म है,इसही ॐकारको आश्रयकरके 'ब्रह्माहमस्मि' मैंही ब्रह्महूं ऐसा चिन्तन करै, या इसमेंही ब्रह्मदृष्टि करै ॥ १५ ॥

मूलम् ॥

(१६) एतद्ध्येवाक्षरम्ब्रह्म एतदेवाक्षरम्परम् एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत् ॥ १६ ॥

पदच्छेदः

एतत् हि एव अक्षरम् ब्रह्म एतत् एव अक्षरम् परम् एतत् हि एव अक्षरम् ज्ञात्वा यः यत् इच्छति तस्य तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एतत्	= यही	एतत्एव	= यही
एव हि	= निश्चयकरके	अक्षरम्	= अविनाशी
अक्षरम्	= नाशरहित	परम्	= परब्रह्म है
ब्रह्म	= अपर ब्रह्म है	एतत्एव	= इसही
+च	= और	अक्षरम्	= अक्षर को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञात्वा = जान करके
+यः = जो
यत् = जिसको
इच्छति = चाहता है
तस्य = उसी को
तत् = वह
भवति = प्राप्त होताहै ॥

भावार्थ ।

एतदिति–आत्मज्ञानका साधन भूत जो प्रणव की उपासना है तिसको कहकर अब ॐकार अक्षर की स्तुति और फलको कहते हैं । यह जो प्रणवरूप अक्षर है वही ब्रह्मरूप है, इसीको पर अपररूप ब्रह्म जानकरके और ध्यानकरके उपासक पर अपर-रूप ब्रह्मभाव को प्राप्त होताहै, अर्थात् उपासक यदि परब्रह्मरूप होनेकी इच्छाको करता है तो वह परब्रह्म होताहै, यदि अपर ब्रह्म जो हिरण्यगर्भ है उसकी प्राप्तिकी इच्छा करताहै तो हिरण्यगर्भभाव को प्राप्त होताहै अर्थात् जब निर्गुणब्रह्मकी उपासना ॐकार अक्षर करके करता है तो वह निर्गुण ब्रह्म होजाता है और जब सगुणब्रह्मकी उपासना ॐकार अक्षर करके करता है तो सगुणब्रह्म होजाता है ॥ १६ ॥

मूलम् ॥

(१७) एतदालम्बनꣳ श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम्
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ॥ १७ ॥

पदच्छेदः

एतत् आलम्बनम् श्रेष्ठम् एतत् आलम्बनम् परम् एतत् आलम्बनम् ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ॥

अन्वयः	पदार्थ
एतत्	यह ॐकार
आलम्बनम्	आलम्बन
श्रेष्ठम्	श्रेष्ठहै
+च	और
एतत्	यह
आलम्बनम्	आलम्बन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परम् = उत्कृष्ट है
\+ च = और
एतत् = इस
आलम्बनम् = आलम्बन ॐकार को
ज्ञात्वा = जानकरके
ब्रह्मलोके = ब्रह्मलोकमें
महीयते = पूज्य होता है ॥

भावार्थ ।

एतदालम्बनमिति–एतत् ॥ यह जो ॐकाररूप अक्षरहै सोई आलम्बन करने के योग्य है ॥ और ब्रह्मके ध्यानका उपकारी जो गायत्रीआदिक वेदके मन्त्रहैं उनसे भी यह श्रेष्ठ है, यह ॐकारही परब्रह्मके ध्यानका उपकारी है, परब्रह्मकी प्राप्ति इसीके आलंबन करने से होतीहै, इसी ॐकार अक्षरकी उपासनाकरके ब्रह्मलोक में उपासक महिमा को प्राप्त होताहै ॥ १७ ॥

मूलम् ॥

(१८) नजायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित् अजोनित्यः शाश्वतो यम्पुराणो नहन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ १८ ॥

पदच्छेदः

न जायते म्रियते वा विपश्चित् न अयम् कुतश्चित् न बभूव कश्चित् अजः नित्यः शाश्वतः अयम् पुराणः न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥

अन्वयः	पदार्थ
+ आत्मा	आत्मा
नजायते	नहींउत्पन्न होताहै
वा	और
न	नहीं
म्रियते	मरता है
+ परन्तु	परन्तु
विपश्चित्	सर्वज्ञहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अयम् = यह आत्मा
कुतश्चित् = किसी से
कश्चित् = कभी
न बभूव = नहीं हुआहै
+तस्मात् कारणात् } = इसकारणसे
अयम् = यहआत्मा
अजः = अजयाने जन्मरहितहै
नित्यः = नित्य है
शाश्वतः = नाशरहितहै
पुराणः = आदि है
अयम् = यह आत्मा
शरीरे = शरीर के
हन्यमाने = नाशहोने पर भी
नहन्यते = नहीं नाशहोता है ॥

भावार्थ ।

नजायतइति-मन्द और मध्यम अधिकारिके भेद करके दो प्रकार की उपासना को यमने नचिकेता के प्रति पूर्व कहा, अब उत्तम अधिकारि के प्रति निरुपाधिक आत्मतत्त्व को नचिकेता के प्रति कहते हैं ॥ नजायतेम्रियतेवा ॥ विपश्चितः ॥ चैतन्य नित्य स्वरूप आत्मा न जन्मता है, और न मरता है, और न नाशको प्राप्तहोता है ॥ नायंबभूव ॥ यह आत्मा किसी कारण से भी उत्पन्न नहीं हुआ है, क्योंकि इसका कोई कारण नहीं है, सबका कारण यह आपही है, और शरीरादिक कार्य्योंके नाशहोनेपर भी इसका नाश नहीं होताहै, इसीलिये आत्मा अज है, नित्य है, शाश्वत है, और बुद्धि वृद्धि से रहित है ॥ १८ ॥

मूलम् ॥

(१९) हन्ता चेन्मन्यते हन्तुछंहतश्चेन्मन्यते हतम् उभौ तौ न विजानीतो नायछंहन्ति न हन्यते ॥ १९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

हन्ता चेत् मन्यते हन्तुम् हतः चेत् मन्यते हतम् उभौ तौ न विजानीतः न अयम् हन्ति न हन्यते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
चेत्	अगर	मन्यते	मानता है तो
हन्ता	मारनेवाला पुरुष	तौ उभौ	वे दोनों
हन्तुम्	हननकरनेको आत्मा	नविजानीतः	नहीं जानते हैं क्योंकि
मन्यते	मानता है	अयम्	यह आत्मा
च	और	न हन्ति	न तो मारता है
हतः	माराहुआपुरुष	च	और
हतम्	हनन क्रिया के कर्मको आत्मा	न हन्यते	न मरता है ॥

भावार्थ ।

हन्तेति–यदि हन्ता हनन क्रियाका कर्त्ता आत्मा को मानता है, या हननक्रियाका कर्म आत्माको मानता है, तो ये दोनों आत्माको नहीं जानतेहैं, क्योंकि आत्मा न किसीको मारता है, और न हननक्रियाका कर्म होताहै, जितने धर्माऽधर्मादिक हैं सब आत्मा के अज्ञान करकेही होतेहैं, आत्मा के ज्ञान करके इनकी निवृत्ति होजाती है ॥ १९ ॥

मूलम् ॥

(२०) अणोरणीयान् महतोमहीयानात्माऽस्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्तोर्निहितो गुहायाम् तमक्रतुः पश्यति वीत
शोको धातुः प्रसादान् महिमानमात्मनः ॥ २० ॥

पदच्छेदः

अणोः अणीयान् महतः महीयान् आत्मा अ-
स्य जन्तोः निहितः गुहायाम् तम् अक्रतुः पश्यति
वीतशोकः धातुः प्रसादात् महिमानम् आत्मनः ॥

अन्वयः	पदार्थ
अणोः	छोटेसे
अणीयान्	अति छोटा
महतः	बड़े से
महीयान्	अति बड़ा
आत्मा	आत्मा है
अस्य	इस
जन्तोः	जीव के
गुहायाम्	हृदयरूपी गुहाविषे
+ सः	वह
निहितः	स्थित है
च	और
अक्रतुः	निष्काम
वीतशोकः	शोकरहित पुरुष
धातुःप्रसादात्	मन के प्रसाद से
तम्	उस
आत्मनः	अपने
महिमानम्	महिमा को अथवा अपने आत्मा को
पश्यति	देखता है ॥

भावार्थ ।

अणोरणीयान्, महतोमहीयान्—अति सूक्ष्म जो मनादिक हैं उनसे भी सूक्ष्म है, और नैयायिकोंने जो महत् परिमाणवाले आकाशादिक माने हैं उनसे भी अति बड़ाहै, इसी कारण आत्माका नाश नहीं होताहै और ब्रह्मासे लेकर जितने प्राणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं उन सबकी बुद्धिरूपी गुहामें स्थित है, तिस आत्मा को निष्काम शोकरहित पुरुष मनआदि कारणों की प्रसन्नता याने शुद्धता से अपने आपेमें देखता है ॥ २० ॥

मूलम् ॥

(२१) आसीनोदूरं व्रजति शयानोयाति सर्वतः कस्तम्मदामदं देवं मदन्योज्ञातुमर्हति ॥ २१ ॥

पदच्छेदः

आसीनः दूरम् व्रजति शयानः याति सर्वतः कः तम् मदामदम् देवम् मदन्यः ज्ञातुम् अर्हति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
आत्मा	आत्मा	मदामदम्	शरीरादिउपाधिके संबंधवाले हर्षशोकवान्
आसीनः	स्थित हुआ	देवम्	देवको
दूरम्	दूर	मदन्यः	मेरेसे अन्य
व्रजति	जाताहै	कः	कौन
च	और	ज्ञातुम्	जानने को
शयानः	सोयाहुआ	अर्हति	समर्थहोसक्ताहै ॥
सर्वतः	सब तरफ		
याति	फिरता है		
तम्	तिस		

भावार्थ ।

आसीनइति–आसीनः ॥ जाग्रत् और स्वप्न में मन आदिकों को व्यापारों के साथ आत्मा साक्षिरूप से स्थितहुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूर देशको गमन करजाताहै अर्थात् मनआदिकों में प्रतिबिम्ब रूप होकर उसके साथ दूर देशको गमन करता हुआ परतीत होताहै, वास्तव से वह गमन नहीं करता है, क्योंकि वह सर्वत्र पूर्णहै और जब करण जो इन्द्रिया हैं उनके उपरम होनेसे विशेष ज्ञानका अभाव होजाता है, तब सुषुप्त अवस्था कहीजाती है और तब सामान्य ज्ञानवाला आत्मा कहाजाता है और वही बुद्धिआदिक संघात के साथ तादात्म्याध्यास होने के कारण धनादि प्रयुक्त मदवाला कहाजाता है, वास्तव से तो वह मद रहितहै, यमराज कहते हैं ऐसे प्रकाशस्वरूप आत्माको मुझ विवेकी पुरुषसे भिन्न दूसरा कौनजाननेको समर्थहोसक्ताहै ॥ २१ ॥

नोट–यह आत्मा अचल स्थित है परन्तु मनआदि उपाधि साथ मिलकर ब्रह्मलोकपर्य्यन्त जाता है वैसेही स्वप्न में इन्द्रियों के साथ मिलकर अनेक विषयों में रमण करता है ॥

मूलम् ॥

(२२) अशरीरꣳशरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम् महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति ॥ २२ ॥

पदच्छेदः

अशरीरम् शरीरेषु अनवस्थेषु अवस्थितम् महान्तम् विभुम् आत्मानम् मत्वा धीरः न शोचति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
शरीरेषु	= शरीरों बिषे	अवस्थितम्	= नित्य है
अशरीरम्	= शरीररहित है	+ एवम्	= ऐसे
अनवस्थेषु	= अनित्यों बिषे	महान्तम्	= महान्
		विभुम्	= व्यापक

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मानम् = आत्माको
मत्वा = जानकरके
धीरः = बुद्धिमान् पुरुष
न शोचति = नहीं शोकको प्राप्त होताहै ॥

भावार्थ ।

अशरीरमिति—अब आत्मज्ञानके फलको कहते हैं, हे नचिकेता! अनित्य जो संपूर्ण शरीर हैं उनमें साक्षीरूप होकर नित्य आत्मा स्थित है, और आप स्थूल सूक्ष्मकारण तीनों शरीरों से रहित है, सबसे महान् भी है और सर्वत्र व्यापक है, इसप्रकार आत्माको अपने भीतर ब्रह्मसे अभिन्न जानकर विवेकी पुरुष शोकको प्राप्त नहीं होताहै; अर्थात् कर्तृत्वादिरूप बन्धसे रहित होकर अपने में स्थित होजाता है ॥ २२ ॥

मूलम् ॥

(२३) नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन यमेवैषवृणुते तेन लभ्यस्तस्यैषआत्माविवृणुते तनुꣳस्वाम् ॥ २३ ॥

पदच्छेदः

न अयम् आत्मा प्रवचनेन लभ्यः न मेधया न बहुना श्रुतेन यम् एव एषः वृणुते तेन लभ्यः तस्य एषः आत्मा विवृणुते तनुम् स्वाम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अयम्	= यह	नलभ्यः	= नहीं प्राप्तहोने योग्य है
आत्मा	= आत्मा	च	= और
प्रवचनेन	= बहुत वेदाध्ययन करने से		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेधया = ग्रंथार्थ धारण शक्ति से
न = नहीं
+ लभ्यः = प्राप्त होने योग्य है
+ च = और
बहुना = बहुत
श्रुतेन = शास्त्रकेश्रवण करने से
+ अपि = भी
न = नहीं
+ लभ्यः = प्राप्त होने योग्य है
यम् = जिसको
एव = निश्चय करके
एषः = यह मुमुक्षु
वृणुते = इच्छा करता है
तेन = तिसही करके
लभ्यः = पाने योग्य है
+ च = और
तस्य = उसी को
एषः = यह
आत्मा = आत्मा
स्वाम् = अपने
तनुम् = स्वरूप को
विवृणुते = प्रकाशकरताहै॥

भावार्थ ।

नायमिति–यममहराज कहते हैं कि यह आत्मा वेदों के अध्ययन करके भी लभ्य नहीं है, याने जानानहीं जाताहै, और न ग्रन्थों के धारण करनेवाली शक्ति से जानाजाता है, और न अनेक शास्त्रोंके श्रवण करनेसे (प्र०) फिर किस साधन करके आत्मा का लाभ होताहै (उ०) जो मुमुक्षु अपने आत्माको श्रवण मननादिकों करके चिन्तन करता है, उसीको वह प्राप्तहोताहै, उसी मुमुक्षुको हृद्याकाश में यह आत्मा अपने आनन्दस्वरूप को प्रकाश करता है ॥ २३ ॥

मूलम् ॥

(२४) नाविरतोदुश्चरितान्नाशान्तोनासमाहि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तोनाशान्तमानसोवापिप्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्॥२४॥

पदच्छेदः

न अविरतः दुश्चरितात् न अशान्तः न असमाहितः न अशान्तमानसः वा अपि प्रज्ञानेन एनम् आप्नुयात्॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
दुश्चरितात्	दुष्कृतकर्मसे	एतैः पुरुषैः	ऐसे पुरुषों करके
अविरतः	नहीं निवृत्त भया है जो	आत्मा	आत्मा
अशान्तः	नहीं शान्त हुआहै जो	नलभ्यः	प्राप्त होने योग्य नहींहै
असमाहितः	नहीं एकाग्र कियाहै चित्तको जिसने	प्रज्ञानेन	ज्ञान करके
वा	और	अपि	ही
अशान्तमानसः	नहीं हुआहै शान्त मन जिसका	एनम्	इस आत्माको
		पुरुषः	पुरुष
		आप्नुयात्	प्राप्तहोता है॥

भावार्थ ।

नाविरतइति-शमदमादि साधनों करकेही आत्मज्ञान की प्राप्तिहोती है, शमदमादि साधनों के विना नहीं होती है, इसीको इसमन्त्र में यमराज नचिकेता के प्रति कहते हैं ॥ नाविरतः॥ हे नचिकेता ! जो पुरुष भोगों में अशान्त है याने जिसका मन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषय भोगोंसे शान्त नहीं हुवाहै और जो विक्षिप्त चित्त होताहुआ समाधि के फल अणिमादि सिद्धियों की इच्छा करनेवाला है वह आत्मज्ञानको कदापि प्राप्त नहीं होताहै ॥ पर जो विषयभोगोंसे निवृत्त होकर शान्त हुआहै और समाहित चित्तवाला है और अणिमादि सिद्धियों की जिसको इच्छा नहीं है वही ब्रह्मवित् आचार्य्य के उपदेश से आत्मज्ञान को प्राप्तहोता है ॥ २४ ॥

मूलम् ॥

(२५) यस्य ब्रह्म च क्षत्रं च उभे भवत ओदनम् मृत्युर्यस्योपसेचनं क इत्था वेद यत्र सः ॥ २५ ॥

इतिद्वितीयावल्ली समाप्ता ॥

पदच्छेदः

यस्य ब्रह्म च क्षत्रम् च उभे भवतः ओदनम् मृत्युः यस्य उपसेचनम् कः इत्था वेद यत्र सः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
च	और	मृत्युः	मृत्यु
यस्य	जिसका	उपसेचनम्	दाल साग है
ब्रह्म	ब्राह्मण	कः = यः	जो
च	और	इत्था	इस प्रकार
क्षत्रम्	क्षत्रिय	यत्र	इस विषे
उभे	दोनों	वेद	जानता है
ओदनम्	भात	सः	सोई
भवतः	होरहे हैं	आत्मा	ब्रह्मरूप
+च	और	भवति	होता है
यस्य	जिसका		

इतिकठवल्लीउपनिषत्प्रथमाध्यायद्वितीयावल्लीभाषाटीकासमाप्ता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

यस्येति–हे नचिकेता ! जिस तमःप्रधान मायोपाधि ईश्वर के ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों अर्थात् चराचरात्मक सम्पूर्ण जगत् भातहैं, और लोकनाशक मृत्यु सागदालहै, तिस शुद्धस्वरूप ईश्वर को भलीप्रकार जानताहूं, दूसरा मेरेसे समान नहीं है, अब सावधान होकर मेरे अमृतरूपी वचनों को सुनो ॥ २५ ॥

इति काठकोपनिषदि द्वितीयावल्लीभावार्थः ॥

मूलम् ॥

(१) ॐऋतंपिबन्तौस्वकृतस्यलोकेगुहाम्प्रविष्टौपरमेपरार्द्धे छायातपौब्रह्मविदोवदन्ति पञ्चाग्नयोयेचत्रिणाचिकेताः ॥ १ ॥

पदच्छेदः

ऋतम् पिबन्तौ स्वकृतस्य लोके गुहाम् प्रविष्टौ परमे परार्द्धे छायातपौ ब्रह्मविदः वदन्ति पञ्चाग्नयः ये च त्रिणाचिकेताः ॥

अन्वयः	पदार्थ
सुकृतस्य	अपने किये हुये कर्मों के
ऋतम्	सत्रूप फलको
पिबन्तौ	पान किये हुये हैं जो
च	और
लोके	शरीर में
परमे	शुद्ध
परार्द्धे	हृदयाकाश बिषे
गुहाम्	बुद्धिरूपी गुहा को
प्रविष्टौ	जीवऔर साक्षीरूप होकर प्राप्तहै जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तौ = उनदोनोंको
ये = जो
ब्रह्मविदः = ब्रह्मवित् हैं
च = और
पञ्चाग्नयः = गृहस्थी हैं
च = और
त्रिणाचिकेताः = नाचिकेतनामक अग्निकेउपासकहैं
ते = वे
छायातपौ = छायाधूपवत्
वदन्ति = कहते हैं

भावार्थ ।

ऋतंपिबन्तौ–पूर्व कथनकृत विद्या अविद्या के स्वरूप के साधनों को और उनके फलको निरूपण करते हैं ॥ ऋतंपिबन्तौ ॥ पूर्वजन्मों में किये जो सुकृत असुकृत कर्म हैं, उनके फलको अवश्यही भोगना पड़ता है, जीव और ईश्वर दोनों इस शरीरके उत्कृष्ट हृद्याकाश के अन्तर बुद्धिरूपी गुहा बिषे छाया धूपकी तरह याने विलक्षण धर्मको धारते हुये स्थित हैं, जीव कर्मों के फलका भोक्ता है, और ईश्वर उसका साक्षी अभोक्ता है, इस अलौकिक ज्ञानको वही प्राप्तहोते हैं जिन्होंने नाचिकेतसंज्ञक पञ्चअग्नि याने दाक्षिणात्य, गार्हस्थ्य, आहवनीय, सभ्य और आवथ्य को स्थापन किया है, चाहे वे ब्रह्मज्ञानीहों चाहे गृहस्थीहों, इस प्रकार ब्रह्मवित्लोक कथन करते हैं हे नचिकेता! तुम इस वल्ली में मन लगाकर श्रवणकरो, अवश्य अपने इच्छित पदको प्राप्तहोगे और भी पुरुष इस तुम्हारे मेरे संवाद को श्रवण मनन करके अपने शुद्ध मनोरथको प्राप्तहोंगे ॥ १ ॥

मूलम् ॥

(२) यःसेतुरीजानानामक्षरम् ब्रह्मयत्परम् अभयम् तितीर्षताम्पारं नाचिकेतꣳशकेमहि ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यः सेतुः ईजानानाम् अक्षरम् ब्रह्म यत् परम् अभयम् तितीर्षताम् पारम् नाचिकेतम् शकेमहि ॥

अन्वयः	पदार्थ
यत्	जो
परम्	परम
अक्षरम्	अक्षर
ब्रह्म	ब्रह्म है
तत्	सो
ईजानानाम्	यज्ञ करने वालों को
सेतुः	सेतु है
च	और
यः	जो
तितीर्षताम्	संसारसे तरनेवालोंके
अभयम्	निर्भय
पारम्	पारहोने के लिये
नाचिकेतम्	नचिकेता नामकअग्नि है
ततूसेतुम्	उसकोसेतु
शकेमहि	जानतेहैं हम

भावार्थ ।

यइति–जो नाचिकेत संज्ञक विराट् अग्निको स्थापना करते हैं, वही कर्मी कहे जातेहैं, उन कर्मियोंके लिये यह अग्नि दुःखरूप संसार से तारनेका सेतु है, ऐसे नाचिकेत संज्ञक अग्निके जानने और चयन करने को मैंहीं समर्थ हूं, और संसाररूपी समुद्रका पार जो मोक्षपद है, और ब्रह्मवेत्तों के प्राप्तहोने योग्य जो परब्रह्म है, और जिसका नाम अक्षर है, अर्थात् जो कभी भी नाशको प्राप्त नहीं होता है, और जो षट्भाव विकारसे रहित अपना आत्मा है, उस को मैंहीं जानने को समर्थ हूं, मेरे करके ज्ञात जो परब्रह्म है, उसीको परम्परा करके और भी ज्ञानीलोग जानकर मोक्षको प्राप्त होजाते हैं, हेनचिकेता ! मुझ ऐसे आचार्य से उपदेशित हुआ तू अवश्य अपनी स्वरूप में स्थित होताहुआ शान्तिको प्राप्त होगा॥२॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(३) आत्मानꣳरथिनं विद्धि शरीरꣳरथमेव तु बुद्धिन्तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेवच ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

आत्मानम् रथिनम् विद्धि शरीरम् रथम् एव तु बुद्धिम् तु सारथिम् विद्धि मनः प्रग्रहम् एव च ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
आत्मानम्	= आत्माको	बुद्धिम्	= बुद्धिको
रथिनम्	= रथकास्वामी	सारथिम्	= सारथी
विद्धि	= जान तू	विद्धि	= जान तू
+ च	= और	च	= और
शरीरम्	= शरीरको	मनः	= मनको
रथम्	= रथ	प्रग्रहम्	= बाग
एव	= निश्चयकरके	एव	= निश्चयकरके
+ विद्धि	= जान तू	विद्धि	= जान तू ॥
तु	= और		

भावार्थ ।

आत्मानमिति–हे नचिकेता ! आत्मानं ॥ त्वं पदका अर्थ जो जीवात्मा है उसको तुम रथका स्वामी जानो, वह जीवात्मा शरीररूपी रथ करके ही संसार और मोक्षमार्ग में गमन करता है, हे नचिकेता ! शरीरको तुम गमन करने का साधनरूप रथ जानो, बुद्धिको शरीररूपी रथका चलानेवाला सारथि जानो, और संकल्प विकल्पात्मक जो मन है, उसको तुम घोड़ों के चलाने का लगाम जानो ॥ ३ ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(४) इन्द्रियाणिहयानाहुर्विषयांस्तेषुगोचरान्
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

इन्द्रियाणि हयान् आहुः विषयान् तेषु गोचरान् आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम् भोक्ता इति आहुः मनीषिणः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इन्द्रियाणि	= इन्द्रियोंको	आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम्	= शरीरइन्द्रिय मन के सहित
हयान्	= घोड़े	+ आत्मानम्	= आत्माको
आहुः	= कहते हैं	मनीषिणः	= विवेकीजन
विषयान्	= विषयोंको	भोक्ताइति	= भोक्ताकरके
तेषु	= उनके	आहुः	= कहते हैं
गोचरान्	= मार्ग		
+ आहुः	= कहते हैं		

भावार्थ ।

इन्द्रियाणीति—हे नचिकेता ! चक्षुरादिक जो बाह्यविषयों के ज्ञानके करण हैं, वेही शरीररूपी रथके लेजानेवाले घोड़े हैं, उन इन्द्रियरूपी घोड़ों के चलाने के मार्ग रूपादिक विषय हैं, और जीवात्मा सहित इन्द्रियों और मनके सुख दुःख का भोक्ता है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

(५) यस्त्वविज्ञानवान् भवत्ययुक्तेन मनसा सदा।
तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दुष्टाश्वाइव सारथेः ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यः तु अविज्ञानवान् भवति अयुक्तेन मनसा सदा ।
तस्य इन्द्रियाणि अवश्यानि दुष्टाश्वाः इव सारथेः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तु	= और	तस्य	= उसकी
यः	= जो पुरुष	इन्द्रियाणि	= इन्द्रियां
अयुक्तेन	= अयुक्त	सारथेः	= सारथि के
मनसा	= मनकरके	दुष्टाश्वाः	= दुष्टघोड़ोंके
सदा	= सदा	इव	= समान
अविज्ञानवान्	= अविवेकी	अवश्यानि	= बेवश
भवति	= होता है	+ भवन्ति	= होती हैं

भावार्थ ।

यइति–जिसका बुद्धिरूपी सारथी अविज्ञानवाला होताहै अर्थात् मनके निग्रहद्वारा इन्द्रियों को बाह्यविषयों की तरफसे हटाने के जो साधन कहे हैं उन करके शून्य होता है, और सर्वदा काल लगामरूपी मनको अपने वश नहीं करसक्ताहै, उसके इन्द्रियरूपी अशिक्षित घोड़े उसके शरीररूपी रथ के सहित जीवात्मा स्वामी को अनेक दुष्टयोनिरूपी गड्ढों में गिरादेते हैं, जैसे मूर्ख सारथी अपने घोड़ों को सुमार्ग में चलाने को असमर्थ होता है, और वे दुष्ट घोड़े उसके रथको कंटकादि दुर्गमस्थान में गिरादेते हैं, और रथ टूटफूटजाता है और रथी दुःख उठाता है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

(६) यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथेः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

यः तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा तस्य इन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वाः इव सारथेः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तु	और	तस्य	उसकी
यः	जोपुरुष	इन्द्रियाणि	इन्द्रियां
युक्तेन	युक्त	सारथेः	सारथीके
मनसा	मनकरके	सदश्वाःइव	श्रेष्ठघोड़ोंके समान
सदा	सदैव	वश्यानि	वशीभूत
विज्ञानवान्	विवेकी	+ भवन्ति	होती हैं
भवति	होताहै		

भावार्थ ।

यस्त्विति–जिस पुरुषका बुद्धिरूपी सारथी विज्ञानयुक्त है अर्थात् मनके निग्रहद्वारा इन्द्रियोंको बाह्यविषयोंकी तरफसे हटाने के जो साधन हैं उन साधनों करके जिसकी बुद्धि ज्ञानसम्पन्न निश्चल शान्त होगई है, उसीके वशवर्ती सब इन्द्रियां होती हैं, जैसे स्वाधीन सुशिक्षित घोड़ों करके चतुर सारथी रथके स्वामी को सुमार्ग में लेचलकर उसके धामपर पहुँचादेताहै, तैसेही बुद्धि विज्ञानयुक्त अपने स्वामी जीव आत्मा शरीरारूढ़ को निगृहीत मन आदिक इन्द्रियारूपी घोड़ों करके उसके परमधाम को पहुँचा देताहै ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(७) यस्त्वविज्ञानवान् भवत्यमनस्कः सदाशुचिः
न सतत्पदमाप्नोति सꣳसारंचाधिगच्छति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

यः तु अविज्ञानवान् भवति अमनस्कः सदा अशुचिः न सः तत् पदम् आप्नोति संसारम् च अधिगच्छति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तु	= और	भवति	= होता है
यः	= जो	सः	= सो
अविज्ञानवान्	= विवेकरहित	तत्पदम्	= उसपदकोया-नीमोक्षको
च	= और	न	= नहीं
अमनस्कः	= मनकीएकाग्रतासे रहित	आप्नोति	= प्राप्तहोता है
		च	= परन्तु
		संसारम्	= संसारकोही
सदा	= सदैव	अधिगच्छति	= प्राप्तहोताहै ॥
अशुचिः	= अपवित्र		

भावार्थ ।

यस्त्वविज्ञानवानिति–जो इस शरीररूपी रथका स्वामी जीव विज्ञान से रहितहै, और अनिरुद्ध मनवालाहै, अर्थात् जिसका मन अपने वशावर्ती नहीं है, किंतु सदैवकाल विषयों की बासनाकरके अपवित्र रहताहै, और इन्द्रियां जिसकी यथेष्टाचरणको करती हैं, वह आत्मपद को नहीं प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(८) यस्तु विज्ञानवान् भवति समनस्कः सदा शुचिः सतु तत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयोनजायते ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

यः तु विज्ञानवान् भवति समनस्कः सदा शुचिः सः तु तत् पदम् आप्नोति यस्मात् भूयः न जायते ॥

अन्वयः	पदार्थ
तु	= और
यः	= जो
विज्ञानवान्	= विवेकी
समनस्कः	= एकाग्रचित्तवाला
सदा	= सदा
शुचिः	= पवित्र
भवति	= होताहै
सः	= वह
तु	= निश्चय करके
तत्	= उस
पदम्	= पदको
आप्नोति	= प्राप्त होताहै
यस्मात्	= जिसकरके
भूयः	= फिर
न	= नहीं
जायते	= उत्पन्न होताहै॥

भावार्थ ।

यस्तुविज्ञानवानिति–जिस विवेकी पुरुष रथीका जो सुशिक्षित बुद्धिरूपी सारथी है, और जिसने अपने मन को निग्रहीत किया है, और जो सर्वदाकाल विषयवासनासे रहित शुद्धचित्तवालाहै, वही ब्रह्मपदको प्राप्तहोता है, और फिर जन्म मरणरूपी संसार में नहीं आता है ॥ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(९) विज्ञानसारथिर्यस्तु मनः प्रग्रहवान्नरः सो ऽध्वनः पारमाप्नोति तद्विष्णोःपरमम्पदम् ॥ ९ ॥

पदच्छेदः

विज्ञानसारथिः यः तु मनः प्रग्रहवान् नरः सः अध्वनः पारम् आप्नोति तत् विष्णोः परमम् पदम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो
विज्ञान् सारथिः	= विज्ञान सारथी है
तु	= और
मनः	= मनरूपी
प्रग्रहवान्	= वागकाग्रहणकरने वाला
नरः	= पुरुषहै
सः	= वह
अध्वनः	= संसार मार्गके
पारम्	= पारको
आप्नोति	= प्राप्तहोता है
तत्	= सोई
विष्णोः	= विष्णुका
परमम्	= परम
पदम्	= पद है ॥

भावार्थ ।

विज्ञानसारथिरिति—जिस पुरुष रथीकी विवेकवती बुद्धि और मन वशवर्ती है, वह विद्वान् पुरुष संसारसमुद्र से पार होकर मुक्त होजाता है, और जो संसार का पार स्थान है, वही व्यापकरूप ब्रह्मका स्वरूपहै, वही विष्णुका परमपद है ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

(१०) इन्द्रियेभ्यः पराह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः मनसश्च परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः ॥ १० ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

इन्द्रियेभ्यः पराः हि अर्थाः अर्थेभ्यः च परम् मनः मनसः च परा बुद्धिः बुद्धेः आत्मा महान् परः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इंद्रियेभ्य	= इन्द्रियों से	मनः	= मन है
पराः	= परे	च	= और
हि	= निश्चयकरके	मनसः	= मनसे
अर्थाः	= विषयहैं क्योंकिइन्द्रियोंकी प्रवृत्ति विषयोंके आधीन है	परा	= परेयानेसूक्ष्म
		बुद्धिः	= बुद्धि है
		च	= और
		बुद्धेः	= बुद्धिसे
		परः	= परे
अर्थेभ्यः	= विषयोंसे	महान्	= महान्
परम्	= परे	आत्मा	= हिरण्यगर्भहै॥

भावार्थ ।

इन्द्रियेभ्यइति–इन्द्रियेभ्यः॥श्रोत्रादिपांचज्ञानेन्द्रियों से उत्कृष्ट शब्दादिक विषय हैं, क्योंकि इन्द्रियोंकी प्रवृत्ति विषयों के आधीन ही होती है, तात्पर्य यह है कि स्थूल शरीरसे सूक्ष्म इन्द्रियाँहैं, और इन्द्रियों से सूक्ष्म विषयहैं, और विषयों से भी सूक्ष्म मनहै, क्योंकि मनही विषयों का ग्राहक है, और संकल्प विकल्परूपी मनसे भी सूक्ष्म बुद्धि है, क्योंकि मनका व्यापार भी बुद्धिकेही आधीन है, और अस्मदादिव्यष्टिबुद्धिसे सूक्ष्म समष्टिबुद्धि हिरण्यगर्भ अथवा महत्तत्त्व है ॥ १० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(११) महतः परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः
पुरुषान्न परं किञ्चित्सा काष्ठा सा परा गतिः ॥११॥

पदच्छेदः

महतः परम् अव्यक्तम् अव्यक्तात् पुरुषः परः
पुरुषात् न परम् किंचित् सा काष्ठा सा परा गतिः ॥

अन्वयः	पदार्थ
महतः	हिरण्यगर्भसे
परम्	परे
अव्यक्तम्	अव्याकृत है
अव्यक्तात्	अव्याकृतयानेमाया से
परः	परे
पुरुषः	आत्मा है
पुरुषात्	आत्मासे
परम्	परे
नकिंचित्	कुछ नहीं है
सा	सोई
काष्ठा	अवधि है यानी परम आश्रय है
+च	और
सा	सोई
परा	सर्वोत्तम
गतिः	गतिहैअर्थात् प्राप्तहोने योग्य है ॥

भावार्थ ।

महतइति–और समष्टिबुद्धिसे भी उत्कृष्ट अव्यक्त है, क्योंकि वह सम्पूर्ण जगत्का कारण है, और तिस अव्यक्त से सर्वत्र पूर्ण जो पुरुष है वह सूक्ष्म है, क्योंकि वह पुरुष अथवा आत्मा संपूर्ण जडवर्गका प्रकाशक है, और स्वयं प्रकाशरूप सर्वत्र परिपूर्ण है, उससे सूक्ष्म कोईभी वस्तु नहीं है, वही सबकी अवधि है और वही परमगति है ॥ ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१२) एषसर्वेषु भूतेषु गूढात्मा नप्रकाशते दृश्यते त्वग्र्या बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः ॥ १२॥

पदच्छेदः

एषः सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते दृश्यते तु अग्रया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एषः	= यह	अग्रया	= एकाग्र
गूढात्मा	= गूढात्मा	सूक्ष्मया	= सूक्ष्म
सर्वेषु	= सब	बुद्ध्या	= बुद्धिद्वारा
भूतेषु	= भूतों बिषे	सूक्ष्मदर्शिभिः	= सूक्ष्मदर्शी ज्ञानियोंकरके
न	= नहीं	+दृश्यते	= देखा जाता है याने अनुभवकिया जाता है ॥
प्रकाशते	= प्रकाशता है यानीसबको नहीं देखाई देता है		
तु	= परन्तु		

भावार्थ ।

एषइति—यह जो इन्द्रिय आदिकों से परे आत्मा कहा है, सोई ब्रह्मा से लेकर स्तंब पर्यंत प्राणियों में अविद्या करके आच्छादित है, इसीलिये तिसका प्रकाश सबको प्रतीत नहीं होता है ॥ प्र० ॥ पूर्व कहा है कि आत्मा को शोकरहित पुरुष देखता है, और अब कहते हैं कि किसी को भी उसका प्रकाश नहीं होता है, एकही उपनिषद् में परस्पर विरोधी दो बातें क्यों कही हैं ॥ उ० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्तकी शुद्धि और अशुद्धि के कारण दो प्रकार के अधिकारी पुरुष होते हैं, दोनों में जो कि शुद्धचित्तवाले हैं याने जिनकी बुद्धि साधनों करके और विचार करके शुद्ध होगई है, उन सूक्ष्मदर्शियों के हृदय में वह आत्मा साक्षात्कार सूर्यवत् भाषने लगता है, और जिनकी बुद्धि मलिन है उनके हृदय में आत्मा का प्रकाश नहीं होता है ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

(१३) यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञानआत्मनि ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्त आत्मनि ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

यच्छेत् वाङ्मनसी प्राज्ञः तत् यच्छेत् ज्ञाने आत्मनि ज्ञानम् आत्मनि महति नियच्छेत् तत् यच्छेत् शान्ते आत्मनि ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
प्राज्ञः	= बुद्धिमान् पुरुष	यच्छेत्	= लयकरे
वाक्	= वाणीको	+ च	= और
मनसी	= मनबिषे		
यच्छेत्	= लयकरे	ज्ञानम्	= ज्ञानयानेबुद्धिको
+ च	= और		
तत्	= उसमनको	महति	= महान्
ज्ञाने	= ज्ञानरूपी	आत्मनि	= हिरण्यगर्भमें
आत्मनि	= आत्मा याने बुद्धिमें	नियच्छेत्	= लयकरे
		+ च	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् = तिस महात्मा हिरण्यगर्भ को | आत्मनि = अधिष्ठान आत्मा में
शान्ते = शान्त | यच्छेत् = लयकरै ॥

भावार्थ ।

यच्छेद्वाङ्मनसीति–बुद्धिकी एकाग्रता के विना सूक्ष्म आत्मा का भान नहीं होता है, इसलिये बुद्धिके एकाग्र करने को कहते हैं ॥ यच्छेत् ॥ आत्मजिज्ञासु पुरुष प्रथमवागादिक इन्द्रियों को मनमें लयकरै, अर्थात् मनके व्यापार से भिन्न इन्द्रियों के व्यापार का अभाव करदेवै, फिर तिस मनको निश्चलबुद्धि में लयकरै, याने बुद्धिके व्यापार से भिन्न मनके व्यापार का अभाव करदेवै, फिर तिस व्यष्टिबुद्धि को समष्टिबुद्धि में लयकरै, अर्थात् समष्टिबुद्धि से भिन्न व्यष्टिबुद्धि नहीं है, ऐसा चिन्तन करै, फिर तिस समष्टि बुद्धिको निर्विकार प्रत्यगात्मा में लयकरै, आत्मा से अतिरिक्त जोकि समष्टि बुद्धिहै उसका अभाव करदेवै, ऐसा चिंतन करने से आत्मा से भिन्न सब कल्पितपदार्थ मिथ्या प्रतीत होनेलगतेहैं, तब हे नचिकेता! वह पुरुष महान् आनन्द में मगन हो जाता है ॥ १३ ॥

मूलम् ॥

(१४) उत्तिष्ठतजाग्रतप्राप्यवरान्निबोधत क्षुरस्य धारानिशितादुरत्ययादुर्गम्पथस्तत्कवयोवदन्ति १४

पदच्छेदः

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गम् पथः तत् कवयः वदन्ति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
+ हे जन्तवः	= हेमनुष्यो
+ यूयम्	= तुम
उत्तिष्ठत	= उठो
जाग्रत	= जागो
च	= और
वरान्	= श्रोत्रियब्रह्मनेष्ठि आचार्य्य को
प्राप्य	= प्राप्तहोकर
+ आत्मानम्	= आत्माको
निबोधत	= जानो

अन्वयः	पदार्थ
ज्ञानम्	= ज्ञान
क्षुरस्य	= छुरीकी
निशिता	= तीक्ष्ण
धारा	= धारकीतरह
दुरत्यया	= कठिन है
च	= और
तत्	= उसीको
कवयः	= विद्वान् लोक
दुर्गम् पथः	= दुर्गममार्ग
वदन्ति	= कहते हैं ॥

भावार्थ ।

उत्तिष्ठेति—योगाभ्यास द्वारा चित्तकी एकाग्रताको करके आत्मामें समष्टिबुद्धिका लय करना जिस अधिकारी के प्रति श्रुति ने कहा है उसी अधिकारी के प्रति आत्मज्ञान में यत्न करने को श्रुति कहती है ॥ उत्तिष्ठेति ॥ हे साधन सम्पन्न अधिकारी पुरुषो ! उठो, आत्मज्ञानके लिये यत्न करो, अज्ञानरूपी निद्रासे जागो, ब्रह्मवित् आचार्य्य के उपदेशको श्रवण करके आत्मज्ञानको प्राप्त हो, उन्हीं करके उपदेश कियेहुये आत्मतत्त्व को जानो, और निश्चय करो, यह आत्मतत्त्व सब पुरुषों को प्राप्तहोने योग्य नहीं है, यह आत्मज्ञान अतिशय करके कठिन है, और जैसे उस्तरे का तेजधारपर चलना अति कठिन है इसी तरह आत्मज्ञान का मार्ग भी अति कठिन है, उसपर चलना इस मार्ग से बड़े बड़े पण्डित भी भयभीत होते हैं ॥ १४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१५) अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथाऽरसन्नित्यमगन्धवच्च यत् अनाद्यनन्तम्महतः परन्ध्रुवं निचाय्य तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते ॥ १५ ॥

पदच्छेदः

अशब्दं अस्पर्शम् अरूपम् अव्ययम् तथा अरसम् नित्यम् अगन्धवत् च यत् अनादि अनंतम् महतः परम् ध्रुवम् निचाय्य तत् मृत्यु मुखात् प्रमुच्यते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	जो	अनादि	आदिरहितहै
अशब्दम्	शब्दरहितहै	अनन्तम्	अंतरहितहै
अस्पर्शम्	स्पर्शरहितहै	महतः	महत्तत्वसे
अरूपम्	रूपरहितहै	परम्	परेहै
अव्ययम्	अविनाशीहै	ध्रुवम्	अचल है
तथा	और	तत्	तिसको
अरसम्	रसरहितहै	निचाय्य	जानकरके
नित्यम्	नित्यहै	+पुरुषः	पुरुष
अगन्धवत्	गन्धरहितहै	मृत्युमुखात्	मृत्युकेमुखसे
च	और	प्रमुच्यते	छूटजाताहै ॥

भावार्थ ।

अशब्दमिति-प्र०॥ आत्मज्ञान की प्राप्ति अति कठिन क्यों है॥ उ०॥ अशब्दं ॥ जो ब्रह्म शब्द रहित है, स्पर्श रहित है, रूपरहित है, नाशरहित है, रसरहित है, गन्धरहित है, नित्य है, आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहित है, अन्त रहित है, महत्तत्त्व से परे है, अचल है, उसको जो पुरुष जानता है, वह मृत्युके मुख से छूट जाता है, याने जब मुमुक्षु माया और मायाके कार्य को गुण युक्त नाशी पाता है, और ब्रह्मको उनसब का अधिष्ठान होतेहुयेभी उनसे विलक्षण पाता है, तब वह जीवन मुक्त होकर शरीरत्याग पश्चात् आवागमन से रहित होजाता है ॥ १५ ॥

मूलम् ॥

(१६) नाचिकेतमुपाख्यानं मृत्युप्रोक्तं सनातनम्
उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी ब्रह्मलोके महीयते ॥ १६ ॥

पदच्छेदः

नाचिकेतम् उपाख्यानम् मृत्युप्रोक्तं सनातनम् उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी ब्रह्मलोके महीयते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
मृत्युप्रोक्तम्	= मृत्युकरके कहीहुई	उक्त्वा	= कथनकरके
सनातनम्	= सनातन	च	= और
नाचिकेतम्	= नचिकेता सम्बन्धी	श्रुत्वा	= श्रवणकरके
उपाख्यानम्	= आख्यायिको	मेधावी	= बुद्धिमान् पुरुष
		ब्रह्मलोके	= ब्रह्मलोक में
		महीयते	= महिमा को प्राप्त होता है ॥

भावार्थ ।

नाचिकेतमिति–पूर्वोक्तज्ञान की स्तुतिको श्रुति करती है ॥ नाचिकेतम् ॥ मृत्युकरके कथन कियाहुआ जो आत्मज्ञान है, वह चिरकालस्थायि है, जिस ज्ञानको उपनिषद् की तीनवल्लियों करके मृत्युने नचिकेता के प्रति कहा है, उस ज्ञानको जो आप आचार्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वारा श्रवण करके ब्राह्मणादि तीनों वर्णों को सुनाता है, वह ब्रह्मलोक में जाकर महान् महिमाको प्राप्तहोकर ब्रह्माकी तरह पूज्य होजाता है ॥ १६ ॥

मूलम् ॥

(१७) यइमं परमं गुह्यं श्रावयेद् ब्रह्मसंसदि प्रयतः श्राद्ध काले वा तदानन्त्याय कल्पते तदानन्त्याय कल्पते इति ॥ १७ ॥ इति तृतीयावल्ली ३ ॥

पदच्छेदः

यः इमम् परमम् गुह्यम् श्रावयेत् ब्रह्मसंसदि प्रयतः श्राद्धकाले वा तत् आनन्त्याय कल्पते तत् 'आनन्त्याय' कल्पते इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो
इमम्	= इस
परमम्	= परम
गुह्यम्	= गोपनीय विद्याको
ब्रह्मसंसदि	= ब्राह्मणों की सभामें
वा	= अथवा
प्रयतः	= पवित्रहोकर
श्राद्धकाले	= श्राद्धकेसमय
श्रावयेत्	= सुनावै तो
तत्	= वह सुनाना
आनन्त्याय	= अनन्त फल के अर्थ
कल्पते	= मानाजाता है
तत्	= वह सुनाना
आनन्त्याय	= अनन्त फल के अर्थ
कल्पते	= मानजाताहै
इति	= ऐसाकहतेहैं॥

इतिप्रथमाध्यायेतृतीयावल्ली ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

यइममिति–प्रथम अध्याय की अब समाप्ति को करते हैं ॥ यइति॥जो पुरुष पवित्र होकर यत्नसे इस परमउत्कृष्ट और गोपनीय उपनिषद् को ब्राह्मणोंकी सभामें पढ़कर सुनाता है और उसके अर्थको समझाता है या श्राद्धकाल में जब ब्राह्मण भोजन करने लगते हैं तब सुनाता है तो उसको अनन्त फलप्राप्तहोता है॥ १७॥

इति तृतीयावल्ली ॥ ३ ॥

इतिप्रथमोध्यायःसमाप्तः ॥

मूलम् ॥

(१) ॐ पराञ्चि खानि व्यतृणत स्वयम्भूस्तस्मा त्पराङ् पश्यति नान्तरात्मन् कश्चिद्धीरः प्रत्यगा- त्मानमैक्षदावृतचक्षुरमृतत्वमिच्छन् ॥ १ ॥

पदच्छेदः

पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूः तस्मात् प- राक् पश्यति न अन्तरात्मन् कश्चित् धीरः प्रत्यक् आत्मानम् ऐक्षत् आवृतचक्षुः अमृतत्वम् इच्छन् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
स्वयम्भूः	परमेश्वर	पराङ्	विषयोंकोही
खानि	इन्द्रियोंको	पश्यति	देखती हैं
पराञ्चि	बाह्यविषयोंकीओर जानेवाली	अन्तरात्मन्	अन्तरात्मा को
		न	नहींदेखती हैं
व्यतृणत्	रचताभया	कश्चित्	कोई बिरला
तस्मात्	तिसीकारणवे	धीरः	धीरपुरुष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमृतत्वम् = अमरभावकी
इच्छन् = इच्छाकरताहुवा
आवृतचक्षुः = चक्षु इन्द्रियों को विषयोंसे हटाकर
प्रत्यक् = अंतर
आत्मानम् = आत्माको
ऐक्षत = देखता है ॥

भावार्थ ।

पूर्वले अध्याय में संक्षेपसे जिस ब्रह्मका लक्षण कहा है, अब इस अध्याय में विस्तार करके तिसी ब्रह्मके लक्षणको कहते हैं ॥ परांचीति ॥ स्वयंभूः ॥ स्वतन्त्र जो परमेश्वर है, उसने इन्द्रियों को बाह्यशब्दादिक विषयों के प्रकाश करने में सामर्थ्यवाला रचा है और जिस कारण परमेश्वर ने इन्द्रियों को बाह्यमुख रचा है, इसी कारण इन्द्रियां बाह्यविषयों की तरफही दौड़ती हैं और सम्पूर्णप्राणी इन्द्रियों द्वारा बाह्यविषयोंको ही देखते हैं, अन्तर्यामि प्रत्यगात्मा को नहीं देखते हैं, जो कोई एक विवेकी पुरुष है, वह विषयों की तरफसे चक्षुको हटाकर अन्तरात्मा को देखता है, वह मोक्षको प्राप्त होता है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

(२) पराचः कामाननुयन्ति बालास्ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम् अथ धीराअमृतत्वं विदित्वा ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते ॥ २ ॥

पदच्छेदः

पराचः कामान् अनुयन्ति बालाः ते मृत्योः यन्ति विततस्य पाशम् अथ धीराः अमृतत्वम् विदित्वा ध्रुवम् अध्रुवेषु इह न प्रार्थयन्ते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
पराचः	= बाह्य	धीराः	= विवेकी पुरुष
कामान्	= विषयों को	ध्रुवम्	= नित्य
बालाः	= अज्ञानीपुरुष	अमृतत्वम्	= अमररूप आत्माको
अनुयन्ति	= प्राप्तहोते हैं	विदित्वा	= जानकरके
च	= और	इह	= इससंसार बिषे
ते	= वेही	अध्रुवेषु	= अनित्य भोगोंको
मृत्योः	= मृत्यु के	नप्रार्थयन्ते	= नहीचाहतेहैं ॥
विततस्य	= फैलेहुये		
पाशम्	= रस्सीको		
यन्ति	= प्राप्तहोते हैं		
अथ	= और		

भावार्थ ।

पराचइति-आत्मदर्शी को संसारकी निवृत्ति और आत्मादर्शी को संसारकी प्राप्ति अब इस मन्त्रकरके कहते हैं ॥ पराचः ॥ जो कोई अल्प बुद्धिवाला है, अर्थात् बालवत् मूढ़अज्ञानी है, वह दृष्टाऽदृष्ट विषयों की तरफही दौड़ता है, अर्थात् पूर्वोक्त इन्द्रियों करके वह विषयों को ही अनुभव करता है, और यमराजकी विस्तृत नानाप्रकार की पाशोंमें बार २ फसता है, बार २ जन्ममरण को प्राप्तहोता है, अज्ञानकी ऐसी दुर्दशाको देखकर विवेकी पुरुष अपने अमररूप आत्माको जानकर ब्रह्म और नित्यानन्द को अनुभवकर अनित्य संसारी भोगोंसे लेकर ब्रह्मलोकके भोगोंपर्यंत की इच्छा नहीं करता है ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(३) येनरूपंरसंगन्धं शब्दान्स्पर्शांश्चमैथुनान् एतेनैवविजानाति किमत्रपरिशिष्यते एतद्वै तत् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

येन रूपम् रसम् गन्धम् शब्दान् स्पर्शान् च मैथुनान् एतेन एव विजानाति किम् अत्र परिशिष्यते एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
येन	= जिससाक्षि आत्मा करके	वै	= निश्चयकर के
रूपम्	= रूपको	एतत्	= यहब्रह्महै
रसम्	= रसको	च	= और
गन्धम्	= गन्धको	एतेन	= इसआत्मा से और
शब्दान्	= शब्दोंको	किम्	= क्या
स्पर्शान्	= स्पर्शोंको	अत्र	= यहां
च	= और	परिशिष्यते	= जाननेकोशेषरहताहै याने जानने योग कुछ भी बाकी नहीं रहता है ॥
मैथुनान्	= मैथुनों को		
एव	= ठीक ठीक		
+पुरुष	= पुरुष		
विजानाति	= अच्छे प्रकार जानता है		
तत्	= सोई		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

येनेति ॥ जिस अपरोक्ष साक्षीरूप आत्माकरके नीलपीता-दिरूपोंको, और मधुराम्लादिक रसोंको,सुर भी असुरभी आदिक गन्धों को, ध्वन्यात्मिक वर्णात्मिक शब्दों को, शीत उष्णादिक स्पर्शोंको,और स्त्रीसंसर्गजन्य सुखविशेषको, पुरुष अनुभव करता है, सोई धर्माऽधर्मादिकों से अतीत तत्त्वरूप ब्रह्म है, वही आत्म-तत्त्व है हे नचिकेता ! यह वही है जिसके प्रति तुमने पूंछा था ॥ प्र० ॥ सब लोक तो इन्द्रियादिकों करके ही रूपादिकों को जा-नते हैं, और ऐसा तो कोई नहीं कहता है कि साक्षी चेतनकरके इस वस्तुको मैं जानताहूं ॥ उ० ॥ इन्द्रिय आदिक सब जड़ हैं, उनमें रूपादिकों के जानने की सामर्थ्य नहीं है, उनसे अतिरिक्त दूसरा कोई चेतन आत्मा साक्षी सबका जाननेवाला अवश्य है, और जिसकी सत्ता से देह इन्द्रियादिक सब अपने २ व्यवहार को करते हैं वह देहादिकों से भिन्न है, जो अपने आत्मा को ब्रह्म करके जानता है उसको इसलोकमें कुछ भी बाकी जानने योग्य वस्तु नहीं रहता है ॥ ३ ॥ मूलम् ॥

(४) स्वप्नान्तंजागरितान्तञ्चोभौ येनानुपश्यति महान्तं विभुमात्मानं मत्वाधीरोनशोचति ॥४॥

पदच्छेदः

स्वप्नान्तम् जागरितान्तम् च उभौ येन अनुपश्यति महान्तम् विभुम् आत्मानम् मत्वा धीरः न शोचति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
उभौ	= दोनों यानी	च	= और
स्वप्नांतम्	= स्वप्नकालके पदार्थोंको	जागरितान्तम्	= जाग्रत्काल केपदार्थोंको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

येन = जिस साक्षी चेतनकरके
+पुरुषः = पुरुष
अनुपश्यति = { स्पष्टदेखता है
+एतत् = वही
+वै = निश्चय करके
+तत् = यह ब्रह्म है
+च = और
महान्तम् = महान्
विभुम् = व्यापक
आत्मानम् = आत्माको
मत्वा = जानकरके
धीरः = धीर पुरुष
न शोचति = नहीं शोचको प्राप्तहोता है

भावार्थ ।

स्वप्नान्तमिति ॥ आत्मतत्त्व को अतिसूक्ष्म होने से दुर्विज्ञेय जानकर फिर भी यमराज उसी आत्मतत्त्व को प्रकारान्तर करके कहते हैं ॥ स्वप्नान्तमिति ॥ स्वप्नकाल के पदार्थ और जाग्रत् कालके पदार्थ जिस साक्षी चेतनकरके जाने जाते हैं, और जो महान् व्यापक चेतन शरीरों में नानारूप करके स्थित है, और सम्पूर्ण कल्पना का अधिष्ठानभूतहै, उसको जो कोई पुरुष अपना आत्मा जानकर साक्षात् हस्तामलकवत् करता है वह शोचको नहीं प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

(५) यइमंमध्वदंवेदआत्मानंजीवमन्तिकात् ईशानम्भूतभव्यस्य नततोविजिगुप्सते एतद्वैतत् ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

यः इमम् मध्वदम् वेद आत्मानम् जीवम् अ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्तिकात् ईशानम् भूतभव्यस्य न ततः विजुगुप्सते एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो कोई
इमम्	= इस
मध्वदम्	= कर्मफलका भोक्ता
अन्तिकात्	= समीपवर्ती
भूतभव्यस्य	= कालत्रयका
ईशानम्	= नियामक
जीवम्	= जीवरूप
आत्मानम्	= आत्माको
वेद	= जानताहै

अन्वयः	पदार्थ
+ सः	= वह
ततः	= फिर
न विजुगुप्सते	= अपने आपकी रक्षाकी इच्छा किसी भय से नहीं करता है
तत्	= सोई आत्मा
वै	= निश्चयकरके
एतत्	= यह ब्रह्म है

भावार्थ ।

यइममिति ॥ जीव और ईश्वरके भेदको दूर करते हुये फिर भी यमराज आत्मतत्त्व का उपदेश करते हैं ॥ यइति ॥ जो कोई इस कर्मफल का भोक्ता समीपवर्ती कालत्रय का नियामक जीव है, उसको जो कोई ब्रह्मरूप सर्वका द्रष्टा चेतनआत्मा करके जानता है, वह पुरुष फिर अपने आत्मा की रक्षा के लिये किसीका भय नहीं करता है, क्योंकि जब द्वैतभाव नष्ट होजाता है, तब न भय उसको दूसरे से और न दूसरे को भय उससे होताहै सब में अपनेही को देखताहै, और आपको सबमें देखताहै, हे नचिकेता ! यह वही ब्रह्म है जिसको तूने पूछा था ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

(६) यःपूर्वन्तपसोजातमद्भ्यःपूर्वमजायतगुहां

 CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रविश्यतिष्ठन्तं योभूतेभिर्व्यपश्यत एतद्वैतत् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

यः पूर्व्वम् तपसः जातम् अद्भ्यः पूर्व्वम् अजायत गुहाम् प्रविश्य तिष्ठन्तम् यः भूतेभिः व्यपश्यत एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो
पूर्वम्	= पहले
तपसः	= ब्रह्मसे
जातम्	= उत्पन्नहुआ है
+ च	= और
अद्भ्यः	= जलादि पंच तत्त्वोंसे
पूर्वम्	= पूर्व
अजायत	= उत्पन्न हुआ है
+ च	= और
+यः	= जो
भूतेभिः	= कार्यकारण संघातके सहित
गुहाम्	= हृदयाकाश रूप गुहाबिषे
प्रविश्य	= प्रवेशकरके
तिष्ठन्तम्	= स्थित है
+तद्धिरण्यम्	= तिस हिरण्यगर्भको
यः	= जो पुरुष
व्यपश्यत	= देखता है
तत्	= सोई
वै	= निश्चयकरके
एतत्	= यह ब्रह्म है

भावार्थ।

यःपूर्वमिति ॥ ब्रह्माण्ड का आरम्भक हिरण्यगर्भ जो पञ्चस्थूल महाभूत के प्रथम ज्ञानस्वरूप ब्रह्मसे उत्पन्न हुआ है और जो कार्य कारणसहित हर एकके हृद्याकाशगुहा बिषे स्थित है उस को जोकोई मुमुक्षु ब्रह्मरूप करके देखता है वह ब्रह्मही को देख-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताहै, हे नचिकेता ! यह वही ब्रह्म है जिसको तूने पूंछाथा, और सम्पूर्ण कार्य्य कारण संघात में मिलकरके स्थित है ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

(७) याप्राणेनसम्भवत्यदितिर्देवतामयी गुहांप्रविश्यतिष्ठन्तीं याभूतेभिर्व्यजायत एतद्वैतत ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

या प्राणेन सम्भवति अदितिः देवतामयी गुहाम् प्रविश्य तिष्ठन्तीम् या भूतेभिः व्यजायत एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
या	जो	व्यजायत	उत्पन्नहुवा है
देवतामयी	देवतारूप	+च	और
प्राणेन	प्राणकरके	गुहाम्	हृदयाकाश बिषे
सम्भवति	उत्पन्नहोताहै	प्रविश्य	प्रवेशकरके
+सा	सोई	तिष्ठन्तीम्	स्थित है
अदितिः	अदितिरूपहै	तत्	सोई
+च	और	वै	निश्चयकरके
या	जो	एतत्	यह ब्रह्म है
भूतेभिः	सबभूतोंके साथतादात्म्यताको प्राप्तहोकरके		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

याप्राणेनेति ॥ जो चेतनरूप आत्मा शब्दादि विषयोंका भोक्ताहै, वही प्राणोपलक्षित सूक्ष्मशरीर उपाधिकरके प्रथम देवता हिरण्यगर्भनामक परब्रह्म से उत्पन्न होताहै, उसी हिरण्यगर्भ देवता अथवा अदिति के हृद्याकाशरूपी गुहा विषे ब्रह्म स्थित है, तिसको जो देखता है वह ब्रह्मको ही देखताहै, हे नाचिकेता! तूने जो आत्मतत्त्व पूछा था वह यहही है, जो सम्पूर्ण भूतों के साथ तादात्म्यताको प्राप्त होकर उत्पन्न हुआसा दीखपड़ता है वास्तव से उत्पत्ति आदिकों से रहित है, ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

(८) अरण्योर्निहितोजातवेदागर्भइवसुभृतो गर्भिणीभिः दिवेदिवईड्योजागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

अरण्योः निहितः जातवेदाः गर्भः इव सुभृतः गर्भिणीभिः दिवे दिवे ईड्यः जागृवद्भिः हविष्मद्भिः मनुष्येभिः अग्निः एतत् वै तत्॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अरण्योः	= दोनोंअरणियों बिषे	गर्भिणीभिः	= गर्भवतीस्त्रियों करके
जातवेदाः	= वैश्वानरअग्निऐसे	सुभृतः	= धारणकिया हुआ
निहितः	= स्थित है	गर्भः	= गर्भ
इव	= जैसे	+निहितः	= स्थित है

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ च = और
+ यः = जो
अग्निः = अग्नि
जागृवद्भिः = { जाग्रत्स्वभाववाले यानेप्राणायामके करनेवाले }
च = और
हविष्मद्भिः = हवनके करनेवाले
मनुष्येभिः = मनुष्योंकरके
दिवेदिवे = प्रतिदिन
ईड्यः = { स्तुति करने योग्यहै याने सेवन करने योग्य है }
तत् = वही
वै = निश्चयकरके
एतत् = यह ब्रह्महै

भावार्थ ।

अरण्योर्निहितेति ॥ पूर्वले मन्त्रकरके हिरण्यगर्भको ब्रह्मरूप करके वर्णन किया है, अब इस मन्त्र करके विराट्रूपी अग्निको भी ब्रह्मरूप करके कथन करतेहैं, ॥ अरण्योरिति ॥ जातवेदरूपी जो अग्नि है और जो अरणियों के याने दो लकड़ियों के मथन करने से निकलता है, और जो यज्ञोंविषे हविका भोक्ता है, और जो प्रत्येक शरीरमें स्थित होकर भुक्त वस्तुवोंको पचाता है, और जिसकी रक्षा योगी और ऋतुकादि ऐसे करते हैं जैसे गर्भवती स्त्री अपने गर्भ की रक्षा करती है, और जिसकी स्तुति प्रतिदिन स्वर्ग की इच्छावाले करते रहते हैं, वही ब्रह्मरूप है, क्योंकि ब्रह्मकी प्राप्ति का साधन है, ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

(९) यतश्चोदेतिसूर्योऽस्तं यत्रचगच्छति तन्देवाःसर्वेऽर्पितास्तदुनात्येतिकश्चन एतद्वैतत् ॥ ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यतः च उदेति सूर्य्यः अस्तम् यत्र च गच्छति तम् देवाः सर्वे अर्पिताः तत् उ न अत्येति कश्चन एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
च	= और	देवाः	= देवता
यतः	= जिसप्राणवायु अधिदैव करके	अर्पिताः	= अर्पित हैं
सूर्य्यः	= सूर्य	उ	= और
उदेति	= उदय होता है	तत्	= उसको
च	= और	कश्चन	= कोई भी
यत्र	= जिस बिषे	न	= नहीं
अस्तम्	= अस्त को	अत्येति	= उल्लंघन कर सक्ता है
गच्छति	= प्राप्त होता है	तत्	= सोई
तम्	= तिसी में	वै	= निश्चय करके
सर्वे	= सब	एतत्	= यह ब्रह्म है

भावार्थ ॥

यतश्चोदेति ॥ यमराजने अग्निको हिरण्यगर्भ का अवयव रूपकरके नचिकेता के प्रति पूर्वले मन्त्रकरके कहा है, अब इस मन्त्रकरके इतर देवतों को भी हिरण्यगर्भ का अवयव रूपकरके निरूपण करते हैं ॥ यतश्चोदेतीति ॥ जिस प्राणवायुरूप अधिदेवता से सूर्य्य उदय होता है, और जिसमें अस्तभाव को प्राप्त होताहै तिसी प्राणवायुमें सम्पूर्ण अग्निआदिक और वागादिक देवता अर्पित हैं, जैसे रथ केचक्र में अरे अर्पितहोते हैं, तिसप्राण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायु हिरण्यगर्भ को कोई भी देवता उल्लंघन नहीं करसक्ता है ॥ यह प्राणवायु अधिदेवता ही ब्रह्म है जिसको हे नचिकेता ! तूने पूछाथा ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

(१०)यदेवेहतदमुत्रयदमुत्रतदन्विह मृत्योःस मृत्युमाप्नोति यइहनानेव पश्यति ॥ १० ॥

पदच्छेदः

यत् एव इह तत् अमुत्र यत् अमुत्र तत् अनु इह मृत्योः सः मृत्युम् आप्नोति यः इह नाना इव पश्यति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो	इह	= इस अद्वैत चेतन विषे
एव	= निश्चय करके	नाना	= नानात्व यानी भेदभाववाला
इह	= यहां है	इव	= ऐसा
तत्	= सोई	पश्यति	= देखता
अमुत्र	= वहां है	सः	= सो
यत्	= जो	मृत्योः	= मृत्युसे भी
अमुत्र	= वहां है	मृत्युम्	= मृत्युको
तत्	= सोई	आप्नोति	= प्राप्त होता है
अन्विह	= यहां है		
यः	= जो		

भावार्थ ।

यदेवेति ॥ प्र० ॥ यह जो सम्पूर्ण प्राणियों को ब्रह्मरूप करके कहाहै सो अयुक्त है, क्योंकि उपाधि अवच्छिन्नचेतन संसारी है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और उपाधि से रहित जो चेतनहै वह ब्रह्महै, विरुद्ध धर्मोंवालों की ऐक्यता नहीं होती है॥ उत्तर॥ इसमें कोई दोष नहीं है, यदेवेह॥ जो चेतन जीवकी उपाधि बुद्धि में साक्षीरूप करके रहताहै, वही चेतनमायारूपी ईश्वरकी उपाधि में भी रहता है, जो चेतन ईश्वरकी उपाधि मायामें है, वही चेतनजीव की उपाधि बुद्धिमें भी है, जो पुरुष वस्तुके भेदसे शून्य ब्रह्ममें भी नानात्वभाव देखता है, और समझता है, कि मैं ब्रह्म से भिन्नहूं, और मेरे से ब्रह्म भिन्नहै, वह मृत्युसे भी मृत्युको अर्थात् पुनः २ जन्म मरण को प्राप्त होता है,॥ १०॥

मूलम्॥

(११) मनसैवेदमाप्तव्यन्नेहनानास्ति किञ्चन मृत्योःसमृत्युङ्गच्छति यइहनानेव पश्यति॥ ११॥

पदच्छेदः

मनसा एव इदम् आप्तव्यम् न इह नाना अस्ति किंचन मृत्योः सः मृत्युम् गच्छति यः इह नाना इव पश्यति॥

अन्वयः	पदार्थ
मनसा	मनकरके
एव	ही
इदम्	यह
आप्तव्यम्	प्राप्तहोने योग्य है
इह	इसब्रह्म विषे
किञ्चन	किंचित्मात्र भी
नाना	नानात्व याने भेद
न	नहीं
अस्ति	है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो	मृत्योः	= मृत्यु से भी
इह	= इसब्रह्म विषे	मृत्युम्	= मृत्युको यानी पुनःपुनः जन्ममरणको
नाना इव	= नानात्वकोही	गच्छति	= प्राप्तहोता है
पश्यति	= देखता है		
सः	= वह		

भावार्थ ।

मनसैवेदमिति ॥ जीवात्मा और ब्रह्मात्मा के अभेद ज्ञानके साधन को अब कहते हैं ॥ मनसा ॥ एकाग्र मन करके यह ब्रह्म प्राप्तव्य है याने जाननेके योग्य है, ब्रह्मजीवमें कुछभी भेद नहीं है, जो मूढ़ पुरुष इस ब्रह्ममें नानात्वभेद को देखता है, वह मर कर बार २ क्षुद्र योनियों को प्राप्त होता है, ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

(१२) अंगुष्ठमात्रःपुरुषोमध्यआत्मनि तिष्ठतिईशानोभूतभव्यस्य नततोविजुगुप्सतेएतद्वैतत् ॥ १२ ॥

पदच्छेदः

अंगुष्ठमात्रः पुरुषः मध्ये आत्मनि तिष्ठति ईशानः भूतभव्यस्य न ततः विजुगुप्सते एतत् वै तत्

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अंगुष्ठमात्रः	= अंगुष्ठमात्र	मध्ये	= मध्यबिषेयाने हृदयाकाश में
पुरुषः	= पुरुष		
आत्मनि	= शरीर के		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिष्ठति = स्थित है		विजुगुप्सते = किसी भयसे रक्षा करने की इच्छा
+ च = और		न = नहींकरताहै
भूतभव्यस्य = कालत्रयका		तत् = सोई
ईशानः = प्रेरक है		वै = निश्चयकरके
ततः = इस लिये		एतत् = यह ब्रह्म है
+ सः = वह		

भावार्थ ।

अंगुष्ठमात्रइति ॥ आत्मज्ञानकी दृढ़ता के लिये यमराज फिर अभेद काही उपदेश करते हैं ॥ अंगुष्ठमात्रः ॥ अंगुष्ठपरिमाण मनुष्य का हृदयाकाशरूपी पुरहै, तिसके भीतर रहने से आत्मा अंगुष्ठपरिमाणवाला कहा जाता है, उपाधिपरिमाण से पुरुष भी परिमाणवाला कहाजाता है, वास्तवसे यह आत्मा सर्वत्र पूर्णहै, और शरीर के भीतर साक्षीरूप करके स्थित है, और भूत भविष्यत् वर्त्तमान तीनों कालों में होनेवाले जितने पदार्थ हैं ! उन सबका प्रेरकहै, वह किसी का भय नहीं करताहै हे नचिकेता ! यही वह आत्मतत्त्व है जिसको तूने पूछा था ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

(१३) अङ्गुष्ठमात्रःपुरुषोज्योतिरिवाधूमकः ईशानोभूतभव्यस्यसएवाद्यसउश्वएतद्वैतत् ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषः ज्योतिः इव अधूमकः ईशानः भूतभव्यस्य सः एव अद्य सः उ श्वः एतत् वै तत् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
अंगुष्ठमात्रः	= अंगुष्ठमात्र
पुरुषः	= पुरुष
अधूमकः	= धूमरहित
ज्योतिः	= अग्नि की
इव	= तरह प्रकाशमान है
च	= और जो
भूतभव्यस्य	= तीनोंकाल का
ईशानः	= नियामक ईश्वर है
सः एव	= सोई निश्चयकरके
अद्य	= आजवर्त्तमानहैया ने प्रत्यक्ष वर्त्तमानहै
उ	= और
सः	= सोई
श्वः	= कल याने गुप्त स्थित है
ततः	= ताते
तत्	= वही
वै	= निश्चय करके
एतत्	= यह ब्रह्म है

भावार्थ ।

अंगुष्ठमात्रेति ॥ अंगुष्ठमात्रः ॥ उपाधि के परिमाणसे अङ्गुष्ठमात्र परिमाणवाला आत्मा भी कहाजाताहै,औरपुर नाम शरीर का है, उसमें शयन करने से वह पुरुष भी कहा जाता है, और धूमसे रहित अग्निकी तरह वह प्रकाशमान है, और भूत भव्य पदों करके सम्पूर्ण प्रपंच का ग्रहण करनेवाला है,अर्थात् सम्पूर्ण प्रपंचकों का प्रेरक है, और वर्त्तमान काल और भविष्यकाल बिषे एकरस होकर रहताहै और जैसे कालखण्ड रहित है, तैसे आत्मा भी अखण्डहै, हे नचिकेता ! यह वही आत्माहै,जिसको तूने पूछा था ॥ १३ ॥

मूलम् ॥

(१४) यथोदकन्दुर्गे वृष्टं पर्वतेषुविधावति एवं धर्मान्पृथक्पश्यँस्तानेवानुविधावति ॥ १४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यथा उदकम् दुर्गे वृष्टम् पर्वतेषु विधावति एवम् धर्मान् पृथक् पश्यन् तान् एव अनुविधावति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यथा	= जैसे	धर्मान्	= धर्मोंको
उदकम्	= जल	पृथक्	= भिन्नभिन्न
दुर्गे	= कठिन	प्रतिशरीरम्	= प्रति शरीर में
पर्वतेषु	= पर्वतपर	+ पुरुषः	= जीवात्मा
वृष्टम्	= बरसाहुवा	पश्यन्	= देखताहुवा
विधावति	= निम्न देश में फैलकर नष्ट हो-जाता है	तान् एव	= तिनहीं शरीरोंको
एवम्	= इसीप्रकार	अनुविधावति	= वारंवारप्राप्त होताहै

भावार्थ ।

यथोदकमिति ॥ आत्मा के भेददर्शीको संसार की प्राप्ति और आत्मा के एकत्वदर्शी को मोक्षकी प्राप्ति यमराज नाचिकेताके प्रति कहचुके हैं, अब तिसी प्रसंग की समाप्ति को कहते हैं ॥ यथोदकमिति ॥ जैसे बड़े ऊंचे पर्वतों पर गिरा हुवा जल नीचेके देशमें दौड़ जाताहै, और जैसा २ उसको जगह मिलता है उसी २ आकारको प्राप्त होकर दिखलाई देताहै, तैसेही आत्मा शरीरादि उपाधियों के भेद करके भिन्न भिन्न होरहा है, जो आत्माको भिन्न २ करकेही जानता है, एक रूप करके नहीं जानताहै, वह शरीरों कोही प्राप्त होताहै, और जो नाना शरीरों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकही आत्मा देखता है, वह मोक्ष को प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

मूलम् ॥

(१५) यथोदकंशुद्धेशुद्धमासिक्तन्तादृगेव भव
ति एवंमुनेर्विजानतआत्माभवति गौतम ॥ १५ ॥

पदच्छेदः

यथा उदकम् शुद्धे शुद्धम् आसिक्तम् तादृक् एव भवति एवम् मुनेः विजानतः आत्मा भवति गौतम ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
गौतम	= हे नचिकेता	भवति	= बना रहताहै
यथा	= जैसे	एवम्	= इसी प्रकार
उदकम्	= जल	विजानतः	= ज्ञानी
शुद्धे	= शुद्धस्थानमें	मुनेः	= मुनि का
आसिक्तम्	= गिराहुआ या नी वर्षाहुआ	आत्मा	= आत्मा
तादृक्एव	= वैसाही	+सदा	= सदा
शुद्धम्	= शुद्ध	शुद्धम्	= शुद्ध
		+ भवति	= रहता है

भावार्थ ।

यथोदकमिति॥जैसे स्वच्छ जल मेघसे गिरा हुआ स्वच्छजल में स्वच्छजलबना रहता है, तैसेही आत्मा अभेद ज्ञानवालेके शुद्ध मनमें स्थित होकर अपने शुद्ध ज्ञानस्वरूप से च्युत नहीं होताहै, वह ज्यों का त्यों वैसाही बना रहताहै, हे नाचिकेता!॥ १५॥

द्वितीयाऽध्यायस्यचतुर्थवल्लीसमाप्ता ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१) पुरमेकादशद्वारमजस्यावक्रचेतसःअनुष्ठायनशोचतिविमुक्तश्चविमुच्यत एतद्वैतत् ॥ १ ॥

पदच्छेदः

पुरम् एकादशद्वारम् अजस्य अवक्रचेतसः अनुष्ठाय न शोचति विमुक्तः च विमुच्यते एतत् वै तत्

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अजस्य	जन्मरहित	अनुष्ठाय	ध्यान करके
अवक्रचेतसः	अकुटिलविज्ञानरूपचेतन आत्माका	नशोचति	शोक नहीं करता है
+इदम्	यह	+ सः	वह
एकादशद्वारम्	ग्यारह दरवाजे वाला	विमुक्तः	मुक्तहुआ
पुरम्	पुररूपीशरीरहै	च	भी
+यः	जो	विमुच्यते	मुक्त होताहै
+तम्	उस पुरके स्वामी को	तत्	सोई
		वै	निश्चयकरके
		एतत्	यह ब्रह्म है

भावार्थ ।

पुरमिति ॥ जीवाभिन्न ब्रह्मके प्रतिपादन करनेके लिये प्रथम देहादि संघात से आत्मतत्त्व का विवेचन करते हैं ॥ पुरमिति ॥ जन्मादिषट् विकारों से रहित जो चेतन है और जो सूर्य्य के प्रकाश की तरह सर्वत्र ज्ञानरूप से शुद्ध मायारूपी शरीर विषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थित हैं उसके साथ अपने स्थूलशरीररूपी पुरके स्वामी आत्मा से अभेद जान करके जो शोकको नहीं करताहै याने शोकका हेतु जितना दृश्य प्रपंच है उससे अपने को पृथक् देखता है, वह मुक्ति को प्राप्त है, अथवा अद्वितीय आत्मज्ञान करके उसका कल्पित अज्ञानरूपी बंध नष्ट होजाता है, और जैसे पुरके द्वार होते हैं तैसेही इस शरीररूपी पुरके भी एकादश द्वारहैं, दो श्रोत्र, दो चक्षु, दो नासिका, एक मुख, एक ब्रह्मरन्ध्र (जिसको दशवां द्वार कहते हैं) एक नाभी, एक लिंग, एक गुदा ये सब मिलाकर एकादशद्वारहैं, इन एकादश द्वारोंवाला जो शरीरहै, तिसका स्वामी जो आत्मा चेतन है सोई ब्रह्म है, हे नाचिकेता ! जिसको तूने पूछाथा वह यहही है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

(२) हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत् नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जागोजा ऋतुजाअद्रिजाऋतम्बृहत् ॥ २ ॥

पदच्छेदः

हंसः शुचिषत् वसुः अन्तरिक्षसत् होता वेदिषत् अतिथिः दुरोणसत् नृषत् वरसत् ऋतसत् व्योमसत् अब्जाः गोजाः ऋतुजाः अद्रिजाः ऋतम् बृहत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+अयम् आत्मा	= यह आत्मा	वसुः	= वायुरूप हो कर सबको अपने बिषे बसावनेवाला है
हंसः	= हंस है		
शुचिषत्	= पवित्र आकाश में स्थितहै		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्तरिक्ष सत् = अन्तरिक्षमें चलनेवाला है
होता = अग्निरूपहै
वेदिषत् = पृथिवी में स्थित है
अतिथिः = जलरूप हो कर
दुरोणसत् = कलश बिषे स्थित है
नृषत् = मनुष्यों में स्थित है
वरसत् = देवतावों में स्थित है
ऋतसत् = यज्ञमें स्थितहै
व्योमसत् = आकाश में स्थित है
अब्जाः=जलमें स्थित होने से प्रतीत होताहै
गोजाः=पृथिवीमें स्थित होने से प्रतीत होताहै
ऋतुजाः=यज्ञमें स्थित होने से प्रतीत होताहै
अद्रिजाः = पर्वतमें स्थित होने से उत्पन्न हुआ प्रतीत हो ताहै
ऋतम् = सत्य है
बृहत् = सबसे बड़ाहै

भावार्थ ।

हꣳसइति ॥ प्र० ॥ तुमने एक शरीर के स्वामी आत्माको ब्रह्म कहा पर एक शरीरका स्वामी तो परिछिन्न होता है इस कारण उस ब्रह्मको परिछिन्नता और अनेकता भी सिद्ध होगी क्योंकि शरीर अनेकहैं ॥ उ० ॥ सूर्य्यरूप होकर पवित्र आकाश में गमन करने से आत्मा कानाम " शुचिषत् "है और हंस भी है, वायुरूप होकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने में निवास देने से उसका नाम " वसु " है और वायु रूपहोकर आकाश में गमन करने से उसका नाम " अन्तरिक्षसत् " है, होतारूप होकर याने अग्निरूपहोकर पृथिवीरूपी वेदी में स्थित होने से उसका नाम " वेदिषत् " है और सोमरूप होकर कलश में स्थित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होने से उसका नाम "दुरोणसत्" है अथवा अतिथिरूप ब्राह्मण होकर यज्ञशाला में गमन करने से उसका नाम "दुरोणसत्" है मनुष्यों में स्थित होनेसे उसका नाम "नृसत्" है श्रेष्ठ देवताओं में स्थित होने से उसका नाम "वरसत्" है, सत्यरूप होकर यज्ञ में स्थित होनेसे उसका नाम "ऋतसत्" है आकाश में व्यापक और सूक्ष्मरूप होकर स्थितहोने से उसका नाम "व्योमसत्" है और शंख मकरादिरूप होकरके जलमें उत्पन्नहोने के कारण उसका नाम "अब्जा" है, पृथिवी में उद्भिद्रूप होकरके उत्पन्न होने से उसका नाम "गोजा" है और कर्मों का फल जो देह है उसके साथ तद्रूप करके उत्पन्न होनेसे उसका नाम "ऋतुज्जा" है और पर्वतोंसे नदीरूप होकरके उत्पन्न होनेसे उसका नाम "अद्रिजा" है, इसप्रकार बाधा से रहित सर्वव्यापकरूपता ब्रह्मको ही कही है, वह न उपाधियों के परिच्छेद करके परिच्छेदवाला है, और न उपाधियोंके नाना होने से नाना है, उपाधि सब मिथ्या है, वह सत्यरूपहै हे नचिकेता! यह वही ब्रह्म है जिसको तूने पूछाथा २॥

मूलम् ॥

(३) ऊर्द्ध्वम्प्राणमुन्नयत्यपानंप्रत्यगस्यतिमध्ये वामनमासीनंविश्वेदेवाउपासते ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

ऊर्द्ध्वम् प्राणम् उन्नयति अपानम् प्रत्यक् अस्यति मध्ये वामनम् आसीनम् विश्वेदेवाः उपासते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+ यः	= जो	उन्नयति	= लेजाता है
प्राणम्	= प्राणवायुको	+ च	= और
ऊर्द्ध्वम्	= ऊपरकी ओर	अपानम्	= अपानवायुको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्यक् = नीचेकी ओर	आसीनम् = स्थित को
अस्यति = फेंकता है	विश्वे = सब
+तम् = उस	देवाः = चक्षुरादि देवता
वामनम् = अंगुष्ठमात्र शिव	उपासते = उपासना करते हैं
मध्ये = हृदयाकाश बिषे	

भावार्थ ।

उर्ध्वमिति ॥ पूर्वोक्त ब्रह्मात्माके स्वरूपके जानने के लिये अब चिह्नको बताते हैं ॥ऊर्ध्वम्॥ हे नचिकेता ! जो आत्मा प्राणवायु को हृदयाकाशसे ऊपर के देशमें प्राप्त करता है, और जो अपानवायुको हृदयाकाश से अधोदेश में फेंकता है वही आत्मा शरीर के भीतर हृदयाकाश बिषे स्थित है और हृदयके परिमाणसे परिच्छिन्न भान भी होरहा है, अर्थात् जैसा छोटा हृदय है वैसाही वह भी छोटे रूपसे प्रतीतहोरहा है, (वामनका अर्थ प्रशस्त फल को प्राप्तकरनेवाला भी है अर्थात् सर्वफलोंको इन्द्रियों के प्रति प्राप्तकरनेवाला जो आत्मा है उसी का नाम वामन है) उसीकी चक्षुरादि सम्पूर्ण इन्द्रियां उपासना करती हैं, और उसीको अपने अपने व्यापाररूपी संपूर्ण बलियोंको समर्पण करती हैं और जिस आत्मा के आधीन प्राणादि सम्पूर्ण करण हैं सो आत्मा प्राणादिकोंसे पृथक् है, वह उनके नाश से नाश नहीं होता है हे नचिकेता ! यह वही ब्रह्म है जिसको तूने पूछा था ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

(४) अस्यविस्रंसमानस्य शरीरस्थस्यदेहिनः देहाद्विमुच्यमानस्यकिमत्रपरिशिष्यतएतद्वैतत् ॥४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

अस्य विस्रंसमानस्य शरीरस्थस्य देहिनः देहात् विमुच्यमानस्य किम् अत्र परिशिष्यते एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
विस्रंसमानस्य	= बाहर निकलनेवाले	किम्	= क्या
+ च	= और	अत्र	= उसत्यागेहुयेशरीरबिषे
विमुच्यमानस्य	= देहको त्यागने वाले	परिशिष्यते	= अवशेषरहताहै अर्थात् कुछ भीशेषनहीं रहता
अस्य	= इस	+ तस्मात्	= इसलिये
शरीरस्थस्य	= शरीर बिषे स्थित	एतत्	= यही
देहिनः	= जीवआत्मा के	वै	= निश्चयकरके
देहात्	= देहसे पृथक् होनेपर	तत्	= वह ब्रह्म है

भावार्थ ।

अस्येति ॥ इस शरीर में वर्तमान जो आत्मा है जब वह शरीर से बाहर निकल कर चलाजाता है तत्पश्चात् इस शरीर में फिर शेष क्या रहता है? इसशरीरकी स्थितिका कारणवही है जब वह चलजाताहै तब कुछ नहीं रहता है, जब आत्मा देहका त्याग कर देता है तब यह देह जलाने के योग्य होजाता है, इसी वास्ते फिर लोक इस देहको जला भी देतेहैं, इसी से सिद्ध होता है, कि देह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की स्थिति का हेतु आत्माही है, हे नचिकेता ! जिसको तूने पूछा था वह यही आत्मा है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

(५) नप्राणेननापानेनमर्त्योजीवतिकश्चन इतरेणतुजीवन्तियस्मिन्नेतावुपाश्रितौ ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

न प्राणेन न अपानेन मर्त्यः जीवति कश्चन इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन् एतौ उपाश्रितौ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
कश्चन	कोई भी	इतरेणतु	औरही करके
मर्त्यः	मनुष्य	जीवन्ति	जीवते हैं
नप्राणेन	नप्राणोंकरके	यस्मिन्	जिस में
च	और	एतौ	वेदोनों प्राणापान
नअपानेन	न अपान करके	उपाश्रितौ	आश्रित हो रहे हैं
जीवति	जीता है	+ तत् एवब्रह्म	सोई ब्रह्म है
+ परन्तु	परन्तु		

भावार्थ ।

नप्राणेनेति ॥ प्र० ॥ देहकी स्थिति का हेतु तो अन्वयव्यतिरेक करके प्राण अपानही प्रसिद्ध होते हैं, इन से भिन्न तो कोई भी आत्मा सिद्ध नहीं होता है ॥ उ० ॥ नप्राणेनेति ॥ कोई भी जीव प्राणादिवायु करके जीवता नहीं है, किन्तु प्राणादिकों से विलक्ष जो चेतन है, तिसीकी सत्ता करके सब जीव जीवते हैं, सर्व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का कारणीभूत जो आत्माहै, उसीके आश्रय ये प्राण अपान आदि भी स्थितहैं, हे नचिकेता ! वही यह ब्रह्महै जिसको तूने पूछाथा ५॥

मूलम् ॥

(६) हन्ततइदम्प्रवक्ष्यामिगुह्यम्ब्रह्मसनातनम्
यथाचमरणंप्राप्यआत्माभवतिगौतम ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

हन्त ते इदम् प्रवक्ष्यामि गुह्यम् ब्रह्म सनातनम् यथा च मरणम् प्राप्य आत्मा भवति गौतम ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
हन्त	= अब	यथा	= जिस प्रकार
ते	= तुझ से	आत्मा	= अज्ञानीपुरुष का आत्मा
इदम्	= इस	मरणम्	= मरण को
सनातनम्	= पुरातन	प्राप्य	= प्राप्त होके
गुह्यम्	= गोप्य	संसारम्	= संसार को
ब्रह्म	= ब्रह्म को	भवति	= पावता है
प्रवक्ष्यामि	= कहताहूं	तम्	= तिसको
च	= और	शृणु	= श्रवण कर
गौतम	= हेनचिकेता		

भावार्थ ।

हंतेति ॥ यमराज कहते हैं हे नचिकेता ! पूर्वोक्त जो गोप्य और सनातन नित्य ब्रह्म है उसीको मैं फिर भी तुम्हारे प्रति कहूंगा, हे गौतम ! जिस तरह जीव ब्रह्मको भलीप्रकार जानकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्म मरण से रहित होजाता है और उसको न जानकर फिर जन्म मरणरूपी संसारको प्राप्तहोता है उन सबको तुम्हारे प्रति कहूंगा, तुम सावधान होकर श्रवण करो ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

(७) योनिमन्येप्रपद्यन्तेशरीरत्वायदेहिनः स्थाणुमन्येऽनुसंयन्तियथाकर्मयथाश्रुतम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

योनिम् अन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः स्थाणुम् अन्ये अनुसंयन्ति यथा कर्म यथा श्रुतम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
अन्ये	ज्ञानवान् से अन्य
देहिनः	देहाभिमानी अज्ञानी
शरीरत्वाय	शरीरके अर्थ
योनिम्	अनेकयोनिको
यथाकर्म	कर्मके अनुसार
च	और
यथाश्रुतम्	प्रवृत्तिशास्त्र श्रवणानुसार
प्रपद्यन्ते	प्राप्तहोते हैं

अन्वयः	पदार्थ
अन्ये	सकाम कर्म करने वालों से भीअन्य अत्यन्तमूढ़ पुरुष
स्थाणुम्	जङ्गमभाव को यानीवृक्षपाषाण आदि को
यथाकर्म	कर्मानुसार
च	और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यथाश्रुतम् =	कपोलकल्पितशास्त्रश्रवणानुसार	अनुसंयन्ति = प्राप्त होते हैं

भावार्थ।

योनिमिति ॥ जो कोई अज्ञानी पुरुष हैं अर्थात् देहधारी अहंकारी जीव हैं, वे मरणको प्राप्तहोकर पुनः शरीर ग्रहण के लिये कर्मानुसार अथवा प्रवृत्तिशास्त्र श्रवण अनुसार अनेक योनिको प्राप्तहोते हैं, वीर्यद्वारा स्त्री की योनि में प्रवेश कर जाते हैं, वहां अन्य शरीर धारणकर निकल आते हैं, और जो अति पापिष्ठ हैं, वे वृक्षादि योनियों को प्राप्त होतेहैं ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

(८) यएषसुप्तेषुजागर्तिकामंकामंपुरुषो निर्मिमाणस्तदेवशुक्रंतद्ब्रह्मतदेवामृतमुच्यतेतस्मिँल्लोकाः श्रिताःसर्वेतदुनात्येतिकश्चनएतद्वैतत ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

यः एषः सुप्तेषु जागर्ति कामम् कामम् पुरुषः निर्म्मिमाणः तत् एव शुक्रम् तत् ब्रह्म तत् एव अमृतम् उच्यते तस्मिन् लोकाः श्रिताः सर्वे तत् उ न अत्येति कश्चन एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः =	जो	पुरुषः =	पुरुष
एषः =	यह	सुप्तेषु =	स्वप्न में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कामंकामम् = वांछितविषयों को	सर्वे = सब
निर्मिमाणः = रचताहुआ	लोकाः = लोक
जागर्ति = जागता है	श्रिताः = आश्रित हैं
तत् एव = सोई	+ च = और
तत् = वह	तत् = उसको
शुक्रम् = शुद्ध	कश्चन = कोई भी
ब्रह्म = ब्रह्म है	न = नहीं
च = और	अत्येति = उल्लंघन करसक्ताहै
तत् एव = सोई	+ अस्मात् कारणात् = इसी कारण
अमृतम् = अविनाशी	एतत् वै = यही
उच्यते = कहाजाताहै	तत् = वह ब्रह्म है
तस्मिन् = तिसहीविषे	

भावार्थ ।

यएषइति ॥ जो यह चेतन इन्द्रियोंके सुप्त होने पर भी निद्रा से रहित होकर जागता रहताहै, और स्वप्नमें वांछित विषयों को याने पशु पुत्रादिकों को रच लेताहै, और जो स्वप्न के पदार्थों का द्रष्टा है, वही उसका अपना आत्मा है, वही शुद्ध है, और सम्पूर्ण उपाधियों से रहित है, वही ब्रह्म अविनाशी व्यापक है, उसी को श्रुतियां मोक्षस्वरूप भी कहती हैं, उसी के सब लोक आश्रित हैं उसको कोई भी उलंघन नहीं करसक्ताहै ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

(९) अग्निर्यथैकोभुवनंप्रविष्टोरूपंरूपंप्रतिरूपोबभूव एकस्तथासर्वभूतान्तरात्मारूपंरूपंप्रतिरूपोबहिश्च ॥ ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

अग्निः यथा एकः भुवनम् प्रविष्टः रूपम् रूपम् प्रतिरूपः बभूव एकः तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपम् रूपम् प्रतिरूपः बहिः च ॥

अन्वयः	पदार्थ
यथा	= जैसे
एकः	= एक
अग्निः	= अग्नि
भुवनम्	= भुवनविषे
प्रविष्टः	= प्रवेशकरता हुआ
रूपम् रूपम्	= रूपरूपसे याने अनेक रूपसे
प्रतिरूपः	= हरएकउपाधि के साथ तद्रूप
बभूव	= होताभया (होताहै)
तथा	= वैसेही
सर्वभूतान्तरात्मा	= सब भूतों के अन्तर का आत्मा भी
एकः	= एक होता हुआ
रूपम्रूपम्	= देह देहके प्रति
प्रतिरूपः	= तादात्म्याऽध्यास करके
बभूव	= तद्रूपहीहोता भया (स्थितहै)
च	= और
बहिः	= आकाशवत् सबके बाहर भी स्थित होता भया (स्थितहै)

भावार्थ।

अग्निरिति ॥ जैसे एकही अग्नि भवन में याने मन्दिर में प्रविष्ट होकर उस मन्दिर के भीतर जितने रूपवाले काष्ठादि पदार्थ होते हैं उनको जलातेहुये उतनेही रूपोंवाला होताहै याने

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोले काष्ठ के साथ गोला लम्बेके साथ लम्बा टेढ़े के साथ टेढ़ा और सीधे के साथ सीधा दिखलाई देताहै, परन्तु वास्तव से तेजोरूप अग्नि काष्ठ आदि उपाधियों से विलक्षणहै, न वह गोलहै, न वह लम्बाहै, न वह टेढ़ाहै, न चौड़ाहै. तैसे सम्पूर्ण भूतों का एकही अन्तर आत्मा भी सब शरीरों के साथ तादात्म्याध्यासकरके, शरीरों के आकार की तरह प्रतीत होता है, पर वास्तव से वह सब शरीरों से भिन्न है, शरीरों के गण दोषोंके साथ लिप्यमान कदापि नहीं होता है ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

(१०) वायुर्यथैकोभुवनंप्रविष्टोरूपंरूपंप्रतिरूपोबभूव एकस्तथासर्वभूतान्तरात्मा रूपंरूपंप्रतिरूपोबहिश्च ॥ १० ॥

पदच्छेदः

वायुः यथा एकः भुवनम् प्रविष्टः रूपम् रूपम् प्रतिरूपः बभूव एकः तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपम् रूपम् प्रतिरूपः बहिः च ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यथा	जैसे	रूपम्रूपम्	शरीर शरीर प्रति
एकः	एक	प्रतिरूपः	तद्रूप
वायुः	वायु	बभूव	होता भया
भुवनम्	चतुर्दश लोक में	तथा	वैसेही
प्रविष्टः	प्रवेश करता हुआ	सर्वभूतान्तरात्मा	सब भूतों का अन्तरात्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकः = एक होता हुआ	च = और
रूपम्रूपम् = देहदेह प्रति	बहिः = बाहर भी आकाशवत् व्याप्त होताभया (स्थित है)
प्रतिरूपः = तादात्म्यरूप	
बभूव = होता भया (स्थित है)	

भावार्थ ।

वायुरिति ॥ जैसे एकही वायु मंदिर आदिको में प्रवेश कर के सब कोठरी और छत आदि के साथ मिल करके तत्तद्रूपवाला होजाता है अर्थात् कोठरी आदिकों के भेद करके भेद वाला प्रतीत होने लगता है, परन्तु वह खुद मन्दिर या कोठरी या उनमें जो विकार है नहीं होजाता है, तैसेही एकही आत्मा सम्पूर्ण प्राणियों के शरीरों के साथ मिलकर तत्तद्रूपवाला प्रतीत होने लगताहै परन्तु उन उपाधियों के गुणदोषों करके दोष वाला नहीं होता है ॥ १० ॥

मूलम् ॥

(११) सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः

सूर्य्यः यथा सर्वलोकस्य चक्षुः न लिप्यते चाक्षुषैः बाह्यदोषैः एकः तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यथा	= जैसे	सूर्य्यः	= सूर्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वलोकस्य=सबलोकों का
चक्षुः = नेत्रभूतहोताहुआ
चाक्षुषैः = लोकों के चक्षुओं के
बाह्यदोषैः = बाह्यदोषों करके
नलिप्यते = नहीं लिप्यमानहोताहै

तथा = वैसेही
एकः = एक
सर्वभूतान्तरात्मा = सबभूतों का अंतरात्मा
बाह्यः = पृथक्होता हुआ
लोकदुःखेन = लोकोंकेदुःखसे
नलिप्यते = नहीं लिप्यमान होताहै

भावार्थ ।

सूर्योयथेति ॥ जैसे प्राणिमात्र के चक्षु में देवतारूप से सूर्य स्थित है और चक्षुओं करके निषिद्ध दर्शनजन्य या अधर्मजन्य पाप या चक्षुद्वारा बाह्य दोष अर्थात् अपवित्र वस्तुओं के साथ संसर्ग भी रखता है पर उनके पाप या अपवित्रा से लिप्यमान नहीं होताहै, और जैसे बाह्य तेजरूप सूर्य आकाशमें स्थित है और सम्पूर्ण पवित्र अपवित्र वस्तुओं को अपने किरणों करके स्पर्श करताहै पर न वह पवित्र, न अपवित्र,होताहै, और जैसे वह एक रस ज्योंका त्यों आदि, अन्त, मध्य रहित प्रकाश सम्बंध रखते हुये भी असम्बन्ध स्थित है, तैसेही सजातीय, विजातीय, स्वगत आदि भेदों से रहित सम्पूर्णभूतों का अन्तरात्मा सम्पूर्ण प्राणियोंकी बुद्धि में स्थितहुआ बुद्धिके गुणदोषों करके लिप्यमान नहीं होता है ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

(१२) एकोवशीसर्वभूतान्तरात्मा एकंरूपंबहु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धाय:करोति तमात्मस्थंयेऽनुपश्यन्तिधीरास्तेषां सुखं शाश्वतन्नेतरेषाम् ॥ १२ ॥

पदच्छेदः

एकः वशी सर्वभूतान्तरात्मा एकम् रूपम् बहुधा यः करोति तम् आत्मस्थम् ये अनुपश्यन्ति धीराः तेषाम् सुखम् शाश्वतम् न इतरेषाम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
सर्वभूतान्तरात्मा	= सब भूतोंका अन्तरआत्मा
एकः	= एकहै
वशी	= सबको वश करनेवालाहै
च	= और
एकंरूपम्	= अपनेएकही रूपको
यः	= जो
बहुधा	= उपाधिकरके बहुत प्रकारका
करोति	= करलेता है
तम्	= तिस
आत्मस्थम्	= शरीरमेंस्थित आत्माको
ये	= जो
धीराः	= विवेकी पुरुष
अनुपश्यन्ति	= अनुभवकरतेहैं
तेषाम्	= तिनकोही
शाश्वतम्	= नित्य
सुखम्	= सुखहोता है
इतरेषाम्	= इतर पुरुषोंको
न	= नहीं होताहै

भावार्थ।

एकइति ॥ जो सजातीय विजातीयादि भेद से शून्य परमात्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है, वह एकही है, और सम्पूर्ण जगत् को अपने वश करके वर्त्तता है, वह सम्पूर्ण भूतों का अन्तरात्मा है, और सम्पूर्ण प्राणियों की बुद्धि में स्थित होकर अपने निरुपाधिक एक चिद्रूप को उपाधियों करके नानाप्रकार का करलेता है, उसी आत्मा को जो विवेकी पुरुष आचार्य्य के उपदेश के अनन्तर अपने में साक्षात् अनुभव करते हैं, उन कोही नित्यसुखकी प्राप्ति होती है ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

(१३) नित्योनित्यानाञ्चेतनश्चेतनानामेको बहूनांयोविदधातिकामान् तमात्मस्थंयेऽनुपश्यन्तिधीरास्तेषांशान्तिः शाश्वतीनेतरेषाम् ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

नित्यः अनित्यानाम् चेतनः चेतनानाम् एकः बहूनाम् यः विदधाति कामान् तम् आत्मस्थम् ये अनुपश्यन्ति धीराः तेषाम् शान्तिः शाश्वती न इतरेषाम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
यः	जो व्यापक आत्मा
अनित्यानाम्	अनित्य जगत्आदिकों का
नित्यः	अधिष्ठान कारणरूप नित्यहै
च	और
चेतनानाम्	चेतनकाभी
चेतनः	चेतन है
सः	सोई
एकः	एक हुवा हुवा
बहूनाम्	अनंतजीवों प्रति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कामान् = कर्मों के अनुसार भोगों को
विदधाति = देताहै
तम् = तिस
आत्मस्थम् = बुद्धिमेंस्थितआत्माको
ये = जो
धीराः = विवेकी पुरुष
अनुपश्यन्ति = अनुभवकरते हैं
तेषाम् = उनको
शाश्वती = नित्य
शान्तिः = शान्तिरूपमोक्षप्राप्त है
इतरेषाम् = औरों को
न = नहीं

भावार्थ ।

नित्या इति ॥ नित्योऽनित्यानां ॥ जितने संसार में विनाशी पदार्थ हैं उनको भी व्यवहारिक नित्यत्वकी सत्ता देनेवाला एक आत्माही है, अथवा नैयायिकों के मत में जो आकाश कालादि नित्य हैं उनमें व्यापकरूप होकर उनको जो सत्तास्फुरती नित्य देनेवालाहै वह आत्माही है, और जितने चेतन ब्रह्माइन्द्रादिक हैं उन सब का भी नियन्ता आत्माही है, अथवा चेतनत्व करके लोकों को अभिमत जो बुद्धि आदिक हैं उनको भी जो अपनी चैन्यता देकर चेतन करनेवाला है वह आत्माही है, जो दूसरे किसी की सहायता से रहित होकरके सम्पूर्ण प्राणियों के प्रति वाञ्छित कामना को देताहै वह आत्माही है, ऐसे आत्मा को जो विवेकी पुरुष देखते हैं अर्थात् अपना आत्मा जानकर साक्षात्कार करते हैं उनकोही नित्यसुखकी प्राप्ति होती है इतरों को नहीं ॥ १३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१४) तदेतदिति मन्यन्तेऽनिर्देश्यम्परमंसुखम्
कथन्नुतद्विजानीयांकिमुभातिविभातिवा ॥ १४ ॥

पदच्छेदः

तत् एतत् इति मन्यन्ते अनिर्देश्यम् परमम् सुखम् कथम् नु तत् विजानीयाम् किमु भाति विभाति वा ॥

अन्वयः	पदार्थ
यत्	जो
परमम्	उत्कृष्ट
सुखम्	सुख
अनिर्देश्यम्	कहनेमें आवै नहीं
तत्	सोई
एतत्	यह आत्मा ज्ञानस्वरूप है
इति	ऐसा
+ ब्रह्मविदः	ब्रह्मवेत्ता
मन्यन्ते	मानतेहैं
+ भगवन्	हे भगवन्
+ तत्	उस परमात्माको
कथम् नु	कैसे
विजानीयाम्	जानूं मैं
+ तत्	वह
किमु	कैसे
भाति	प्रकाशताहै
वा	और
+ किमु	कैसे
विभाति	स्पष्टभासताहै

नोट—नचिकेता यमराज भगवान्से कहताहै कि हे भगवन्! जो सुखरूप आत्मा ब्रह्मवेत्ताओं को प्राप्त है उसको मैं कैसे जानूं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ।

तदेतदिति ॥ जो पूर्व कथन कियाहुआ निरतिशय आत्मानन्दहै अर्थात् जिससे अधिक और आनन्द नहीं है, जो आनन्द कथन करनेको अशक्य है, जिस आनन्द को ज्ञानी लोग अपरोक्षता करके जानते हैं, और जो आनन्द विद्वानों को अनुभव करकेही सिद्ध है उस आनन्दको हम किसप्रकार से जानें, अर्थात् किसप्रकारसे उसको हम मुमुक्षु लोग अपरोक्षता करके अपनी बुद्धिका विषय करैं, ॥ १४ ॥

मूलम् ॥

(१५) नतत्रसूर्योभातिनचन्द्रतारकन्नेमाविद्युतो भान्तिकुतोयमग्निः तमेवभान्तमनुभातिसर्वं तस्यभासासर्वमिदंविभाति ॥ १५ ॥

पदच्छेदः

न तत्र सूर्यः भाति न चन्द्रतारकम् न इमाः विद्युतः भान्ति कुतः अयम् अग्निः तम् एव भान्तम् अनुभाति सर्वम् तस्य भासा सर्वम् इदम् विभाति ॥

अन्वयः	पदार्थ
तत्र	तिसको
सूर्य्यः	सूर्य
नभाति	नहींप्रकाश करसक्ताहै
च	और
चन्द्रतारकम्	चन्द्रमा सहिततारोंके
+ नभाति	नहीं प्रकाशकरसक्ता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च = और
इमाः = ये
विद्युतः = बिजुलियांभी
नभान्ति = नहींप्रकाशक-रसक्ती हैं
+ तर्हिं = तब
कुतः = कैसे
+ तम् = उसको
अयम् = यह
अग्निः = लौकिक अ-ग्नि
+ प्रकाश-यिष्यति = प्रकाशकरैगी किन्तु नहीं करैगी

तम् एव = तिसही
भान्तम् = प्रकाश मान के पीछे
सर्वम् = सब जगत्
अनुभाति = प्रकाशमान होताहै
च = और
तस्य = तिसही के
भासा = प्रकाशकरके
इदंसर्वम् = यह सम्पूर्ण सूर्यादि
विभाति = प्रकाशमान होताहै

इति द्वितीयाध्याये पञ्चमीवल्ली समाप्ता ॥

भावार्थ ।

न तत्रेति ॥ जब उस स्वात्मस्वरूप ब्रह्म में सूर्य जो सम्पूर्ण जगत् का प्रकाशकहै, प्रकाश नहीं करसक्ताहै, न चन्द्रमा सहित तारों के प्रकाश करसक्ताहै और न यह बिजुली प्रकाश करसक्तीहै, तब यह अग्नि उस ब्रह्म में क्या प्रकाश करसक्ती है, उस आत्माके प्रकाश से ही सब सूर्य्यादिक प्रकाशमान होते हैं, स्वतन्त्र न वे प्रकाशमान हैं और न दूसरों को प्रकाशमान करसक्ते हैं ॥ १५ ॥

इति श्रीद्वितीयाध्याये पञ्चमीवल्ली समाप्ता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१) ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाखएषोऽश्वत्थः सनातनःतदेवशुक्रंतद्ब्रह्मतदेवामृतमुच्यते तस्मिँल्लोकाः श्रिताःसर्वेतदुनात्येतिकश्चनएतद्वैतत् ॥ १ ॥

पदच्छेदः

ऊर्ध्वमूलः अवाक्शाखः एषः अश्वत्थः सनातनः तत् एव शुक्रम् तत् ब्रह्म तत् एव अमृतम् उच्यते तस्मिन् लोकाः श्रिताः सर्वे तत् उ न अत्येति कश्चन एतत् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थ
एषः	यह संसार
ऊर्ध्वमूलः	ऊर्ध्वमूल
अवाक्शाखः	नीचे शाखा-वाला
सनातनः	अनादि काल का
अश्वत्थः	पीपल का वृक्ष है
तत्एव	तिस संसार-रूपी वृक्ष का मूल
शुक्रम्	शुद्ध

अन्वयः	पदार्थ
ब्रह्म	ब्रह्म है
च	और
तत् एव	वही
अमृतम्	अविनाशी
उच्यते	कहा जाताहै
तस्मिन्	उस बिषे
सर्वे	सब
लोकाः	लोक
श्रिताः	आश्रयको प्राप्त हैं
उ	और
तत्	उसको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कश्चन = कोई भी	एतत् = यही
नअत्येति = नहीं उल्लंघन कर सक्ता है	वै = निश्चय करके
	तत् = वह ब्रह्म है

भावार्थ ।

पूर्ववाली वल्ली में यमराज ने नचिकेता के प्रति कहा है कि आदित्यादिकों का भी प्रकाशक ब्रह्म है, अब इस छठी वल्ली में और प्रकार करके ब्रह्म के स्वरूप को कहते हैं ॥ ऊर्ध्वमिति ॥ यह जो प्रत्यक्ष का विषय ब्रह्मा से लेकर स्थावरपर्य्यंत संसार है वह प्राचीन काल के एक वृक्ष के समान है ॥ प्र० ॥ मूल और शाखा से रहित संसार को वृक्षरूपता कैसे है ॥ उ० ॥ ऊर्ध्वं अर्थात् सबसे उत्कृष्ट जो ब्रह्म है सोई इस संसार का मूल है और कार्य्योपाधि हिरण्यगर्भ इस के नीचे की शाखा है, जो संसाररूपी वृक्ष का मूलकारण ब्रह्म है वह शुद्ध है व्यापक है और अविनाशी है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

(२) यदिदंकिञ्चजगत्सर्वं प्राणएजतिनिःसृतम् महद्भयंवज्रमुद्यतं यएतद्विदुरमृतास्तेभवन्ति ॥ २ ॥

पदच्छेदः

यत् इदम् किञ्च जगत् सर्वम् प्राणे एजति निःसृतम् महद्भयम् वज्रम् उद्यतम् ये एतत् विदुः अमृताः ते भवन्ति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो	सर्वम्	= सब
किञ्च	= कुछ	जगत्	= जगत् है
इदम्	= यह	+ तत्	= सो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राणे = प्राणरूपी ब्रह्म विषे
एजति = चलताहै यानी उसीके आश्रयहै
\+ च = और
\+ ततः = तिसी से
निस्सृतम् = निकसाभयाहै
महद्भयम् = वह ब्रह्म बड़ा भयवालाहै
वज्रम् = वज्रको
उद्यतम् = उठाये हुये है
ये = जो विवेकीजन
एतत् = इसको
विदुः = जानतेहैं
ते = वे
अमृताः = अमर
भवन्ति = होतेहैं

भावार्थ ।

यदिति ॥ जोकुछ जगत् में प्रत्यक्ष का विषय दिखाई देता है वह सब ब्रह्म से ही उत्पन्न हुआ है, जिस ब्रह्म के व्यापक होने से और तीनों कालों में विद्यमान होने से संपूर्ण जगत् के प्राणीमात्र अपने २ व्यापारों को करते हैं उसी ब्रह्म का नाम महद्भयहै, जो सब से महान् हो, और संपूर्ण जगत् जिस से भय को प्राप्त हो उसी का नाम महद्भय है, और जैसे वज्र को हाथ में लिये हुये इन्द्र दूसरों के भय का कारण होता है तैसेही ब्रह्मभी सब पुरुषों के लिये भय का हेतु है अर्थात् संपूर्ण जगत् उसी के भय से कांपता है जो विद्वान् इस प्रकार संपूर्ण जगत् के प्रवर्तक ब्रह्म को जानता है और उसी ब्रह्म को अपना आत्मा भी जानता है वही मुक्तस्वरूप होता है ॥ २ ॥

मूलम् ॥

(३) भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपतिसूर्य्यः भयादिन्द्रश्चवायुश्चमृत्युर्धावतिपञ्चमः ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

भयात् अस्य अग्निः तपति भयात् तपति सूर्यः
भयात् इन्द्रः च वायुः च मृत्युः धावति पञ्चमः॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अस्य	= इसपरमात्माके	भयात्	= भयसे
भयात्	= भयसे	+धावति	= दौड़ताहै यानी वर्षा करताहै
अग्निः	= अग्नि	+ च	= और
तपति	= तपताहै	वायुः	= वायु
च	= और	+अस्य	= इसी के
सूर्य्यः	= सूर्य्य भी	+भयात्	= भयसे
+अस्य	= इसी के	+धावति	= चलताहै
भयात्	= भयसे	+ च	= और
तपति	= तपताहै	पञ्चमः	= पांचवां
च	= और	मृत्युः	= मृत्यु
इन्द्रः	= इन्द्र	धावति	= दौड़ता फिरताहै
+अस्य	= इसके		

भावार्थ ।

भयादिति ॥ इस परमात्मा के भय से अग्नि तपताहै अर्थात् अपने कार्य दाह प्रकाशादिकों को किया करता है, सूर्य्य प्रतिदिन पूर्व से पश्चिम ऊपरसे नीचे चलकर संपूर्ण लोकों को प्रकाश करता रहता है, इन्द्र भी अपना कार्य याने वर्षा किया करता है, वायु रात्रि दिन अंतरिक्ष में दौड़ताही रहताहै, और मृत्यु यमराज उसी परमात्मा के भय से अहर्निशि पापियों को दण्ड देने के लिये दौड़ता फिरता है, जिस परमात्मा के भय से ऐसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़े सूर्य्यादिक भयभीत हो रहे हैं तब औरों की कौनसी गिनती है ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

(४) इहचेदशकद्बोद्धुम्प्राक्शरीरस्यविस्रसः ततःसर्गेषुलोकेषुशरीरत्वायकल्पते ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

इह चेत् अशकत् बोद्धुम् प्राक् शरीरस्य विस्रसः ततः सर्गेषु लोकेषु शरीरत्वाय कल्पते ॥

अन्वयः	पदार्थ
इह	= इसी जन्ममें
शरीरस्य	= शरीर के
विस्रसः	= पात होने से
प्राक्	= पहले
चेत्	= यदि
बोद्धुम्	= जानने को
अशकत्	= समर्थ भया
+तदा	= तो
+संसार बन्धनात्	= संसार के बंधन से
+विमुच्यते	= छूटजाता है
+ नचेत्	= औरअगरनहीं
+बोद्धुम्	= जानने को
+अशकत्	= समर्थ भया
ततः	= तो
सर्गेषु	= पृथिवी आदि
लोकेषु	= लोकों बिषे
शरीरत्वाय	= शरीरधारणार्थ
कल्पते	= समर्थहोताहै यानी अनेक योनियों को प्राप्त होता है

भावार्थ ।

इहेति ॥ शरीर के पतन होने से पूर्वही इस मनुष्यदेह में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जैसे छाया और धूप पृथक् २ प्रतीत होते हैं तैसेही ब्रह्म-लोक में उपाधि से रहित चेतन आत्मा का स्वरूप सूर्य्यवत् दिखाई देता है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

(६) इन्द्रियाणामपृथग्भावमुदयास्तमयौचय त्पृथगुत्पद्यमानानांमत्वाधीरोनशोचति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

इन्द्रियाणाम् पृथक् भावम् उदयास्तमयौ च यत् पृथक् उत्पद्यमानानाम् मत्वा धीरः न शोचति

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
च	= और	+ तत्	= उसको
पृथक्	= भिन्न	उदयास्तमयौ	= उत्पत्तिप्रलयरूप अथवा जाग्रत्सुषुप्तिरूप
उत्पद्यमानानाम्	= उत्पन्नभये	मत्वा	= जानकरके
इन्द्रियाणाम्	= इन्द्रियोंके	धीरः	= धीरपुरुष
यत्	= जो	नशोचति	= शोकको नहीं प्राप्त होताहै
पृथग्भावम्	= भिन्नभावहै		

भावार्थ ।

इन्द्रियाणामिति ॥ आत्मा के साक्षात्कारमें विवेकरूपी ज्ञान के साधन को और उसके फलको अब कहते हैं ॥ इन्द्रियाणां ॥ श्रोत्रादिक ज्ञान इन्द्रियां जो ज्ञान के कारण हैं याने साधन हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे आकाशादिकभूतों से पृथक् २ उत्पन्न हुयेहैं इस लिये वे सब आत्मा के स्वरूप से भिन्न हैं, उन के परस्पर भेद को जो चेतन पुरुष शरीर में स्थित होकर जानताहै, अर्थात् जाग्रत् में इन्द्रियों के व्यापारों को जानता है, और स्वप्न में उन के शयन करने के व्यापार को जानता है, उस साक्षी चेतन पुरुष की साक्षात्कार करके विद्वान् शोक से तरजाता है ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

(७) इन्द्रियेभ्यःपरंमनोमनसःसत्त्वमुत्तमम्स-त्त्वादधिमहानात्मामहतोऽव्यक्तमुत्तमम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

इन्द्रियेभ्यः परम् मनः मनसः सत्त्वम् उत्तमम् सत्त्वात् अधि महान् आत्मा महतः अव्यक्तम् उत्तमम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इन्द्रियेभ्यः	= इन्द्रियोंसे	महानात्मा	= महत्तत्त्व
परम्	= परेयानेश्रेष्ठ	अधि	= श्रेष्ठहै
मनः	= मन है	च	= और
मनसः	= मनसे	महतः	= महत्तत्त्वसे
सत्त्वम्	= बुद्धि	अव्यक्तम्	= अव्यक्त
उत्तमम्	= श्रेष्ठ है	उत्तमम्	= श्रेष्ठहै
सत्त्वात्	= बुद्धि से भी		

भावार्थ।

इन्द्रियेभ्यइति ॥ श्रोत्रादि इन्द्रियों से संकल्प विकल्परूपी मन श्रेष्ठ है और संकल्प विकल्परूपी मनसे बुद्धि श्रेष्ठ है और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यष्टिरूपी बुद्धिसे समष्टिरूपी बुद्धि श्रेष्ठ है और समष्टिरूपी बुद्धि से अव्याकृत जो संपूर्ण जड़ जगत् आदि का मूल कारण प्रकृति है वह श्रेष्ठ है ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

(८) अव्यक्तात्तुपरःपुरुषोव्यापकोऽलिङ्गएव चयञ्ज्ञात्वामुच्यतेजन्तुरमृतत्वञ्चगच्छति ॥ ८ ॥

पदच्छेदः

अव्यक्तात् तु परः पुरुषः व्यापकः अलिङ्गः एव च यत् ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुः अमृतत्वम् च गच्छति

अन्वयः	पदार्थ
सः	वह
पुरुषः	पुरुष
अव्यक्तात्	अव्यक्तसे
परः	परेहै
व्यापकः	व्यापकहै
+ च	और
एव	निश्चयकरके
अलिङ्गः	चिह्नरहितहै
तु	और
यत्	जिसको
ज्ञात्वा	जानकरके
जन्तुः	मनुष्य
मुच्यते	मुक्तहोजाता है
च	और
अमृतत्वम्	अमरभावको
गच्छति	प्राप्तहोता है

भावार्थ ।

अव्यक्तादिति ॥ अव्यक्त से परे जो सब बिषे व्यापक पुरुष है वह आत्मा है, वह उत्कृष्ट है, वह साक्षात् सर्वत्र पूर्ण है, ॥ प्र० ॥ आत्मा का तो प्रत्यक्ष नहीं होता है, वह सुख दुःखादिक गुणों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का आश्रयत्व करके अनुमेय है ॥ सुख दुःखादिः साश्रयः गुणत्वात् रूपादिवत् ॥ सुख दुःखादिक गुणहोने से किसी के आश्रित अवश्य होते हैं क्योंकि जो २ गुण होता है वह द्रव्य के आश्रितही होता है, जैसे रूप रसादिक गुण पृथ्वी आदिक द्रव के आश्रितही होते हैं तैसेही पृथ्वी आदि से अलग नहीं रहसक्के हैं सुख दुःखादिक गुण भी किसीके आश्रितही मानने पड़ैंगे ये गुण जड़ पृथ्वी आदिकों के आश्रित तो नहीं रहसक्के हैं और चूंकि सुख दुःख चेतनही में प्रतीत होते हैं इसलिये आत्माही इनका आश्रय सिद्ध होता है और सुख दुःखादिक गुणों करके अनुमेय है ॥ उ० ॥ सुख दुःखादिक सब अन्तःकरण के आश्रितहैं अर्थात् अन्तःकरण के धर्म हैं आत्मा के नहीं, इन करके आत्मा अनुमेय यानी अनुमान प्रमाण का विषय नहीं है क्योंकि धर्म धर्मी को दिखाता है अन्य को नहीं, आत्मा अनुमितिकाजनक जो सुख दुःखादि लिंग याने चिह्न हैं उनसे भी वह परे है, श्रुति कहती है ॥ न तस्य कार्य्यं करणंच विद्यते ॥ न उस का कोई कार्य्य यानी शरीरहै, और न कोई उसका करण अर्थात् इन्द्रिय है, वह आत्मा निर्गुण है, अर्थात् गुणों से रहित है, ऐसे आत्मा को साक्षात्कार करके विद्वान् पुरुष मुक्त होजाता है ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

(९) नसन्दृशेतिष्ठतिरूपमस्यनचक्षुषापश्यतिकश्चनैनम् हृदामनीषामनसाभिक्लृप्तोयएतद्विदुरमृतास्तेभवन्ति ॥ ९ ॥

पदच्छेदः

न सन्दृशे तिष्ठति रूपम् अस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चन एनम् हृदा मनीषा मनसा अभिक्लृप्तः ये एतत् विदुः अमृताः ते भवन्ति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
अस्य	= इसप्रत्यगात्माका
रूपम्	= रूप
सनूदृशे	= दर्शनबिषे
नतिष्ठति	= नहींस्थित होताहै
+ च	= और
कश्चन	= कोईभी
एनम्	= इसको
चक्षुषा	= चक्षुकरके
नपश्यति	= नहींदेखताहै
हृदा	= हृदयमेंस्थित
मनीषा	= बुद्धिकरके
+ च	= और
मनसा	= मनकरके
अभिक्लृप्तः	= प्रकाशित हुवा
एतत्	= यहब्रह्महै
+ एवम्	= इसप्रकार इसको
ये	= जो
विदुः	= जानते हैं
ते	= वे
अमृताः	= अमर
भवन्ति	= होते हैं

भावार्थ ॥

नसंदृशेतिष्ठतीति ॥ आत्मा का स्वरूप इन्द्रियजन्य ज्ञान का विषय न होने से चक्षु या किसी अन्य इन्द्रिय करके नहीं जाना जासक्ता है ॥ प्र० ॥ तब फिर वह आत्मा कैसे जाना जाता है ॥ उ० ॥ हृदय में एकाग्रता को प्राप्त हुई जो शुद्ध शंकलरहित बुद्धि है उसी करके आत्मा जानने को शक्य है, ऐसी बुद्धि उस पुरुष की होती है जिसने विचार करके प्रथमही मनको अपने अर्थात् करलिया है और श्रवण मनन करके असम्भावनादिक दोषों को दूर किया है, जब सब विकार पुरुषके नष्ट होजाते हैं तब वह आत्मतत्त्व को जानकर मोक्ष को प्राप्त होजाता है ॥ ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१०) यदापञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानिमनसासह बुद्धिश्चनविचेष्टते तामाहुःपरमाङ्गतिम् ॥ १० ॥

पदच्छेदः

यदा पञ्च अवतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह बुद्धिः च न विचेष्टते ताम् आहुः परमाम् गतिम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यदा	= जिसकाल बिषे	बुद्धिः	= बुद्धिभी
पञ्च	= पांचों	नविचेष्टते	= नहींचेष्टाकरतीहै
ज्ञानानि	= ज्ञानेन्द्रियां	ताम्	= उसअवस्थाको
सह	= सहित	परमाम्	= परम
मनसा	= मनके	गतिम्	= गति
अवतिष्ठन्ते	= आत्मामेंस्थिरहोजाती हैं	आहुः	= कहतेहैं
+ च	= और		

भावार्थ ॥

यदेति ॥ जिसकाल में अविद्याके नाश होनेपर मनके सहित पांचों ज्ञानेन्द्रियां अपने २ व्यापार से निवृत्त होजाती हैं और निश्चयात्मिक बुद्धि भी अपने व्यापार को त्याग देती है अर्थात् जब मन बुद्धि और ज्ञान इन्द्रियां अविद्यारहित शुद्धआत्मा में लीन होजाती हैं उस अवस्था को योगी परमगति कहते हैं ॥१०॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(११) तांयोगमितिमन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम्अप्रमत्तस्तदा भवति योगो हि प्रभवाप्ययौ ११॥

पदच्छेदः

ताम् योगम् इति मन्यन्ते स्थिराम् इन्द्रियधारणाम् अप्रमत्तः तदा भवति योगः हि प्रभवाप्ययौ ॥

अन्वयः	पदार्थ
+ मुमुक्षुः	मुमुक्षु
यदा	जब
इन्द्रिय-धारणाम्	इन्द्रियों के स्वभाव
स्थिराम्	स्थिर
+ कर्तुम्	करने को
अप्रमत्तः	प्रमादरहित होताहै
तदा	तब
योगः	योग
+ भवति	होताहै
हि	क्योंकि
+ योगः	योग
प्रभवाप्ययौ	उत्पत्तिऔर लयरूप है
+ च	और
ताम्	उस अवस्थाको
योगम्	योग
इति	करके
मन्यन्ते	मानते हैं

भावार्थ ॥

तामिति ॥ जिसकालमें इन्द्रियोंकी धारणाशक्ति स्थिरहोजाती है अर्थात् किसी विषयकी ओर मन चलायमान नहीं होता है उस अवस्था को योगिजन योग कहते हैं, योग के आरम्भकाल में योगी अप्रमत्त हुवा २ चित्तकी एकाग्रता के प्रति प्रयत्न करताहै, क्योंकि जबतक वह अपने को सर्व विषयों से पृथक् नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करलेता है तबतक वह योगी नहीं है, जब वह स्वआत्मा में और परमात्मा में भेद नहीं पाताहै तब वह यथार्थ योगी है, यह समझ करके योगी अहर्निशि चित्तवृत्ति को अन्त मुख रखने की यत्न किया करताहै ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

(१२) नैववाचानमनसाप्राप्तुंशक्योनचक्षुषा अस्तीतिब्रुवतोऽन्यत्रकथंतदुपलभ्यते ॥ १२ ॥

पदच्छेदः

न एव वाचा न मनसा प्राप्तुम् शक्यः न चक्षुषा अस्ति इति ब्रुवतः अन्यत्र कथम् तत् उपलभ्यते ॥

अन्वयः	पदार्थ
तत्	वह ब्रह्म
एव	निश्चयकरके
नवाचा	न वाणी से
नमनसा	न मनसे
नचक्षुषा	न चक्षुसे
प्राप्तुम्	पानेको
शक्यम्	शक्यहै
अन्यत्र	सिवाय
अस्ति	अस्तिपद
इति	करके
कथम्	औरकिस प्रकार
ब्रुवतः	श्रद्धावान् अस्तित्ववा दियोंकरके
+ तत्	वह
उपलभ्यते	प्राप्तकिया जाता है

भावार्थ ॥

नैववाचेति ॥ यह जो अपना आत्माहै अर्थात् जीवाभिन्नजो प्रत्यगात्माहै सो वागिन्द्रिय करके या इदन्ता करके कथनकरने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के योग्य नहीं है, और न मन करके अथवा चक्षु इन्द्रिय करके भी देखने को शक्य है ॥ प्र० ॥ जो वागादि इन्द्रियों का विषय नहीं है उसकी स्थिति भी नहीं है आत्मा यदि वागादि करणों का विषय नहीं है तो उसकी स्थिति भी नहीं है ॥ उ० ॥ यदि आत्मा वागादिकों का अविषयहै तो 'नहीं है " इस पदकी स्थिति न होनी चाहिये, अस्ति और नास्ति इन दोनों की स्थिति अस्तिही में घटती है, और चूंकि अस्ति सत् रूप है और सत् परमात्मरूप है और यावत् पदार्थ हैं सब अस्ति से ही सम्बन्ध रखते हैं इस लिये सब सत्रूप परमात्मा हैं, यह भावना के बल श्रद्धासंयुक्तही पुरुष में होती है, इसलिये जो श्रद्धावाले अस्तित्ववादी पुरुषहैं उन्हींको ही ब्रह्म प्राप्त होता है नास्तिक को नहीं ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

(१३) अस्तीत्येवोपलब्धव्यस्तत्त्वभावेनचोभयोरस्तीत्येवोपलब्धस्यतत्त्वभावःप्रसीदति ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

अस्ति इति एव उपलब्धव्यः तत्त्वभावेन च उभयोः अस्ति इति एव उपलब्धस्य तत्त्वभावः प्रसीदति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अस्ति	= है	उपलब्धव्यः	= प्राप्तहोनेयोग्यहै
इति एव	= ऐसेही	च	= और
तत्त्वभावेन	= तत्त्वभाव करके	उपलब्धस्य	= प्राप्त होने योग्य
+ तत्	= वहआत्मा		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उभयोः =	उनदोनोंका याने सोपाधिक निरुपाधिक आत्माका	तत्त्वभावः = एकत्वभाव अस्ति = है इति = इसकरकेही प्रसीदति = प्रतीतहोता है ॥

भावार्थ ॥

अस्तीति ॥ अब आत्मा की उपलब्धि के कारण को बतलाते हैं ॥ अस्तीति ॥ प्रथम तो जगत्का कारण जो सत् है उस करके आत्माकी उपलब्धि होती है याने आत्मा का ज्ञात होताहै, जितने लोक लोकान्तर हैं और जितनी स्थावर जङ्गम सृष्टि और पदार्थ हैं उनकी सिद्धि केबल अस्तिपद पद करके होता है चाहै वह अस्तिपद उसके संग प्रयोग हो चाहै नहीं हो, यह पटहै यह पृथ्वी है, यह जल है, यह मनुष्य है यह लोकहै यह परलोक है इन सबकी सिद्धि अस्ति शब्द करके होती है और आत्मा का स्वरूप अस्ति है इसलिये सब पदार्थों में आत्मा है यह सिद्धि होताहै यदि अस्तिपद को निकाल दियाजाये तो कोई पदार्थ नहीं सिद्ध होगा, इस रीतिसे उपाधि करके वशिष्ट आत्मा की उपलब्धि होती है पश्चात् शुद्ध मनके मनन से उपाधिरहित निर्मल आत्माकी उपलब्धि होतीहै, इसीलिये आत्माको विदित अविदित सेपृथक् श्रुतिने कथन कियाहैजो पुरुष प्रथम आत्मा को अस्तित्वरूप करके जानता है उसी के शुद्ध बुद्धि में आत्मा अपने प्रकाश को प्रगटकरता है और वह साक्षात् आत्मस्वरूप होजाता है ॥ १३ ॥

मूलम् ॥

(१४) यदासर्वेप्रमुच्यन्तेकामायेऽस्यहृदिश्रिताः अथमर्त्योऽमृतोभवत्यत्रब्रह्मसमश्नुते ॥ १४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामाः ये अस्य हृदि श्रिताः अथ मर्त्यः अमृतः भवति अत्र ब्रह्म समश्नुते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अस्य	= इस विद्वान् पुरुष के	प्रमुच्यन्ते	= छूट जाते हैं
हृदि	= हृदयबिषे	अथ	= तब
ये	= जो	मर्त्यः	= मनुष्य
कामाः	= कामना	अमृतः	= अमर
श्रिताः	= स्थित हैं	भवति	= होता है
+ ते	= वे	+ च	= और
सर्वे	= सब	अत्र	= इसी जन्म में
यदा	= जब	ब्रह्म	= ब्रह्म को
		समश्नुते	= प्राप्तहोता है

भावार्थ ॥

यदेति ॥ आत्मज्ञान से पूर्व जितनी कामना इस विद्वान् के हृदय में स्थित होती हैं वे आत्मज्ञान के पश्चात् छूट जाती हैं अर्थात् सर्वत्र आत्मदृष्टि करके नाश को प्राप्त होजाती हैं, और उसी क्षण में वह अमर होजाता है अर्थात् बारम्बार जन्म मरण से रहित होकर इसी शरीर में ही ब्रह्मरूप होजाताहै ॥ १४ ॥

मूलम् ॥

(१५) यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्येह ग्रन्थयः अथमर्त्योऽमृतोभवत्येतावदनुशासनम् ॥ १५ ॥

पदच्छेदः

यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्य इह ग्रन्थयः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ मर्त्यः अमृतः भवति एतावत् अनुशासनम्॥

अन्वयः	पदार्थ
यदा	जब
हृदयस्य	हृदय की
सर्वे	सम्पूर्ण
ग्रन्थयः	ग्रन्थियां
इह	इसीजन्ममें
प्रभिद्यन्ते	टूटजाती हैं
अथ	तब
मर्त्यः	मनुष्य
अमृतः	मरणरहित
भवति	होताहै
एतावत्	इतनाही
अनुशासनम्	उपदेश है

भावार्थ॥

यदा सर्वेति॥ जिसकाल में विद्वान् की हृदय स्थित ग्रन्थियें अर्थात् बुद्धि बिषे स्थित अनेक कामनारूपी ग्रन्थियें टूट जाती हैं और अहंमम वृत्तियां नाश होजाती हैं तबहीं वह विद्वान् ब्रह्म रूपहोजाता है, यहींतक सम्पूर्ण वेदों का उपदेश है, इससे परे वेदों का उपदेश नहींहै क्योंकि ब्रह्मकी प्राप्ति से परे और कोई प्राप्ति नहींहै॥ १५॥

मूलम्॥

(१६) शतञ्चैका च हृदयस्य नाड्यस्तासाम्मूर्द्धानमभिनिःसृतैकातयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेति विष्वङ्ङन्या उत्क्रमणे भवन्ति॥ १६॥

पदच्छेदः।

शतम् च एका च हृदयस्य नाड्यः तासाम् मूर्द्धानम् अभिनिःसृता एका तया ऊर्ध्वम् आयन् अमृतत्वम् एति विष्वङ् अन्याः उत्क्रमणे भवन्ति॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
च	= और
शतंएका	= एकसौ एक
हृदयस्य	= हृदय की
नाड्यः	= नाड़ियां हैं
तासां	= तिनमें से
मूर्द्धानम्	= मस्तक को
अभिनिःसृता	= भेद करके निकसीभई
एका	= एक नाड़ी है
तया	= उसीनाड़ीद्वारा
ऊर्ध्वम्	= ऊपर को
आयन्	= जाता हुआ

अन्वयः	पदार्थ
+जीवः	= जीव
अमृतत्वम्	= अमरभाव को
एति	= प्राप्तहोताहै
च	= और
अन्याः	= इतरनाडियां
विष्वङ्	= सर्व ओरसे
उत्क्रमणे	= मरणबिषे याने नाना योनियों की प्राप्ति बिषे
भवन्ति	= निमित्तकारणहोतीहैं

भावार्थ ॥

शतंचैकेति ॥ ब्रह्म वित्त को इसी शरीर में ब्रह्मकी प्राप्ति कही है, और जो पुरुष आत्मतत्त्व को नहीं जानते हैं उनको अग्नि विद्या करके ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है और उनसे विपरीत जो अज्ञानी हैं उनको संसार चक्र की प्राप्ति होती रहती है, एक सौ एक प्रधान नाड़ी हृदयदेश से निकसी हैं और उन नाड़ियों के मध्यमें एक सुषुम्णा नाड़ी ब्रह्मरंध्र तक गई है, वह ब्रह्मलोक के सम्मुखरहती है, इसी सुषुम्णा नाड़ीद्वारा शरीर त्याग पश्चात् अग्निका उपासक ब्रह्मलोक को प्राप्त होताहै, और प्रलय पर्यन्त निवास करताहै, वह ब्रह्मलोक सब लोकों के ऊपर है, और ब्रह्मा से उपदेश पाकर मुक्त होजाताहै, और नाड़ियां इतर लोकों के सम्मुख हैं, उनके द्वारा जब जीव उत्क्रमण करता है तब वह शरीरान्तर को प्राप्त होताहै ॥ १६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

(१७) अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा सदाजनानां हृदयेसन्निविष्टः तंस्वाच्छरीरात्प्रवृहेन्मुञ्जादिवेषीकांधैर्येण तं विद्याच्छुक्रममृतं विद्याच्छुक्रममृतमिति ॥ १७ ॥

पदच्छेदः

अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषः अन्तरात्मा सदा जनानाम् हृदये सन्निविष्टः तम् स्वात् शरीरात् प्रवृहेत् मुञ्जात् इव इषीकाम् धैर्य्येण तम् विद्यात् शुक्रम् अमृतम् तम् विद्यात् शुक्रम् अमृतम् इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
अङ्गुष्ठमात्रः	अंगुष्ठमात्र
पुरुषः	पुरुष
अन्तरात्मा	प्रत्यक्आत्मा
सदा	सर्वदा
जनानाम्	मनुष्योंके
हृदये	हृदयबिषे
सन्निविष्टः	स्थितहै
तम्	तिसको
स्वात्	अपने
शरीरात्	शरीरसे
प्रवृहेत्	पृथक्करै
इव	जैसे
मुञ्जात्	मूंजसे
इषीकाम्	सरकंडेको
+ पृथक्	पृथक्
+ कुर्वन्ति	करते हैं
धैर्येण	धैर्यकरके
तम्	तिसको
शुक्रम्	शुद्ध
अमृतम्	अमृतरूप
इति	ऐसा
तम्	तिसको
शुक्रम्	शुद्ध
अमृतमइति	अमृतरूप ऐसा
विद्यात्	जानै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

अङ्गुष्ठमात्रइति ॥ जो उपाधि सम्बन्ध करके प्रत्यक् आत्मा अंगुष्ठ परिमाण प्राणियों के हृदयाकाशदेश बिषे सर्वकाल स्थित है तिस आत्मा को अपने शरीर त्रय से धीर्यता के साथ पृथक् करे और जैसे मूंज से सर्कंडे को पृथक् करते हैं तैसेही आत्मा को शरीर के सब विकारों से पृथक्कर वे शुद्ध अमररूप जानै ॥ १७ ॥

मूलम् ॥

(१८) मृत्युप्रोक्तान्नचिकेतोऽथलब्ध्वाविद्यामेतां योगविधिञ्चकृत्स्नम् ब्रह्मप्राप्तोविरजोऽभूद्विमृत्युर न्योप्यवंयोविदध्यात्ममेव ॥ १८ ॥

पदच्छेदः

मृत्युप्रोक्ताम् नचिकेतः अथ लब्ध्वा विद्याम् एताम् योगविधिम् च कृत्स्नम् ब्रह्मप्राप्तः विरजः अभूत् विमृत्युः अन्यः अपि एवम् यः वित् अध्यात्मम् एव ॥

अन्वयः	पदार्थ
अथ	तदनन्तर
मृत्युप्रोक्ताम्	मृत्युकरके कहीहुई
एताम्	इस
विद्याम्	विद्याको
च	और
कृत्स्नम्	संपूर्ण
योगविधिम्	योगविधिको
नचिकेतः	नचिकेत
लब्ध्वा	पाकरके
ब्रह्मप्राप्तः	ब्रह्मको प्राप्त होताहुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ च	= और	मुमुक्षुः	= मुमुक्षुपुरुष
विरजः	= धर्म अधर्मसे रहित	अध्यात्मम्	= अध्यात्मविद्या को
विमृत्युः	= मृत्युरहित	वित्	= जाननेवाला है
अभूत्	= होताभया	+ सः	= वह
अन्याःअपि	= औरभी	+ अपि	= भी
एवम्	= इसप्रकार	+ ब्रह्म	= ब्रह्मको
यः	= जो	+ आप्नोति	= प्राप्तहोताहै

भावार्थ ॥

मृत्युप्रोक्तेति ॥ यमराज करके कथन करी हुई जो ब्रह्मविद्या है उस ब्रह्मविद्या को नचिकेता प्राप्त होकर और अविद्याजन्य कर्मादिकों से रहित होकर और मृत्यु से मुक्त होकर अमरभाव को प्राप्त होताभया, और भी जो कोई मुमुक्षु पुरुष इस अध्यात्म विद्याका जाननेवाला है वह भी ब्रह्म को प्राप्त होकर आवागवन से छूटजाता है ॥ १८ ॥

मूलम् ॥

(१९) ॐ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यंकरवावहै तेजस्विनावधीतमस्तुमाविद्विषावहै ॥ १९ ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति कठोपनिषद्समाप्तिमगात्शुभम् ॥

पदच्छेदः

सह नौ अवतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्य्यम् करवावहै तेजस्विनौ अधीतम् अस्तु मा विद्विषावहै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
सः	= वह परमात्मा
नौ	= हमगुरुशिष्य दोनों को
सह	= साथही
अवतु	= रक्षाकरै
च	= और
नौ	= हमदोनों को
सह	= साथही
भुनक्तु	= पालनकरे
च	= और
आवामसह	= हमदोनोंसाथही
वीर्य्यम्	= सामर्थ्य को
करवावहै	= प्राप्तहोवै
नौ	= हमदोनों का
अधीतम्	= पढ़ाहुआ
तेजस्वि	= तेजवान्
अस्तु	= होवै
आवाम्	= हमदोनोंपरस्पर
मा	= न
विद्विषावहै	= द्वेषको प्राप्त होवैं ॥

भावार्थ ॥

ॐ सहनाववतु ॥ हम शिष्य और आचार्य दोनों को उपनिषद् प्रकाशित परमेश्वर रक्षा करै, हम दोनों को विद्याके फल करके पालना करै, हम दोनों के विद्याकृत सामर्थ्य को बढ़ावै, हम दोनों का अध्ययन कियाहुआ तेजवान होवै, हम दोनों परस्पर द्वेष को न प्राप्त होवैं ॥ १६ ॥ ओं शान्तिः ३ इतिकठोपनिषद् द्वितीयाऽध्याये षष्ठीवल्ली समाप्ता ६ ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

इति कठोपनिषद्भाषाटीकासमाप्ता ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इश्तहार

ईशावास्य उपनिषद् भाषा टीका सहित, क़ीमत -)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित–जिसमें मन्त्रों के अर्थ समझने के लिये पदों के अन्वय किये गये और फिर पदार्थकी रीति पर समझाकर भावार्थ स्पष्ट किया गया ॥

प्रश्नोपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत =)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीका सहित–इस में भी सब ऊपर के लिखे हुये अलङ्कारहैं शिष्य के पूछे हुये अच्छे प्रश्नों का उत्तर गुरूने बताकर ब्रह्मरूप लखायाहै ॥

मांडूक्योपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत ॥=)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषा टीका सहित–जिसमें ॐकार स्वरूप का प्रतिपादन व ब्रह्म और आत्माकी अभेदताका निरूपण चार प्रकरणों में अच्छी तरह से किया है ॥

मुंडकउपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत =)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित–जिसमें वादी प्रतिवादी के प्रश्नोत्तर से ब्रह्मका निर्णय व जगदुत्पत्ति व प्रत्येक अन्नादि का संभव व अग्निहोत्रादि क्रियाओंका बिधान मन्त्रों द्वारा वर्णित है ॥

तैत्तिरीयोपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत ।-)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीकासहित–जिसमें तैत्तिरीय शाखा के प्रकट होनेका उदाहरण और स्वरमात्रा व वर्णों के उच्चारण की शिक्षाका नियम व वर्णों के संबन्धरूप संहिताकी उपासना व बुद्धि व लक्ष्मीकी कामनावाले पुरुषोंके अर्थ साधन जप और हवनादि की क्रियायें वर्णित हैं ॥

मैनेजर नवलकिशोर प्रेस
हज़रतगंज लखनऊ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



॥ प्रश्नोपनिषद् ॥

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशी भाषा में बाबू जालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर जिला फ़ैज़ाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल व लखनऊ व पोस्टमास्टर जनरल रियासत ग्वालियरने पण्डित गङ्गादत्त जोशी और पण्डित रामदत्त जोशीकी सहायता से अनुवाद किया—

तिसको

श्रीमान् परमधार्म्मिक शुभगुणनिधान मुंशी प्रयागनारायणजीने सर्वलोकहितार्थ—

पहिली बार

लखनऊ

सुपरिण्टेण्डेण्ट बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबन्धमें

मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई) के यन्त्रालय में मुद्रित कराया

सन् १९०८ ई० ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम् । यद्वो धोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः । षट्चक्रादिविचार सारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तं वन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वे श्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करों बन्दना ब्रह्मको । जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल । मिटै अन्धतम कूप ॥
नाम रूप जामें नहीं । नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं । रहित त्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद । ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको । लखै सकल संसार ॥
सन्त संगसे जो लख्यो । सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते । जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट । अकबरपुर है गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू । जालिमसिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है, इस के पार होने के लिये उपनिषद् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौका है, जिस में बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं, और होते जाते हैं, और भविष्यत्काल में होंगे, जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगईहै ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसटीका में पहिले मूलमन्त्र है, फिर पदच्छेद है, फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है, और दक्षिण हस्तकी ओर पदार्थ लिखा है, यदि वामतरफ का लिखा हुआ ऊपर से नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा, और यदि दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशीय भाषा में मिलेगा, और यदि बायेंतरफ से दहिने तरफ को पढ़ाजावे तो हरएक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलेगा, जहांतक होसका है, प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागया है, इस टीका के पढ़नेसे संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा, इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पाया है, और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसीके शब्दोंहीं से सिद्ध कियागयाहै, अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है, हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्र के अर्थ स्पष्ट करनेके लिये रखागया है, और उसपदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै, ताकि पाठकजनोंको विदित होजावे कि यह पद मूलका नहीं है। इस टीकाको बाबू जालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल व लखनऊ व पोस्टमास्टर जनरल रियासत ग्वालियर सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गङ्गादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अलमोड़ाख्यनगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धताहो उससे टीकाकर्ता को सूचनाकरैं ताकि अशुद्धता दूर होजावै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ प्रश्नोपनिषद् ॥

मूलम् ॥

ॐ सुकेशाच भारद्वाजः शैब्यश्चसत्यकामःसौर्यायणीचगार्ग्यः कौशल्यश्चाश्वलायनो भार्गवो वैदर्भिः कबन्धी कात्यायनस्तेहैतेब्रह्मपराब्रह्मनिष्ठाः परंब्रह्मान्वेषमाणाएषहवैतत्सर्वं वक्ष्यतीतितेहसमित्पाणयो भगवन्तं पिप्पलादमुपसन्नाः १ ॥

पदच्छेदः ॥

सुकेशा च भारद्वाजः शैब्यः च सत्यकामः सौर्यायणी च गार्ग्यः कौशल्यः च आश्वलायनः भार्गवः वैदर्भिः कबन्धी कात्यायनः ते ह एते ब्रह्मपराः ब्रह्मनिष्ठाः परम्ब्रह्म अन्वेषमाणाः एष ह वै तत् सर्वम् वक्ष्यति इति ते ह समित् पाणयः भगवन्तम् पिप्पलादम् उपसन्नाः १ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
च	= निश्चयकरके	च	= और
भारद्वाजः	= भरद्वाज ऋषिका पुत्र	शैब्यः	= शिबिकापुत्र
सुकेशा	= सुकेशा १	सत्यकामः	= सत्यकाम २
		च	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गार्ग्यः = गर्गकापुत्र
सौर्य्यायणी = सौर्यायणि ३
च = और
अश्वलायनः = { अश्वलायनका पुत्र
कौशल्यः = कौशल्य ४
+ च = और
भार्गवः = भृगुकापुत्र
वैदर्भिः = वैदर्भि ५
+ च = और
कात्यायनः = कत्यकापुत्र
कबन्धी = कबन्धी ६
ह = प्रसिद्ध
एतेते = { येयानी पूर्वोक्तछयोंऋषि
ब्रह्मपराः = { अपरब्रह्मको याने अपराविद्याकोजानतेहुये
+ च = और
ब्रह्मनिष्ठाः = { अपराविद्याके उपासक होते हुये
+ च = और

परम्ब्रह्म = { परब्रह्मकोयानेपराविद्याको
अन्वेषमाणाः = खोजतेहुये
समित्पाणयः = { समिधी फल और पुष्प आदि हाथमें लियेहुये
ह = प्रसिद्ध
भगवन्तम् = पूज्य
पिप्पलादम् = { पिप्पलाद नामक आचार्य्य के
उपसन्नाः = समीप
+ बभूवुः = प्राप्तहोतेभये
इति = ऐसा
ह = सोचकरके कि
एषः = यह
+ पिप्पलादः = { पिप्पलाद आचार्य
वै = निश्चय करके
सर्वम् = संपूर्ण
तत् = उसपरब्रह्मको
वक्ष्यति = कहैगा १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

पूर्व मन्त्र रूप मंडूक उपनिषद् के भावार्थ को लिखकर अब उसी की व्याख्या रूप जो प्रश्नोपनिषद् है, तिसके भावार्थ को लिखते हैं, इस उपनिषद् में जो प्रश्न और उत्तर करके कथा लिखी है, सो केवल ब्रह्मविद्या की स्तुति के लिये और ब्रह्मचर्य्यादि साधनों की विधान के लिये लिखी है ॥ सुकेशाचेति ॥ भरद्वाज का पुत्र सुकेशा १,शिबि का पुत्र सत्यकाम २, सूर्य्य का पुत्र गर्ग ३,आश्वलायन का पुत्र कौशल्यः ४,भृगुका पुत्र वैदर्भि ५,कत्यऋषि का पुत्र कबंधी ये सब छवो ऋषि अपराविद्या को जानते हुये और उसकी उपासना करते हुये पराविद्या को अन्वेषण करते हुये समिधि फल फूलादि हाथ में लिये हुये प्रसिद्ध पूज्य पिप्पलाद नामक आचार्य के समीपगये, ऐसा निश्चय करते हुये कि वह हमारे संपूर्ण प्रश्नों का यथार्थ उत्तर देवेंगे१॥

मूलम् ॥

तान्हसऋषिरुवाच भूयएवतपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धया संवत्सरं संवत्स्यथ यथाकामंप्रश्नान् पृच्छथ यदि विज्ञास्यामः सर्वंहवोवक्ष्याम इति २ ॥

पदच्छेदः ॥

तान् ह सः ऋषिः उवाच भूयः एव तपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धया संवत्सरम् संवत्स्यथ यथाकामम् प्रश्नान् पृच्छथ यदि विज्ञास्यामः सर्वम् ह वः वक्ष्यामः इति २ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सः	वह	तान्	उनसे
ऋषिः	पिप्पलादऋषि	ह	निश्चयकरके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति = ऐसा
उवाच = कहताभयाकि
+ यद्यपि यूयंतपस्विनः = यद्यपि तुम सबतपआदिकरके युक्त हो
+ तथापि = तौभी
भूयः = फिर
एव = अवश्य
तपसा = तपस्याकरके
ब्रह्मचर्येण = ब्रह्मचर्य्यकरके
च = और
श्रद्धया = आस्तिकबुद्धिकरके
संवत्सरम् = एकवर्षतक
संवत्स्यथ = मेरेसमीपनिवासकरोगे
+ ततः = ततपश्चात्
यथाकामम् = इच्छानुसार
प्रश्नान् = प्रश्नोंको
पृच्छथ = पूछोगे
+ तदा = तब
यदि = अगर
वयम् = हम
विज्ञास्यामः = प्रश्नों के उत्तरों को जानतेहोंगे
तदा = तब
ह = अवश्य
वः = तुम्हारे प्रति
सर्वम् = संपूर्ण
वक्ष्यामः = कहेंगे २ ॥

भावार्थ ॥

तानिति । सूक्ष्मदर्शी पिप्पलाद ऋषि उन छवों ऋषियों से कहते भये ॥ कि हे ऋषियो ! यद्यपि आप लोगोंने पूर्वतपादिकों को किया है, तौ भी ब्रह्मविद्या के ग्रहण के लिये फिर भी आप सब कोई ब्रह्मचर्य्य रूपी तपको श्रद्धाके साथ करो, हे ऋषियो! स्त्री का स्मरण करना १, उसके साथ क्रीड़ा करना २, उसके तरफ देखना ३, छुपकरके उससे संभाषण करना ४, उसकी प्राप्ति का संकल्प करना ५, उसके भोगने का निश्चय करना ६, उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ संबन्ध करना ७,वीर्य का त्याग करना ८, ये आठ प्रकार के मैथुन कहेगये हैं, इससे रहित होने का नामही ब्रह्मचर्य्य है, गुरु और वेदवाक्यों में आस्तिक बुद्धि का करना श्रद्धा है,ऐसी आस्तिक बुद्धि और ब्रह्मचर्यसे सम्पन्न होकर आप सब एक वर्ष पर्यंत मेरे समीप निवास करो,उसके पश्चात् जैसी आप सबकी इच्छा हो प्रश्न करना,यदि मैं आप लोगों के प्रश्नों के उत्तर को देसकूंगा तो अवश्य दूंगा ॥ २ ॥

मूलम् ॥

अथ कबन्धीकात्यायन उपेत्य पप्रच्छभगवन् कुतोहवाइमाः प्रजाःप्रजायन्त इति ३ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ कबन्धी कात्यायनः उपेत्य पप्रच्छ भगवन् कुतः ह वै इमाः प्रजाः प्रजायन्ते इति ३ ॥

अन्वयः	पदार्थ
अथ	एकवर्षकेपीछे
कात्यायनः	कत्यकापुत्र
कबन्धी	कबन्धी
उपेत्य	पिप्पलादमुनि केसमीपआकर
इति	ऐसा
पप्रच्छ	पूछतामयाकि
भगवन्	हे भगवन्
इमाः	ये
प्रजाः	ब्राह्मणादि प्रजा
कुतः	कहांसे
हवै	निश्चय करके
प्रजायन्ते	उत्पन्नहोती हैं ३ ॥

भावार्थ ॥

अथेति । उन छवो ऋषियों ने ब्रह्मचर्य्यरूपी तपको श्रद्धा

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करके एक बर्ष तक आचार्य पिप्पलाद ऋषि के पास जाकर निवास करके उसके पश्चात् अपने २ प्रश्नों को पूछते भये, प्रथम कात्य के पुत्र कबंधी ने पूंछा, हे भगवन् ! किस कारण विशेष से यह नानाप्रकार की चर अचर प्रजा उत्पन्न होती है ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाच प्रजाकामो वै प्रजापतिः सतपोऽतप्यत सतपस्तप्त्वा समिथुनमुत्पादयतेरयिंचप्राणंचेत्येतौमेबहुधाप्रजाःकरिष्यत इति ४ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच प्रजाकामः वै प्रजापतिः सः तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा सः मिथुनम् उत्पादयते रयिम् च प्राणम् च इति एतौ मे बहुधा प्रजाः करिष्यतः इति ४ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
ह	= प्रसिद्ध	प्रजापतिः	= स्थावरजंगमप्रजा का स्वामी
सः	= वह पिप्पलादाचार्य्य	प्रजाकामः	= प्रजाकीउत्पत्तिकीकामना कर्त्ताहुआ
तस्मै	= उसकात्यायनकबंधी से	सः	= वहप्रजापति
इति	= ऐसा	तपः	= सृष्टिविषयक विचारको
उवाच	= कहताभयाकि		
वै पुरा	= सृष्टि के आदि में		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतप्यत = बिचारताभया
+ततः = उसकेपश्चात्
सः = वह
तपः = सृष्टिविषयक कार्य को
तप्त्वा = अण्डोत्पत्ति आकाशादि सृष्टि कर्म से सृजके
रयिम् = अन्नरूप चन्द्रमा
च = और
प्राणम् = अन्नका भोक्ता अग्नि रूप सूर्य
इति = इन
मिथुनम् = दोनों को
उत्पादयते = उत्पन्न करता भया
च = और
सः = वह
इति = ऐसा
+अविधा-रयत् = सोचताभया कि
एतौ = ये दोनों
मे = मेरी
प्रजाः = प्रजाओं को
च = अवश्य
बहुधा = बहुत
करिष्यतः = करेंगे याने वृद्धिको प्राप्त करेंगे ४ ॥

भावार्थ ॥

तस्मैसहोवाचेति । तब उस कात्यायन कबंधी के प्रति पिप्पलाद कहते भये ॥ हे ऋषि ! पूर्वजन्म के कर्मों के फल करके कल्पके आदि में हिरण्यगर्भ प्रथम उत्पन्न हुआ,वह हिरण्यगर्भ प्रजाकी उत्पत्ति की इच्छावाला होकर तपको करताभया,अर्थात् प्रजा को उत्पन्न करना चाहिये ऐसा विचार करता भया, तत्पश्चात् आकाशादिको रचकरके प्रथम चन्द्रमा और सूर्य को उत्पन्न किया,फिर उन्हीं करके साध्य जो संवत्सररूपी काल है, उसको रचता भया,फिर सूर्य्य चन्द्रमा करके साध्य जो ब्रीहि यवादि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप अन्न है,उनको रचता भया,फिर अन्न से वीर्य्य को उत्पन्न करता भया,वीर्य से मनुष्यादि प्रजाको रचता भया, और सन्त के साधनभूत जो स्त्री पुरुष जे हैं उनको रचता भया ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

आदित्योहवैप्राणोरायिरेवचन्द्रमारयिर्वाएतत्सर्वं यत्मूर्त्तंचामूर्त्तंचतस्मात्मूर्तिरेवरायिः ५ ॥

पदच्छेदः ॥

आदित्यः ह वै प्राणः रयिः एव चन्द्रमाः रयिः वै एतत् सर्व्वम् यत् मूर्त्तम् च अमूर्त्तम् च तस्मात् मूर्त्तिः एव रयिः ५ ॥

अन्वयः	पदार्थ
ह	निश्चय करके
आदित्यः	सूर्य्य
वै	ही
प्राणः	प्राणरूप भोक्तारूप अग्नि है
+च	और
चन्द्रमाः	चन्द्रमा
एव	ही
रयिः	अन्न है याने भोग है
च	और सूर्य चंद्र की अभेद दृष्टि से
यत्	जो
मूर्त्तम्	स्थूल
च	और
अमूर्त्तम्	सूक्ष्म
सर्वम्	सब है
एतत्	यह
रयिः	रयि याने भोग्य रूप
+वै	ही

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+अस्ति = हैं	एव = ही
+परंतु = परंतु	रयिः = { रयियानेभोग रूप
तस्मात् = भेददृष्टि से	
+ तु = तो	
मूर्त्तिः = स्थूल	अस्ति = है ॥ ५ ॥

भावार्थ ॥

आदित्य इति ॥ पूर्वले मन्त्र में जो रयि और प्राण शब्द कथन किये हैं उनके अर्थ को अब दिखाते हैं ॥आदित्यः॥ प्राण नाम आदित्यका है, और रयिनाम चन्द्रमाका है, सूर्य और चन्द्र पद करके सूर्यलोक और चन्द्रलोक बिषे स्थित पुरुष का ग्रहण है, प्रत्यक्ष सूर्य और चन्द्र का नहीं, ये केवल जड़ भूलोककी तरह हैं वह अचेतन पुरुष उपाधि सम्बन्धसे दो रूप करके याने भोक्ता और भोग्यसे स्थित है, चाहे वह मूर्त हो अथवा अमूर्त हो, भोग्य सब चन्द्रमा रूप हैं, मूर्तशब्द करके पृथ्वी,जल, तेज का ग्रहण है, और अमूर्त शब्द करके वायु, आकाशका ग्रहण है, सूर्य का नाम प्राण, अग्नि, और भोक्ता भी है, वैसेही चन्द्रमा का नाम रयि,जल, भोग्य हैं, याने वह पुरुष भोक्ता भोग्य रूप धारण कर के सम्पूर्ण सृष्टि को उत्पन्न, पालन, पोषण करता है, अथवा सांख्यशास्त्र अनुसार पुरुष प्रकृति होकर सृष्टि की रचना करता है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

अथादित्यउदयन् यत्प्राचीं दिशं प्रविशतितेन प्राच्यान्प्राणान् रश्मिषुसन्निधत्ते यद्दक्षिणां यत्प्रतीचीं यदुदीचीं यदधोयदूर्ध्वंयदन्तरादिशो यत्सर्वं प्रकाशयतितेन सर्वान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते६॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

अथ आदित्यः उदयन् यत् प्राचीम् दिशम् प्रविशति तेन प्राच्यान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते यत् दक्षिणाम् यत् प्रतीचीम् यत् उदीचीम् यत् अधः यत् ऊर्ध्वम् यत् अन्तराः दिशः यत् सर्व्वम् प्रकाशयति तेन सर्वान् प्राणान् रश्मिषु सन्निधत्ते ॥ ६ ॥

अन्वयः	पदार्थ
अथ	और
यत्	जिसकारण
उदयन्	उदयहोताहुआ
आदित्यः	सूर्य
प्राचीम्	पूर्व
दिशम्	दिशाको
प्रविशति	अपने किरणोंसे व्याप्त करता है
तेन	तिसी कारण
प्राच्यान्	पूर्वदिशा सम्बन्धी
प्राणान्	प्राणियों को
रश्मिषु	अपने किरणों बिषे
सन्निधत्ते	अन्तर्गतकरता है

अन्वयः	पदार्थ
+ एवम्	इसीप्रकार
यत्	जिसकारण
दक्षिणाम्	दक्षिणदिशाको
यत्	जिसकारण
प्राचीम्	पश्चिमदिशाको
यत्	जिसकारण
उदीचीम्	उत्तर दिशाको
यत्	जिसकारण
अधः	अधोलोक को
यत्	जिसकारण
ऊर्ध्वम्	ऊर्ध्वलोकको
यत्	जिसकारण
अन्तराः	कोण
दिशः	दिशाओं को
+ च	और
यत्	जिसकारण
सर्वम्	संपूर्णलोकोंको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ सः = वह
प्रकाशयति = { प्रकाश करता है
तेन = इसीकारण
सर्वान् = सबलोकस्थ
प्राणान् = प्राणियों को
रश्मिषु = अपनी किरणों बिषे
सन्निधत्ते = { अंतर्गत करताहै यानेसर्व व्यापकरूप आत्मा है ६॥

भावार्थ ॥

अथेति ॥ सूर्य प्रातःकाल पूर्वदिशा से उदयहोकर आकाश में गमन करता हुआ पश्चिमदिशा में अस्त होताहै और अपने प्रकाश से इनदिशों के मध्य बिषे स्थित लोकों के चक्षु इन्द्रियों को जिस में वह अपने आप सूक्ष्मरूप से प्रवेश करके बैठा है किरणों करके पदार्थों के देखने की शक्ति देता है, और अपने किरणों द्वारा उनके शरीरों में बाह्याभ्यन्तर होकर उनका पालन पोषण करता है इसीप्रकार जब सूर्य दक्षिण उत्तर अधः ऊर्ध्वः दिशाओं में और ईशानादिक कोनों में प्रवेश करताहै तब उन बिषे स्थित लोकों को अपने किरणों से आच्छादित करके उन में विराजमान होताहै, और उनकी वृद्धिको करताहै, इसीवास्ते सब लोकों का प्रकाशक केवल एक सूर्यही है वही व्यापक आत्माहै, उसके आश्रय सम्पूर्ण प्राणी हैं ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

सएषवैश्वानरो विश्वरूपःप्राणोऽग्निरुदयते तदेतदृचाभ्युक्तम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

सः एषः वैश्वानरः विश्वरूपः प्राणः अग्निः उदयते तत् एतत् ऋचा अभ्युक्तम् ॥ ७ ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
सः	सो
एषः	यह
प्राणः	प्राणभूत
विश्वरूपः	बहुरूप
वैश्वानरः	सर्वात्मा
अग्निः	अग्नि
उदयते	सूर्यरूपहोकर उदयको प्राप्त होताहै
+ च	और
तत्	ऐसाही
एतत्	यह
ऋचा	मंत्रकरके भी
अभ्युक्तम्	कहागया है

भावार्थ ॥

सएषइति ॥ सोई प्रकाशरूप सूर्य सम्पूर्ण पुरुषों को प्रत्यक्ष वैश्वानररूप अग्निहै , वही सर्वरूपका कारण है , वही दाहप्रकाश का हेतु है, और वही ऊर्ध्वगमन करनेवाला है, ऐसेही मन्त्र ने भी कहा है, ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं परायणं ज्योतिरेकं तपन्तं सहस्ररश्मिः शतधावर्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येषसूर्य्यः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

विश्वरूपम् हरिणम् जातवेदसम् परायणम् ज्योतिः एकम् तपन्तम् सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः प्राणः प्रजानाम् उदयति एषः सूर्य्यः ॥ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
सहस्ररश्मिः	असंख्यहैं किरणजिसके
शतधा वर्तमानः	अनेकरूप हैं जिसके
प्रजानाम्	चराचर प्रजावोंका
प्राणः	प्राणभूत है जो ऐसा
एषः	यह
+ सूर्यः	सूर्य
उदयति	उदयकोप्राप्त होता है
+ एनम्	इसीको
+ सूरयः	बुद्धिमान्लोक
विश्वरूपम्	सर्वरूप
हरिणम्	किरणवाला
जातवेदसम्	उत्पन्नहुआ हैज्ञानजिसको यानेज्ञानस्वरूप
परायणम्	सर्वाधिष्ठान
ज्योतिः	सब प्राणियों का चक्षुभूत
एकम्	अद्वितीय
तपन्तम्	तपानेवाला
वदन्ति	कहते हैं ८ ॥

भावार्थ ॥

विश्वरूपमिति ॥ यह सूर्य्य सर्वरूपवाला है, और इसका नाम जातवेदस भी है, क्योंकि सम्पूर्ण जगत् के लोक इसी के आश्रय रहते हैं, इसी से सबको ज्ञान उत्पन्न होताहै, और सम्पूर्ण इन्द्रियोंका आश्रयभूत यही है, यह प्रकाशरूप है, एक है द्वैत से रहित है, यह बाहर भीतर प्रवेश करके सम्पूर्ण जगत् को तपानेवाला है, यह अपनी असंख्य किरणों करके नाना प्राणियों में स्थित है, और सम्पूर्ण स्थावर जङ्गम प्रजा का प्राणरूप भी है, और उदय होकर सम्पूर्ण प्राणियों के व्यवहारों का उनके चक्षु इन्द्रिय को शक्ति देकर करानेवाला है, बुद्धिमान् लोक इसको ऐसाही कहते हैं ॥ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

संवत्सरो वै प्रजापतिस्तस्यायने दक्षिणंचोत्तरं च तद्येहवैतदिष्टापूर्त्ते कृतमित्युपासते ते चान्द्रमस मेवलोकमभिजयन्ते त एव पुनरावर्तन्ते तस्मादेत ऋषयः प्रजाकामादक्षिणंप्रतिपद्यन्ते एषहवैरयिर्यः पितृयाणः ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

संवत्सरः वै प्रजापतिः तस्य अयने दक्षिणम् च उत्तरम् च तत् ये ह वै तत् इष्टापूर्त्ते कृतम् इति उपासते ते चान्द्रमसम् एव लोकम् अभिजयन्ते ते एव पुनः आवर्तन्ते तस्मात् एते ऋषयः प्रजाकामाः दक्षिणम् प्रतिपद्यन्ते एषः ह वै रयिः यः पितृयाणः९॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
संवत्सरः	= काल	इष्टापूर्त्ते	= यज्ञदानआदि
वै	= ही	हवै	= निश्चयकरके
प्रजापतिः	= प्रजापति है	तत्कृतम्	= मुख्यकर्महैं
दक्षिणम्	= दक्षिण	इति	= ऐसा
च	= और	+ ज्ञात्वा	= जानकर
उत्तरम्	= उत्तर	ये	= जोब्राह्मणादि
तस्य	= उसके	तत्=तम्	= उससंवत्सर प्रजापतिकी
+ च	= निश्चयकरके		
अयने	= दो मार्ग हैं	उपासते	= उपासनाकरतेहैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते = वे
चान्द्रमसम् = चन्द्रमा सम्बन्धी
लोकम् = लोकों को
एव = निःसन्देह
अभिजयन्ते = जीततेहैं या- ने पहुँचते हैं
+ च = और
ते = वे
एव = अवश्य
पुनरावर्त्तन्ते = { कर्मक्षयहोनेपरजन्म मरणभाव को प्राप्त होते हैं
तस्मात् = इसीकारण

प्रजाकामाः = { संतानकी इच्छाकरने वालेगृहस्थीपुरुष
+च = और
ऋषयः = स्वर्गकीकामनावालेऋषि
एते = ये सब
दक्षिणम् = पुनरावृत्ति मार्ग को
प्रतिपद्यन्ते = प्राप्तहोते हैं
+च = और
यः = जो
हवै = निश्चयकरके
एषः = यह
पितृयाणः = दक्षिणमार्गहै
+सःएव = सोई
रयिः = रयिचन्द्ररूपहै ९

भावार्थ ॥

संवत्सरः ॥ सूर्यही काल है और कालही प्रजापति है, और प्रजापतिही संवत्सर है, तिस संवत्सर के दो मार्ग हैं, एक तो छः महीने का दक्षिणायन मार्ग है, दूसरा छः महीने का उत्तरायण मार्गहै, जब सूर्य्य दक्षिण की तरफ जाताहै तब दक्षिणायन कहाताहै, जब उत्तरकी तरफ जाता है तब उत्तरायण कहा जाता है, दोनोंमार्गों से एकही संवत्सर का स्वरूप सिद्ध होता है, जो कर्मी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इष्टपूर्त्तकर्मों को अर्थात् श्रौत और स्मार्त कर्मों को करते हैं वे चन्द्रलोकसंबन्धी भोगों को अर्थात् स्वर्ग में उत्तम भोगों को भोग करके फिर इसीलोक में लौट आते हैं, उनलोकों को प्रजा की कामनावाले कर्मी दक्षिणायन मार्ग सेही जाते हैं, यही पितृमार्ग भी कहाजाताहै, स्वर्गादि भोग्य रयिरूप है, इसी को सूर्य का उपासक प्राणी सूर्यरूप होकर भोगता है ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

अथोत्तरेणतपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धयाविद्ययाऽऽत्मानमन्विष्यादित्यमभिजायन्ते एतद्वैप्राणानामायतनमेतदमृतमभयमेतत् परायणमेतस्मान्न पुनरावर्त्तन्त इत्येषनिरोधस्तदेषश्लोकः ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

अथ उत्तरेण तपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धया विद्यया आत्मानम् अन्विष्य आदित्यम् अभिजायन्ते एतत् वै प्राणानाम् आयतनम् एतत् अमृतम् अभयम् एतत् परायणम् एतस्मात् न पुनः आवर्त्तन्ते इति एषः निरोधः तत् एषः श्लोकः १० ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अथ	पक्षांतरबिषे यानेदूसरेपक्ष उत्तरमार्गबिषे	श्रद्धया	आस्तिक्य बुद्धि करके
ये	जोउपासक	विद्यया	विद्या करके
तपसा	तपकरके	आत्मानम्	आत्माको
ब्रह्मचर्येण	ब्रह्मचर्यकरके	अन्विष्य	अन्वेषणकरके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदित्यम् = आदित्यलोक को
अभिजायन्ते = प्राप्तहोते हैं
+ ते = वे
पुनः = फिर
नआवर्त्तन्ते = जन्म मरण भावकोनहीं पाते हैं
हि = क्योंकि
एतत् वै = यह आदित्यही
प्राणानाम् = सबप्राणियों का
आयतनम् = आश्रय है
एतत् = यह
एव = ही
अमृतम् = मोक्षपदार्थहै
एतत्एव = यह ही
अभयम् = निर्भय स्वरूप है
+ अतएव = यहही
परायणम् = परमआश्रय है
इतिएषः = ऐसायह उत्तरमार्ग
कर्मिणाम् = कर्मियों को
निरोधः = प्राप्य है
तत् = तत्र = इस संवत्सरप्रजापति बिषे
एषः = यह अगला
श्लोकः = मन्त्रभी प्रमाण है

भावार्थ ॥

अथेति ॥ चन्द्रलोक की प्राप्ति दक्षिणायन मार्ग करके कही गई है अब उत्तरायणमार्ग करके सूर्य्यलोक की प्राप्ति को कहते हैं ॥ अथोत्तरेण ॥ जिन साधनों करके उत्तरायण मार्ग से उपासक सूर्य्यलोक को प्राप्त होते हैं उन्हीं को अब कहते हैं ॥ शरीरका सुखानेवाला जो तप है व इन्द्रियोंका दमन करनेवाला जो ब्रह्मचर्य्य है और गुरु और वेद वाक्यों में आस्तिक बुद्धि करानेवाली जो श्रद्धा है इन सब करके आत्माका अन्वेषण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करता हुआ सूर्यका उपासक सूर्यलोकको प्राप्त होताहै और जन्म मरणभावसे रहित होजाताहै, क्योंकि वह सूर्य की अहंग्रे उपासना करके सूर्यरूपही होजाता है, प्राण शब्दका वाच्य जो चक्षुरादि इन्द्रिय हैं,उनका आश्रय सूर्य्यही है,वह सूर्य अविनाशी वृद्धिक्षय से रहित है, यही सूर्य्य उपासकों की प्राप्तिका आश्रय है, और उत्तरायण मार्ग से प्राप्त होने के योग्यभी है,इस उत्तरायण मार्गसे जो उपासक गमन करता है वह फिर लौटकर इस लोक में नहीं आता है, इस उत्तरायणमार्ग को कर्मों करके नहीं जासक्ते हैं, इसी अर्थ को आगे वाला मंत्र भी कहता है ॥ १० ॥

मूलम् ॥

पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परेअर्द्धे पुरीषिणम् अथेमे अन्य उ परे विचक्षणं सप्तचक्रे षडर आहुरर्पितमिति ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ॥

पञ्चपादम् पितरम् द्वादशाकृतिम् दिवः आहुः परे अर्द्धे पुरीषिणम् अथ इमे अन्ये उ परे विचक्षणम् सप्तचक्रे षडरे आहुः अर्पितम् इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
पञ्चपादम् =	हेमन्त और शिशिरकोएक समझ के पांच ऋतुरूपीचरणहैं जिसके	पितरम् =	सबकाजनक यानेउत्पन्नकरनेवालाहैजो
		द्वादशाकृतिम् =	द्वादश अवयव हैं जिसके
		दिवः =	अन्तरिक्ष के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परेअर्द्धे = उत्तरार्द्ध विषे
पुरीषिणम् = { जलवान् स्थित है जो
तम् = उसको
+सूर्यं संवत्सरम् = { सूर्यरूप संवत्सर
इति = ऐसा
+कालवेत्तारः = { कालके वेत्ता लोक
आहुः = कहते हैं
अथ उ = और
यः = जो

परे = उत्कृष्ट
षडरे = { षट्ऋतुरूपी अरावाले
सप्तचक्रे = { सप्ताश्वरथ चक्र विषे
अर्पितम् = अर्पित है
तम् = उसको
विचक्षणम् = ज्ञानात्मक
सूर्यम् = { सूर्यरूपी संवत्सर
इति = ऐसा
इमे अन्ये = और लोक
+आहुः = कहते हैं

भावार्थ ॥

पंचपादेति ॥ प्र० ॥ आदित्यरूपी संवत्सर कैसा है ॥ उ० ॥ यह पांच पादवाला है याने पांच ऋतुवाला है ॥ लोकमें षट्ऋतु प्रसिद्ध हैं, परन्तु यहां पर हेमंत और शिशिर दोनोंको एक करके माना है इसीकारण संवत्सरको हेमंत, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, पांच ऋतुवाला माना है, आदित्यरूपी संवत्सर इन्हीं करके एक पांच पादवाला कहा जाता है वही संवत्सरवृष्टि अन्नादि द्वारा संपूर्ण जगत्का जनक है और बारह चैतसे लेकर के महीने हैं, येही उस संवत्सरके बारह अंग हैं, और अंतरिक्ष लोकसे भी उसका स्थान ऊपर है, वही जलवाला भी है, ऐसा कालके वेत्ता पुरुष कहते हैं, और कोई बुद्धिमान् कालके वेत्ता ऐसा भी कहते हैं कि सूर्यरूपी संवत्सरके रथमें सात घोड़ेरूपी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोक सहित ६ ऋतु हैं, वे सदाही चला करते हैं, कभी ठहरते नहीं हैं, सात जो घोड़े हैं वेही सात प्रकार के आदित्यरूपी संवत्सरके सातशक्ति हैं, वे अरे होकर उसके पहियेरूपी लोकोंकेचलाने वाले हैं, याने लोक उनहीं के आश्रय हैं, तात्पर्य इसके कहनेका यहहै कि कालही सूर्य चन्द्र होकर सम्पूर्ण सृष्टिका कर्ता है, ११॥

मूलम् ॥

मासोवै प्रजापतिस्तस्य कृष्णपक्षएवरयिः शुक्लः प्राणस्तस्मादेत ऋषयः शुक्ल इष्टिं कुर्वन्ति इतर इतरस्मिन् ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ॥

मासः वै प्रजापतिः तस्य कृष्णपक्षः एव रयिः शुक्लः प्राणः तस्मात् एते ऋषयः शुक्ले इष्टिम् कुर्वन्ति इतरे इतरस्मिन् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
मासः	मास	प्राणः	सूर्यहै
वै	ही	तस्मात्	इसीलिये
प्रजापतिः	प्रजापति है	एते	ये
तस्य	तिसमासका	ऋषयः	उत्तर मार्ग के उपासक ऋषि
कृष्णपक्षः	कृष्णपक्ष	शुक्ले	शुक्लपक्षविषे
एव	ही	इष्टिम्	यज्ञ को
रयिः	चन्द्रहै	कुर्वन्ति	करते हैं
+च	और		
शुक्लः	शुक्लपक्ष		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ च = और
इतरे = { दक्षिणमार्ग के उपासक | इतरस्मिन् = { कृष्णपक्ष विषे यज्ञ करते हैं

भावार्थ ॥

मासोवै ॥ पन्द्रह दिनका कृष्णपक्ष होता है, और पन्द्रह दिनका शुक्लपक्ष होता है, दोनों पक्षोंका एक मास होताहै, वह दो पक्षवाला मास प्रजापति रूपही है तिस प्रजापतिका शुक्ल पक्ष सूर्य है और कृष्णपक्ष चन्द्रमा है, जो कृष्ण पक्ष है वही रयि है, और जो शुक्ल पक्ष है सोई प्राण है जो बुद्धिमान् उपासिक सूर्य कोही सर्वरूप करके प्राणही जानते हैं, वे प्राणहीं को सर्वरूप करके देखते हैं प्राण से भिन्न कोई वस्तु उनको नहीं दिखाई देती है प्राण को सर्व वस्तु से श्रेष्ठमान् है इसीलिये प्राणरूपी शुक्लपक्ष में ही इष्टपूर्त्त कर्मों को करते हैं, कृष्ण पक्ष में नहीं और जो उत्तरलोक हैं वे शुक्ल पक्ष में इष्टपूर्त्त कर्मों को करतेभी हैं तबभी वह कृष्णही पक्षका अनुभव करतेहैं क्योंकि प्राणोंकी उपासनासेरहित जो हैं वे इस विभागको नहीं जानतेहैं और इसीलिये वे कृष्णपक्ष में इष्टपूर्त्त कर्मों को करते हैं और यदि शुक्लपक्षमें जो करदेते हैं तबभी उनको कृष्ण पक्षकाही फल मिलताहै॥ १२॥

मूलम् ॥

अहोरात्रो वै प्रजापतिस्तस्याहरेव प्राणोरात्रिरेवरयिः प्राणंवाएते प्रस्कन्दन्ति ये दिवा रत्या संयुज्यन्ते ब्रह्मचर्यमेव तद्यद्रात्रौ रत्या संयुज्यन्ते ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ॥

अहोरात्रः वै प्रजापतिः तस्य अहः एव प्राणः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रात्रिः एव रयिः प्राणम् वै एते प्रस्कन्दन्ति ये दिवा रत्या संयुज्यन्ते ब्रह्मचर्यम् एव तत् यत् रात्रौ रत्या संयुज्यन्ते ॥

अन्वयः	पदार्थ
अहोरात्रः	= दिन और रात
वै	= निश्चयकरके
प्रजापतिः	= प्रजापतिहै
तस्य	= उस प्रजापतिका
अहः	= दिन
एव	= ही
प्राणः	= सूर्यहै
+ च	= और
रात्रिः	= रात
एव	= ही
रयिः	= चन्द्रमाहै
वै	= इसलिये
ये	= जो लोक
दिवा	= दिनमें
रत्या	= स्त्रीसे

अन्वयः	पदार्थ
संयुज्यन्ते	= संयुक्तहोते हैं याने भोगकरते हैं
एते	= वेमूर्ख
+ वै	= निश्चयकरके
प्राणम्	= तेजरूप अपने प्राणको
प्रस्कन्दन्ति	= त्यागतेहैं
+ च	= और
यत्	= जो
रात्रौ	= रात्रीविषे
रत्या	= भोगकेवास्ते स्त्रीसे
संयुज्यन्ते	= संयुक्तहोतेहैं
+ तेषाम्	= उनको
तत्	= यह कर्म
एव	= निश्चयकरके
ब्रह्मचर्यम्	= ब्रह्मचर्य है

भावार्थ ॥

अहोरात्रइति ॥ तीस घड़ीका एक दिन होता है और तीसही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घड़ी की रात्री होती है साठ घड़ीका दिनरात्र दोनों होते हैं सो दिन रात्र भी प्रजापति रूपही है, तीस घड़ी प्रमाणवाला जो दिनहै वह आदित्य है, याने सूर्य्य है और तीस घड़ी प्रमाणवाली जो रात्री है,वह चन्द्रमा है इसलिये दिनमें स्त्रीके साथ भोग करने का निषेध किया है जो लोग दिनमें मैथुन करते हैं,वे अपने प्राणों को नाश करते हैं, याने प्राणों को सुखाते हैं, जो पुरुष दिन में स्त्री के साथ क्रीड़ा नहीं करते हैं, परन्तु रात्री मेंही करते हैं,उन का जो रात्रीमें मैथुन करनाहै,वह ब्रह्मचर्य्यहीहै,इसलिये रात्रीमेंही अपनी स्त्रीके साथ पुरुष भोगकरै,परस्त्री को किसी काल में भी भोग न करै ॥ १३ ॥

मूलम् ॥

अन्नंवैप्रजापतिस्ततो हवै तद्रेतस्तस्मादिमाः प्रजाः प्रजायन्त इति ॥ १४ ॥

पदच्छेदः ॥

अन्नम् वै प्रजापतिः ततः ह वै तत् रेतः तस्मात् इमाः प्रजाः प्रजायन्ते इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
अन्नम्	अन्न
वै	ही
प्रजापतिः	प्रजापति है
ततः	उस अन्नरूप प्रजापतिसे
हवै	निश्चयकरके
तत्	वह प्रजोत्पादनसमर्थ
रेतः	वीर्य्य
जायते	उत्पन्न होता है
तस्मात्	उसीवीर्यसे
इति	दृश्यमान
इमाःप्रजाः	येसंपूर्णप्रजा
जायन्ते	उत्पन्नहोती हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

अन्नमिति ॥ पूर्ववाले मंत्रों में जो कुछ कहा है सो सब उपयोगी जानकरके कहागयाहै ॥ और जो यह प्रश्न कियागयाथा कि सब प्रजा किससे उत्पन्न होती हैं सो अब उसके उत्तर को कहते हैं ॥ अन्नंवैप्रजापतिः ॥ यह जो प्रसिद्ध व्रीहि यवादिरूप अन्न है यही प्रजापति है अर्थात् दिन मास संवत्सररूप जो काल है तद्रूपही यह अन्न भी है तिसी अन्नके भक्षण करने से वीर्य्य उत्पन्न होता है तिसी वीर्य्यसे नानाप्रकारके प्राणियों के शरीर उत्पन्न होते हैं ॥ १४ ॥

मूलम् ॥

तद्ये हवै तत्प्रजापतिव्रतं चरन्ति तेमिथुनमुत्पादयन्ते तेषामेवैष ब्रह्मलोकोयेषां तपो ब्रह्मचर्य्यं येषु सत्यंप्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥

पदच्छेदः ॥

तत् ये ह वै तत् वै प्रजापतिव्रतम् चरन्ति ते मिथुनम् उत्पादयन्ते तेषाम् एव एषः ब्रह्मलोकः येषाम् तपः ब्रह्मचर्य्यम् येषु सत्यम् प्रतिष्ठितम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तत्	= इसलिये	चरन्ति	= करते हैं
ये	= जो गृहस्थीलोक	ते	= वे
हवै	= निश्चय करके	मिथुनम्	= पुत्रपुत्रीरूप मिथुन याने जोड़े को
तत्प्रजापतिव्रतम्	= ऋतुकालबिषे भार्यागमनरूप व्रतको	उत्पादयन्ते	= उत्पन्न करते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

×तेषाम्एतत् दृष्टफलम् = { उनका यह दृष्टफल है
च = और
येषाम् = जिनका
तपः = स्नातकव्रत आदितपहै
च = और
ब्रह्मचर्यम् = { ऋतुकाल विषेभार्या गमनादि नियम
यथोक्त- मस्ति = { विधिपूर्व- कहै

च = और
येषु = जिनके विषे
सत्यम् = सत्य
प्रतिष्ठितम् = सदास्थितहै
तेषाम् एव = उन्हींका
एषः = यह पूर्वोक्त
ब्रह्मलोकः = दक्षिण मार्ग- रूप चंद्रलोक
भवति = कर्मफलभोग पर्यंत होताहै
तेषाम्एतत् अदृष्टफलम् = { उनका यह अदृष्टफलहै

भावार्थ ॥

तद्येहेति ॥ प्रश्न के उत्तर को कहकर शास्त्र विहित मैथुन के दृष्ट फलको दिखाते हैं ॥ तत् ॥ इस संसार मंडलमें जो गृहस्थाश्रमवाले पूर्वोक्त प्रजापति के व्रतको आचरण करते हैं अर्थात् दिनमें मैथुन का त्याग करके ऋतुकाल में स्वभार्या से गमन करते हैं वे पुत्र और कन्याके जोड़ेको उत्पन्न करते हैं अब उसी प्रजापति व्रतके अदृष्टफलको कहतेहैं ॥ उन्हींको ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है जिन्हों ने स्नातक व्रतादि तपको ऋतुकाल विषे स्वभार्या गमनरूपी ब्रह्मचर्यको, और सत्यभाषणको स्वीकार किया है १५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

तेषामसौविरजोब्रह्मलोकोनयेषु जिह्ममनृतंन मायाचेति ॥ १६ ॥

पदच्छेदः ॥

तेषाम् असौ विरजःब्रह्मलोकः न येषु जिह्मम् अनृतम् न माया च इति १६ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
च	= और	असौ	= यह पूर्वोक्त
येषु	= जिनपुरुषोंविषे	विरजः	= रोगादि दोषों से रहित
जिह्मम्	= कुटिलता	ब्रह्मलोकः	=उत्तरायणमार्गरूपी सूर्यलोक
न	= नहीं है	+भवति	= प्राप्त होताहै
च	= और	इति	= प्रथम प्रश्नकी समाप्तिहै
अनृतम्	= असत्यता		
न	= नहीं है		
तेषाम्	= उनपुरुषों को		

भावार्थ ॥

तेषामिति ॥ पूर्वके मंत्रमें केवल कर्मियों को चन्द्रलोक की प्राप्ति कही है, अब इस मंत्र में ज्ञान के सहित कर्मियों को जो फल प्राप्तहोताहै उसको कहते हैं ॥ तेषामिति ॥ जिन उपासकों में कुटिलता, असत्य भाषणता, और छल प्रपञ्चता भीतर बाहर से नहीं है,और हिंसा,चोरी, आदि दुष्टकर्म नहीं है,उन निष्काम कर्मियों को उत्तरायण मार्ग करके वृद्धि क्षयरहित ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है ॥ १६ ॥

इति प्रथमः प्रश्नः ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

अथहैनंभार्गवोवैदर्भिः पप्रच्छभगवन् कत्येवदेवाःप्रजांविधारयन्ते कतरएतत्प्रकाशयन्तेकः पुनरेषां वरिष्ठइति १ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ ह एनम् भार्गवः वैदर्भिः पप्रच्छ भगवन् कति एव देवाः प्रजाम् विधारयन्ते कतरे एतत् प्रकाशयन्ते कः पुनः एषाम् वरिष्ठः इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
अथह	इसकेपीछे
वैदर्भिः	विदर्भदेशका रहनेवाला
भार्गवः	भार्गवऋषि
एनम्	उसपिप्पलाद मुनि से
इति	ऐसा
पप्रच्छ	पूछताभयाकि
भगवन्	हेभगवन्
कति	कितने
देवाः	देवतायानेआकाशादि पंच महाभूत चक्षुरादि पंचज्ञानेन्द्रिय वागादि पांचकर्मेन्द्रिय मन और प्राण जो देवता कर के प्रसिद्ध हैं उनमें से कित-ने देवता

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एनाम् = इस	प्रकाशयन्ते=प्रकाशकरतेहैं
प्रजाम् = शरीरको	पुनः = और
विधारयन्ते=धारण करते हैं	एषाम् = इनमेंसे
+ च = और	कः = कौन
कतरे = कौनसेदेवता	वरिष्ठः = श्रेष्ठ
एतत् = इसशरीरको	+अस्ति = है

भावार्थ ॥

अथहैनमिति ॥ अब पिप्पलाद मुनिसे भृगुकुल में उत्पन्न हुआ जो वैदर्भि नामवाला ऋषि है सो पूछता है हे भगवन्! जो देवता प्राणियों के शरीरोंको धारण कररहे हैं वे सबदेवता कितने हैं, अर्थात् जो ज्ञानेन्द्रियों में, कर्मेन्द्रियोंमें, प्राणोंमें, मनादिकों में स्थित होकर शरीरको धारण करते हैं और प्रकाश भी करते हैं वे देवता सब कितने हैं,और इन देवतों के बीचमें श्रेष्ठ देवता को,है सो मेरे प्रति कहिये ॥ १ ॥

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाचाकाशोहवाएष देवोवायुरग्निरापः पृथिवीवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रंचतेप्रकाश्याभिवदन्तिवयमेतद्बाणमवष्टभ्यविधारयामः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच आकाशः ह वा एषः देवः वायुः अग्निः आपः पृथिवी वाक् मनः चक्षुः श्रोत्रम् च ते प्रकाश्य अभिवदन्ति वयम् एतत् बाणम् अवष्टभ्य विधारयामः ॥ २ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
तस्मै	उस भार्गव मुनि से
सः	वहपिप्पलाद
ह	स्पष्ट
उवाच	कहता भया कि
एषः	यह
आकाशः	आकाश
हवा	प्रसिद्ध
देवः	देवताहै
वायुः	वायु
+देवः	देवताहै
अग्निः	अग्नि
+देवः	देवताहै
पृथिवी	पृथिवी
+देवः	देवताहै
वाक्	वाक
+देवता	देवताहै
मनः	मन
देवता	देवताहै

अन्वयः	पदार्थ
चक्षुः	चक्षु
देवता	देवताहै
श्रोत्रम्	श्रोत्र
+देवता	देवताहै
+तेषाम्	उनमेंसे
ते	वेयानेपांच कर्मेन्द्रियां और पांच ज्ञानेन्द्रियां
+स्वमाहात्म्यम्	अपने माहात्म्यको
प्रकाश्य	प्रकाशकरके
अभिवदन्ति	परस्पर कहतेभये कि
वयम्	हम
एतत्	इस
बाणम्	शरीरको
अवष्टभ्य	स्थितकरके
विधारयामः	धारण करते हैं

नोट–वाक् उपलक्षण करके पांच कर्मेन्द्रिय देवताहैं मन उपलक्षणकरके वृत्तिचतुष्टय अन्तःकरण देवताहैं चक्षु और श्रोत्र उपलक्षण करके पांच ज्ञानेन्द्रिय देवताहैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

तस्मैसहेति ॥ वैदर्भि ने जब ऐसा प्रश्न किया तब पिप्पलाद ऋषि उससे कहतेभये ॥ आकाश,वायु,अग्नि,जल, पृथिवी ये पांच महाभूतरूप देवता हैं, वाक्,पाणि,पाद, पायु,उपस्थ ये पांच कर्मेन्द्रियरूपी देवता हैं, चक्षु,श्रोत्र, घ्राण, रसना,त्वक् ये पांच ज्ञानेन्द्रियरूपी देवता हैं,और मन, बुद्धि, चित्त,अहंकार ये चार अन्तःकरण के वृत्तिरूपी देवताहैं,येसब शरीर में स्थित होकर अपने २ कार्य को करते हैं और शरीर को प्रकाशते हैं,एक समय ये पूर्वोक्त सब देवता परस्पर अभिमानको करते भये और हरएक उनमें से कहताभया कि हमहीं श्रेष्ठ हैं हमनेही इस शरीर को दृढ़ करके धारण कर रक्खा, अगर हम न हो, तो तुम सब नाश होजावो, हमारीही स्थिति से तुम्हारी सबकी स्थिति है ॥ २ ॥

मूलम् ॥

तान्वरिष्ठःप्राण उवाच मामोहमापद्यथाऽहमेवैतत् पंचधात्मानं प्रविभज्यैतद्बाणमवष्टभ्य विधारयामीति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

तान् वरिष्ठः प्राणः उवाच मा मोहम् आपद्यथ अहम् एव एतत् पञ्चधा आत्मानम् प्रविभज्य एतत् बाणम् अवष्टभ्य विधारयामि इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तान्	= उन सब से	प्राणः	= प्राणदेवता
वरिष्ठः	= श्रेष्ठ	उवाच	= कहताभया कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+यूयम् = तुम सब
मा = मत
मोहम् = अज्ञानको
आपद्यथ = प्राप्तहो
अहम् = मैं
एव = ही
एतत् = इस
आत्मानम्=अपने आपको
पञ्चधा = पांच प्रकार से

प्रविभज्य = { विभाग करके यानें अपाना- दि भेदसे पांच प्रकारकाहोकर
एतत् = इस
बाणम् = शरीर को
अवष्टभ्य = स्थिर करके
विधारयामि = { भली प्रकार धा- रण करता हूँ

भावार्थ ॥

तानिति ॥ तब उन सब अभिमानी देवताओं से प्राण हाथ उठाकर कहने लगा,तुम सब कोई अज्ञानको मत प्राप्त हो, मैंही इस शरीर में मुख्य हूं; मैं ही पांचरूप धारणकरके याने प्राण, अपान,उदान, समान,व्यान, होकर इस शरीर को स्थित कररक्खा हूं और नानाप्रकार के कार्य्यों के करने में मैंनेही इसको सामर्थ्यवाला बनारक्खा हूं ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

तेऽश्रद्दधाना बभूवुः सोऽभिमानादूर्ध्वमुत्क्रामत इव तस्मिन्नुत्क्रामत्यथेतरे सर्व एवोत्क्रामन्ते तस्मिꣳश्च प्रतिष्ठमाने सर्व एवप्रतिष्ठन्ते तद्यथा मक्षिकामधुकरराजानमुत्क्रामन्तं सर्वा एवोत्क्रामन्ते तस्मिꣳश्च प्रतिष्ठमाने सर्वा एव प्रतिष्ठन्त एवं वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं च ते प्रीताःप्राणंस्तुन्वन्ति ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

ते अश्रद्दधानाः बभूवुः सः अभिमानात् ऊर्ध्वम् उत्क्रामते इव तस्मिन् उत्क्रामति अथ इतरे सर्वे एव उत्क्रामन्ते तस्मिन् च प्रतिष्ठमाने सर्वे एव प्रतिष्ठन्ते तत् यथा मक्षिकाः मधुकरराजानम् उत्क्रामन्तम् सर्वाः एव उत्क्रामन्ते तस्मिन् च प्रतिष्ठमाने सर्वाः एव प्रतिष्ठन्ते एवम् वाक् मनः चक्षुः श्रोत्रम् च ते प्रीताः प्राणम् स्तुन्वन्ति ॥ ४ ॥

अन्वयः	पदार्थ
+ तस्मिन्	इस कहनेपर
ते	वेमनआदि
अश्रद्दधानाः	अविश्वासमान
बभूवुः	होतेभये
+ तदा	तब
सः	वह प्राण उनके अविश्वासको जानके
अभिमानात्	अहंकारसे उनकोत्याग करके
ऊर्ध्वम्	ऊर्ध्वको
उत्क्रामते इव ॥	उत्क्रमणसा करताभया

अन्वयः	पदार्थ
तस्मिन्	उसप्राणके
उत्क्रामति	उत्क्रमणकरने पर
इतरे	चक्षुरादि
सर्वे	सब
एव	ही
उत्क्रामन्ते	उत्क्रमण करते भये
च	और
तस्मिन्	उसप्राणके
प्रतिष्ठमाने	स्थितहोनेपर
सर्वे	सब
एव	ही चक्षुरादि देवता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिष्ठन्ते = सम्यक्प्रकार स्थितहोतेभये
तद्यथा = जैसे
उत्क्रामन्तम्=उड़तेहुये
मधुकरराजानम् = मधुकरों के राजाके साथ
सर्वाः = सब
एव = ही
मक्षिकाः = मधुकरमक्षिका
उत्क्रामन्ते=उड़जाती हैं
च = और
तस्मिन् = मधुकरराजाके
प्रतिष्ठमाने=स्थितहोनेपर
सर्वाः = सब
एव = ही
मक्षिकाः = मधुकरमक्षिका

प्रतिष्ठन्ते = स्थित होजाती हैं
एवम् = ऐसेही
वाक् = वाणी
मनः = मन
चक्षुः = चक्षु
च = और
श्रोत्रम् = श्रोत्रासब
ते = ये प्राणके माहात्म्यको जानकर और अपने अविश्वासको छोड़कर
प्रीताः = प्रसन्नहोती हुई
प्राणम् = प्राणको
स्तुवन्ति = स्तुतिकरती हैं

नोट–जब सब इन्द्रियां प्राणकी श्रेष्ठताको जानतीभई तब आपुसमें एक दूसरे से प्राणके माहात्म्यको अगले दोमन्त्रों में कहकर उसके सम्मुख होकर उसकी स्तुतिकरनेलगीं ॥

भावार्थ ॥

तेऽश्रद्दधानेति ॥ वे जो श्रोत्रादिक देवता थे सो प्राण के वाक्य पर श्रद्धा न करके आस्तिक बुद्धि से रहित होकर हँसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगे, जब प्राणने देखाकि अभिमानी देवता मेरीहँसी करते हैं तब उनके अभिमान को दूरकरने के लिये शरीर से बाहर निकलने की तैयारी की, उसके निकलतेही श्रोत्रादिक जितने देवता शरीर में थे सब कंपायमान होकर व्याकुलहुये और उसके पीछे २ चलनेलगे, जब प्राण वापिस आया, तब वे सब फिर उसके साथही शरीर में वापिस आये, जिस काल में शरीर से प्राण उत्क्रमण करता है उसी काल में इतर सब देवता उत्क्रमण कर जाते हैं, और जिस काल शरीर में प्राण स्थिर होजाता है उसीकाल सब देवता भी स्थिर होजाते हैं, शरीरमें सब देवतोंकी स्थिति प्राण केही आधीन है, स्वतंत्र कोई भी देवता नहीं है, इसीमें अब दृष्टांतको कहते हैं, जैसे मधुको इकट्ठा करनेवाली सब मक्षिका अपने राजाके आधीन रहतीहैं अर्थात् जिस काल में मधुके छत्ते को त्यागकर मधुमक्षिका का राजा उड़जाताहै, तब सबमक्षियांभी उसके पीछे उड़जाती हैं फिर जब वह आकर मधुके छत्तेपर बैठ जाता है, तब सब मक्षिका भी तिसके साथही बैठजाती हैं, इसी तरह प्राण के उत्क्रमण करने के समय सब इन्द्रियां भी उसके साथही उत्क्रमण करजाती हैं, सब इन्द्रियां प्राणकेही आधीनहैं, जिस काल में प्राण शरीर से उत्क्रमण करने की तैयारी करता है, उसी काल में सब इन्द्रियां व्याकुल होकर उसके साथ गमन करने लगती हैं, जब सब इन्द्रियां प्राणकी श्रेष्ठताको जानतीभई तब सब आपुस में उसके महत्त्वको कहने लगीं ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

एषोऽग्निस्तपत्येष सूर्य्य एष पर्जन्यो मघवानेष वायुरेष पृथिवी रयिर्देवःसदसच्चामृतंचयत् ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

एषः अग्निः तपति एषः सूर्य्यः एषः पर्जन्यः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मघवान् एषः वायुः एषः पृथिवी रयिः देवः सत् असत् च अमृतं च यत् ॥ ५ ॥

अन्वयः	पदार्थ
एषः	= यही प्राण
अग्निः	= अग्निहोके
तपति	= तपताहै
एषः	= यहीप्राण
सूर्यः	= सूर्यहोकेप्रकाश करताहै
एषः	= यही प्राण
पर्जन्यः	= मेघहोके वर्षा करताहै
एषः	= यही प्राण
मघवान्	= इन्द्रहोकेप्रजाका पालन करता है और राक्षसों को मारताहै
एषः	= यही
वायुः	= आवहप्रवहादि रूपहो के ब्रह्मांडको धारण करता है

अन्वयः	पदार्थ
+एषः	= यही प्राण
पृथिवी	= पृथिवीरूप होके अन्नादि औषधी से प्राणीयों का पालन करताहै
+एषः	= यहीप्राण
रयिः	= चन्द्रमा
देवः	= देवहोके विश्वकापोषण करताहै
+एषः	= यही प्राण
सत्	= स्थूल
+च	= और
असत्	= सूक्ष्मरूप सब जगत्है
च	= और
+एषः	= यहीप्राण
अमृतंच	= अमृतरूपभीहै

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोट-आवह वह वायुहै जिस करके मेघ चलते हैं और बरसतेहैं ॥ प्रवह वह वायुहै जिसकरके सूर्य चन्द्र आदि नक्षत्र तारागण चलते हैं ऐसेही पांचप्रकार के और वायु ब्रह्मांड के धारण करनेवाले हैं ॥

भावार्थ ॥

एष इति ॥ यह प्राणही अग्निरूप होकर संसारको तपाता है,यही सूर्य्यरूप होकर जगत् को प्रकाश करता है, यही मेघरूप होकर वर्षा करताहै,यही इन्द्ररूप होकर प्रजाकी पालना करता है,और वायुरूप होकर ब्रह्मांडको धारण करता है,यही पृथिवीरूप होकर अन्नादि औषधि से प्राणियोंका पालन करता है,यही चन्द्रमाहोकर विश्वको पोषण करताहै, यही प्रकाशमानहै, यही स्थूल और सूक्ष्मरूप सब जगत् है, और देवतों के जीवनका हेतुभूत यही अमृत है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

अराइवरथनाभौप्राणेसर्वंप्रतिष्ठितं ऋचोयजूंषिसामानियज्ञःक्षत्रं ब्रह्मच ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

अराः इव रथनाभौ प्राणे सर्वम् प्रतिष्ठितम् ऋचः यजूंषि सामानि यज्ञः क्षत्रम् ब्रह्म च ॥ ६ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इव	जैसे	अराः	आरास्थितहैं
रथनाभौ	रथचक्रपिंड-का बिषे	+तथा	तैसेही
		प्राणे	प्राणविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वम् = श्रद्धादि नामपर्यंतसर्व शरीर षोडश कलावाला जिसका व्याख्यान षष्ठप्रश्न चतुर्थमंत्र बिषे है
प्रतिष्ठितम् = स्थितहै
च = और
ऋचः = ऋक्
यजूंषि = यजु
सामानि = साम ये तीन प्रकारके वेद
+च = और
यज्ञः = इन वेदों से प्रतिपाद्ययज्ञ
+च = और
क्षत्रम् = क्षत्रियजाति
ब्रह्म = ब्राह्मणजाति ये सब प्राण बिषे स्थित हैं ॥

नोट–सब इन्द्रियां अलग आपुसमें ऊपर कहे प्रकार विचारकर प्राण के संमुख हो उसकी स्तुति करती हैं ॥

॥ भावार्थ ॥

अराइवेति ॥ जैसे रथचक्रपिंडका बिषे अर लगे रहते हैं तैसेही संसाररूपी चक्र में नाभिरूपी जो प्राण है उसमें अरवत्, सूर्य, चन्द्र, तारागण आदि लोक, ऋक्, यजु, साम आदि वेद, पृथिवी और इन वेदोंसे प्रतिपाद्य यज्ञ, और श्रद्धा आदि साधन, और ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि जाति लगे हैं, अर्थात् जो कुछ माया और मायाका कार्य्य है, वह सब प्राणहीमें अर्पित है, प्राणके बाहर कोई वस्तु नहीं, सब प्राणही रूप है ॥ ६ ॥

नोट— जिसमें पादोंका संकेतहो उन मंत्रोंका नाम ऋचा है
जिसमें पादोंका नियम नहो उन मंत्रोंका नाम यजु है
जो गायनकी तरह पढ़ा जावै उन मंत्रोंका नाम साम है

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

प्रजापतिश्चरसिगर्भेत्वमेवप्रतिजायसे तुभ्यंप्राणःप्रजास्त्विमाबलिंहरन्तियः प्राणैःप्रतिष्ठसि ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

प्रजापतिः चरसि गर्भे त्वम् एव प्रतिजायसे तुभ्यम् प्राण प्रजाः तु इमाः बलिम् हरन्ति यः प्राणैः प्रतिष्ठसि ॥ ७ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
प्राण	= हे प्राण	तु	= और
त्वम्	= तू	यः	= जो तू
प्रजापतिः	= विराट्रूपहुवा	प्राणैः	= चक्षुरादि प्राणों के साथ
गर्भे	= प्राणियों के गर्भ बिषे	प्रतिष्ठसि	= सम्यक् प्रकार स्थितहै
चरसि	= व्याप्त है	+एतदर्थम्	= इसलिये
त्वम्एव	= तूही	इमाःप्रजाः	= ये चक्षुरादि सबप्रजा
प्रतिजायसे	= प्रतिशरीर बिषे मातृ पितृ आदि रूपसेउत्पन्न होताहै	तुभ्यम्	= तेरे अर्थ
		बलिम्	= भागको
		हरन्ति	= प्राप्त करतेहैं

भावार्थ ॥

प्रजापतिरिति ॥ इन्द्रियादिक देवता प्राणों की स्तुति करते हैं, हे प्राण ! विराट्रूप तूही है, तूही पिताके शरीर में वीर्य्यरूप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकर माता के गर्भ में स्थित होताहै तूही माताके गर्भ से पुत्ररूप होकर बाहर निकलताहै, तूही प्रजापति रूपहै, और जितने चक्षुरादि इन्द्रियांहैं सब तेरे लियेही बलीभाग को देती हैं क्योंकि तू उनसब के साथ होकर सर्वशरीर में पांच रूपसे स्थितहै ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

देवानामसिवह्नितमः पितृणांप्रथमास्वधाऋषीणांचरितंसत्यमथर्वाङ्गिरसामसि ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

देवानाम् असि वह्नितमः पितृणाम् प्रथमा स्वधा ऋषीणाम् चरितम् सत्यम् अथर्वाङ्गिरसाम् असि ॥ ८ ॥

अन्वयः	पदार्थ
+त्वम्	= तूही
देवानाम्	= इन्द्रादि देवताओं का
वह्नितमः	= श्रेष्ठ अग्निरूपयानेयज्ञभागका सम्यक्प्रकार प्राप्त करनेवाला
+असि	= है
+च	= और
+त्वम्	= तूही
पितृणाम्	= पितरोंका
प्रथमा	= प्रथम
स्वधा	= भागप्राप्तकरनेवालानांदी श्राद्धविषे
+असि	= है
+च	= और
+त्वम्	= तूही
अथर्वाङ्गिरसाम्	= देहधारणकरनेवाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋषीणाम् = चक्षुरादि देवताओं का
सत्यम् = सत्य
चरितम् = चैतन्य
असि = है ॥

नोट–स्वाहा शब्द देवतों के निमित्त यज्ञ भागका प्राप्त करनेवालाहै, याने स्वाहा शब्द करके हवनादि कर्म कियेजातेहैं, अर्थात् हवनादिकों बिषे स्वाहा शब्द उच्चारण करके देवतों के निमित्त बलिदी जाती है॥ स्वधा॥ यज्ञ या श्राद्धबिषे पितरों के निमित्त जो भाग दिया जाताहै सो "स्वधा" शब्द करके दिया जाताहै– ॥ अथर्वांगिरसाम्॥ अथर्वा = प्राण, आंगिरसाम् = अंगबिषे रसरूप है जो, याने शरीर बिषे मुख्यतत्त्वहै जो, सोई है प्राण ॥

भावार्थ ॥

देवानामिति ॥ जितने इन्द्रादिक देवता हैं उन्न सबको अग्निरूपहो कर तूही बलि भागको पहुंचाताहै, और पितर लोकमें निवास करनेवाले जितने पितर हैं, उन्नके प्रति भी तूही स्वधा शब्दद्वारा हविको पहुंचाता है अर्थात्—देवतों और पितरों के प्रति जो अन्नादिदियाजाता है वह अन्नरूप भी तूही है और जो इन्द्रियों, शरीरों के धारण करने की सामर्थ्य है वह भी तू है॥ ८॥

मूलम् ॥

इन्द्रस्त्वंप्राणतेजसा रुद्रोऽसिपरिरक्षितात्वमन्तरिक्षेचरसि सूर्यस्त्वं ज्योतिषांपतिः ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

इन्द्रः त्वम् प्राण तेजसा रुद्रः असि परिरक्षिता त्वम् अन्तरिक्षे चरसि सूर्यः त्वम् ज्योतिषाम्पतिः ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
प्राण	हे प्राण
त्वम्	तूही
इन्द्रः	परमेश्वर
असि	है
तेजसा	पराक्रमकरके
रुद्रः	जगत् संहार-कारक रुद्ररूप
त्वम्असि	तूही है
+ च	और
त्वम्	तूही
परिरक्षिता	सबप्रकार रक्षकहै
+ च	और
+ त्वम्	तूही
सूर्यः	सूर्यरूपहोके
अन्तरिक्षे	आकाशबिषे
चरसि	निरंतर चलताहै
+ च	और
+ त्वम्	तूही
ज्योतिषाम्पतिः	अग्नि आदि देवतोंका भी ईश्वर है

भावार्थ ॥

इन्द्रस्त्वमिति ॥ हे प्राण ! परमेश्वर तूही है, और रुद्ररूप होकर अपने बल से सम्पूर्ण जगत् का नाशकरनेवाला तूही है, और जगत्की स्थितिकालमें रक्षाकरनेवाला भी तूही है, और तूही सूर्यरूप होकर आकाश में विचरताहै, और सम्पूर्ण तारों को अपने तेज से प्रकाशमान करता है, और तूही अग्नि आदिकों का ईश्वर है ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

यदात्वमभिवर्षस्यथेमाः प्राणते प्रजा आनन्द-रूपास्तिष्ठन्ति कामायान्नंभविष्यतीति ॥ १० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

यदा त्वम् अभिवर्षसि अथ इमाः प्राणते प्रजाः आनन्दरूपाः तिष्ठन्ति कामाय अन्नम् भविष्यति इति ॥ १० ॥

अन्वयः	पदार्थ
यदा	जब
त्वम्	तू
अभिवर्षसि	मेघहोके वर्षा करता है
अथ	तब
इमाः	ये
प्रजाः	प्रजा
प्राणते	प्राणों की चेष्टाको करती हैं
+च	और
कामाय	आगे को प्रशस्त
अन्नम्	अन्न
भविष्यति	होगा
इति	ऐसा विचारकर
आनन्दरूपाः	आनंदरूप होतीहुई
तिष्ठन्ति	स्थित होती हैं

भावार्थ ॥

यदेति ॥ हे प्राण ! जिस कालमें तू मेघरूप होकर वर्षा को करता है, तिस काल में ये सम्पूर्ण प्रजा जीवनशक्ति की चेष्टा को करती हैं, और आन्द को प्राप्त होती हैं, क्योंकि उस काल में सम्पूर्ण प्रजाको यह निश्चय होता है कि अब तू हमारी इच्छा को पूर्ति करैगा और हमारे भोगके लिये वर्षाद्वारा बहुतसा अन्न उत्पन्न करैगा ॥ १० ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

व्रात्यस्त्वंप्राणैक ऋषिरत्ता विश्वस्यसत्पतिः व-यमाद्यस्यदातारः पितात्वंमातरिश्वनः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ॥

व्रात्यः त्वम् प्राण एकः ऋषिः अत्ता विश्वस्य सत्पतिः वयम् आद्यस्य दातारः पिता त्वम् मातरिश्वनः ॥ ११ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
प्राण	= हे प्राण	विश्वस्यसत्पतिः	= सब विद्यमान जगत्का उत्तम पति है
त्वम्	= तू	च	= और
व्रात्यः	= संस्कार विना स्वभाव सेही शुद्ध है क्योंकि प्रथम होनेसे तेरा पिता कोई नहीं है	वयम्	= हमसब इन्द्रियां
+त्वम्	= तूही	आद्यस्य	= तेरे अर्थ भोग्यवस्तुको
एकर्षिः	= एकर्षिनामक मुख्यअग्निहै	दातारः	= प्राप्त करने वाले हैं
त्वम्	= तूही	त्वम्	= तू
अत्ता	= सबहविर्द्रव्यों का भोक्ता है	मातरिश्वनः	= हमारा
+त्वम्	= तूही	पिता	= पिता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

व्रात्यस्त्वमिति ॥ जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो उसका नाम व्रात्यहै हे प्राण ! वह व्रात्य रूप तूही है, क्योंकि स्वभाव सेही शुद्ध है, और प्रथम तूही उत्पन्न हुआहै, तेरा पिता कोई नहींहै हे प्राण ! एकर्षिनामक जो अग्निहै, वह तूहीहै, तूही सब हविद्रव्योंका भोक्ताहै, तूही चराचर जगत्का भोक्ता, और संहार करता है और जितने व्रीहियवादिक अन्न हैं, उन सबको उत्पन्न करनेवाला तूही है, और हम जितने श्रोत्रादिक देवता हैं, उन सबको भोग देनेवाला तूही है, हम सब देवतों को उत्पन्न करनेवाला पिता भी तूही है, और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को धारण करनेवाला वायु तूही है, तू सब विद्यमान जगत् का उत्तम पति है, हम सब इन्द्रियां तेरे अर्थ भोग्यवस्तु को प्राप्त करनेवाले हैं, हे प्राण ! तू हमलोकों का पिताहै ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

यातेतनूर्वाचिप्रतिष्ठितायाश्रोत्रे या च चक्षुषिया चमनसिसन्तताशिवांतांकुरुमोत्क्रमीः ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ॥

या ते तनूः वाचि प्रतिष्ठिता या श्रोत्रे या च चक्षुषि या च मनसि सन्तता शिवाम् ताम् कुरु मा उत्क्रमीः ॥ १२ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
या	= जो	वाचि	= वाणी बिषे
ते	= तेरी	प्रतिष्ठिता	= स्थित है
तनूः	= मूर्त्ति	च	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या = जो
मूर्त्तिः = मूर्त्ति
श्रोत्रे = करण बिषे स्थित है
च = और
या = जो
मूर्त्तिः = मूर्त्ति
चक्षुषि = नेत्रबिषे स्थितहै
+ च = और
या = जो मूर्त्ति
मनसि = मन बिषे
सन्तता = व्याप्तहै
ताम् = तिस
शिवाम् = कल्याणवती मूर्त्तिको
कुरु = धारणकर
माउत्क्रमीः=उत्क्रमण मत कर

भावार्थ ॥

यातेतनूरिति ॥ हे प्राण ! जो तेरी यह प्रसिद्ध अपानरूपी मूर्ति है सो वागिन्द्रिय में स्थित होकर बोलने के व्यापार को करती है, और जो व्यानरूपी तेरी मूर्ति है सो श्रोत्रेन्द्रिय में स्थित होकर शब्द के सुननारूपी व्यापारको करती है और जो प्राणरूपी तेरी मूर्तिहै वह मुख और नासिका द्वारा बाहर भीतर गमन रुपी व्यवहारकोकरती है और जो तेरी मूर्ति चक्षु इन्द्रिय में स्थितहै वह देखनेरूपी व्यापार को करती है और जो तेरी मूर्ति मन में स्थित है वह संकल्पादि व्यापार को करती है, हे प्राण ! तू इसशरीर से उत्क्रमण मतकर, हम सबोंपर दया कर के हमारे कल्याण के लिये इसी शरीरमें स्थितरह ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

प्राणस्येदंवशेसर्वं त्रिदिवेयत्प्रतिष्ठितं मातेव पुत्रान्रक्षस्वश्रीश्चप्रज्ञाञ्चविधेहिन इति ॥ १३ ॥

इति द्वितीयः प्रश्नः ॥ २ ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

प्राणस्य इदम् वशे सर्वम् त्रिदिवे यत् प्रतिष्ठितम् माता इव पुत्रान् रक्षस्व श्रीः च प्रज्ञाम् च विधेहि नः इति ॥ १३ ॥

अन्वयः	पदार्थ
इदम्	यह दृश्यमान
सर्वम्	सब उपभोग
+तव	तुझ
प्राणस्य	प्राणके
वशे	वश में है
च	और
त्रिदिवे	स्वर्गबिषे
यत्प्रतिष्ठितम्	जो देवभोग्य है
+तदपितववशे	सोभी तेरे वश में है
+अतः	इसलिये
पुत्रान्	हमपुत्रों को
माताइव	माताके समान
रक्षस्व	तू रक्षाकर

अन्वयः	पदार्थ
च	और
श्रीः	ब्रह्मक्षात्रियों को
+च	और
प्रज्ञाम्	अपने प्रजापतित्व ज्ञानयोग्य बुद्धिको
नः	हमारे लिये
विधेहि	विधानकर
इति	ऐसे प्राण की स्तुति करके मन आदि इंद्रियांतूष्णीं होती भईं

इति द्वितीयःप्रश्नः ॥ २ ॥

भावार्थ ॥

प्राणस्येति ॥ हे प्राण ! यावत् जो कुछ जगत् दिखाई पड़ताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसको हमलोक तेरीही कृपासे विषयकरतेहैं, और जो कुछ संसार मेंहै हे प्राण ! सब तेरेही बसमें हैं, हे प्राण ! तू हम पुत्रोंकी माता की तरह रक्षाकर, अनर्थों से बचा, और हमको कल्याणकारक जो कि बुद्धिहै उसको दे, स्वर्गविषे जो देवभोग है वह सब तेरे आधीनहै, इसप्रकार प्राणकी स्तुतिकरके मनादि इन्द्रियां तूष्णीं होती भईं ॥ १३ ॥

इति द्वितीयःप्रश्नः ॥ २ ॥

मूलम् ॥

अथहैनंकौशल्यश्चाश्वलायनः पप्रच्छभगवन् कुतएषप्राणोजायते कथमायात्यस्मिञ्छरीर आत्मानंवाप्रविभज्यकथंप्रातिष्ठते केनोत्क्रमते कथं बाह्यमभिधत्तेकथमध्यात्ममिति १ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ ह एनम् कौशल्यः च आश्वलायनः पप्रच्छ भगवन् कुतः एषः प्राणः जायते कथम् आयाति अस्मिन् शरीरे आत्मानम् वा प्रविभज्य कथम् प्रातिष्ठते केन उत्क्रमते कथम् बाह्यम् अभिधत्ते कथम् अध्यात्मम् इति ॥ १ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अथहच	तदनंतर	कौशल्यः	कौशल्यनामक ऋषि
एनम्	इस पिप्पलाद आचार्य्य से	इति	ऐसा
आश्वलायनः	अश्वलायन मुनिका पुत्र	पप्रच्छ	पूछताभया कि
		भगवन्	हे भगवन्

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एषः = यह
प्राणः = प्राण
कुतः = किस कारण करके
जायते = उत्पन्न होताहै
कथम् = किसप्रकार
+अस्मिन् = इस
+शरीरे = देहबिषे
आयाति = आगमन करताहै
वा = पुनः
कथम् = किस प्रकार
अस्मिन् = इस
शरीरे = शरीर में
आत्मानम् = अपनेआपको
प्रविभज्य = अपानादिपांच विभाग करके
प्रातिष्ठते = स्थित रहताहै
केन = किसवृत्तिविशेष करके
उत्क्रमते = उत्क्रमणइस शरीर से करता है
कथम् = कैसे
बाह्यम् = अधिभूत अधिदैवको
+ च = और
कथम् = कैसे
अध्यात्मम् = अध्यात्मको
अभिधत्ते = धारण करताहै

भावार्थ ॥

अथेति ॥ जब प्रथम प्रश्न के उत्तर को पिप्पलाद ऋषिने समाप्त किया तत्पश्चात् आश्वलायन का पुत्र कौशलनामक ऋषि पूछता भया हे भगवन्! किस उपादान और निमित्त कारणसे यह प्राण उत्पन्न होताहै, किस प्रकार करके इस स्थूल शरीर में आजाता है, किस निमित्त से शरीर को ग्रहण करता है और किस तरहसे यह प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान भेद करके शरीर में स्थिर होकर शरीरको धारण करताहै, और फिर शरीर के किस द्वारसे मरते समय उत्क्रमण कर जाता है, और किस

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार करके बाहर के आधिभूत और आधिदैव को अर्थात् पञ्च महाभूतों को और उनके अभिमानी देवताओं को अथवा इस वर्तमान देह और इन्द्रियोंको धारण करता है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाचातिप्रश्नान्पृच्छसिब्रह्मिष्ठोऽसि इतितस्मात्तेऽहम्ब्रवीमि ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच अतिप्रश्नान् पृच्छसि ब्रह्मिष्ठः असि इति तस्मात् ते अहम् ब्रवीमि ॥ २ ॥

अन्वयः	पदार्थ
तस्मै	तिसकौशल्य ऋषिकेप्रति
ह	निश्चय करके
सः	वह पिप्पलादमुनि
उवाच	कहता भया कि
त्वम्	तू
अतिप्रश्नान्	अतिप्रश्नों को
पृच्छसि	पूछताहै
+परंतु	परंतु
+त्वम्	तू
ब्रह्मिष्ठः	ब्रह्मविषे श्रद्धावान्
असि	है
तस्मात्	इसलिये
इति	ऐसाजानकर
अहम्	मैं
ते	तेरेप्रति
ब्रवीमि	कहताहूं

भावार्थ ॥

तस्माइति ॥ तब पिप्पलाद आचार्य्य ने उस कौशल्यऋषि

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से कहा कि तुम अति प्रश्नोंको पूछते हो जो शास्त्रमें मनाहै परन्तु तुम ब्रह्मिष्ठहो अर्थात् वेद के अर्थ के ज्ञाताहो, उत्तम अधिकारी हो, तुम्हारे प्रति हम इन प्रश्नों के उत्तरको कहते हैं, सावधान होकर श्रवण करो ॥ २ ॥

मूलम् ॥

आत्मनएवप्राणोजायते यथैषा पुरुषेछायैतस्मि न्नेतदाततम्मनो कृतेनायात्यस्मिञ्छरीरे ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

आत्मनः एव प्राणः जायते यथा एषा पुरुषे छाया एतस्मिन् एतत् आततम् मनोकृतेन आ-याति अस्मिन् शरीरे ॥ ३ ॥

अन्वयः	पदार्थ
आत्मनः	= परमात्मासे
एव	= ही
प्राणः	= प्राण
जायते	= उत्पन्न होताहै
यथा	= जैसे
पुरुषे	= पुरुष बिषे
एषा	= यह दृश्यमान
छाया	= प्रतिबिंबहै
+तथा	= तैसे
एतस्मिन्	= इसपरमात्मा बिषे
एतत्	= यह प्राणतत्त्व
आततम्	= समर्पितहै
+ च	= और
अस्मिन्	= इस
शरीरे	= शरीरबिषे
+ प्राणः	= प्राण
मनोकृतेन	= मनके संकल्पकृत कर्म के वशसे
आयाति	= प्रवेशकरताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

आत्मनइति ॥ यह जो प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान पञ्च वृत्तिरूप प्राण है सो अव्यय परमात्मा से उत्पन्न होताहै, और उसी के आश्रय रहता है, उससे इसकी पृथक् सत्ता नहीं है, जैसे लोक में पुरुषके शरीर से उत्पन्न हुई जो छाया है वह वास्तवमें सत्य नहीं है और न शरीर से अलग है प्राणों का कारणीभूत जो ब्रह्मात्मा है उसी में आरोपित है, वास्तव में यह नहीं है और जैसे प्रतिबिम्ब की बिम्ब से अपनी पृथक् सत्ता कोई नहीं है तैसे प्राण की भी आत्मा से पृथक् सत्ता अपनी नहीं है, परत्माकेही आश्रित है और मनके सङ्कल्पादिकों से उत्पन्न हुआ जो कर्म है उसी कर्म के निमित्त करके इस स्थूल शरीर में प्राण प्रवेश करता है ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

यथा सम्राडेवाधिकृतान् विनियुङ्क्ते एतान् ग्रामानेतान्ग्रामानधितिष्ठस्वेति एवमेवैष प्राण इतरान् प्राणान् पृथक् पृथगेवसन्निधत्ते ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

यथा सम्राट् एव अधिकृतान् विनियुङ्क्ते एतान् ग्रामान् एतान् ग्रामान् अधितिष्ठस्व इति एवम् एव एषः प्राणः इतरान् प्राणान् पृथक् पृथक् एव सन्निधत्ते ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
यथा	जैसे
सम्राट्	राजा
अधिकृतान्	अधिकारी लोकों को याने अपने नौकरों को
इति	ऐसा
विनियुङ्क्ते	आज्ञा देताहै कि
+त्वम्	तुम
एतान्	इन
ग्रामान्	ग्रामों में
एतान् ग्रामान्	इनग्रामोंमें
अधितिष्ठस्व	स्थितहोकर स्वकार्य में तत्परहो

अन्वयः	पदार्थ
एवम्‌एव	वैसेही
एषः	यह
प्राणः	प्राण
इतरान्	अपने से पृथक्
प्राणान्	चक्षुरादि इंद्रियोंको और अपानादि वायुको
पृथक्	अलग
पृथक्	अलग
एव	निश्चय करके
सन्निधत्ते	कर्म बिषे नियोग याने प्रेरणा करता है

भावार्थ ॥

यथेति ॥ जिस प्रकार राजा अपने अधिकारी भृत्योंको आज्ञा देताहै कि तुम कुरुक्षेत्र देश आदि में जाकर बन्दोबस्त करो, उनदेशों का मैंने तुमको हाकिम किया है, इसी प्रकार यह मुख्य प्राण भी अपने से भिन्न चक्षुरादि इन्द्रियों को भी और अपान आदि वायु को इस शरीर के पृथक् २ स्थानों में रखकर उन को कर्मबिषे नियोग करता है ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

पायूपस्थेऽपानम् चक्षुः श्रोत्रेमुखनासिकाभ्याम् प्राणः स्वयम् प्रातिष्ठते मध्येतु समानः एषो ह्येतद्धुतमन्नं समन्नयति तस्मादेताः सप्तार्चिषो भवन्ति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

पायूपस्थे अपानम् चक्षुः श्रोत्रे मुखनासिकाभ्याम् प्राणः स्वयम् प्रातिष्ठते मध्ये तु समानः एष हि एतत् हुतम् अन्नम् समन्नयति तस्मात् एताः सप्तार्चिषः भवन्ति ॥ ५ ॥

अन्वयः	पदार्थ
पायूपस्थे	= पुरीष मूत्र मोचन स्थानबिषे
अपानम्	= अपानवायुको
+स्थापयति	= स्थापित करता है
चक्षुःश्रोत्रे	= नेत्र और करणबिषे
मुखनासिकाभ्याम्	= मुख और नासिका बिषे
प्राणः	= प्राण
स्वयम्	= आपही
प्रातिष्ठते	= स्थित होता है
तु	= और
मध्ये	= प्राण अपानके मध्यनाभिबिषे
समानः	= समान वायु रूपसे स्थित होताहै
हि	= प्रसिद्ध
एषः	= यह समानवायु
हुतम्	= भुक्त
अन्नम्	= अन्नपानको

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समन्नयति= यथा योग्य-स्थानोंमें प्राप्त करता है | सप्तार्चिषः= सात ज्योतिः स्वरूपमस्तकगतज्ञानेंद्रियां
तस्मात् = इसीकारणउदर अग्नि से प्राणद्वारा | भवन्ति = रूपादि के ग्रहणकरने में समर्थ होती हैं
एताः = ये चक्षुरादि

नोट—मुखनासिकाभ्याम् चतुर्थी विभक्तिहै परन्तु अर्थ सप्तमी विभक्तिका इस मन्त्र बिषे देताहै ॥

भावार्थ ॥

पायूपस्थइति ॥ गुदा और शिश्न इन्द्रिय में यह प्राण अपान वायु होकर स्थित होताहै, और मल और मूत्र को बाहर निकालता है, चक्षु, श्रोत्र, मुख, और नासिका में प्राण आपही स्थितहोकर गमनाऽगमन क्रियाको किया करताहै, शरीर का मध्य देश जो नाभि है उसमें समानरूप से यह प्राण स्थित होता है, और भक्षण कियेहुये अन्न के रसको नाडियों में विभाग करके बांटताहै, और इसी कारण दो श्रोत्र, दो नासिका, दो नेत्र, एकमुख ये सात अग्नि की लाटें कही जाती हैं, और अन्नादि के भोगने में और रूपादि के ग्रहण करने में समर्थ होती हैं ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

हृदि ह्येष आत्माऽत्रैतदेकशतं नाडीनांतासां शतंशतमेकैकस्यां द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिः प्रतिशाखानाडीसहस्राणिभवन्त्यासुव्यानश्चरति ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

हृदि हि एषः आत्मा अत्र एतत् एकशतम् नाडीनाम् तासाम् शतम् शतम् एकैकस्याम् द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिः प्रतिशाखानाडीसहस्राणि भवन्ति आसु व्यानः चरति ॥ ६ ॥

अन्वयः	पदार्थ
एषः	यह प्रसिद्ध
आत्मा	जीवात्मा
हि	निश्चय करके
हृदि	हृदयाकाशबिषे स्थितहै
अत्र	तिस हृदय बिषे
एतत्	यह
एकशतम्	एकसौ एक प्रधान नाड़ी हैं
तासाम्	उन
नाडीनाम्	नाड़ियों में से
एकैकस्याम्	एक एकनाड़ी बिषे
शतंशतम्	सौ सौ नाड़ी के विस्तार से
द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिः	बहत्तर बहत्तर हजार
प्रतिशाखानाडीसहस्राणि	प्रतिशाखा नाड़ियां
भवन्ति	होती हैं
आसु	इननाड़ियोंबिषे
व्यानः	व्यानवायु
चरति	संचारकरता है

नोट–प्रथम हृदयाकाश बिषे १०१ मुख नाड़ी हैं, तिन नाड़ियों में से हरएक नाड़ी से सौ सौ नाड़ी निकली हैं, इसलिये एकसौ एकको सौके साथ गुणा करने से दशहजार एकसौ १०१०० नाड़ीहुई, फिर तिन एकहजार एकसौ नाड़ियों में से हरएक नाड़ी में से ७२००० बहत्तर बहत्तर हजार नाड़ी निकली हैं, तिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहत्तर हजार को दशहज़ार एकसौ के साथ गुणा करने से ७२७२०००० बहत्तरकरोड़ बहत्तरलाख नाड़ीहुई, तिन में १०१ और १०१०० जोड़ने से कुल ७२७२१०२०१ नाड़ी हुई ॥

भावार्थ ॥

हृदीति ॥ अब नाडियोंके उत्पत्तिके स्थानको कहते हैं ॥ हृदि॥ हृदय कमल में यह जीवआत्मा प्राण रहता है इसी हृदयदेश से एकसौ एक १०१ प्रधान नाड़ियें निकसी हैं, उन एकसौ एक नाड़ियों में से हरएक नाड़ी से एक २ सौ नाडियों की शाखायें निकसी हैं, और सब नाड़ी शाखाओं की संख्या एक ऊपर दश हजार होती हैं, इन नाड़ियों में से हरएक नाड़ी से बहत्तरहजार ७२००० नाड़ियें निकसी हैं, यदि एकसौ ऊपर दशहजार १०१०० नाड़ियों को बहत्तरहजार ७२००० से जो गुणा किया जाय तब बहत्तरकरोड़ और बहत्तरलक्ष सब नाड़ी हुई ७२७२००००० होती हैं इन में यदि १०१ प्रधान नाड़ी और १०१०० शाखा नाड़ी जोड़ी जायँ तो ७२७२१०२०१ होती हैं कोई आचार्य्य ऐसा कहते हैं कि एकही नाड़ी सब नाड़ियों का मूलभूत सुषुम्ना नामवाली नाड़ी हृदय से निकसी है, और उसी से शाखावत् दश नाड़ियें निकसी हैं उन दश नाड़ियों में से हर एक नाड़ी से नव नव ६० नाड़ियें निकसी हैं, और दश शाखा वाली नाड़ी को उनकी नव्वे प्रति शाखा नाड़ियों के साथ मिला देने से एकसौ नाड़ी होती हैं, और इन एकसौ नाड़ियों में से हर एक नाड़ी से एक २ सौ नाड़ी और निकसी हैं, तब इनका सब जोड़ दशहजार एकसौ एक नाड़ी हुई, फिर उन्हीं के मध्य मेंसे हर एक नाड़ी से बहत्तर २ हजार नाड़ी निकसी हैं अगर उनको दश हजार के साथ गुणा कियाजाय तब बहत्तरकरोड़ नाड़ी होती हैं इनके साथ दशहजार एकसौ एक नाड़ी के मिलाने से सब बहत्तरकरोड़ दशहजार एकसौ एक नाड़ी होती हैं ७२००१०१०१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्हीं सूक्ष्म नाड़ियों में प्राण व्यान वायु होकर गमन करता है इन्हीं सूक्ष्म नाड़ियोंमें व्याप्त होकर सब शरीरके सूक्ष्म व स्थूल अवयवों में घूमता है ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

अथैकयोर्ध्व उदानःपुण्येन पुण्यं लोकं नयति पापेन पापमुभाभ्यामेव मनुष्यलोकम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ एकया ऊर्ध्वः उदानः पुण्येन पुण्यम् लोकम् नयति पापेन पापम् उभाभ्याम् एव मनुष्यलोकम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अथ	अब पिप्पलाद मुनिकहते हैंकि	+च	और
एकया	एक सुषुम्णा नाड़ीद्वारा	पापेन	पापकर्म से
ऊर्ध्वः	ऊर्ध्वको उत्क्रान्तहुवा	पापम्	नरकादिलोकको
उदानः	उदानवायु	+च	और
+देहिनम्	जीवको	उभाभ्याम्	पुण्य पाप मिश्रितकर्म से
पुण्येन	पुण्यकर्म से	मनुष्य लोकम्	मनुष्यलोक को
पुण्यम् लोकम्	पुण्यलोक को	एव	निश्चय करके
		नयति	प्राप्त करता है

भावार्थ ॥

अथेति ॥ अब उदान वायु के स्थान और उसके उत्क्रमण को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहतेहैं ॥ अथैति ॥ यद्यपि उदान वायु सब नाड़ियों में विचरता है, तथापि एक सुषुम्णा नाड़ी के मार्गसेही ऊर्ध्वलोकों में शरीर छूटते समय लिंगशरीर संयुक्त जीवको लेकरके जाता है, पुण्य-कर्मोंवाले को पवित्र देवादि योनियों में प्राप्त करता है, और पापकर्म्मोंवाले को पापयोनियों में याने पशु या नरकादिकों में लेजाकर प्राप्त करता है, और मिश्रित कर्म्म के करनेवालों को मनुष्य योनि को प्राप्त करता है ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

आदित्योहवैबाह्यः प्राणउदयत्येष ह्येनं चाक्षुषं प्राणमनुगृह्णानः पृथिव्यां या देवता सैषा पुरुष-स्यापानमवष्टभ्यान्तरा यदाकाशः स समानो वायुर्व्यानः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

आदित्यः ह वै बाह्यः प्राणः उदयति एषः हि एनम् चाक्षुषम् प्राणम् अनुगृह्णानः पृथिव्याम् या देवता सा एषा पुरुषस्य अपानम् अवष्टभ्य अन्तरा यत् आकाशः सः समानः वायुः व्यानः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+यः	जो	एनम्	इस
हवै	प्रसिद्ध	चाक्षुषम्	चक्षु विषे स्थित
आदित्यः	सूर्य	प्राणम्	प्राणको
हि	निश्चयकरके		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुगृह्णानः = { अनुगृहीत करताहुआ अर्थात् रूप केग्रहण करनेमें समर्थ करताहुआ }

उदयति = उदयकोप्राप्तहोताहै

\+ सः = सोई

एषः = यह

बाह्यः = बाह्य

प्राणः = प्राणहै

\+ तथा = तैसेही

पृथिव्याम् = पृथिवी बिषे अभिमानी

या = जो

देवता = अग्निरूप प्राणहै

सा = सोई

एषा = यह

पुरुषस्य = पुरुष के

अपानम् = { अपानवायुको नीचे के तर्फ }

अवष्टभ्य = आकर्षणकरके

\+ स्थिता = स्थितहै

\+ च = और

यत् = जो

अन्तरा = मध्य बिषे

आकाशः = आकाशरूप

समानः = समान

वायुः = वायुहै

सः = सोई

व्यानः = { व्यान वायु पर अनुग्रह करता हुआ स्थितहै }

नोट—जो सूर्यरूप समष्टि प्राणवायुहै सोई व्यष्टिरूप प्राणवायु होकर प्राणियोंके चक्षुबिषे स्थितहै,जो अग्निरूप समष्टि प्राणवायु पृथिवी बिषे स्थितहै,सोईव्यष्टिरूप अपानवायु होकर प्राणियोंके नीचे के भाग बिषे स्थित है,जो समष्टि प्राणवायु अन्तरिक्षलोक बिषे याने स्वर्ग और पृथिवी के मध्यभाग बिषे जो आकाश है तिस

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिषे जो समष्टि प्राणवायु स्थितहै सोई व्यष्टिरूप समानवायु होकर प्राणियोंके मध्यभाग बिषे स्थितहै, और जो समष्टि प्राणवायु बाहर ब्रह्मलोक से लेकर पाताललोक पर्यंन्त व्याप्त है सोई व्यष्टिरूप व्यानवायु होकर सम्पूर्ण प्राणियों के अन्तर नख शिख पर्यन्त स्थित है,इसीलिये समष्टि प्राणवायु के सहायता विना व्यष्टि प्राण वायु जो प्राणियों के शरीर बिषे स्थितहै नहीं रहसक्ताहै ॥

भावार्थ ॥

आदित्य इति ॥ सूर्य्यमण्डल अभिमानी जो पुरुषरूपी बाह्य मुख्य प्राणहै वह उदय होताहुआ जीवोंके चक्षु बिषे जो प्राणहै उसपर अपने प्रकाश से अनुग्रह करताहुआ उन चक्षुवोंको रूप के ग्रहण करनेमें सामर्थ्य करताहै,और पृथिवी अभिमानी जो प्राण देवता है वह पुरुषों के स्थूलशरीर के अपान वायुको अपनीतरफ खैंचताहै और उसपर अनुग्रहकरताहै और इसी कारण यह शरीर स्थित रहता है,यदि वह पृथिवी में रहनेवाला प्राणवायु जीवों के अपानवायु पर अनुग्रह न करै तो शरीर भारी होकर गिरपड़ै याने रुकावटके कारण ऊर्ध्व को प्राणवायु के बल से उड़जाय सूर्य व पृथ्वी के बीच में जो आकाश है उसमें जो प्राण वायु स्थित है वह जीवों के शरीरों के मध्यबिषे समान वायु की सहायता करता है और जो बाहर की प्रसिद्ध प्राणवायुहै सोई जीवों के व्यानवायु की सहायता करताहै तात्पर्य्य इसका यहहै कि यदि बाह्य प्राण वायु जीवों के अभ्यन्तरी प्राणवायु की सहायता न करै तो उनके शरीर स्थित नहीं रहसक्तेहैं ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

तेजोहवैउदानस्तस्मादुपशान्ततेजाः पुनर्भव मिन्द्रियैर्मनसिसंपद्यमानैः ॥ ९ ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

तेजः ह वै उदानः तस्मात् उपशान्ततेजाः पुनर्भवम् इन्द्रियैः मनसि सम्पद्यमानैः ॥

अन्वयः	पदार्थ
हवै	= निश्चयकरके उत्क्रान्तिधर्मवाला
उदानः	= उदानवायु
तेजः	= तेजस्वरूपहै
तस्मात्	= इसलिये
+तस्य +उत्क्रान्तौ	= उसके निकलने पर
उपशान्त तेजाः	= मरण निकट को प्राप्तहुवा पुरुष याने जीव
मनसि	= मनकी भावना विषे
सम्पद्य मानैः	= प्रवेश करते हुये
इन्द्रियैः	= इन्द्रियों के संग
पुनर्भवम्	= शरीरान्तरको प्राप्तहोताहै

भावार्थ ॥

तेजोहवै इति ॥ दाह और प्रकाशको करनेवाली जो प्रसिद्ध तेजरूपी समष्टि बाह्यवायु है याने सबपदार्थों को वंश देनेवाली जो वायुहै वह जीवों के व्यष्टि उदानवायु पर अनुग्रह करताहै और इसी कारण वे तेजस्वी प्रतीत होतेहैं याने जीते रहतेहैं, जब पुरुष के शरीर में तेज उच्छिन्न होजाता है, तब वह इस शरीरको त्याग करके शरीरान्तर को प्राप्त होताहै, शरीर के त्यागकाल में प्रथम इन्द्रियगण अन्तःकरणमें प्रवेश करजातीहैं तत्पश्चात् जीव, इन्द्रियों और मनआदिकों के सहित शरीरान्तरको प्राप्त होजाताहै ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

यच्चित्तस्तेनैषप्राणमायाति प्राणस्तेजसायुक्तः सहात्मनायथासंकल्पितंलोकंनयति ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

यच्चित्तः तेन एषः प्राणम् आयाति प्राणः तेजसा युक्तः सह आत्मना यथा सङ्कल्पितम् लोकम् नयति ॥ १० ॥

अन्वयः	पदार्थ
यच्चित्तः	मरण समय पुरुषका जैसा चित्त होता है
तेन	उस चित्त करके
एषः	यह जीव
प्राणम्	प्राणको
आयाति	प्राप्त होता है
+च	और
प्राणः	प्राण
तेजसा	उदान वायुसे
युक्तः	युक्तहोताहुवा
आत्मना सह	अपने साथ
+जीवम्	जीवको
यथासंकल्पितम्	उसके संकल्प के अनुसार
लोकम्	योनि को
नयति	प्राप्तकरताहै

भावार्थ ॥

यच्चित्तइति ॥ कर्मों के अनुसार मरणकाल में इस जीव का चित्त जिस २ देवता मनुष्य पशुआदिक योनियों की ओर जाताहै, उसी २ योनिमें वह अभिमानी जीव सहित इन्द्रिय देवताओं के और मनआदि अन्तःकरण के जाकर उत्पन्न होताहै,मरणकाल में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुखप्राण तेजरूपी उदानवायु से संयुक्त होकर भोक्ता जीव को उसके कर्मजन्य संकल्प के अनुसार कर्मफल भोगाने को लोकलोकान्तर देहदेहान्तर में लेजाता है ॥ १० ॥

मूलम् ॥

यएवंविद्वान् प्राणंवेदनहास्य प्रजाहीयतेऽमृतो भवतितदेषश्लोकः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ॥

यः एवम् विद्वान् प्राणम् वेद न ह अस्य प्रजा हीयते अमृतः भवति तत् एषः श्लोकः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो	न	= नहीं
एवम्	= इसप्रकार	हीयते	= हीनहोतीहै
विद्वान्	= बुद्धिमान्पुरुष	+ च	= और
प्राणम्	= प्राणको	+ सः	= वह
वेद	= जानताहै	अमृतः	= अमर
अस्य	= उसप्राणउपासककी	भवति	= होता है
		तत्	= इसबिषे
प्रजा	= संतति	एषः	= यह आगेवाला
हा	= इसलोक बिषे	श्लोकः	= मंत्र प्रमाण है

भावार्थ ॥

यइति ॥ प्राण के स्वरूप को कथन करके अब प्राणकी उपासना को कथन करते हैं ॥ यइति ॥ जो विद्वान्पुरुष पूर्वोक्त प्रकार करके प्राणोंको जानता है तिस प्राणोपासक विद्वान् की सन्तति कदापि नष्ट नहीं होती है और शरीर के पात होनेपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह अमरभाव को प्राप्त होताहै, इसी अर्थको आगेवाला मन्त्र भी कहता है ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

उत्पत्तिमायतिं स्थानं विभुत्वं चैव पञ्चधा अध्यात्मं चैव प्राणस्य विज्ञायामृतमश्नुते विज्ञायामृतमश्नुत इति १२ प्रश्नः ३ ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ॥

उत्पत्तिम् आयतिम् स्थानम् विभुत्वम् च एव पञ्चधा अध्यात्मम् च एव प्राणस्य विज्ञाय अमृतम् अश्नुते विज्ञाय अमृतम् अश्नुते इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इति	= ऐसा		प्रकारके
+ प्राणोपासकः	= प्राणका उपासक	विभुत्वंएव	= व्यापकत्वको
प्राणस्य	= प्राणके	च	= और
उत्पत्तिम्	= उत्पत्तिको	अध्यात्मम्	= अध्यात्मको
+ च	= और	एव	= भी
आयतिम्	= शरीरबिषेउसकेआगमनको	विज्ञाय	= भलीप्रकार जानके
+ च	= और	अमृतम्	= मोक्षको
स्थानम्	= शरीरबिषेउसकेस्थानको	अश्नुते	= प्राप्तहोता है
+ च	= और	विज्ञाय	= भलीप्रकार जानके
पञ्चधा	= उसकेपांच	अमृतम्	= मोक्षको
		अश्नुते	= प्राप्तहोताहै

इति तृतीयःप्रश्नः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

उत्पत्तिमिति ॥ मुख्यप्राण की परमात्मा से उत्पत्ति है और मनकरके कियेगये जो कर्मों के धर्माऽधर्मरूपी संस्कार हैं उन्हीं के प्रेरणा करके प्राण शरीर में प्रवेश करता है, और अपने को पांच विभाग करके स्थित होताहै, जो प्राण सूर्यादिलोकों में और आकाशादि पञ्चमहाभूतों में स्थित है, वह राजाकी तरह है वह अपनी प्रजारूपी जीवसंयुक्त प्राणोंपर अनुग्रह करता है, और तबही जीव कार्यके करनेमें समर्थ होताहै, जो कुछ विद्यमानहै, सब प्राणोंकीही विभूति है, इसी से इसको अध्यात्म भी कहते हैं जो पुरुष पूर्वोक्त प्रकार करके प्राणों को जानता है, वह हिरण्यगर्भ की सायुज्यतारूपी मोक्षको प्राप्त होताहै, अर्थात् आत्मानन्द को प्राप्त होकर आवागमन से रहित होजाताहै ॥ १२ ॥

इति तृतीयः प्रश्नः ॥

मूलम् ॥

अथ हैनं सौर्यायणी गार्ग्यः पप्रच्छ भगवन्नेतस्मिन्पुरुषे कानि स्वपन्ति कान्यस्मिन् जाग्रति कतर एष देवः स्वप्नान्पश्यति कस्यैतत् सुखंभवति कस्मिन्नु सर्वे संप्रतिष्ठिताभवन्तीति ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

अथ ह एनम् सौर्यायणः गार्ग्यः पप्रच्छ भगवन् एतस्मिन् पुरुषे कानि स्वपन्ति कानि अस्मिन् जाग्रति कतरः एषः देवः स्वप्नान् पश्यति कस्य एतत् सुखम् भवति कस्मिन् नु सर्वे सम्प्रतिष्ठिताः भवन्ति इति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
अथ	तृतीय प्रश्नके पश्चात्
ह	प्रसिद्ध
एनम्	पिप्पलाद मुनि से
गार्ग्यः	गर्ग का पुत्र
सौर्यायणः	सौर्यायणनामकऋषि
इति	ऐसा
पप्रच्छ	प्रश्न करता भया कि
भगवन्	हे भगवन्
एतस्मिन्	इस
पुरुषे	पुरुष बिषे
कानि	कौनइन्द्रियां
स्वपन्ति	सोतीहैं अर्थात् स्वकार्य से रहित हो विश्राम करती हैं

अन्वयः	पदार्थ
च	और
अस्मिन्	इस सुप्तपुरुष बिषे
कानि	कौनसी इन्द्रियां
जाग्रति	जागती हैं याने व्यापारको करती हैं
कतरः	कौन
एषः	यह
देवः	देव
स्वप्नान्	स्वप्नों को अर्थात् स्वप्नावस्था बिषे जाग्रत्वत् स्वप्न के व्यापारों को
पश्यति	देखता है
कस्य	किसपुरुषको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एतत्	=	इस सुषुप्ति अवस्थाबिषे प्रसिद्ध	सम्प्रति ष्ठिताः	= जाग्रत् और स्वप्नअवस्था से विलक्षण आनंदितव्यापाररहितहो आनंद से
सुखम्	=	सुख	भवन्ति	= प्रवेश करती हैं
भवति	=	होताहै		
नु	=	और		
कस्मिन्	=	किस बिषे		
सर्वे	=	सब इन्द्रियां		

भावार्थ ॥

अथेति ॥ कौशल्यनामक ऋषिके प्रश्नके अनन्तर सौर्य्याणि गार्ग्यगोत्रवंशी पिप्पलाद मुनिसे पूंछता भया ॥ हे भगवन्! इस हाथ पांववाले शरीर में कौन २ इन्द्रियां शयन करती हैं अर्थात् स्वकार्य से रहित होकर विश्राम करती हैं और कौन इन्द्रियां इसशरीरमें जागती हैं अर्थात् जाग्रत् अवस्थामें अपने व्यापारको करती हैं और इस कार्य कारणरूपी संघात में कौनदेव अहंपश्यामि अहंशृणोमि मैं देखताहूं, मैं सुनताहूं ऐसा अनुभवकरताहै, और यही स्वप्नके गजरथादिकों कौन रचता है व देखता है और जाग्रत् व स्वप्न के उपरत होजाने पर कौन देव सुषुप्ति के सुख को भोग करता है और फिर किस देवता बिषे सम्पूर्ण प्राण इन्द्रियादि एकता को प्राप्त होकर लीन होजाती हैं ॥ १ ॥

मूलम् ॥

तस्मै सहोवाच यथा गार्ग्यमरीचयोऽर्कस्याऽस्तङ्गच्छतःसर्वा एतस्मिंस्तेजोमण्डलएकीभवन्ति ताः पुनःपुनरुदयतः प्रचरन्त्येवं ह वैतत्सर्वम्परेदेवे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनस्येकीभवन्ति तेन तर्ह्येषपुरुषो न शृणोति न पश्यति न जिघ्रति न रसयते न स्पृशते नाभिवदते नादत्ते नानन्दयते न विसृज्यते नेयायते स्वपितीत्याचक्षते ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच यथा गार्ग्यमरीचयः अर्कस्य अस्तम् गच्छतः सर्वाः एतस्मिन् तेजोमण्डले एकीभवन्ति ताः पुनः पुनः उदयतः प्रचरन्ति एवम् ह वा एतत् सर्वम् परे देवे मनसि एकीभवन्ति तेन तर्हि एषः पुरुषः न शृणोति न पश्यति न जिघ्रति न रसयते न स्पृशते न अभिवदते न आदत्ते न आनन्दयते न विसृज्यते न इयायते स्वपिति इति आचक्षते ॥

अन्वयः	पदार्थ
तस्मै	= तिसगार्ग्य के प्रति
सः	= वह पिप्पलादमुनि
ह	= निश्चय करके
उवाच	= कहतेभयेकि
गार्ग्य	= हे गार्ग्य
यथा	= जैसे
अस्तम्	= अस्त को
गच्छतः	= प्राप्तहोतेहुये
अर्कस्य	= सूर्य के
सर्वाः	= सब
मरीचयः	= किरण
एतस्मिन्	= उससूर्यरूप
तेजोमंडले	= तेजोमंडल बिषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकीभवन्ति = एकताकोप्राप्त होजातेहैं
च = और
उद्यतः = उदय होते हुये सूर्य के
ताः = वे किरण
पुनःपुनः = फिर
प्रचरन्ति = फैलजाते हैं
एवमेव = ऐसेही
यदा = जब
एतत् = यह
सर्वम् = सबविषयइन्द्रियां
परेदेवे = चक्षुरादि देवों का परमदेव
मनसि = मन बिषे
एकीभवन्ति = एकताकोप्राप्त होजातीहैं
तर्हि = तब
तेन = तिसकारण
एषः = यह
पुरुषः = पुरुष
न शृणोति = न सुनताहै
नपश्यति = न देखताहै
न जिघ्रति = न सूंघता है
न रसयते = न रसलेताहै
न स्पृशते = न स्पर्श करता है
न अभिवदते = न बोलताहै
नआदत्ते = नग्रहणकरताहै
न आनन्दयते-न आनंदित होता है
नविसृजते = न मलमूत्रको त्यागता है
न इयायते = न गमन करता है
+परन्तु = परंतु
स्वपितिइति = सोताहैऐसा
आचक्षते = कहते हैं लोक बिषे

भावार्थ ॥

तस्माइति ॥ पिप्पलाद आचार्य कहते हैं कि स्वप्नावस्था में मन और प्राणोंसे भिन्न जितने इन्द्रियहैं, वे सब सोजातेहैं और इसी बात के पुष्टके लिये दृष्टान्त को दिखाते हैं, हे गार्ग्य ! जैसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सायङ्काल समय जब सूर्य्य अस्तभावको प्राप्त होताहै, तब सूर्य्य की सम्पूर्ण किरणें उसी तेजोरूप सूर्य्यमण्डलमें प्रवेश करजाती हैं, फिर दूसरे दिन जब सूर्य्यउदय होता है, तब फिर सूर्य्यकी सम्पूर्ण किरणें चारों दिशोंमें फैलजाती हैं, इसी प्रकार सम्पूर्ण वागादिक इन्द्रियां भी मनमें जो सब व्यवहारों का साधक है स्वप्नकाल बिषे लयको प्राप्त होजाती हैं और फिर जाग्रत्काल में उठकर मनदेव की प्रेरणाकरके स्वकार्य करने लगती हैं, जब इन्द्रियां मन बिषे लीन रहती हैं, तब यह जीव न सुनता है, न देखता है, न सूंघता है, न रस लेताहै, न स्पर्श करता है, न बोलता है,न ग्रहण करता है, न त्यागता है, न गमन करता है, न सुख भोगता है, और न मल मूत्रका विसर्जन करता है, और विद्वान्लोग कहतेहैं कि अब यह पुरुष शयन करताहै॥ २॥

मूलम् ॥

प्राणाग्नयएवैतस्मिन्पुरेजाग्रति गार्हपत्योहवा एषोऽपानोव्यानोऽन्वाहार्य्यपचनो यद्गार्हपत्यात्प्रणीयते प्रणयनादाहवनीयःप्राणः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

प्राणाग्नयः एव एतस्मिन् पुरे जाग्रति गार्हपत्यः ह वा एषः अपानः व्यानः अन्वाहार्यपचनः यत् गार्हपत्यात् प्रणीयते प्रणयनात् आहवनीयः प्राणः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एतस्मिन्	= इस नवद्वार वाले	व्यानः	= व्यान वायु
पुरे	= देहबिषेचक्षु-शादिकरणके सुषुप्ति समय	अन्वाहार्यपचनः	= दक्षिणाग्नि नामा अग्निहै
प्राणाग्नयः	= प्राणादिपांच वायुअग्निरूप	यत्	= जो अग्नि
एव	= ही	प्रणयनात्	= प्रणयनयोग्य याने लेआने योग्य
जाग्रति	= जागतेरहते हैं	गार्हपत्यात्	= गार्हपत्यअ-ग्निसे
हवा	= उनपांचों बिषे	प्रणीयते	= लायाजाताहै
एषः	= प्रसिद्ध यह	सः	= वह
अपानः	= अपान वायु	प्राणः	= प्राण
गार्हपत्यः	= गार्हपत्याग्नि है	आहवनीयः	= आहवनीय नामकअग्नि है
+ च	= और		

नोट—गार्हपत्याग्नि—दक्षिणाग्नि—आहवनीयाग्नि—येतीनप्रकारके अग्नि यज्ञ आदिबिषे प्रसिद्ध हैं गार्हपत्याग्नि यजमानके वाम कुण्डका अग्नि है (१) और दक्षिणाग्नि यजमान के दहने कुण्डका अग्नि है (२) और आहवनीयाग्नि वहअग्नि है(३) जो गार्हपत्यअग्नि से निकालकर मध्य अग्निकुण्ड बिषे स्थापन कियाजाता है ॥

भावार्थ ॥

प्राणाग्नयइति ॥ सुषुप्तिकालमें इस नवद्वारवाले देह बिषे जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राण, अपान, उदान, व्यान, समानरूपी पांच अग्निहैं वेईजा-गते हैं अपानवायु मलमूत्रको नीचेकी तरफ़ फेंकता है इसलिये यह गार्हपत्य अग्नि स्थानापन्न है व्यानवायु भोजनादि को पचाताहै इसलिये वह अन्वाहार्य्य पचनरूप अग्निहै, अर्थात् दक्षिणाग्नि है जैसे दक्षिणाग्नि हवन करने के कुण्ड में दक्षिण ओर स्थित होतीहै तैसे व्यानवायुभी हृदय के पांच छिद्रोंमें से दक्षिण वाले छिद्रमें स्थित है और इसी कारण व्यानको दक्षिणाग्नि कहा है और जैसे अग्निहोत्री के हवनकुण्ड में निरन्तर स्थित जो कि गार्हपत्याग्निहै उस अग्नि से अलग अग्नि निकल करके होम के लिये आहवनीय अग्नि होमके कुण्ड में रक्खाजाता है तैसेही हृदय छिद्र में स्थित जो अपानवायु है, उसी से निकस करके प्राणवायु बाहर भीतर नासिकाआदिद्वार से आताजाताहै, यही आहवनीय स्थानापन्न अग्निहै, यह मुखअग्निहै, पूर्वमन्त्रमें अपान व्यान समान और प्राणके साथ गार्हपत्याग्नि दक्षिणापत्यअग्नि, आहवनीयअग्निको विधान कियाहै अब इसमन्त्रमें समान वायुको होतृत्वदृष्टि से विधान करते हैं ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

यदुच्छ्वासनिःश्वासावेतावाहुती समं नयतीति स समानः मनो ह वाव यजमान इष्टफलमेवोदानः सएनंयजमानमहरहर्ब्रह्मगमयति ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

यत् उच्छ्वासनिःश्वासौ एतौ आहुती समम् नयति इति सः समानः मनः ह वाव यजमानः इष्टफलम् एव उदानः सः एनम् यजमानम् अहरहः ब्रह्म गमयति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो	मनः	= मन
एतौ	= इन प्रसिद्ध	यजमानः	= यज्ञका कर्ता है
उच्छ्वास निश्वासौ	= { ऊर्ध्वश्वास अधःश्वास रूप	उदानः	= उदानवायु
		एव	= ही
आहुती	= आहुतियों को	तस्य	= उसका
		इष्टफलम्	= इच्छितफल है
इति	= इसप्रकार	सः	= सो उदान- वायु
समम्	= समानताको		
नयति	= प्राप्त करता है	एनम्	= इसमनरूपी
सःसमानः	= सो समान वायु है	यजमानम्	= यजमान को
		अहरहः	= प्रतिदिनसु- षुप्तिकालबिषे
ह वाव	= इसअग्निहोत्र कुंडरूपी शरीरबिषे	ब्रह्म	= ब्रह्मको
		गमयति	= प्राप्तकरताहै

॥ भावार्थ ॥

यदुच्छ्वासेति ॥ जैसे होता अर्थात् हवन का करनेवाला प्रातः काल और सायंकाल दो आहुती को अग्नि में प्रक्षेप करता है याने डालता है, तैसेही मुख और नासिका दो अग्निकुण्ड हैं, इनमें श्वासों का आना जाना मानो दो आहुती हैं, इन्हीं को उन हवन कुण्डों में समान वायु आहुती देताहै, इसलिये होता उपासक अपनी दृष्टि को इनमेंही लगाये रक्खै, और इस अग्नि-होत्ररूपी यज्ञ का करनेवाला यजमान मन है, और इस यज्ञका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इष्टफल उदान वायु है क्योंकि मरणकालमें उदानही स्वर्गरूपी फल मनसंध जीवको प्राप्त करता है और सुषुम्णानाडी द्वारा स्वर्गको लेजाता है और आनद को प्राप्तकरता है और जबतक मनरूपी यजमान इसशरीरमें रहताहै, तबतक उदान वायु उसको प्रतिदिन सुषुप्तिकाल में आनन्दरूप ब्रह्म को प्राप्त करता है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

अत्रैषदेवःस्वप्नेमहिमानमनुभवति यद्दृष्टंदृष्टमनुपश्यति श्रुतंश्रुतमेवार्थमनुशृणोति देशदिगन्तरैश्चप्रत्यनुभूतं पुनःपुनःप्रत्यनुभवति दृष्टंचादृष्टंच श्रुतंचाश्रुतंचानुभूतंचाननुभूतंच सच्चासच्चसर्वं पश्यति सर्वःपश्यति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

अत्र एषः देवः स्वप्ने महिमानम् अनुभवति यत् दृष्टम् दृष्टम् अनुपश्यति श्रुतम् श्रुतम् एव अर्थम् अनुशृणोति देशदिगन्तरैः च प्रत्यनुभूतम् पुनः पुनः प्रत्यनुभवति दृष्टम् च अदृष्टम् च श्रुतम् च अश्रुतम् च अनुभूतम् च अननुभूतम् च सत् च असत् च सर्वम् पश्यति सर्वः पश्यति ॥ ५ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अत्र =	सुषुप्तिअवस्था से प्रथम	एषः =	यह
स्वप्ने =	स्वप्नअवस्था विषे	देवः =	मनरूपी देव
		महिमानम् =	विभूतिकोअर्थात् विषयरूपीअ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नेक भावों को
अनुभवति = अनुभव करता है
च = और
यत् = जिस पुत्र मित्र आदिकों को
दृष्टंदृष्टम् = पुनःपुनःदेखाहै उसीको
अनुभवति = देखता है
श्रुतम् श्रुतम् = पुनःपुनःश्रवण कियेहुये
एव = ही
अर्थम् = अर्थको
अनुशृणोति = फिर श्रवणकरता है
च = और
देशदिगन्तरैः = देशांतरऔरदिगंतरों के सहित
प्रत्यनुभूतम् = वहांवहांअनुभवकियेवस्तुको
पुनःपुनः = फिर फिर
प्रत्यनुभवति = अनुभव करता है

च = और
दृष्टम् = इस जन्म में देखेहुये को
च = और
अदृष्टम् = जन्मान्तरबिषे देखेहुये को
च = और
श्रुतम् = इस जन्म बिषे सुनेहुये को
च = और
अश्रुतम् = जन्मान्तर बिषे सुनेहुयेको
च = और
अनुभूतम् = अनुभवकिये हुये को
च = और
अननुभूतम् = न अनुभवकिये हुये
सर्वम् = सबको
पश्यति = देखताहै
एवम् = इसप्रकार
सर्वः = सबइन्द्रियों का स्वामी मन
पश्यति = स्वप्नोंकोदेखताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

अत्रेति॥ यह जो प्रश्नथा कि कौन देवता स्वप्न को देखता है अब उसके उत्तर को कहते हैं ॥ अत्रेति ॥ इस स्वप्नावस्था में वागादि इन्द्रियों की उत्पत्ति और लय का आश्रय भूत जो कि मनहै सो चेतनकरके प्रतिबिंबितहुवा २ अपनी महिमाको आपही अनुभव करताहै, अर्थात् स्वप्नमें हाथी घोड़े आदिकों को आपही मन रचता है, और आपही उन को अनुभव करताहै,इसीकारण स्वप्न मनकाही धर्म है, आत्माका धर्म नहीं है, हां आत्माके साथ मनका अध्यास होनेसे वह आत्मा याने मनसेही प्रतीत होताहै,जो कुछ जाग्रत्कालमें मन ने देखा है, उसी को फिर स्वप्न में देखता है, जो कुछ जाग्रत् में सुनाहै, उसी को फिर सुनता है जो कुछ देशदेशांतर में देखा या सुना है, या अनुभव कियाहै या नहीं देखा सुना या अनुभवकियाहै उसीको स्वप्न में वारंवार अनुभव करताहै, और जो इस वर्त्तमान जन्ममें देखाहै या जो पूर्व जन्मों में देखाहै, और जो कुछ इसजन्ममें या पूर्व जन्ममें सुनाहै, और स्थूल सूक्ष्म पदार्थों को अनुभव किया है, उन सब को स्वप्न में देखताहै प्र० ॥ जो पदार्थ जाग्रत् में देखे थे वे तो यहां प्रथमरहे नहीं और जो पदार्थ कि पूर्व जन्ममें देखे थे वे सब नष्ट होगये, तब फिर स्वप्न में मन उनको कैसे देख सक्ता है ॥ उ० ॥ जाग्रत् अवस्थामें पुरुष जिस २ पदार्थ को देखता है, उस उस पदार्थ के संस्कार मनमें बैठ जाते हैं, और जन्मान्तरों में जो पदार्थ देखे थे उनके भी संस्कार मनमें बैठे हैं वे संस्कार अनन्त हैं, स्वप्नावस्था में निद्राके बल से वे संस्कार उद्बुद्ध होजाते हैं, और पूर्वले देखे सुने हुये पदार्थों का स्मरण कराही देते हैं, मन उनको नई तरह से रचकर फिर उनकोही देखता और उनके साथ क्रीड़ाकरताहै ॥५॥

मूलम् ॥

सयदातेजसाऽभिभूतोभवति अत्रैषदेवः स्वप्नान्नपश्यत्यथतदैतस्मिञ्छरीरे एतत्सुखंभवति ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

स यदा तेजसा अभिभूतः भवति अत्र एषः देवः स्वप्नान् न पश्यति अथ तदा एतस्मिन् शरीरे एतत् सुखम् भवति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यदा	= जबसुषुप्तिकाल बिषे	स्वप्नान्	= स्वप्नोंको
सः	= वहमनरूपीदेव	न	= नहीं
तेजसा	= तेजसे	पश्यति	= देखता है
अभिभूतः	= तिरस्कृतअर्थात्वासना तिरोभाव	अथ तदा	= और तबहीं
भवति	= होताहै	एतस्मिन्	= इस
अत्र	= तब	शरीरे	= शरीर बिषे
एषः	= यह	एतत्	= यह सुषुप्ति
देवः	= मनरूपी देव	सुखम्	= आनन्द
		तस्यमनसः	= उस मनको
		भवति	= होताहै

भावार्थ ॥

सयदेति ॥ किसको यह सुख होताहै ऐसा जो ऋषि ने प्रश्न किया था उसके उत्तर को कहतेहैं ॥ सयदेति ॥ जिस काल में यह मनरूपी देवता तेज करके याने नाड़ीगत पित्त करके तिरस्कृत होजाता है और वासनों के उद्भूत करनेवाले कर्म सब उपरम होजाते हैं तब सम्पूर्ण कर्मों के उपरमरूपी सुषुप्ति में यह मन देववासनामय स्वप्न के पदार्थों को नहीं देखता है किन्तु ब्रह्मानन्द सुखको प्राप्त होताहै इस कहने से यह सिद्ध होता है कि सुषुप्ति में भी सूक्ष्मरूप करके मन रहता है ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

सयथासौम्यवयांसि वासोवृत्तंसंप्रतिष्ठन्तेएवंह वैतत्सर्वंपरआत्मनिसंप्रतिष्ठते ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

सः यथा सौम्य वयांसि वासोवृत्तम् सम्प्रतिष्ठन्ते एवम् ह वा एतत् सर्वम् परे आत्मनि सम्प्रतिष्ठते ७ ॥

अन्वयः	पदार्थ
सौम्य	हे सौम्य हे गार्ग्य
सः	सो दृष्टांत ऐसा है कि
यथा	जैसे
वयांसि	पक्षी
वासोवृत्तम्	सायंकाल बिषे निवास वृक्षपर
सम्प्रतिष्ठन्ते	अन्य कार्य्य को त्यागके प्रस्थान करते हैं
एवम्हवा	ऐसेही अगले मंत्रबिषे कहाहुआ
हवा	निश्चय करके
एतत्	यह
सर्वम्	पृथिवी आदि सब
परे	परम
आत्मनि	आत्माबिषे
सम्प्रतिष्ठन्ते	प्रस्थान करते हैं याने लीन होतेहैं

भावार्थ ॥

सयथेति ॥ यह जो प्रश्नथा कि सम्पूर्ण इन्द्रियादिक किसके आश्रित स्थित हैं इसके उत्तर को अब कहते हैं ॥ सयथेति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे सौम्य! जिसप्रकार पक्षी दिन बिषे चारों दिशामें भ्रमण करते रहतेहैं और सायंकाल समय निवास के लिये अपने वृक्षपर आजाते हैं, इसीप्रकार यह सम्पूर्ण इन्द्रियगण भी दिनमें अपने२ व्यवहार को करती हैं और रात्री को अपने चैतन्य आत्मारूपी वृक्षपर स्थिति करती हैं ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

पृथिवी च पृथिवीमात्रा चापश्चापोमात्राचतेजश्चतेजोमात्राच वायुश्च वायुमात्राचाकाशश्चाकाशमात्राच चक्षुश्च द्रष्टव्यंच श्रोत्रंच श्रोतव्यंच घ्राणंचघ्रातव्यंच रसश्च रसयितव्यंच त्वक्च स्पर्शयितव्यंच वाक्च वक्तव्यंच हस्तौचादातव्यंचोपस्थश्चानन्दयितव्यंच पायुश्च विसर्जयितव्यंच पादौचगन्तव्यंच मनश्च मन्तव्यंच बुद्धिश्च बोद्धव्यंचाहंकारश्चाहंकर्त्तव्यंच चित्तंच चेतयितव्यंच तेजश्च विद्योतयितव्यंच प्राणश्च विधारयितव्यं च ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

पृथिवी च पृथिवीमात्रा च आपः च आपोमात्रा च तेजः च तेजोमात्रा च वायुः च वायुमात्रा च आकाशः च आकाशमात्रा च चक्षुः च द्रष्टव्यम् च श्रोत्रम् च श्रोतव्यम् च घ्राणम् च घ्रातव्यम् च रसः च रसयितव्यम् च त्वक् च स्पर्शयितव्यम् च वाक् च वक्तव्यम् च हस्तौ च

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदातव्यम् च उपस्थः च आनन्दयितव्यम् च पायुः च विसर्जयितव्यम् च पादौ च गन्तव्यम् च मनः च मन्तव्यम् च बुद्धिः च बोद्धव्यम् च अहंकारः च अहङ्कर्त्तव्यम् च चित्तम् च चेतयितव्यम् च तेजः च विद्योतयितव्यम् च प्राणः च विधारयितव्यम् च ॥ ८ ॥

	अन्वयः	पदार्थ
१	पृथिवी =	स्थूल पृथिवी
	च =	और
	पृथिवीमात्रा =	सूक्ष्मपृथिवी
२	च =	ऐसेही
	आपः =	जल
	च =	और
	आपोमात्रा =	सूक्ष्मजल
	च =	ऐसेही
३	तेजः =	तेज
	च =	और
	तेजोमात्रा =	सूक्ष्मतेज
	च =	ऐसेही
४	वायुः =	वायु
	च =	और
	वायुमात्रा =	सूक्ष्मवायु

	अन्वयः	पदार्थ
५	च =	ऐसेही
	आकाशः =	आकाश
	च =	और
	आकशमात्रा =	सूक्ष्म आकाश
	एतानिपंचमहाभूतानि =	येपांचमहाभूतहैं
	च =	ऐसेही
	वाक् =	वाणी
१	च =	और
	वक्तव्यम् =	वाक्इन्द्रियकाविषय
	च =	ऐसेही
२	हस्तौ =	दोनोंहाथ
	च =	और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदातव्यम् = हाथों का विषय

२ { च = ऐसेही
उपस्थः = उपस्थइन्द्रिय
च = और
आनन्दयितव्यम् = उपस्थइन्द्रिय का विषय }

च = ऐसेही

४ { पायु = गुदाइन्द्रिय
च = और
विसर्जयितव्यम् = गुदाइन्द्रियकाविषय }

५ { च = वैसेही
पादौ = दोनों चरण
च = और
गन्तव्यम् = चरणइन्द्रियका विषय }

+एतानिपञ्च कर्मेन्द्रियाणि = ये पांचकर्मेन्द्रियां हैं

च = ऐसेही

१ { चक्षुः = नेत्रइन्द्रिय
च = और
द्रष्टव्यम् = नेत्रइन्द्रिय का विषय
च = ऐसेही }

२ { श्रोत्रम् = श्रवणइन्द्रिय
च = और
श्रोतव्यम् = श्रोतइन्द्रिय का विषय
च = ऐसेही }

३ { घ्राणम् = नासिका इन्द्रिय
च = और
घ्रातव्यम् = घ्राणकाविषय
च = ऐसेही }

४ { रसः = रसनाइन्द्रिय
च = और
रसयितव्यम् = रसनाइन्द्रिय का विषय }

५ { च = ऐसेही
त्वक् = त्वक्इन्द्रिय
च = और
स्पर्शयितव्यम् = त्वक्इन्द्रिय का विषय }

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+एतानि पंचज्ञानेन्द्रियाणि = ये पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं

१ { च = ऐसेही
मनः = मन
च = और
मन्तव्यम् = मन इन्द्रिय का विषय }

२ { च = ऐसेही
बुद्धिः = बुद्धि
च = और
बोद्धव्यम् = बुद्धीन्द्रिय का विषय }

३ { च = ऐसेही
अहङ्कारः = अहंकार
च = और
अहङ्कर्तव्यम् = अहङ्कारका विषय }

४ { च = ऐसेही
चित्तम् = चित्त
च = और
चेतयितव्यम् = चित्त का विषय
च = ऐसेही }

तेजः = तेज
च = और
विद्योतयितव्यम् = तेजका विषय
च = ऐसेही
प्राणः = प्राण
च = और
विधारयितव्यम् = प्राण सूत्रात्माकरके धारणाकरने योग्यनामरूपात्मकसबजगत्

+एतानिसर्वाणिआत्मनिलीनानिभवन्ति = येसबपिछले मंत्रमें कहेहुयेआत्माविषेलीन होते हैं॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

पृथिवीचेति ॥ स्थूल पृथिवी और इसका कारण गंधतन्मात्रा, स्थूलजल और इसका कारण रसतन्मात्रा, स्थूल अग्नि और इसका कारणरूप तन्मात्रा, स्थूलवायु और इसका कारण स्पर्शतन्मात्रा, स्थूल आकाश और इसकाकारण शब्द तन्मात्रा, चक्षु इन्द्रिय और इसका विषयरूप श्रोत्रेन्द्रिय और इसका विषय शब्द, घ्राणेन्द्रिय और इसका विषय गन्ध, रसनाइन्द्रिय और इसका विषय रस, त्वगिन्द्रिय और इसका विषय स्पर्श, वागिन्द्रिय और इसका विषय वक्तव्य, पाणिइन्द्रिय और इसका विषय आदातव्य (ग्रहणकरना) पादइन्द्रिय और इसका विषय गन्तव्य, उपस्थेन्द्रिय और इसका विषय मैथुन कर्म्म, गुदाइन्द्रिय और इसका विषय मलत्याग कर्म, मन और इस का विषय मन्तव्य, बुद्धि और इसका विषय बोद्धव्य, अहङ्कार और इसका विषय अहंकर्त्तव्य, चित् और इसका विषय स्मरण, तेज और इसका विषय क्रान्ति, प्राण और इसका विषय धारणा शक्ति, ये सब परमात्मा केही आश्रित हैं और उसी में लय होते हैं ८ ॥

मूलम् ॥

एषहि द्रष्टास्प्रष्टा श्रोताघ्राता रसयिता मन्ता बोद्धाकर्त्ताविज्ञानात्मापुरुषः सपरेऽक्षरेआत्मनिसम्प्रतिष्ठते ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

एषः हि द्रष्टा स्प्रष्टा श्रोता घ्राता रसयिता मन्ता बोद्धा कर्त्ता विज्ञानात्मा पुरुषः सः परे अक्षरे आत्मनि सम्प्रतिष्ठते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
द्रष्टा	देखनेवाला
स्प्रष्टा	स्पर्शकरनेवाला
श्रोता	श्रवणकरनेवाला
घ्राता	सूंघनेवाला
रसयिता	रसलेनेवाला
मन्ता	मननकरनेवाला
बोद्धा	जाननेवाला
कर्त्ता	प्राणादिकोंका कर्त्ता
एषः	जल बिषे सूर्य की छायावत् शरीरोंमें प्रविष्टहुआ यह
+यः	जो
विज्ञानात्मा	सबकाज्ञाता
पुरुषः	पुरुषहै
सः	सो
अक्षरे	अविनाशी
परे	परम
आत्मनि	आत्मा बिषे
हि	निश्चयकरके
सम्प्रतिष्ठते	लीनहोजाता है ॥

भावार्थ ॥

एषहीति ॥ केवल जड़ प्रपञ्च पृथिवी आदि कहीं नहीं उस परमात्मा में स्थित हैं किन्तु जीव भी उसी परमात्मा में ही स्थित है ॥ एषहीति ॥ यह जो देखनेवाला है, स्पर्श करनेवालाहै, श्रवण करनेवाला है, गन्धका ग्रहण करनेवाला है, रसका स्वाद लेनेवाला है, मनका मनन करनेवाला है, पदार्थों का जाननेवाला है, कर्मों का कर्ता है, वही सबका ज्ञाता पुरुषहै, वही जीवआत्मा है, वही शरीर व इन्द्रिय में व्यापक है, वही अक्षर ब्रह्म में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थितहै,उससे भिन्न नहीं है,जैसे प्रतिबिम्ब बिम्ब केही आश्रयहै, बिम्ब से भिन्न नहीं है ६ ॥

मूलम् ॥

परमेवाक्षरंप्रतिपद्यतेसयोहवैतदच्छायमशरीरमलोहितं शुभ्रमक्षरंवेदयते यस्तुसौम्यससर्वज्ञः सर्वोभवतितदेषश्लोकः ॥ १० ॥

पदच्छेदः

परम् एव अक्षरम् प्रतिपद्यते सः यः ह वा एतत् अच्छायम् अशरीरम् अलोहितम् शुभ्रम् अक्षरम् वेदयते यः तु सौम्य सः सर्वज्ञः सर्वः भवति तत् एषः श्लोकः ॥

अन्वयः	पदार्थ
सौम्य	हे सौम्य
यः	जो पुरुष
हवा	ईषणारहित
एतत्	इस
अच्छायम्	अज्ञान रहित
अशरीरम्	निराकार
अलोहितम्	निर्गुण
शुभ्रम्	शुद्ध
अक्षरम्	नाश से रहित सत्य ज्ञानानन्द रूप परमात्मा को
वेदयते	जानता है
सःएव	सोई
परम्	परम
अक्षरम्	ब्रह्मको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिपद्यते = स्वयं प्राप्त होता है
तु = और
यः = जो
सर्वज्ञः = सबकाज्ञाताहै
सः = सोई
सर्वः = सबका आत्मरूप
भवति = होता है
तत् = इस बिषे
एषः = यह आगे वाला
श्लोकः = मन्त्रप्रमाण
+अस्ति = है ॥

भावार्थ ॥

परमेवाक्षरमिति ॥ जो सम्पूर्ण जगत् का आधारभूतब्रह्म है सो अज्ञानरूपी अन्धकार से रहितहै, नामरूप प्रपञ्च अर्थात् उपाधियों से रहित है, रक्त पीतादि वर्णों से रहित है, सत्त्व रज तमरूपी गुणों से भी रहित है और इसीकारण वह शुद्ध है, ऐसे ब्रह्म को कोई बिरलाही अधिकारी श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठ आचार्य्य के उपदेश करके यथार्थरूप से जानता है, हे सौम्य ! जो अधिकारी पूर्वोक्त ब्रह्मके स्वरूपको अपना आत्मा करके जानलेता है वही सर्वज्ञ है, क्योंकि सर्वको अपना आत्मा करकेही जानता है, वह इसी वर्त्तमान शरीर में जीतेहीजी ब्रह्म होजाता है, इसी अर्थ को आगेवाला मन्त्रभी कहताहै १० ॥

मूलम् ॥

विज्ञानात्मासहदेवैश्वसर्वैः प्राणाभूतानिसंप्रतिष्ठन्ति यत्र तदक्षरंवेदयतेयस्तुसौम्यससर्वज्ञः सर्वमेवाविवेशेति ११ चतुर्थःप्रश्नः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

विज्ञानात्मा सह देवैः च सर्वैः प्राणाः भूतानि सम्प्रतिष्ठन्ति यत्र तत् अक्षरम् वेदयते यः तु सौम्य सः सर्वज्ञः सर्वम् एव आविवेश इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
सौम्य	हे सौम्य
यत्र	जिस सत्यादि स्वरूप बिषे
प्राणाः	सब प्राण चक्षुरादि
च	और
भूतानि	सब भूत पृथिवी आदि
सर्वैः	सम्पूर्ण
देवैःसह	अग्निआदि देवतावों के साथ
सम्प्रतिष्ठन्ति	सम्यक् प्रकार स्थित होते हैं याने लीन होते हैं
सः	सोई
विज्ञानात्मा	विज्ञानस्वरूप है
च	और
तत्	सोई
अक्षरम्	अविनाशी है
+च	और
यस्तु	जो
+तत्	उस अमरको
इति	इस प्रकार
वेदयते	जानता है
सः	सोई
सर्वज्ञः	सबका ज्ञाता हुआ
सर्वं	सब बिषे
आविवेश	प्रवेशकरताहै ॥

इति चतुर्थःप्रश्नः ४ ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

विज्ञानात्मेति ॥ जो अन्तःकरणावशिष्ट जीवात्मा है सोई सम्पूर्ण इन्द्रियों के सहित और पांचों प्राणों के सहित और पृथिवी आदिक पांचोभूतों के सहित अविनाशी ब्रह्म बिषेही लीन होताहै, सो जीव आत्मा विज्ञान स्वरूप है, सोई अविनाशी है, जो अधिकारी उसको इसप्रकार जानता है वही सब का ज्ञाता होता है, वही ब्रह्मस्वरूप है, वही जीवनमुक्त है, वही पूजनीय है ११ ॥

इति चतुर्थः प्रश्नः ४ ॥

मूलम् ॥

अथहैनंशैब्यःसत्यकामःपप्रच्छ सयोहवैतद्भगवन्मनुष्येषुप्रयाणान्तमोङ्कारमभिध्यायीत कतमंवावसतेनलोकंजयतीति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

अथ ह एनम् शैब्यः सत्यकामः पप्रच्छ सः यः ह वा एतत् भगवन् मनुष्येषु प्रयाणान्तम् ओंकारम् अभिध्यायीत कतमम् वाव सः तेन लोकम् जयति इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
अथ	अब
ह	प्रसिद्ध
शैब्यः	शिविका पुत्र
सत्यकामः	सत्यकाम नामकऋषि
एनम्	पिप्पलाद आचार्य से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति = ऐसा
पप्रच्छ = पूछताभया कि
भगवन् = हे भगवन्
सः = वह
यः = जो कोई
हवा = निश्चय करके
मनुष्येषु = मनुष्योंबिषे
एतत् = इस
ओंकारम् = प्रणवको
प्रयाणान्तम् = परलोकयात्रापर्यंत
अभिध्यायीत = उपासना करै
वाव = तौ
तेन = उस उपासना से
सः = वह उपासक
कतमम् = किस
लोकम् = लोक को
जयति = जीतता है अर्थात् प्राप्त होता है ॥

भावार्थ ॥

अथेति ॥ अब शिबिका पुत्र सत्यकाम नामक ऋषि पिप्पलादमुनि से पूछता है हे भगवन् ! मनुष्यों के मध्य में जो कोई अधिकारी ॐकार का ध्यान मरण पर्यन्त करता है, वह उपासक उस उपासना के करने से किस लोकको प्राप्त होता है १ ॥

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाच एतद्वैसत्यकामपरंचापरं च ब्रह्म यदोंकारस्तस्माद्विद्वानेतेनैवायतनेनैकतरमन्वेति २ ॥

पदच्छेदः

तस्मै सः ह उवाच एतत् वै सत्यकाम परम् च अपरम् च ब्रह्म यत् ओंकारः तस्मात् विद्वान् एतेन एव आयतनेन एकतरम् अन्वेति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
तस्मै	उससत्यकाम ऋषि से
सः	वह पिप्पलाद मुनि
उवाच	कहता भया कि
सत्यकाम	हे सत्यकाम
वै	प्रसिद्ध
यत्	जो
एतत्	यह
ॐकारः	प्रणव है
सःएव	सोई
परम् च	पर और
अपरम्	अपर
ब्रह्म	ब्रह्महै
तस्मात्	इसलिये
एतेनएव	इस प्रणव के ही
आयतनेन	आश्रयकरके
विद्वान्	उपासक
एकतरम्	पर या अपर ब्रह्मको
अन्वेति	प्राप्तहोताहै॥

भावार्थ ॥

तस्मैसहेति ॥ तब उस सत्यकाम ऋषिसे पिप्पलाद मुनि ने कहा हे सत्यकाम! यह जो पूर्व कथन किया हुआ सद्रूप निर्गुण परब्रह्म और हिरण्यगर्भरूप करके अपर ब्रह्म है सो पर अपर रूप करके ॐकारहीहै, उसी को प्रणव भी कहते हैं, जो विद्वान इस प्रणव की उपासना करता है वह पर अथवा अपर ब्रह्मको उपासना अनुसार प्राप्त होता है २ ॥

मूलम् ॥

स यद्येकमात्रमभिध्यायीत सतेनैवसंवेदितस्तूर्णमेवजगत्यामाभिसमम्पद्यते तमृचोमनुष्यलोकमुपनयन्ते स तत्र तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया सम्पन्नोमहिमानमनुभवति ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

सः यदि एकमात्रम् अभिध्यायीत सः तेन एव संवेदितः तूर्णम् एव जगत्याम् अभिसम्पद्यते तम् ऋचः मनुष्यलोकम् उपनयन्ते सः तत्र तपसा ब्रह्मचर्य्येण श्रद्धया सम्पन्नः महिमानम् अनुभवति ॥

अन्वयः	पदार्थ
सः	वह उपासक
यदि	अगर
एकमात्रम्	एकमात्रावाले प्रणव को याने अकार मात्रको
अभिध्यायीत	उपासना करै
+तु	तो
सः	वह
तेन	उस उपासना के बल से
एव	निश्चय करके
संवेदितः	सम्यक्प्रकार बोधवान् हुवा
तूर्णम्	शीघ्र
एव	ही
जगत्याम्	पृथिवी बिषे
अभिसंपद्यते	जन्मको प्राप्त होता है
+च	और
तम्	उस को
+पुनः	फिर
ऋचः	ऋग्वेद के मन्त्र
मनुष्यलोकम्	मनुष्य शरीर को
उपनयन्ते	प्राप्तकरते हैं
+च पुनः	और फिर
तत्र	तिसमनुष्य देहविषे
सः	वह उपासक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तपसा = तप करके
ब्रह्मचर्येण = ब्रह्मचर्य्यकर-के
श्रद्धया = श्रद्धा करके
सम्पन्नः = युक्त होता हुआ
महिमानम् = ऐश्वर्य्य को
अनुभवति = प्राप्त होताहै॥

भावार्थ ॥

सयदीति ॥ पूर्व त्रिमात्ररूप ॐकार की उपासना का विधान किया है, अब उस ॐकार की एक मात्रा की उपासना करने से जो उत्तम फल होताहै उसको दिखाते हैं ॥ सयदीति ॥ अकार, उकार, मकार, यह तीन ॐकार की मात्रा हैं, इन तीन मात्रों के अग्नि,वायु, सूर्य्य अथवा ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये तीन देवता हैं, भूर्भुवः, स्वः, ये तीन उन तीन मात्रों के स्थान हैं, जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति ये तीन उनकी अवस्था हैं, और ऋग्यजुसाम ये उनके तीन वेद हैं, इनके विधानको भलीप्रकार न जानकर जो कोई एकही अकार मात्रा का ध्यान करता है, वह उस मात्रा के बलसे शीघ्रही पृथिवीलोकको प्राप्त होताहै, और ऋग्वेद के अभिमानी देवता के प्रसादसे मनुष्य शरीर को पाता है, और तप करके ब्रह्मचर्य्य करके और श्रद्धा करके ऐश्वर्य को प्राप्त होताहै ३ ॥

मूलम् ॥

अथ यदि द्विमात्रेण मनसि सम्पद्यते सोऽन्तरिक्षं यजुर्भिरुन्नीयते स सोमलोकंससोमलोके विभूतिमनुभूय पुनरावर्तते ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

अथ यदि द्विमात्रेण मनसि सम्पद्यते सः अन्तरिक्षम् यजुर्भिः उन्नीयते सः सोमलोकम् सः सोमलोके विभूतिम् अनुभूय पुनरावर्त्तते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अथ	= और	यजुर्भिः	= यजुर्वेद के मंत्रों करके
यदि	= अगर	अन्तरिक्षं	= अन्तरिक्षविषे
सः	= वह उपासक	सोमलोकम्	= चंद्रलोकको
द्विमात्रेण	= द्विमात्र प्रणवसे याने अकार उकार मात्रा से	उन्नीयते	= प्राप्त किया जाता है
मनसि	= मन बिषे	सः	= वह
संपद्यते	= ध्यान करताहै अर्थात् उपासना करता है	सोमलोके	= चंद्रलोकबिषे
+ तु	= तो	विभूतिम्	= महिमा को
सः	= वह	अनुभूय	= भोग करके
		पुनरावर्त्तते	= फिरइसलोक बिषे जन्मलेताहै ॥

भावार्थ ॥

अथेति ॥ और यदि किसी पुण्य विशेष करके वह उपासक द्विमात्रारूपी ॐकारका ध्यान मनमें करता है तो वह मरण पश्चात् अन्तरिक्ष बिषे चन्द्रलोक को यजुर्वेद के मन्त्रों करके प्राप्त होता है, और सब प्रकार के भागों को भोग करके वह उपासक पुण्य कर्मोंके छिन्न होने पर मृत्युलोकको लौट आता है, और कर्मानुसार मनुष्य शरीर को प्राप्त होता है ४ ॥

मूलम् ॥

यः पुनरेतत् त्रिमात्रेणोमित्येतेनैवाक्षरेण परम्पुरुषमभिध्यायीत सतेजसिसूर्य्येसम्पन्नोयथापा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोदरस्त्वचाविनिर्मुच्यत एवं हवै सपाप्मनाविनि र्म्मुक्तः ससामभिरुन्नीयते ब्रह्मलोकंस एतस्माज्जी वघनात्परात्परम्पुरिशयं पुरुषमीक्षते तदेतौश्लो कौभवतः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

यः पुनः एतत् त्रिमात्रेण एव ॐ इति एतेन एव अक्षरेण परम् पुरुषम् अभिध्या- यीत सः तेजसि सूर्य्ये सम्पन्नः यथा पादोदरः त्वचा विनिर्मुच्यते एवम् ह वै सः पाप्मना वि- निर्म्मुक्तः सः सामभिः उन्नीयते ब्रह्मलोकम् सः एतस्मात् जीवघनात् परात्परम् पुरिशयम् पुरुषम् ईक्षते तत् एतौ श्लोकौ भवतः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
पुनः	= और	एतत्एव	= उसी
यः	= जो उपासक	परंपुरुषम्	= परमपुरुषको
त्रिमात्रेण	= तीन मात्रा याने अकार उकार मकार करके युक्त	एव	= निश्चयपूर्वक
		अभिध्यायीत	= उपासनाकरै
		एव	= तो
		सः	= वह उपासक
एतेन	= इस	तेजसिसूर्ये	= तेजरूप सूर्य विषे
अक्षरेण	= पूर्णअक्षर		
ओमइति	= ओम्करके	संपन्नः	= संयुक्तहोताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ च = और
यथा = जैसे
पादोदरः = सर्प
त्वचा = प्राचीनत्वचा से
विनिर्मुच्यते = मुक्त होता है
एवम्हवै = ऐसेही
सः = वह उपासक
पाप्मना = पाप से
विनिर्मुक्तः = छूटाहुआ
सामभिः = सामवेदकेमंत्रों करके
ब्रह्मलोकम् = हिरण्यगर्भलोकको
उन्नीयते = प्राप्त किया जाता है
+ च = और
सः = फिर वह उपासक
एतस्मात् = इस
परात् = उत्कृष्ट
जीवघनात् = हिरण्यगर्भसेभी
परम् = सर्वोत्कृष्ट
पुरिशयम् = नवद्वारआदि पुरबिषे शयन करने वाले
पुरुषम् = परमपुरुषको
ईक्षते = देखता है
तत् = तिस बिषे
एतौ = ये दोनों
श्लोकौ = मन्त्र
भवतः = प्रमाण हैं

भावार्थ ॥

यःपुनइति—जो उपासक इसप्रसिद्ध ओंकारकी तीन मात्रा याने अकार उकार मकारकी उपासनाको करताहै और उसी ॐकार अक्षर करके पूर्ण परमात्माका जो सूर्य्य मंडल बिषे स्थितहै ध्यान करताहै, वह सूर्य्य मंडलमें जा प्राप्त होताहै और भयानक पाप से छूट जाता है, और जैसे सर्प अपनी पुरानी त्वचा के त्यागने से नवीन सुंदर प्रतीत होनेलगताहै इसी प्रकार ॐकारका उपासक भी अपने पापरूपी त्वचा सूक्ष्मशरीर के त्यागने पर शुद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्मल होजाताहै औरतब साम वेदके मंत्र जिसको उसने चित्त लगाकर अध्ययन किया था उस उपासिक को ब्रह्मलोक में ले जाकरके प्राप्त कर देते हैं और वहां पर वह हिरण्यगर्भ आत्मा से संयुक्त होजाता है और फिर आवागमन से मुक्त हो जाता है इसमें अगलेवाले दोनों मंत्र प्रमाण हैं ५ ॥

मूलम् ॥

तिस्रोमात्रामृत्युमत्यःप्रयुक्ता अन्योऽन्यसक्ता अनुविप्रयुक्ताः क्रियासुबाह्याभ्यन्तरमध्यमासुसम्यक्प्रयुक्तासुनकम्पतेज्ञः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

तिस्रः मात्राः मृत्युमत्यः प्रयुक्ताः अन्योन्यसक्ताः अनुविप्रयुक्ताः क्रियासु बाह्याभ्यन्तरमध्यमासु सम्यक्प्रयुक्तासु न कम्पते ज्ञः ॥

अन्वयः	पदार्थ
+ॐकारस्य	प्रणव की
तिस्रः	अकार उकार मकाररूपतीन
मात्राः	मात्रा
प्रयुक्ताः	केवल वरण ध्यानबिषे उपासना कीहुई
मृत्युमत्यः	मृत्युविषय कहैं अर्थात् अपरब्रह्मको प्राप्त करने वाली हैंयाने आवागमन मेंहीफसाने वाली हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+परंतु = परन्तु
सम्यक् = यथायोग्य
प्रयुक्तासु = विचार करने पर
बाह्याभ्यंतरमध्यमासुक्रियासु = जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अवस्थावों विषे
अनुविप्रयुक्ताः = विश्वतैजस प्राज्ञरूप से युक्त हुईं
च = और
अन्योन्यसक्ताः = परस्परएकता को प्राप्त हुईं
प्रयुक्ताः = ऐसी उपासना इन तीनमात्रावों से की हुईं
ज्ञः = उपासक
नकम्पते = भयको नहीं प्राप्त होता है याने ब्रह्मको ही प्राप्त होता है

नोट–प्रयुक्ताः प्रथमा विभक्ति है परन्तु अर्थ तृतीया का देता है ऐसेही अनुविप्रयुक्ताः अन्योन्यसक्ताः प्रथमा है परन्तु अर्थ तृतीया का देते हैं ॥

भावार्थ ॥

तिस्रो मात्रेति–ब्रह्म दृष्टि से भिन्न अकार, उकार, मकार जो ॐकार की तीनों मात्रा हैं अपने उपासक को आवागमन से रहित नहीं करसक्ती हैं, अर्थात् केवल इन अक्षरों के जपसेही मुक्ति नहीं होती है,इसलिये ब्रह्मदृष्टि ॐकारमें करनी चाहिये,क्योंकि ब्रह्मज्ञान के विना केवल मात्रा का जप अपकर्षता का हेतु है तीनों मात्रोंको मिलाकरके ॐशब्द होता है, सोई ध्यान करनेके योग्यहै उसही ॐकारके ध्यान कालमें तीन जो कायिक वाचिक मानसिकक्रियाहैं उनको और जो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ति अभिमानी और जड़हैं उनको तीनों मात्रों के साथतादात्म्यता करके जो जानता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और ॐकारको ब्रह्मरूप करके जो ध्यान करता है वह कदापि चलायमान नहीं होता है याने ब्रह्म लोकको प्राप्त होताहै ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

ऋग्भिरेतंयजुर्भिरन्तरिक्षंससामभिर्यत्तत्कवयो वेदयन्तेतमोङ्कारेणैवायतनेनान्वेति विद्वान्यत्त च्छान्तमजरममृतमभयंपरंचेति ॥ ७ ॥

इति पञ्चमः प्रश्नः ॥

पदच्छेदः

ऋग्भिः एतम् यजुर्भिः अन्तरिक्षम् सः सामभिः यत् तत् कवयः वेदयन्ते तम् ॐकारेण एव आयतनेन अन्वेति विद्वान् यत् तत् शान्तम् अजरम् अमृतम् अभयम् परम् च इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इति	इसप्रकार	नीयते	प्राप्तकिया जाता है
सः	वह उपासक	यजुर्भिः	द्वितीयमात्रा उकार के अधिष्ठातायजुर्वेद के मंत्रोंकरके
ऋग्भिः	प्रथममात्रा अकार के अधिष्ठाता ऋग्वेद के मन्त्रोंकरके	अंतरिक्षम्	अंतरिक्ष विषे चन्द्रलोकको
एतम्	इस मनुष्य लोक को		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीयते = प्राप्त किया जाता है

सामभिः = { तृतीय मात्रा मकारके अधिष्ठाता सामवेदकेमंत्रों करके }

यत्तत् = जिस को

कवयः = त्रिकालदर्शी लोक

वेदयन्ते = जानते हैं और बताते हैं

तम् = उस को याने सत्यलोक को

नीयते = प्राप्तकिया जाता है

विद्वान् = { त्रिमात्रप्रणवकीउपासनाका पूर्णज्ञानी }

ओंकारेण = प्रणव के

एव = ही

आयतनेन = द्वारा

यत् = जो

अजरम् = जराकरके रहित

अमृतम् = मरणकरके रहित

अभयम् = भयकरके रहित

शान्तम् = शान्त

च = और

परम् = सर्वोत्तम पुरुष है

तत् = उसको

अन्वेति = प्राप्तहोता है

इतिपञ्चमःप्रश्नः ।

भावार्थ ॥

ऋग्भिरिति ॥ प्रथम मात्रा अकारके अधिष्ठाता ऋग्वेद के मन्त्रों का अभिमानी उपासक मनुष्य लोकको प्राप्तहोता है, द्वितीयमात्रा उकार के अधिष्ठाता यजुर्वेद के मन्त्रों का अभि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानी उपासक चन्द्रलोकको प्राप्तहोता है, और तृतीय मात्रा मकारके अधिष्ठाता सामवेद के मन्त्रोंका अभिमानी उपासक ब्रह्मलोकको प्राप्तहोताहै, ऐसा विद्वान् लोग कहते हैं जो तीनों मात्राका उपासकहै वही ब्रह्मज्ञानी है; वह उस पुरुषको प्राप्त होता है जो जराअवस्थासे रहितहै अभयहै, शान्तहै ॥ ७ ॥

इति पञ्चमःप्रश्नः ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

अथहैनंसुकेशाभारद्वाजः पप्रच्छ भगवन् हिरण्यनाभः कौशल्योराजपुत्रोमामुपेत्यैतंप्रश्नमपृच्छत् षोडशकलं भारद्वाजपुरुषंवेत्थ तमहंकुमारमब्रुवंनाहमिमंवेदयद्यहमिममवेदिषं कथन्तेनावक्ष्यमिति समूलोवाएषपरिशुष्यतियोऽनृतमभिवदतितस्मान्नार्हाम्यनृतंवक्तुम् सतूष्णींरथमारुह्य प्रवव्राजतंत्वापृच्छामिक्वासौपुरुषइति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

अथ ह एनम् सुकेशाः भारद्वाजः पप्रच्छ भगवन् हिरण्यनाभः कौशल्यः राजपुत्रः माम् उपेत्य एतम् प्रश्नम् अपृच्छत् षोडशकलम् भारद्वाज पुरुषम् वेत्थ तम् अहम् कुमारम् अब्रुवम् न अहम् इमम् वेद यदि अहम् इमम् अवेदिषम् कथम् तेन अवक्ष्यम् इति समूलः वै एषः परिशुष्यति यः अनृतम् अभिवदति तस्मात् न अर्हामि अ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नृतम् वक्तुम् सः तूष्णीम् रथम् आरुह्य प्रवव्राज तम् त्वा पृच्छामि क्व असौ पुरुषः इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
अथ	अब
ह	प्रसिद्ध
एनम्	इस पिप्पलादमुनिसे
भारद्वाजः	भरद्वाजका पुत्र
सुकेशाः	सुकेशनामक ऋषि
पप्रच्छ	कहताभया कि
भगवन्	हे भगवन्
कौशल्यः	अयोध्यानिवासी
हिरण्यनाभः	हिरण्यनाभ नामा
राजपुत्रः	क्षत्रिय
माम्	मेरे समीप
उपेत्य	आय के
एतम्प्रश्नम्	इसप्रश्नको
अपृच्छत्	पूछताभया कि

अन्वयः	पदार्थ
भारद्वाज	हे भारद्वाज मुनि
षोडशकलम्	सोलहकला वाले
पुरुषम्	पुरुषको
वेत्थ	तू जानता है
तम्	उस
कुमारम्	राजपुत्र से
अहम्	मैं
इति	ऐसा
अब्रुवम्	कहता भया कि
+हेराजपुत्र	हेराजकुमार
अहम्	मैं
इमम्	इस षोडशकला वाले पुरुष को
नवेद	नहीं जानता हूं
यदि अहम्	अगर मैं
इमम्	उस पुरुष को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवेदिषम् = जानता तो
कथम् ते = कैसे तेरे अर्थ
न अवक्ष्यम् = न कहता कि-न्तु अवश्य कहता
यः = जो
अनृतम् = मिथ्या को
अभिवदति = कहता है
एषः = वह
वै = अवश्य
समूलः = मूलसहित
परिशुष्यति = दग्ध होजाताहै अर्थात् पापिष्ठहोता है
तस्मात् = इस लिये
अनृतम् = मिथ्या
वक्तुम् = कहने को
न = नहीं
अर्हामि = योग्यहूं मैं
+एवंश्रुत्वा = ऐसा सुनके
सः = वह राजपुत्र
तूष्णीम् = चुपचाप
रथम् = रथमें
आस्थाय = बैठके
प्रवव्राज = चलाजाता भया
+इदानीं = अब
अहम् = मैं
तम् = उसपुरुषको
त्वा = आपसे
इति = ऐसा
पृच्छामि = पूछताहूं कि
असौ = वह
पुरुषः = पुरुष
क्व = कहां है

भावार्थ ॥

अथेति ॥ इसके अनन्तर सुकेशा नामक भारद्वाज गोत्रोत्पन्न ऋषि पिप्पलाद मुनि से पूछता भया ॥ हे भगवन् ! हिरण्यनाभ नामा राजपुत्र अयोध्याके निवासी मेरे पास आकर कहनेलगा हे भारद्वाज ! षोडशकलावाले पुरुषको आप जानते हो, तब मैंने कहा मैं उस षोडशकलावाले पुरुष को नहीं जानता हूं, यदि मैं उस पुरुषको जानता तो तुम उत्तम अधिकारी के प्रति क्यों न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहता, हे राजकुमार ! जो पुरुष मिथ्याभाषण करता है वह मिथ्यावादी मूल के सहित सूखजाता है, अर्थात् उसके शुभ कर्म जो उत्तम गतिके प्राप्तिकेकारण हैं वे सब नष्ट होजाते हैं,इसलिये मैं मिथ्याभाषण के योग्य नहीं हूं॥ मेरे वचन को श्रवण करके वह राजपुत्र तूष्णीं होकर रथपर बैठके अपने स्थानको चलागया, अब मैं आपसे पूंछताहूं कि वह षोडशकलावाला पुरुषकौन है १ ॥

मूलम् ॥

तस्मैसहोवाच इहैवान्तश्शरीरेसौम्यसपुरुषोयस्मिन्नेताःषोडशकलाःप्रभवन्तीति ॥ २ ॥

पदच्छेदः

तस्मै सः ह उवाच इह एव अन्तःशरीरे सौम्य सः पुरुषः यस्मिन् एताः षोडशकलाः प्रभवन्ति इति ॥

अन्वयः	पदार्थ
तस्मै	तिसभारद्वाजके प्रति
ह	प्रसिद्ध
सः	वह पिप्पलाद मुनि
इति	ऐसा
उवाच	कहता भया कि
सौम्य	हे सौम्य

अन्वयः	पदार्थ
यस्मिन्	जिस में
एताः	ये प्राणादि
षोडशकलाः	नाम पर्यंत षोडशकला
प्रभवन्ति	उत्पन्नहोती हैं और लय भी होती हैं
सः	सो
पुरुषः	पुरुष
इहएव	इसही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्तःशरीरे = हृत्पुण्डरीकाकाशविषे	+अस्ति = वर्तमान है

भावार्थ ॥

तस्मैसहेति ॥ तब भारद्वाज गोत्रविषे उत्पन्न हुये सुकेशा ऋषिसे पिप्पलाद मुनि कहते हैं ॥ हे सौम्य ! हे प्रियदर्शन ! इसी शरीर के हृत, पुण्डरीकाकाश विषे वह षोडशकलावाला पुरुष पूर्ण रूपसे स्थित है, उसीसे प्राणआदि षोडशकला उत्पन्न होती हैं, और उसीमें लय भी होती हैं, ॥ २ ॥

मूलम् ॥

सईक्षाञ्चक्रेकस्मिन्नहमुत्क्रान्तउत्क्रान्तोभविष्यामि कस्मिन्वाप्रतिष्ठिते प्रतिष्ठास्यामीति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

सः ईक्षाम् चक्रे कस्मिन् अहम् उत्क्रान्ते उत्क्रान्तः भविष्यामि कस्मिन् वा प्रतिष्ठिते प्रतिष्ठास्यामि इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सः	= वहपुरुष	अहम्	= मैं
सृष्टिविषये	= सृष्टिकी रचना विषे	कस्मिन्	= किसके
इति	= ऐसा	उत्क्रान्ते	= निर्गमनमेंयानेनिकलनेपर
ईक्षाम्	= अवलोकन	उत्क्रान्तः	= निकसाहुआ
चक्रे	= करताभयाकि	भविष्यामि	= होउंगा
		वा	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कस्मिन् = किसके प्रतिष्ठिते = स्थिति में	प्रतिष्ठा स्यामि } = स्थित रहूंगा

भावार्थ ॥

सईक्षांचक्रइति ॥ पिप्लाद मुनि फिर कहते हैं, हे ऋषि ! जो षोडशकलावाला पुरुष है वह सृष्टिके रचना विषे ऐसा चिन्तन करने लगा कि इस स्थूलशरीर से किस कर्त्ता विशेष के उत्क्रमण करने से मैं स्वयं प्रकाश आनन्दरूप आत्मा उत्क्रमण करता हुआंसा मालूम हूंगा, और फिर शरीर में किसके स्थित होने से मैं स्थितिवाला प्रतीत होऊंगा ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

स प्राणमसृजत प्राणाच्छ्रद्धां खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवीन्द्रियम् मनोऽन्नमन्नाद्वीर्यं तपोमन्त्राः कर्म्मलोकालोकेषुचनामच ॥ ४ ॥

पदच्छेदः

सः प्राणम् असृजत प्राणात् श्रद्धाम् खम् वायुः ज्योतिः आपः पृथिवी इन्द्रियम् मनः अन्नम् अन्नात् वीर्यम् तपः मन्त्राः कर्मलोकाः लोकेषु च नाम च ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सः	= वहपुरुष	श्रद्धाम्	= आस्तिक्यबुद्धिको
प्राणम्	= सब अधिकारियों में मुख्य प्राण को	खम्	= आकाश को
		वायुः	= वायु को
असृजत	= सृजताभया	ज्योतिः	= तेज को
प्राणात्	= प्राणसे	आपः	= जल को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृथिवी = पृथिवी को
इन्द्रियम् = दशोंइंद्रियोंको
मनः = मन को
अन्नम् = अन्न को
च = और
अन्नात् = अन्नपरिपाकसे
वीर्यम् = { सब कर्मों के साधक बल को तथा प्रजाउत्पादन सामर्थ्य को }
तपः = तप को
मन्त्राः = { मंत्रोंकोयानेऋक्यजुःसाम अथर्व वेदोंको }
कर्म = अग्निहोत्रादिक कर्म को
लोकाः = कर्मोंकेफलोंको
च = और
लोकेषु = लोकों विषे
नाम = देवदत्तयज्ञदत्तादिनामोंको
असृजत = रचताभया

नोट-वायुः आपः पृथिवी मन्त्राः लोकाः ये प्रथमा विभक्तिके रूपहैं परन्तु इसमन्त्रमें अर्थ द्वितीयाविभक्ति का देते हैं ॥

भावार्थ ॥

सप्राणेति ॥ हे ऋषि ! वह षोडशकलावाला पुरुष जो परमात्मा है प्रथम प्राणोंको उत्पन्न करता भया, और प्राणसे श्रद्धा याने आस्तिक बुद्धिको जो सम्पूर्ण प्राणियों को शुभ कर्म में प्रवृत्ति का हेतु उत्पन्न करताभया, फिर आकाश वायु तेज जल और पृथिवीको उत्पन्न करताभया,फिर चक्षुरादि पांचज्ञानेन्द्रियों को उत्पन्न करताभया,फिर हस्तादि पांचकर्मेन्द्रियोंको उत्पन्न करताभया,फिर अन्तःकरण को रचता भया,फिर व्रीहियवादि अन्न को उत्पन्न करता भया, फिर अन्न से वीर्यको उत्पन्न करताभया, फिर चित्तकी शुद्धिका हेतुभूत जो तप है उसको उत्पन्न करता भया, फिर कर्मों का साधन जोकि ऋग् यजु साम अथर्वण आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मंत्र हैं, उनको उत्पन्न करता भया, फिर होतारूप अग्निको उत्पन्न करता भया, फिर कर्मों के फलभूत लोकादिको उत्पन्न करताभया, उन लोकों में फिर प्राणियों को उत्पन्न करताभया, फिर उनके नाम देवदत्त यज्ञदत्त आदिको उत्पन्न करता भया ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

स यथेमानद्यः स्यन्दमानाः समुद्रायणाः समुद्रम्प्राप्यास्तं गच्छन्ति भिद्येते तासां नामरूपे समुद्रइत्येवं प्रोच्यते एवमेवास्य परिद्रष्टुरिमाःषोडश कलाः पुरुषायणाः पुरुषं प्राप्यास्तंगच्छन्ति भिद्येते तासां नामरूपे पुरुषइत्येवम्प्रोच्यते स एषोऽकलोऽमृतोभवति तदेष श्लोकः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः

सः यथा इमा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रायणाः समुद्रम् प्राप्य अस्तम् गच्छन्ति भिद्येते तासाम् नामरूपे समुद्रः इति एवम् प्रोच्यते एवम् एव अस्य परिद्रष्टुः इमा षोडशकलाः पुरुषायणाः पुरुषम् प्राप्य अस्तम् गच्छन्ति भिद्येते तासाम् नाम रूपे पुरुषः इति एवम् प्रोच्यते सः एषः अकलः अमृतः भवति तत् एषः श्लोकः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सः	= वह दृष्टान्त इस बारेमें ऐसाहै कि	यथा	= जैसे
		स्यन्दमानाः	= चलती हुई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समुद्रायणाः = समुद्रविषे गमन करने वाली
इमाः = ये
नद्यः = नदियां
समुद्रम् = समुद्र को
यदा = जब
प्राप्य = प्राप्त होकर
अस्तम् = अभावको
गच्छन्ति = प्राप्तहोतीहैं
च = और
तासाम् = उननादियोंके
नामरूपे = नाम और रूप दोनों नष्टहोजाते हैं
तदा = तब
केवलम् = केवल
समुद्रः = समुद्रनाम
इति = करके
एवम् = ही
प्रोच्यते = कहाजाताहै
एवम्एव = ऐसेही
यदा = जब
अस्यपरिद्रष्टुः = इस साक्षी पुरुषके
इमाः = ये
पुरुषायणाः = पुरुषमेंगमन करनेवालीं
षोडशकलाः = प्राणादि षोडश कला
पुरुषम् = पुरुष को
प्राप्य = प्राप्त होकर
अस्तम् = अभाव को
गच्छन्ति = प्राप्तहोतीहैं
च = और
तासाम् = उन के
नामरूपे = नाम और रूप दोनों
भिद्येते = नष्ट होजातेहैं
तदा = तब
पुरुषः = पुरुष
इति = करके
एवम् = ही
प्रोच्यते = कहाजाताहै
+यः एवं विद्वान् = जो उपासकउसपुरुष को इस प्रकार जानता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सः = सो	भवति = होता है
एषः = वह उपासक	तत् = इस बिषे
अकलः = कला रहित	एषः = यह आगेवाला
च = और	श्लोकः = मंत्र प्रमाणहै ॥
अमृतः = मरणरहित	

भावार्थ ॥

सयथेति ॥ आत्मज्ञानकी प्राप्तिके लिये पूर्व अध्यारोप करके जगत्की उत्पत्ति को कहा है, अब तिसके अपवादको दार्ष्टांत द्वारा कहते हैं ॥ यथेति ॥ जैसे जब गंगा यमुना सरस्वतीआदिक नदियें चल करके समुद्र में लय होजाती हैं और उनके नाम और रूप सब नाशहोजाते हैं, और उनका जल समुद्र के जलके साथ अभेदको प्राप्तहोजाता है तब एक समुद्रही कहाजाताहै वैसेही दृष्टान्त अनुसार सोलहों कला याने पांचकर्मेन्द्रिय पांच ज्ञानेन्द्रिय पांचप्राण और एक मन जब पुरुष को प्राप्तहोकर लय होजाते हैं तब उनके नाम रूपका नाश उसी पुरुषमेंही होजाता है,पूर्वोक्त षोडशकलों का उपादान और बुद्धिका द्रष्टा जो पुरुष यानी आत्मा है,वह उन कलाओं से रहित है,जो उपासक पुरुष याने आत्मा को इसप्रकार जानता है,वह जन्म मरणसे रहित होजाता है, इसी अर्थको आगेवाला मन्त्र भी कहता है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

अराइवरथनाभौकलायस्मिन्प्रतिष्ठिताः तंवेद्यंपुरुषंवेदयथामावोमृत्युःपरिव्यथाइति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

अराः इव रथनाभौ कलाः यस्मिन् प्रतिष्ठिताः तम् वेद्यम् पुरुषम् वेद यथा मा वः मृत्युः परिव्यथाः इति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
इव	= जैसे	पुरुषम्	= पुरुष को
रथनाभौ	= रथचक्रनाभि बिषे	यूयम्	= तुमसब
अराः	= अराहैं उसी प्रकार	इति	= उक्तप्रकार से
यस्मिन्	= जिसपुरुषबिषे	वेद	= जानो
कलाः	= प्राणादिकला	यथा	= जिसके जानने से
प्रतिष्ठिताः	= स्थित हैं	वः	= तुमको
तम्	= तिस	मृत्युः	= मृत्यु
वेद्यम्	= जाननेयोग्य	मा	= न
		परिव्यथाः	= पीड़ादेवैगा

भावार्थ ॥

अराइवेति ॥ रथ के पहियों के बीच में जो तिरछी २ लकड़ियां लगी रहती हैं उनका नाम अराहै, वे अरे जैसे रथके चक्रों में लगे रहते हैं तैसे ये प्राणादिक षोडशकला भी उस पुरुष में स्थित हैं यदि उस जानने योग्य पुरुषको आप अधिकारी लोग जानोगे तो मृत्युरूपी अज्ञानको कभी नहीं प्राप्तहोगे ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

तानहोवाचैतावदेवाहमेतत्परंब्रह्मवेदनातः परमस्तीति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः

तान् ह उवाच एतावत् एव अहम् एतत् परम् ब्रह्म वेद न अतः परम् अस्ति इति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+सः पिप्पलादः	= { वहपिप्पला दआचार्य्य	परम्	= पर
इति	= ऐसा शिक्षा करके	ब्रह्म	= ब्रह्मको
		एतावत्	= इतना
		एव	= ही
ह	= पुनः	वेद	= जानताहूं
तान्	= उनशिष्योंसे	अतः	= इस से
उवाच	= कहताभया कि	परम्	= आगे
		कश्चित्	= कुछ और
अहम्	= मैं	न	= नहीं
एतत्	= इस	अस्ति	= है

तानिति ॥ उन छवों शिष्यों से पिप्पलादमुनि कहते हैं कि हेश्रेष्ठ ऋषियो ! इसपरब्रह्मको मैंइतनाही जानताहूं,इससे अधिक कुछ नहीं है, उसके स्वरूपको जैसा मैं जानता था सो आप लोगों से मैंने कहा, इससे और अधिकतर जाननेके योग्यनहीं है ७ ॥

मूलम् ॥

तेतमर्चयंतस्त्वंहिनःपितायोऽस्माकमविद्यायाः पारंपारंतारयसीतिनमः परमऋषिभ्योनमःपरमऋषिभ्यः ॥ ८ ॥

इति प्रश्नोपनिषद्षष्ठःप्रश्नःसमाप्तोयम् ॥

पदच्छेदः

ते तम् अर्चयन्तः त्वम् हि नः पिता यः अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्माकम् अविद्यायाः परम् पारम् तारयसि इति नमः परमऋषिभ्यः नमः परमऋषिभ्यः ॥

अन्वयः	पदार्थ
इति	पिप्पलादमुनिकेऐसे उपदेशको सुनकर
ते	वे कबंधी कात्यायन आदि छओं शिष्य
तम्	उस पिप्पलाद गुरुको
अर्चयन्तः	पूजन करते हुये
+इति ऊचुः	ऐसाकहते भये कि
+गुरो	हे गुरो हे भगवन्
हि	निश्चयकरके
त्वम्	आप
नः	हम लोकोंके
पिता	पिता
+असि	हो
यः	जो आप
अस्माकम्	हमको
अविद्यायाः	अविद्यारूप अन्धकारके
परम्	परले
पारम्	किनारे को
तारयसि	पारकरतेभये
अतः	इस उपकार के कारण
परमऋषिभ्यः	विद्या संप्रदायचलानेवाले तुम सरीखे परमऋषियों के अर्थ
नमः	नमस्कार है
परमऋषिभ्यः	परमऋषियोंके अर्थ
नमः	नमस्कार है

इति षष्ठःप्रश्नःसमाप्तः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

तेतमिति ॥ वे कबन्धी कात्यायन आदि छवों शिष्य पिप्पलाद गुरुसे ब्रह्मविद्याको प्राप्तहोकर पिप्पलादजीका पूजन करते भये,और कहने लगे कि निश्चय करके आपही हम लोगों के पिता हैं, आपही हमलोगों के ब्रह्मविद्यादानकर्ता गुरु हैं, आपने हमलोगोंको जन्म मरण का हेतु जो अविद्या है उससे पार करके मोक्षको प्राप्त किया है,आपही ने ब्रह्मविद्यारूपी जहाज करके अविद्यारूपी समुद्र से हमलोगों को मोक्षरूपी पारको प्राप्तकियाहै, आपही ब्रह्मविद्याके संप्रदायके प्रवर्तक हैं,आप के प्रति हमलोगोंका नमस्कारहो,पुनः २ नमस्कारहो ॥ ८ ॥

इति प्रश्नोपनिषत्षष्ठः प्रश्नः ६ समाप्तोयम् ॥

इति प्रश्नोपनिषत् सम्पूर्णम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इश्तिहार

केनोपनिषद् भाषा टीका सहित, क़ीमत =)

सामवेदीय तलवकार शाखीय भाषा टीका सरल मध्यदेशी हिन्दी भाषा में है---जिसको पण्डित यमुनाशङ्कर ने राजशास्त्री मिहिरचन्द की सहायता से अनुवाद किया इस में भी पदों के अन्वयपूर्वक भावार्थ स्पष्ट किया है और ऐसा टीका किया है कि अल्पज्ञ मनुष्यों के भी समझ में आजावे ॥

माण्डूक्योपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत ॥=)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषाटीका सहित--जिस में ओंकार स्वरूप का प्रतिपादन व ब्रह्म और आत्मा की अभेदताका निरूपण चार प्रकरणों में अच्छी तरह से किया है ॥

कठवल्लीउपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत =)॥

पंचोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषाटीका सहित---इस में भी ऊपर लिखेहुये के अनुसार भावार्थ स्पष्ट कियागया और समझने की सुगमता के लिये गुरुशिष्यसंवादपूर्वक पूर्णज्ञान लखाया है ॥

मुण्डकउपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत =)।

पंचोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषाटीका सहित---जिस में वादी प्रतिवादी के प्रश्नोत्तर से ब्रह्मका निर्णय व जगदुत्पत्ति व प्रत्येक अन्नादि का सम्भव व अग्निहोत्रादि क्रियाओं का विधान मन्त्रों द्वारा वर्णित है ॥

तैत्तिरीयोपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत ।-)।

पंचोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषा टीका सहित--जिसमें तैत्तिरीय शाखा के प्रकट होने का उदाहरण और स्वर मात्रा व वर्णों के उच्चारण की शिक्षा का नियम व वर्णोंके सम्बन्धरूप संहिताकी उपासना व बुद्धि व लक्ष्मी की कामनावाले पुरुषों के अर्थ साधन जप और हवनादिकी क्रियायें वर्णितहैं ॥

ऐतरेयोपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत =)॥।

पंचोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषाटीका सहित--जिस में आत्मा व ब्रह्मका निरूपण और प्राण व प्रणवकी उपासना की व्याख्या व संन्यासादि आश्रमोंके लक्षण व धर्म अच्छेप्रकार वर्णित हैं ॥

मैनेजर नवलकिशोर प्रेस,
हज़रतगंज--लखनऊ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



मुण्डकोपनिषद् ॥

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशीय भाषा में रायबहादुर बाबू ज़ालिम सिंह
निवासी ग्राम अकबरपुर जिला फ़ैज़ाबाद ने
पण्डित गङ्गादत्त जोशी और पण्डित रामदत्त
जोशी की सहायता से अनुवाद किया

तिसको

श्रीमान् परमधार्म्मिक शुभगुणनिधान मुन्शी
प्रयागनारायणजीभार्गव ने सर्वलोकहितार्थ

दूसरी बार

लखनऊ

सुपरिंटेण्डेण्ट बाबू मनोहर लाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से
मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई.,) के यंत्रालय में मुद्रित किया
सन् १९११ ई०

हक़ तसनीफ़ महफ़ूज़ है बहक़ इस छापेख़ाने के ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिंभयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्रभास्करं चान्वहम्। यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः। षट्चक्रादिविचार सारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तंवन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करौं वन्दना ब्रह्मको। जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल। मिटै अन्धतम कूप ॥
नाम रूप जामें नहीं। नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं। रहितत्रिविध परिछेद ॥
अन्नभाग जो उपनिषद। ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थ को। लखै सकल संसार ॥
सन्त संगसे जो लख्यो। सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते। जानै सकल जहान ॥
पुरी अयोध्याके निकट। अकबर पुर है गांव ॥
जन्मभूमि ममजान तू। जालिमसिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महा अपार समुद्र है इसके पार होने के लिये उपनिषद् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौका है जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागर के पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्काल में होंगे जो मुमुक्षुजनहैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगई है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस टीकामें पहिले मूलमन्त्रहै फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दियाहै और दक्षिण हस्तकी ओर पदार्थ सहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफ़का लिखा हुआ ऊपरसे नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्तके तरफ़वाला पढ़ा जावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्य देशीय भाषामें मिलेगा और यदि बायें तरफ़से दहिने तरफ़ को पढ़ा जावे तो हरएक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलेगा जहांतक होसकाहै प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागयाहै इस टीकाके पढ़नेसे संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा इस टीकामें मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पायाहै और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसीके शब्दोंहीं से सिद्ध कियागयाहै अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगईहै हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्रके अर्थ स्पष्ट करनेके लिये रक्खागयाहै और उस पदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै ताकि पाठक जनों को विदित हो जावै कि यह पद मूलका नहीं है इस टीका को बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मोड़ाख्यनगरके रचकरशुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमलमें अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहा कहीं अशुद्धताहो उससेटीकाकर्त्ताको सूचनाकरैं ताकि अशुद्धता दूर होजावै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



अथ मुण्डकोपनिषदि आरम्भ

शान्तिपाठः ॥

मूलम् ॥

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

स्वस्ति नः इन्द्रः वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नः तार्क्ष्यः अरिष्टनेमिः स्वस्ति नः बृहस्पतिः दधातु ॥

अन्वयः	पदार्थ
वृद्धश्रवाः =	बड़ीहै कीर्त्ति जिसकी
इन्द्रः =	ऐसा इन्द्र देवराज
नः =	हमारे लिये
स्वस्ति =	अविनाशी सुखको
दधातु =	देवै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+च = और

विश्ववेदाः = विश्वका जाननेवाला याने विश्वका प्रकाशक

पूषा = सूर्य देवता
नः = हमारे अर्थ
स्वस्ति = कल्याण को
+दधातु = देवै
+च = और

अरिष्टनेमिः = कल्याणोंसे परिपूर्ण
तार्क्ष्यः = गरुड़
नः = हमारे लिये
स्वस्ति = कल्याण को
+दधातु = देवै
+च = और
बृहस्पतिः = बृहस्पति देवगुरु
नः = हमारे लिये
स्वस्ति = कल्याण को
+दधातु = देवै

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः=हमारे तापत्रयों की शान्ति होवे ॥

अथ अथर्ववेदीयमुण्डकोपनिषद् ॥

मूलम् ॥

ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

ब्रह्मा देवानाम् प्रथमः संबभूव विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता सः ब्रह्मविद्याम् सर्वविद्याप्रतिष्ठाम् अथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
विश्वस्य	= सब सृष्टि का
कर्त्ता	= कर्त्ता
भुवनस्य	= जगत् का
गोप्ता	= रक्षक
देवानाम्	= इन्द्रादि देवतों में
प्रथमः	= प्रधान
ब्रह्मा	= धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य करके संपन्न हिरण्यगर्भ ब्रह्मा

अन्वयः	पदार्थ
संबभूव	= उत्पन्न होता भया
सः	= सोई
सर्वविद्याप्रतिष्ठाम्	= सब विद्याओंमें उत्तम
ब्रह्मविद्याम्	= आत्मविद्या को
ज्येष्ठपुत्राय	= अपने ज्येष्ठ पुत्र
अथर्वाय	= अथर्वा नामक ऋषिसे
प्राह	= भली प्रकार कहता भया

भावार्थ ॥

अब ब्रह्मविद्या की स्तुति के लिये प्रथम ब्रह्मविद्या के प्रवर्तकों का इतिहास लिखते हैं ।

ब्रह्मेति ॥ इन्द्रादिक जितने देवता हैं उन सब से पहले मायोपाधिक चेतनसे प्रथम चतुर्मुख ब्रह्माही उत्पन्न होताभया, वह ब्रह्मा सम्पूर्ण प्राणीमात्र का कर्त्ता याने रचनेवाला है, और वही सम्पूर्ण भुवनों का रक्षक भी है, अर्थात् पृथिवी आदिक जितने लोक हैं सबका वह पालक है, वह अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा के प्रति प्रथम ब्रह्मविद्या का उपदेश करता भया, वह ब्रह्मविद्या सम्पूर्ण विद्याओं में श्रेष्ठ है ॥ १ ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

अथर्वणे यां प्रवदेत ब्रह्माऽथर्वा तां पुरोवाचाङ्गिरे ब्रह्मविद्यां स भारद्वाजाय सत्यवाहाय प्राह भारद्वाजोऽङ्गिरसे परावराम् ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

अथर्वणे याम् प्रवदेत ब्रह्मा अथर्वा ताम् पुरा उवाच अङ्गिरे ब्रह्मविद्याम् सः भारद्वाजाय सत्यवाहाय प्राह भारद्वाजः अङ्गिरसे परावराम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
याम्	= जिस आत्मविद्याको
ब्रह्मा	= ब्रह्मा
अथर्वणे	= अथर्वा नामक ऋषि से
पुरा	= पहिले
प्रवदेत	= कहता भया
ताम्	= उसी
ब्रह्मविद्याम्	= ब्रह्मविद्या को
अथर्वा	= अथर्वाऋषि
अङ्गिरे	= अङ्गिरमुनिसे
उवाच	= कहता भया
+च	= और
सः	= वहअङ्गिरमुनि

अन्वयः	पदार्थ
भारद्वाजाय	= भरद्वाज गोत्र बिषे उत्पन्नहुये
सत्यवाहाय	= सत्यवाह नामक ऋषि से
प्राह	= कहता भया
इति	= इसप्रकार
परावराम्	= ब्रह्माआदिकोंसे चली आई हुई आत्मविद्या को
भारद्वाजः	= भरद्वाज गोत्र बिषे उत्पन्न हुआ सत्यवाहनामक ऋषि
अङ्गिरसे	= अङ्गिरसमुनिसे
प्राह	= कहता भया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

अथर्वणेयामिति ॥ जिस ब्रह्मविद्या को ब्रह्मा अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा के प्रति कहता भया उसी ब्रह्मविद्या को अथर्वा अपने शिष्य अङ्गिरा के प्रति कहता भया और अङ्गिरा अपने शिष्य भारद्वाज गोत्रवाला जो सत्यवाह नामक है उसके प्रति उसी ब्रह्मविद्या का उपदेश करता भया, और भारद्वाज अपने शिष्य अङ्गिरस के प्रति उसी ब्रह्मविद्या को कहता भया, इस प्रकार परम्परा करके प्राप्त हुई यह ब्रह्मविद्या चली आती है ॥२॥

मूलम् ॥

शौनको ह वै महाशालोऽङ्गिरसं विधिवदुपसन्नः पप्रच्छ कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवतीति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

शौनकः ह वै महाशालः अङ्गिरसम् विधिवत् उपसन्नः पप्रच्छ कस्मिन् नु भगवः विज्ञाते सर्वम् इदम् विज्ञातम् भवति इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
हवै =	प्रसिद्ध	शौनकः =	शुनकऋषिका पुत्र शौनक
महाशालः =	धन कुल विद्यादिसंपन्न श्रेष्ठगृहस्थाश्रमकाधारण करनेवाला और यज्ञोंका करनेवाला	विधिवत् =	यथाविधि याने गुरुशिष्यभाव से
		अङ्गिरसम् =	अङ्गिरस मुनि के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपसन्नः = समीपजाकर
इति = ऐसा
नुपप्रच्छ = पूंछता भया कि
भगवः = हे भगवन् !
कस्मिन् = किस एकके
विज्ञाते = विशेष जानने पर
इदम् = यह सब कार्य्य कारणका विवेक
विज्ञातम् = भलीप्रकार जाना हुआ
भवति = होता है

भावार्थ ॥

शौनकोहेति ॥ जिस ब्रह्मविद्या को अङ्गिरस प्राप्त होताभया उसी ब्रह्मविद्या का अब निरूपण करते हैं। शुनक नामक ऋषि का पुत्र जो बड़ाभारी दानी शौनक नाम करके प्रसिद्ध था वह समित्पाणि होकर अर्थात् हाथमें कुछ भेंटको लेकर ब्रह्मनेष्ठी ब्रह्मश्रोत्री जो भारद्वाज का शिष्य अङ्गिरसहै तिसके पास जाता भया और जाकर उनसे विधिपूर्वक इस तरह पूंछता भया कि हे भगवन् ! किस वस्तु के जानने से सम्पूर्ण यह कार्य कारण समुदाय जाना जाता है, जो सम्पूर्ण पदार्थों के विज्ञान का हेतु यथार्थ ज्ञान है उसको मेरे प्रति कृपाकरके कहिये ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

तस्मै स होवाच द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यद्ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः ह उवाच द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यत् ब्रह्मविदः वदन्ति परा च एव अपरा च ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
तस्मै	= उस शौनक मुनिसे	च	= और
ह	= विचार करके	+यत्	= जो
सः	= वह अङ्गिरस ऋषि	अपरा चएव	= अपराविद्याहै
उवाच	= कहताभया कि	द्वे विद्ये	= ये दोनोंविद्या
ह	= हे सौम्य !	वेदितव्ये	= जाननेयोग्यहैं
यत्	= जो	इति	= ऐसा
परा	= पराविद्या है	ब्रह्मविदः	= ब्रह्मवेत्ता लोग
		स्म	= निश्चय करके
		वदन्ति	= कहते हैं

भावार्थ ॥

तस्मैसहेति ॥ अब अङ्गिरसजी शौनकजी के प्रश्न के उत्तर को कहते हैं । हे शिष्य ! दो विद्या मुमुक्षुओं के जानने योग्य हैं, वे दोनों परा और अपरा नाम करके प्रसिद्ध हैं, दोनों में से जो अपराविद्या है, वह निष्काम कर्मोंके अनुष्ठान करने के वास्ते है, निष्काम कर्मों के अनुष्ठान से चित्त की शुद्धि होती है और चित्त की शुद्धिद्वारा पराविद्या का उपकारक है,इसीलिये परा-विद्या का कर्मकाण्डरूप अपरा विद्या साधन है, और उसका फल केवल अन्तःकरण की शुद्धि है, और पराविद्या का फल ब्रह्मकी प्राप्तिरूप मोक्ष है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिष मिति अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

तत्र अपरा ऋग्वेदः यजुर्वेदः सामवेदः अथर्ववेदः शिक्षा कल्पः व्याकरणम् निरुक्तम् छन्दः ज्योतिषम् इति अथ परा यया तत् अक्षरम् अधिगम्यते ॥

अन्वयः	पदार्थ
तत्र	= पूर्वोक्त दोनों विद्याओंमेंसे
ऋग्वेदः	= ऋग्वेद
यजुर्वेदः	= यजुर्वेद
सामवेदः	= सामवेद
अथर्ववेदः	= अथर्ववेद
शिक्षा	= शिक्षा (इस में अक्षरोंकी उत्पत्ति के स्थान और स्वर आदि-कों के उच्चा-रणका विवे-कहै कर्त्ता इस के पाणिनि मुनि हैं)
कल्पः	= विधिसूत्र (इस में गर्भाधान आदि संस्कारों की और अग्नि होत्रादि कर्मों की कर्त्तव्यता है कर्त्ता इसके कात्यायनमुनि हैं)
व्याकरणम्	= व्याकरण(इस में धातु प्रत्यय आदि शब्दोंका विवेक है कर्त्ता इसके पाणिनि मुनि हैं)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निरुक्तम् = निरुक्त (इसमें वैदिक और लौकिक शब्दों का और लिंगों का विवेक है कर्ता इसके यास्क मुनि हैं

छन्दः = छन्द इसमें गायत्री आदि छन्दों का विवेक है कर्ता इसके शेषनाग हैं

ज्योतिषम् = ज्योतिष इसमें सूर्य चन्द्रमा आदि ज्योतिश्चक्र गति द्वारा काल का ज्ञान है कर्ता इसके सूर्य भगवान् और गर्गमुनि हैं

इति = यह सब

अपरा = अपराविद्या है

अथ = और

यया = जिस विद्या द्वारा

तत् = वह वेदान्तप्रतिपाद्य

अक्षरम् = अविनाशी परब्रह्म (जिस का व्याख्यान अगले मन्त्र विषे है)

अधिगम्यते = पाया जाता है

+ सा = वह

परा = पराविद्या है

भावार्थ ॥

तत्रेति ॥ पूर्वोक्त दोनों विद्याओं के मध्य पराविद्या की प्राप्ति का उपायभूत जो अपराविद्या है उस को प्रथम दिखलाते हैं ॥ ऋग्, यजुः, साम, और अथर्व आदि चारों वेद, याज्ञवल्क्य कृत शिक्षाशास्त्र, कात्यायनप्रणीत कल्पशास्त्र, पाणिनिकृत व्याकरण शास्त्र, यास्कमुनिरचित निरुक्तशास्त्र, शे॰नागरचित पिङ्गल शास्त्र और सूर्य्यरचित ज्योतिश्शास्त्र ये सब अपरा विद्या हैं, अब जिस पराविद्या करके वह ब्रह्म जाना जाता है उसको कहते हैं, ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूलम् ॥

यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुःश्रोत्रं तदपाणिपादम् नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

यत् तत् अद्रेश्यम् अग्राह्यम् अगोत्रम् अवर्णम् अचक्षुःश्रोत्रम् तत् अपाणिपादम् नित्यम् विभुम् सर्वगतम् सुसूक्ष्मम् तत् अव्ययम् यत् भूतयोनिम् परिपश्यन्ति धीराः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	= जो	अचक्षुःश्रोत्रम्	= चक्षुश्रोत्रादि ज्ञानइन्द्रिय रहित है
तत्	= वह	अपाणिपादम्	= हस्तपादादिकर्मेन्द्रिय रहित है
अद्रेश्यम्	= ज्ञानेन्द्रियों का अविषय है	नित्यम्	= अविनाशी है
अग्राह्यम्	= कर्मेन्द्रियों करके अगृहीत है	विभुम्	= ब्रह्मासे स्थावर पर्यन्त सर्वव्यापी है
अगोत्रम्	= मूलकारणरहित है	च	= और
अवर्णम्	= नीलपीतादि वर्णरहित अथवा ब्राह्मणादि जाति रहित है	सुसूक्ष्मम्	= आकाशवत् अतिसूक्ष्म है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वगतम् = सबमें अनुगत है	धीराः = विवेकी पुरुष
+ अतः = इसलिये	भूतयोनिम् = भूतादिकों का कारण
तत् = वह	+ ज्ञात्वा = जानकरके
अव्ययम् = सदाएकरूप नाशरहित है	परिपश्यन्ति = सर्व ओर से देखतेहैं
यत् = जिसको	

भावार्थ ॥

यदिति ॥ जो वेद शास्त्र से प्रसिद्ध ब्रह्महै वह अदृश्य है, अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों का अविषय है, और कर्मेन्द्रियों करके अग्रहीत है, और मूलकारण जो गोत्रहै, तिससे रहित है और नील पीतादिक वर्णों सेभी रहितहै, और अपाणिपाद है अर्थात् हाथ पांव से भी रहित है,नित्य है,याने नाश से भी रहित है, व्यापक है, सर्वगत भी है, अतिसूक्ष्म है, अव्यय है, और सम्पूर्ण भूतों का योनि याने कारण भी है, जिस विद्या करके विद्वान्लोग ऐसे ब्रह्म को जानते हैं वही पराविद्या है ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्या मोषधयः संभवन्ति यथा सतः पुरुषात्केशलोमानि तथाऽक्षरात्संभवतीह विश्वम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

यथा ऊर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्याम् ओषधयः सम्भवन्ति यथा सतः पुरुषात् केशलोमानि तथा अक्षरात् सम्भवति इह विश्वम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
यथा	जैसे
ऊर्णनाभिः	मकड़ी
सृजते	अपनीइच्छा सेनाभिस्थित सूत्रजालको बाहर निकालकर विस्तार करती है
च	और फिर
गृह्णते	स्वेच्छा से ग्रहणकरतीहै यानी उदरगत करलेती है
+ च	और
यथा	जैसे
पृथिव्याम्	पृथिवी बिषे
ओषधयः	अन्नादि सब ओषधियां
सम्भवन्ति	उत्पन्नहोती हैंऔरपुनः उसीमेंलीन होजाती हैं

अन्वयः	पदार्थ
+ च	और
यथा	जैसे
सतःपुरुषात्	जीवितपुरुष से
केशलोमानि	केश और लोम
+सम्भवन्ति	उत्पन्नहोते हैं
तथा	वैसेही
इह	इससंसारमण्डलबिषे
विश्वम्	समस्तजगत्
अक्षरात्	पूर्वोक्त अविनाशी परमात्मासे
संभवति	ऊपर कहेहुये दृष्टान्तोंकेअनुसारउत्पन्न होताहै और उसी आत्मा में फिर लय होताहै

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

यथोर्णनाभिरिति ॥ सहकारी कारण से विनाही ब्रह्म जगत् को उत्पन्न करता है, इसी में प्रथम दृष्टान्त को कहते हैं ॥ जिस प्रकार मकड़ी दूसरेकी सहायता से विनाही तन्तुओं को अपने शरीर से बाहर निकालती है, और फिर उन्हीं को अपने शरीर मेंही समेट लेती है, और उन तन्तुओं का वह अभिन्ननिमित्त उपादान कारणहै और जैसे पृथिवी से अभिन्न होकर सब ओष-धियाँ उत्पन्न होती हैं, और फिर पृथिवी में ही लय होजाती हैं, अर्थात् ओषधियों के प्रति जैसे पृथिवी अभिन्ननिमित्त उपादान कारण है तैसेही ब्रह्म भी जगत् का अभिन्ननिमित्त उपादान कारणहै याने ब्रह्मसेही सब सृष्टि उत्पन्न होती है और ब्रह्ममेंही लय होती है ॥ प्र० ॥ अचेतन पृथिवी आदिकोंसे अचेतन ओष-धियों की उत्पत्ति होवै परन्तु चेतन ब्रह्म से तो अचेतन जगत् की उत्पत्ति नहीं होसक्ती है ॥ उ० ॥ जैसे चेतन जीवित पुरुषके शरीर में जड़केश और रोम उत्पन्न होते हैं तैसेही मायाविशिष्ट ब्रह्मसे यह सम्पूर्ण जगत् भी उत्पन्न होताहै केवल शुद्ध चेतनसे नहीं, इसी प्रकार ईश्वर ही जगत् का अभिन्ननिमित्त उपादान कारण सिद्ध होता है ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

तपसा चीयते ब्रह्म ततोऽन्नमभिजायते अन्नात्प्रा णो मनः सत्यं लोकाः कर्मसु चामृतम् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

तपसा चीयते ब्रह्म ततः अन्नम् अभिजायते अ-न्नात् प्राणः मनः सत्यम् लोकाः कर्मसु च अमृ-तम् ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
+ यदा	= जब
+ पूर्वम्	= प्रथम
ब्रह्म	= परब्रह्म
तपसा	= सृष्टिविषयक ज्ञानशक्तिकरके
चीयते	= स्थूलताकोप्राप्तहोताहैयाने बीजवत् अंकुरितहोनेकोगर्भितहोताहै
+ तदा	= तब
ततः	= उस ब्रह्म से
अन्नम्	= अव्याकृत याने प्रकृति
+ अभि जायते	= उत्पन्नहोतीहै
अन्नात्	= अव्याकृतसे
प्राणः	= सूत्रात्माहिरण्यगर्भ
+ अभि जायते	= उत्पन्न होता है

अन्वयः	पदार्थ
+ प्राणात्	= सूत्रात्माहिरण्यगर्भसे
मनः	= संकल्पविकल्परूप मन
+ अभि जायते	= उत्पन्न होता है
+ मनसः	= मनसे
सत्यम्	= अण्डसृष्टिपूर्वक आकाशादिपंचक
+ अभि जायते	= उत्पन्न होताहै
+ सत्यात्	= आकाशादिपंचकसे
लोकाः	= भूरादिसप्त लोक
+ अभिजायन्ते	= उत्पन्न होते हैं
+ लोकेषु	= लोकों केविषे
+ कर्माणि	= वर्णाश्रमों के कर्म
+ अभिजायन्ते	= उत्पन्न होते हैं
च	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्म्मसु = कर्मोंके बिषे अमृतम् = अविनाशी कर्मफल	+ अभिजायते = उत्पन्नहोताहै

भावार्थ ॥

तपसेति ॥ वह मायाविशिष्ट ब्रह्म ज्ञानरूपी तप करके वृद्धिको प्राप्त होताहै, अर्थात् वह ईश्वर सृष्टिके आदिकाल में " एकोहं बहुस्यां" मैं एकसे अनेक होजाऊं जब ऐसी इच्छावाला होताहै, तब तिस ईश्वर से अव्याकृत याने प्रकृति उत्पन्न होती है, तिस अव्याकृत से हिरण्यगर्भ उत्पन्न होता है, तिस हिरण्यगर्भ से समष्टिरूप मन उत्पन्न होताहै, उस समष्टिरूप मनसे पांच स्थूल भूत उत्पन्न होते हैं, तिन पांच स्थूलभूतों से फिर अण्डरूप ब्रह्माण्ड उत्पन्न होताहै, तिस ब्रह्माण्ड से पृथिवी आदिक सब लोक उत्पन्न होतेहैं, तिन लोकों में फिर मनुष्यादि जीव उत्पन्न होतेहैं, और मनुष्यों से वर्णआश्रमों के अग्निहोत्रादिक कर्म उत्पन्न होतेहैं, और कर्मोंसे फिर फल उत्पन्न होताहै ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्य ज्ञानमयं तपः तस्मादेत ब्रह्म नाम रूपमन्नं च जायते ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

यः सर्वज्ञः सर्ववित् यस्य ज्ञानमयम् तपः तस्मात् एतत् ब्रह्म नाम रूपम् अन्नम् च जायते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो पूर्वोक्त लक्षण वाला परमात्मा	सर्वज्ञः	= सामान्यतासे सबका जानने वाला है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ च = और	एतत् = यह सृष्टिका उपादानकारण
सर्ववित् = विशेषता से सबकाज्ञाताहै	ब्रह्म = हिरण्यगर्भ
च = और	च = और
यस्य = जिसका	नाम = नाम
ज्ञानमयम् = ज्ञान से परिपूर्ण	रूपम् = रूप
तपः = सृष्टिविषयक विचार है	च = और
तस्मात् = उस से	अन्नम् = भोग्यवस्तु
	जायते = सब उत्पन्न होता है

भावार्थ ॥

यइति ॥ जो अक्षररूप परमात्मा है, वह सर्व्वज्ञ है, अर्थात् सामान्यरूप करके सबको जानताहै, और वही ईश्वरहोकर सर्ववित्भी है, अर्थात् विशेषरूप करके भी सबको जानताहै, उसका ज्ञान ही तपहै, क्लेशरूप जीवोंकी तरह उसका तप नहीं है, उसी ज्ञानमय तपवाले से कार्य्यरूप हिरण्यगर्भ उत्पन्न होताहै, तिस हिरण्यगर्भ से सब नाम रूप व अन्नादिक उत्पन्न होतेहैं ॥ ६ ॥

इति प्रथममुण्डके प्रथमःखण्डः ॥ १ ॥

मूलम् ॥

तदेतत्सत्यं मन्त्रेषु कर्माणि कवयो यान्यपश्यं स्तानि त्रेतायां बहुधा संततानि तान्याचरथ नियतं सत्यकामा एष वः पन्थाः स्वकृतस्य लोके ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

तत् एतत् सत्यम् मन्त्रेषु कर्म्माणि कवयः यानि अपश्यन् तानि त्रेतायाम् बहुधा सन्ततानि तानि आचरथ नियतम् सत्यकामाः एषः वः पन्थाः स्वकृतस्य लोके ॥

अन्वयः	पदार्थ
+हेशिष्याः	हे शिष्यो !
कवयः	वसिष्ठादि ऋषीश्वर
मन्त्रेषु	अपर विद्याके मन्त्रों बिषे
यानि	जिन
कर्माणि	अग्निहोत्रादि कर्मों को
अपश्यन्	देखतेभये याने अनुष्ठान करते भये
तत्	वह
एतत्	यह अग्निहोत्रादि कर्मों का अनुष्ठान
सत्यम्	स्वर्गफलका साधनहै
+ च	और
तानि	वे अग्निहोत्र आदिकर्म
त्रेतायाम्	वेदत्रयबिषे
बहुधा	अनेकप्रकारसे
सन्ततानि	प्रवृत्तहैं
+ यूयम्	तुमलोग
सत्यकामाः	यथायोग्य फलकीकामनावाले
तानि	उनकर्मोंको
नियतम्	नित्य
आचरथ	अनुष्ठानकरो
+ हि	क्योंकि
स्वकृतस्य	अपनेकिये हुयेकर्मके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोके = फलकी प्राप्ति बिषे	एषः = यही
वः = तुम्हारे लिये	पन्थाः = मार्ग
	+अस्ति = है

भावार्थ ॥

पूर्व खण्ड में जो परा और अपरा विद्याका कथन किया है, उनके विषय भिन्न २ हैं, एकसे संसार मिलता है, और दूसरेसे मोक्ष, तिसीको अब दूसरे खण्ड में दिखलाते हैं ॥ तदेतदिति ॥ वसिष्ठादिक ऋषियों ने जिन अग्निहोत्रादिक कर्मों को अपराविद्या ऋगादि वेदों के मंत्रोंकरके विधिपूर्वक त्रेतायुग में अनुष्ठान कियेहैं, वे सब स्वर्ग फलके साधन हैं, और वे वेदत्रय में अनेक प्रकार के हैं, हे शिष्यो ! उन कर्मोंको यथायोग्य फलकी इच्छा वाले होकर तुमलोग भी करो, क्योंकि वे कर्म्म तुम्हारे को शुभ फलकी प्राप्तिका साधन होंगे, इसलिये इनका अवश्य करनाही तुमको उचित है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

यदा लेलायते ह्यर्चिः समिद्धे हव्यवाहने तदाऽऽज्यभागावन्तरेणाहुतीः प्रतिपादयेच्छ्रद्धया हुतम् ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

यदा लेलायते हि अर्चिः समिद्धे हव्यवाहने तदा आज्यभागौ अन्तरेण आहुतीः प्रतिपादयेत् श्रद्धया हुतम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यदा	= जब	हव्यवाहने	= अग्निबिषे
समिद्धे	= सम्यक्प्रज्वलित	अर्चिः	= ज्वाला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेलायते = भलीप्रकार उठरहीहै

तदा = तब

आज्यभागौ = अग्निकेदक्षिण और वाम पार्श्व में याने बगल में आज्यभागों को

+दत्त्वा = देकर

अन्तरेण = अग्निकुण्ड केमध्यबिषे

श्रद्धया = श्रद्धापूर्वक

आहुतीः = आहुतियोंको

प्रतिपादयेत् = प्रतिपादन करै याने देवे

तत् = ऐसा होम

कृतम् = श्रेष्ठहोमहोता है

नोट—आज्यभागौ आघारभाग और आज्यभाग दोशब्दहैं, आघारभाग वहहै जो होमके प्रथम अग्नि के दक्षिण पार्श्वमें आहुती दीजाय, और आज्यभाग वह है जो अग्निकुण्ड के वामपार्श्व में होम दियाजाय, पीछे इनके प्रधान होम उद्देश्यनिमित्त मध्यकुण्ड में दियाजाय ॥

भावार्थ ॥

यदेति ॥ सम्पूर्ण कर्मों में से अग्निहोत्रकर्म कीही प्रधानता है इसलिये प्रथम अग्निहोत्र कर्म कोही दिखलाते हैं ॥ जिस कालमें लकड़ियों करके सम्यक् प्रकार ज्वलित अग्नि बिषे ज्वाला भलीप्रकार उठरही है तिस समय में हवन करनेके योग्य जो द्रव्यहैं उनको अग्नि में सूर्य्यादि देवतों के निमित्त डालै यह कहकर ॥ अग्नयेस्वाहा, सोमायस्वाहा ॥ २ ॥

मूलम् ॥

यस्याग्निहोत्रमदर्शमपौर्णमासमचातुर्मास्यमनाग्रयणमतिथिवर्जितञ्च अहुतमवैश्वदेवमविधिना हुतमासप्तमांस्तस्यलोकान् हिनस्ति ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

यस्य अग्निहोत्रम् अदर्शम् अपौर्णमासम् अचातुर्मास्यम् अनाग्रयणम् अतिथिवर्जितम् च अहुतम् अवैश्वदेवम् अविधिना हुतम् आसप्तमान् तस्य लोकान् हिनस्ति ॥

अन्वयः	पदार्थ
यस्य	जिस अग्निहोत्रीका
अग्निहोत्रम्	अग्निहोत्रकर्म
अदर्शम्	अमावास्याको विशेषविधिकर के रहित है
अपौर्णमासम्	पूर्णमासीकोविशेषविधिसे रहित है
अचातुर्मास्यम्	चातुर्मास्यइष्टिसेरहित है अर्थात् श्रावणादि चारमहीनोंमें विशेष होम विधानसेरहित है
अनाग्रयणम्	शरद् वसन्त ऋतु विशेष नवान्न इष्टि करके रहित है
अतिथिवर्जितम्	अतिथिकी सेवासेवर्जित है
च	और
अहुतम्	सायंप्रातःहोम करके रहितहै
अवैश्वदेवम्	नित्य बलिवैश्वदेवसे वर्जित है
अथवा	अथवा
अविधिनाहुतम्	विधिकरके विरुद्धहोम कियागयाहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तस्य = ऐसे अग्निहोत्रीका अग्निहोत्रकर्म	आसप्तमान् = भूरादिसप्तलोकपर्यन्त लोकान् = लोकों को हिनस्ति = नष्ट करता है

भावार्थ ॥

यस्येति ॥ पूर्वोक्त अग्निहोत्र कर्म जो अपराविद्या करके प्रतिपाद्य है उसके विघ्नसे जो फल होताहै उसको दिखलाते हैं ॥ जिस अग्निहोत्रीका अग्निहोत्रकर्म पूर्णमासी और अमावास्या को विशेषविधि से रहितहै, और चतुर्मासमें या शरद् वसन्त ऋतु में जब नवीन अन्न उत्पन्न होता है तिस अन्नकरके अग्निहोत्र कर्म नहीं करता है, और जो अग्निहोत्री अतिथि का सत्कार नहीं करताहै, और वैश्वदेव श्राद्ध नहीं करता है, और शास्त्रकी विधिके अनुसार प्रतिदिन अग्निहोत्रकर्म नहीं करता है, या अश्रद्धा करके अग्निहोत्रकर्म को करता है, तिस अग्निहोत्री के सातों लोक नष्ट होजाते हैं, या उसके सात कुल नष्ट होजाते हैं, अर्थात् दुर्गति को प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमाना इति सप्तजिह्वाः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमानाः इति सप्तजिह्वाः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
या	जो
काली	काली
च	और
कराली	कराली
च	और
मनोजवा	मनोजवा
च	और
सुलोहिता	सुलोहिता
च	और
सुधूम्रवर्णा	सुधूम्रवर्णा
+च	और
स्फुलिङ्गिनी	स्फुलिङ्गिनी
+च	और

अन्वयः	पदार्थ
देवीविश्वरूपी	देवीविश्वरूपी
इति	ऐसेनामोंकरकेप्रसिद्ध हैं
ताः	सोई
अग्नेः	अग्निकी
सप्त	सात
लेलायमानाः	होम द्रव्य के ग्रहणकरने को लय करने वाली
जिह्वाः	जिह्वा हैं

भावार्थ ॥

कालीति ॥ अब अग्नि की सप्त जिह्वोंका निरूपण करते हैं काली १ कराली २ मनोजवा ३ सुलोहिता ४ सुधूम्रवर्णा ५ विस्फुलिङ्गिनी ६ विश्वरूपी ७ आहुति ये अग्निकी जिह्वा हैं इन सप्तजिह्वाओं करके होमद्रव्य को अग्नि ग्रहण करती है ॥४॥

मूलम् ॥

एतेषु यश्चरते भ्राजमानेषु यथाकालं चाहुतयो ह्याददायन् तन्नयन्त्येताः सूर्यस्य रश्मयो यत्र देवानां पतिरेकोऽधिवासः ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

एतेषु यः चरते भ्राजमानेषु यथा कालम् च आहु-तयः हि आददायन् तम् नयन्ति एताः सूर्यस्य रश्मयः यत्र देवानाम् पतिः एकः अधिवासः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
च यः	= और जो हवनकर्त्ता	रश्मयः	= किरणरूप
भ्राजमानेषु	= प्रज्वलित	भूत्वा	= होकर
एतेषु	= अग्निकी इनसातजिह्वाओंबिषे	तम्	= उसअग्निहोत्रीको
यथाकालम्	= समयानुकूल और विधिवत्	आददायन्	= लेकर
चरते	= होमकरताहै	तत्र	= उसलोकबिषे
हि	= निश्चयकरके	नयन्ति	= प्राप्तकरती हैं
एताः	= वे	यत्र	= जिस लोक बिषे
आहुतयः	= आहुतियां	देवानाम्	= देवतों का
सूर्यस्य	= सूर्यके	एकः	= मुख्य
		पतिः	= स्वामी इन्द्र
		अधिवासः	= निवासकरताहै

भावार्थ ॥

एतेष्विति ॥ पूर्वोक्त सप्त जिह्वाओं के फलको अब दिखलाते हैं ॥ जो अग्निहोत्री पूर्वोक्त अग्निकी सप्त जिह्वाओंमें विधिपूर्वक व समयानुकूल होम करता है तो यजमान करके अग्नि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में फेंकीहुई आहुतियां सूर्य्य की किरणों के साथ तादात्म्यता को प्राप्त होकर यजमान को उस स्वर्गलोक में प्राप्त करदेती हैं जहां देवतों का स्वामी इन्द्र ऐश्वर्य्य करके सम्पन्न सिंहासन पर विराजमान है ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

एह्येहीति तमाहुतयः सुवर्चसः सूर्यस्य रश्मिभिर्यजमानं वहन्ति प्रियां वाचमभिवदन्त्योऽर्चयन्त्य एष वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्मलोकः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

एहि एहि इति तम् आहुतयः सुवर्चसः सूर्यस्य रश्मिभिः यजमानम् वहन्ति प्रियाम् वाचम् अभिवदन्त्यः अर्चयन्त्यः एषः वः पुण्यः सुकृतः ब्रह्मलोकः ॥ ६ ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सुवर्चसः =	प्रकाशमान हैं तेज जिनके ऐसी	पुण्यः=पुण्यैः =	पुण्योंकरके
आहुतयः =	आहुतियां	सुकृतः =	साधन कियाहुआ यानीभली प्रकारप्राप्त कियाहुआ
एहिएहिइति =	आवो आवो इसप्रकार	एषः =	यह
आह्वयन्त्यः =	बुलाती हैं	ब्रह्मलोकः =	स्वर्गलोकहै
च =	और	इति =	ऐसी
अर्चयन्त्यः =	आदरकरती हैं कि	प्रियाम् =	प्रिय
वः =	तुम्हारे		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाचम् = वाणीको
अभिवदन्त्यः = कहतीहुई
सूर्यस्य = सूर्य के
रश्मिभिः = किरणोंद्वारा
तम् = उस
यजमानम् = यजमानकोया नेयज्ञकर्ता को
+मृतेः पश्चात् = मरनेपीछे
वहन्ति = स्वर्गादि लोकों बिषेप्राप्तकरती हैं

भावार्थ ॥

एहीति ॥ जिस कालमें अग्निहोत्री शरीर का त्याग करके स्वर्गको जानेलगता है, तब सब आहुतियें उसको सहित आदर के पुकारती हैं, आओ २ तुम्हारे पुण्यकर्मों करके प्राप्त कियाहुआ यह स्वर्गलोक है, हम तुमको वहां ले चलने को तैयार हैं, ऐसी प्रियवाणी को बोलती हुई जो सूर्य्य के किरणों के द्वारा आहुतियां हैं,यजमान को स्वर्गलोक में प्राप्त करदेती हैं ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्म एतच्छ्रेयो येऽभिनन्दन्ति मूढा जरामृत्युं ते पुनरेवापियन्ति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

प्लवाः हि एते अदृढाः यज्ञरूपाः अष्टादश उक्तम् अवरम् येषु कर्म एतत् श्रेयः ये अभिनन्दन्ति मूढाः जरामृत्युम् ते पुनः एव अपियन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
येषु	जिन यज्ञआदिकर्मोंके बिषे	अवरम्	अश्रेष्ठ
		कर्म्म	कर्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उक्तम्=अपराविद्या करके कहा गया है
तेषु=उनबिषे
हि=निश्चयकरके
एते=ये
अष्टादश=अठारहअर्थात् १६ ऋत्विक् १ यजमान १ उसकीपत्नी
यज्ञरूपः=यज्ञके साधक
अदृढाः=नाशवान्
प्लवाः=नौका हैं
एतत्=यह कर्ममार्ग
श्रेयः=कल्याणकारक है
इति=ऐसा
+ज्ञात्वा=जानकर
ये=जो
मूढाः=मूर्ख
अभिनन्दन्ति=हर्षितहोते हैं
ते=वे
पुनःएव=फिरफिर
जरामृत्युम्=जरामरण भावको
अपियन्ति=प्राप्तहोते हैं

भावार्थ ॥

प्लवाइति ॥ वैराग्य के लिये कर्म्म की निन्दाको करते हैं ॥ यह जो यज्ञरूपी नौका है, जिस में १६ ऋत्विज् एक यजमान दूसरी उसकी पत्नी सब मिलकर १८ हैं, वह यज्ञकर्त्ताको संसाररूपी समुद्रसे पार करनेको असमर्थ हैं, मगर जे मूढ़पुरुष उपासना से रहित हैं, वे इसी नौकाको मोक्षका साधन जानकर उसी में लिपटते हैं, और हर्षको प्राप्त होते हैं, और किंचित्काल स्वर्ग में निवास करके फिर जरामरण को प्राप्त होते हैं ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः जङ्घन्यमानाः परियन्ति मूढा अन्धे नेव नीयमाना यथाऽन्धाः ॥ ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

अविद्यायाम् अन्तरे वर्त्तमानाः स्वयम् धीराः पण्डितम्मन्यमानाः जङ्घन्यमानाः परियन्ति मूढाः अन्धेन इव नीयमानाः यथा अन्धाः ॥

अन्वयः	पदार्थ
ये	जो लोक
अविद्यायाम्	अविद्याके
अन्तरे	बिषे
वर्त्तमानाः	विद्यमान हैं
च	और
यथास्वयम्	हमहीं
धीराः	बुद्धिमान्
पण्डितम्मन्यमानाः	पण्डित हैं ऐसा अपनेको माननेवाले हैं
ते	वे
मूढाः	मूर्ख
जङ्घन्यमानाः	जन्म जरा व्याधि आदिदुःखोंसे पीड़ित होते हुये
परियन्ति	जन्ममरणभाव में ऐसे भ्रमते हैं
इव	जैसे
अन्धाः	अंधेलोक
अन्धेन	अंधेपुरुषकरके
नीयमानाः	लेजायेजातेहुये
+ गर्तादिषु	गढ़ेआदिकोंमें
+ पतन्ति	गिरतेहैं और क्लेश उठातेहैं

भावार्थ ॥

अविद्यायामिति ॥ अविद्याका कार्य जोकि कर्म है उन्हीं में मूढ़ विवेक से शून्य पुरुष अपने को बुद्धिमान् पण्डित मानतेहुये अहर्निश लगे रहते हैं, और निरन्तर क्लेश को प्राप्तहोते रहते हैं, और वही बार२ जरा मरणादि अनर्थों को प्राप्त होतेही रहते हैं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और दूसरोंको भी उपदेश करके अनेकप्रकार के अनर्थों कोही कर्मोंद्वारा प्राप्त करते रहते हैं वे वैसेही हैं, जैसे कि एक अन्धा दूसरे अन्धोंको मार्गपर चलाने के लिये लेजाय और दोनों अन्धे गड्ढे में गिरैं, जब अन्धाकर्मी गुरु है तो उस करके उपदेश कियाहुआ अन्धा शिष्य भी अन्धा होताहुआ जन्म मरणरूपी गड्ढों में गिरकर अनेकप्रकार के क्लेशको पाता है ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

अविद्यायां बहुधा वर्त्तमाना वयं कृतार्था इत्यभिमन्यन्ति बालाः यत्कर्मिणो न प्रवेदयन्ति रागात्तेनातुराः क्षीणलोकाश्च्यवन्ते ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

अविद्यायाम् बहुधा वर्त्तमानाः वयम् कृतार्थाः इति अभिमन्यन्ति बालाः यत् कर्मिणः न प्रवेदयन्ति रागात् तेन आतुराः क्षीणलोकाः च्यवन्ते ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यत्	जो	वयम्	हमहीं
कर्मिणः	कर्मीलोक	कृतार्थाः	कृतकृत्य हैं
बहुधा	अनेक प्रकार के	इति	ऐसा
अविद्यायाम्	अविद्या के बिषे	अभिमन्यन्ति	अभिमान करते हैं
वर्त्तमानाः	वर्तमान हैं	च	और
+च	और	रागात्	कर्म फल की प्रीतिकेकारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नप्रवेदयन्ति = कर्मफल के भागके अंतबिषे अपने पतनको नहीं जानते हैं
तेन=ऐसेअज्ञानकरके
आतुराः=पीड़ित होतेहुये
क्षीणलोकाः= कर्मफलकी समाप्तिहोने से क्षीण हुये हैं लोक जिनके ऐसे
+ ते=वे
बालाः=मूढ़
च्यवन्ते= स्वर्गादि लोक से च्युत होते हैं यानेमनुष्यलोकादि अधोलोक को प्राप्तहोते हैं

भावार्थ ॥

अविद्यायामिति॥ अविद्याकार्य जो कर्महै उस बिषे अभिमान से युक्त और आत्मज्ञान से शून्य पुरुष अपनेकोही कृतकृत्य मानते हैं, और कर्म करके सहित अभिमान के मतंग की तरह चिक्कारते हैं कि हम बड़े कर्मकाण्डी हैं, हमारे तुल्य दूसरा कौन कर्मोंका करनेवाला है, ऐसे मूढ़ अज्ञानी कर्मों के करनेमेंही अतिरागी हैं, और कर्मोंमें अतिरागी होनेसे वह आत्मतत्त्व को नहीं जानते हैं. इसीवास्ते दुःखी हैं क्योंकि जब उनके कर्मोंका फल समाप्त होजाता है, तब वे स्वर्गसे गिरपड़ते हैं ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

इष्टापूर्त्तं मन्यमाना वरिष्ठं नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रमूढाः नाकस्य पृष्ठे ते सुकृतेनुभूत्वेमं लोकं हीनतरञ्चाविशन्ति ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

इष्टापूर्तम् मन्यमानाः वरिष्ठम् न अन्यत् श्रेयः वेदयन्ते प्रमूढाः नाकस्य पृष्ठे ते सुकृते अनुभूत्वा इमम् लोकम् हीनतरम् च आविशन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+ये	जो कर्मी लोक	ते	वे
इष्टम्	यज्ञ अग्निहोत्रादि श्रौत कर्म को	प्रमूढाः	अतिमूर्ख
		नाकस्य	स्वर्ग के
		पृष्ठे	मध्यबिषे
+च	और	सुकृते=सुकृतम्	कर्मफलको
पूर्तम्	वापीकूपतडागादिस्मार्तकर्म कोही	अनुभूत्वा	भोग करके
		+कर्मफलक्षये	कर्मफलकेक्षय होनेपर
वरिष्ठम्	श्रेष्ठ		
मन्यमानाः	माननेवाले हैं	इमम्	इस
+च	और	लोकम्	मनुष्यलोकको
अन्यत्	आत्मज्ञान	च	या
श्रेयः	श्रेयकासाधनहै	हीनतरम्	पशुयोनिनरक आदिहीनलोक को
+इति	ऐसा		
न	नहीं		
वेदयन्ते	जानते हैं	आविशन्ति	प्राप्तहोते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

इष्टेति ॥ वैदिक यज्ञादिक कर्मों का नाम इष्टकर्म है, और वापी, कूप, तड़ागादिक स्मार्तकर्म्मों का नाम पूर्तकर्म्म है, इन्हीं कर्मोंको कर्मियों ने कल्याण का साधन मान रक्खा है, इसीसे वे मूढ़ हैं क्योंकि अनित्यफल जो पशु, पुत्रादिक हैं उन्हीं को उत्तम फल मानते हैं, और आत्मज्ञान जो कल्याण का साधक है, उसको वे नहीं जानते हैं, और वे कर्मी स्वर्ग में जाकर अपने सुकृतकर्मोंके फलको भोग करके फिर इस मनुष्य लोकमें आकर हीन, उत्तम, मध्यम व कनिष्ठ योनियों में जन्म लेते हैं, और घटीयन्त्रकी तरह संसारचक्रमें भ्रमते रहते हैं ॥ १० ॥

मूलम् ॥

तपःश्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये शान्ता विद्वांसो भैक्ष्यचर्यां चरन्तः सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति यत्रामृतः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ॥

तपः श्रद्धे ये हि उपवसन्ति अरण्ये शान्ताः विद्वांसः भैक्ष्यचर्याम् चरन्तः सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति यत्र अमृतः सः पुरुषः हि अव्ययात्मा ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
हि	=निश्चय करके	विद्वांसः	=विद्वान् गृहस्थी हैं
शान्ताः	=ज्ञान है प्रधान जिनको ऐसे	+च	=और
ये	=जो अपराविद्या के उपासक	+ये	=जो
		भैक्ष्यचर्याम्	=भिक्षाचार को
		चरन्तः	=धारण करते हुये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरण्ये=वानप्रस्थाश्रमबिषे
तपःश्रद्धे=तप नाम शास्त्रोक्तस्वाश्रम धर्म्म और श्रद्धा नामहिरण्यगर्भकी उपासनाको
उपवसन्ति=अनुष्ठानकरतेहैं
ते=वे
विरजाः= विरजसः=शुद्धकर्म्म के आचरण से निर्म्मल होते हुये
सूर्यद्वारेण=उत्तरायणमार्ग द्वारा
तत्र=उस सत्यलोक बिषे
प्रयान्ति=प्राप्त होते हैं
यत्र=जिस लोक बिषे
अमृतः=अमृत स्वरूप प्रथम उत्पन्न हुवा
अव्ययात्मा=अविनाशी स्वभाववाला
सः=वह
पुरुषः=हिरण्यगर्भ पुरुषस्थितहै

भावार्थ ॥

कर्मियों के फलकी प्राप्ति को कहकर अब सगुणब्रह्म की उपासना के सहित आश्रमी कर्मों को और उनके फल ब्रह्मलोक की प्राप्ति को कहते हैं ॥ तपःश्रद्धेय इति ॥ जो पुरुष वानप्रस्थ आश्रम में स्थित होकर वनमें एकान्त देश बिषे रहकर अपने आश्रम के अनुसार विहितकर्मों को और हिरण्यगर्भादिकों की उपासना को करते हैं, और जो गृहस्थ में ही रहकर इन्द्रियों को अपने वश में करके अपरा विद्या की उपासना और कर्मों को करते हैं, और जो यतीलोक भिक्षाचरणको करते हुये कर्म उपासना को करते हैं, वे सब पापकर्मों से रहित होकर सूर्य्यद्वारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तरायणमार्ग होकर सत्य ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं, जिस में शास्त्रप्रसिद्ध सब देवता निवास करते हैं ॥ ११ ॥

मूलम् ॥

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेद मायान्नास्त्यकृतः कृतेन तद्विज्ञानार्थं सगुरुमेवाभि गच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ॥

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणः निर्वेदम् आयात् न अस्ति अकृतः कृतेन तद्विज्ञानार्थम् सः गुरुम् एव अभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियम् ब्रह्मनिष्ठम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+एवम्	इसप्रकार	+येपरिणामेनश्वराःजन्मजरामरपादाः	जो परिणाम में नाशमान और जन्म जरा मरण के देनेवाले हैं
कर्मचितान्	कर्मोंकरके प्राप्त	+तान्	उनको
लोकान्	दक्षिणायन औरउत्तरायण मार्ग्ग से पाने योग्य स्वर्गादि लोकों को	परीक्ष्य	भली प्रकार से विचार करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मणः=मुमुक्षुपुरुष
निर्वेदम्=वैराग्य को
आयात्=दृढ़ता से प्राप्त करे
+यतः=जिस कारण
अकृतः=कर्मरहितनित्य-रूप परमात्मा
कृतेन=कर्मकरके
न अस्ति=प्राप्तहोनेयोग्य नहीं है
+अतः=इसीकारण
सः=वह विचारवान् मुमुक्षु पुरुष
तद्विज्ञानार्थम्=उस परमात्माके जानने के अर्थ
समित्पाणिः=गुरुपूजाकी सामग्रीकोहाथमेंलेकर
श्रोत्रियम्=वेद वेदान्तों का पारंगत
+च=और
ब्रह्मनिष्ठम्=आत्मज्ञानविषे निपुण
गुरुम् एव=गुरुकेही
अभिगच्छेत्=शरण में जावै

भावार्थ ॥

परीक्ष्येति ॥ दक्षिण और उत्तरमार्गद्वारा कर्मों करके प्राप्तहैं जो लोक उनमें कर्मों के फलरूप भोग को शास्त्र अनुमान से अनित्य निश्चय करके अधिकारी मुमुक्षु पुरुष उनसे वैराग्य को प्राप्त होवे, क्योंकि कर्मों करके नित्यब्रह्म की प्राप्तिरूप मोक्ष नहीं होता है, जो मुमुक्षु ब्रह्म के स्वरूप को जानने की इच्छा करै वह हाथ में कुछ भेंट लेकर आचार्य्य के समीप जावै, वह आचार्य्य कैसाहो ब्रह्मनेष्ठी हो, और ब्रह्मश्रोत्रिय भीहो, यदि वह केवल ब्रह्मनेष्ठी ही होगा तो शिष्य के संशयों को दूर नहीं करसकेगा, क्योंकि उसको उक्ती युक्ती नहीं फुरैगी, इसी लिये वह ब्रह्मश्रोत्रिय भी हो, अर्थात् वेदान्त शास्त्र पढ़ा भी होय, यदि केवल ब्रह्मश्रोत्रियही हो अर्थात् वेदशास्त्र केवल पढ़ा हो मगर आत्मदर्शी नहीं है, तो उसके उपदेश से भी मुमुक्षु को बोध नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होगा, अर्थात् आत्मा का साक्षात्कार नहीं होगा, इस लिये वह ब्रह्मनेष्ठी भी हो, ऐसेही गुरु से आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है, इतर वाचक ज्ञानी से नहीं ॥ १२ ॥

मूलम् ॥

तस्मै स विद्वानुपसन्नाय सम्यक् प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम् ॥ १३ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मै सः विद्वान् उपसन्नाय सम्यक् प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय येन अक्षरम् पुरुषम् वेद सत्यम् प्रोवाच ताम् तत्त्वतः ब्रह्मविद्याम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सम्यक् प्रशान्त चित्ताय	= दृढ़ वैराग्य करके विरक्त है चित्त जिसका	तस्मै	=उस शिष्य के अर्थ
+च	=और	येन	=यया=जिस विद्याकरके
शमान्विताय	= बाह्याभ्यंतर कामनाओं से विरक्तहै जो ऐसे	सत्यम्	=सत्य
उपसन्नाय	=शरण में आये हुये	अक्षरम्	=अविनाशी
		पुरुषम्	=परमात्मा को
		तत्त्वतः	=यथार्थ
		वेद	=विद्यात्=वह जानसकै
		तांब्रह्मविद्याम्	=उस ब्रह्म-विद्या को
		सः	=वह

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्वान्=श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरु	प्रोवाच=ब्रूयाद्=उपदेश करै

इति प्रथममुण्डके द्वितीयःखण्डः ॥ २ ॥

भावार्थ ॥

तस्मइति॥जो ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मश्रोत्रिय गुरु है वह शास्त्रोक्तविधि करके शांतचित्त, साधनचतुष्टयसम्पन्न, अधिकारी को जिसने बाह्येन्द्रियों को और मनको अपने वश में करलिया है वेदान्त शास्त्र करके प्रतिपाद्य ब्रह्मविद्या का उपदेश करै, जिस करके अक्षर ब्रह्मको वह जान लेवै ॥ १३ ॥

इति प्रथममुण्डके द्वितीयःखण्डः ॥ २ ॥

मूलम् ॥

तदेतत्सत्यं यथा सुदीप्तात् पावकाद्विस्फुलिङ्गाः सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः तथाऽक्षराद्विविधाः सौम्य भावाः प्रजायन्ते तत्र चैवापि यन्ति ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

तत् एतत् सत्यम् यथा सुदीप्तात् पावकात् विस्फुलिङ्गाः सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः तथा अक्षरात् विविधाः सौम्य भावाः प्रजायन्ते तत्र च एव अपि यन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सौम्य=	हे सौम्य शौनक	एतत्=	यह क्षर और अक्षरसे अतीत पुरुष
तत्=	वह		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्यम्=परमार्थ करके सत्य है
यथा=जैसे
सुदीप्तात्=भली प्रकार प्रज्वलित
पावकात्=अग्नि से
सरूपाः=अग्निकेसमान
सहस्रशः=अनेक प्रकार की
विस्फुलिङ्गाः=चिनगारियां
प्रभवन्ते=उत्पन्न होती हैं
तथा=तैसेही
अक्षरात्=मायोपाधि पुरुष याने ईश्वर से
विविधाः=अनेक देहोपाधि
भावाः=जीव
प्रजायन्ते=उत्पन्न होते हैं
च=और
तत्रएव=उसी ईश्वर में
अपियन्ति=लीन होजाते हैं

भावार्थ ॥

मुण्डक के प्रथम खण्ड में फल के सहित अपराविद्या का विषय जो कर्म है उनको कहा अब पराविद्या का विषय जो ब्रह्महै तिस ब्रह्मके स्वरूपके जानने के लिये मुण्डकके दूसरे खण्ड का आरम्भ करते हैं ॥ तदेतदिति ॥ यह जो वक्ष्यमाण अक्षर ब्रह्म है वह सद्रूप है, याने त्रिकालाबाध है, अर्थात् तीनों काल में तिसका बाध नहीं होता है ॥ (प्र०) जैसे धर्माऽधर्म का प्रत्यक्ष नहीं होता है परन्तु शास्त्र करके और अनुमान करके जाने जाते हैं तैसेही ब्रह्मभी प्रत्यक्ष नहीं है केवल अनुमान करकेही जानाजाताहै (प्र०) जब मुमुक्षुको तिस अक्षर ब्रह्मका प्रत्यक्ष नहीं भया तब वह मुक्त कैसे होवेगा किन्तु नहीं होवेगा ॥ (उ०) जीवात्मा नित्यही अपरोक्ष है, और उसके साथ ब्रह्मका अभेद है, इस लिये ब्रह्म सब को सदा अपरोक्षही है, इसी में दृष्टान्त को कहते हैं ॥ जैसे सुष्ठु दीप्यमान अग्नि से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनन्त चिनगारियें अग्नि के समान रूपवाली निकलती हैं, और फिर तिसी में लयहोजाती हैं, तैसे माया करके युक्त ब्रह्मसे नाना देहोपाधियों के भेद से अनेकजीव उत्पन्नहोते हैं, और देह की उत्पत्तिहोने से जीव चेतन की भी उत्पत्ति कही जाती है, वास्तव से चेतनकी उत्पत्ति कभीहोती नहीं, और देहोपाधियों के लय होने पर तिसी अक्षर ब्रह्म में जीव भी लय होजाते हैं ॥ १ ॥

मूलम् ॥

दिव्यो ह्यमूर्तः पुरुषः सबाह्याभ्यन्तरो ह्यजः
अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो ह्यक्षरात्परतःपरः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

दिव्यः हि अमूर्त्तः पुरुषः स बाह्याभ्यन्तरः हि अजः
अप्राणः हि अमनाः शुभ्रः हि अक्षरात् परतः परः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सः	=वहपरमपुरुष	बाह्याभ्यन्तरः	=चराचर जगत्केबाह्याभ्यन्तर बिषे व्याप्त है
हिहिहि	=अत्यन्त निश्चय करके	अजः	=अजन्मा है
दिव्यः	=अलौकिक और स्वयंप्रकाश है	अप्राणः	=चलनात्मक प्राण वायुरहित है अर्थात् कर्मेन्द्रियों से रहित है
अमूर्त्तः	=रूपरहित है		
पुरुषः	=परिपूर्ण और सब शरीरों बिषे शयन करनेवालाहै		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमनाः = { संकल्पविकल्पात्मकमन से रहित है यानी ज्ञान इन्द्रियों से रहित है

शुभ्रः = { सर्वउपाधियों से रहित होनेकेकारण शुद्ध है

अतः = इसीकारण

अक्षरात् = { नामरूप उपाधिका बीजभूत हिरण्यगर्भ से

हि = च = और

परतः = मायोपाधि ईश्वरसे भी

परः = परे है

भावार्थ ॥

दिव्यइति ॥ जीवकी उत्पत्ति और प्रलयका हेतु जो उपाधि है उसको बीच में डालकरके जीव ब्रह्म की एकता कही है, अब इस मंत्र में तिसी अक्षर का उपाधि से रहित जो स्वरूप है उसको कहते हैं ॥ दिव्यइति ॥ वह ब्रह्म कैसा है दिव्य है याने दीप्तिमान् है, अर्थात् लौकिक प्रकाश से विलक्षण उसका प्रकाश है, फिर वह अमूर्त्त है, और अमूर्त्त होने सेही वह पूर्ण भी है, अर्थात् शरीरों के बाहर भीतर आकाशवत् व्यापक है, और जन्मादिकों से रहित है, वायुरूपी प्राणों से भी रहित है, और संकल्प विकल्परूपी मन से भी रहित है, इसी से वह शुद्ध है, और मायाविशिष्ट चेतन जो ईश्वर है उससे भी वह श्रेष्ठहै ॥२॥

मूलम् ॥

एतस्माज्जायते प्राणो मनः सर्वेन्द्रियाणि च
खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी ॥ ३ ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

एतस्मात् जायते प्राणः मनः सर्वेन्द्रियाणि च खम् वायुः ज्योतिः आपः पृथिवी विश्वस्य धारिणी ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
एतस्मात्	उसी सविशेष पुरुष से	ज्योतिः	तेज
प्राणः	प्राण	आपः	जल
मनः	मन	च	और
सर्वेन्द्रियाणि	दशोंइन्द्रियां	विश्वस्य	सबको
खम्	आकाश	धारिणी	धारण करनेवाली
वायुः	वायु	पृथिवी	पृथिवी
		जायते	उत्पन्न होतीहै

नोट–जायते क्रियाका सम्बन्ध हर एक शब्द प्राणादि से है जैसे प्राणः जायते ॥

भावार्थ ॥

एतस्मादिति ॥ इसी अक्षर ब्रह्म से प्राणादिकों की उत्पत्ति होती भई, अर्थात् मायाविशिष्ट ईश्वर से प्रथम शब्द गुणवाला आकाश उत्पन्न हुआ, फिर आकाश से शब्दस्पर्शगुणवाला वायु उत्पन्न हुआ, फिर वायु से शब्द स्पर्श और रूप गुणोंवाला अग्नि उत्पन्न हुआ, तिस अग्नि से शब्द स्पर्श रूपरसवाला जल उत्पन्न हुआ, और जल से शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध गुणोंवाली पृथ्वी उत्पन्न हुई, फिर सम्पूर्ण विश्व को धारण करनेवाला मायावशिष्ट चेतनसे प्राण उत्पन्न हुआ, बाद को संकल्प विकल्प रूप मन उत्पन्न हुआ, फिर सम्पूर्ण ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय उत्पन्न हुये ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

अग्निर्मूर्द्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशः श्रोत्रे वाग्विवृताश्च वेदाः वायुः प्राणो हृदयं विश्वमस्य पद्भ्यां पृथिवी ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

अग्निः मूर्द्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशः श्रोत्रे वाग्विवृताः च वेदाः वायुः प्राणः हृदयम् विश्वम् अस्य पद्भ्याम् पृथिवी हि एषः सर्वभूतान्तरात्मा ॥

अन्वयः	पदार्थ
अस्य	इस विराट् पुरुष का
अग्निः	स्वर्गलोक
मूर्द्धा	मस्तक है
चन्द्रसूर्यौ	चन्द्रमा और सूर्य
चक्षुषी	दोनों नेत्र हैं
दिशः	दशोंदिशा
श्रोत्रे	दोनों कर्ण हैं
च	और
वेदाः	सब वेद
वाग्विवृताः	उसकीविस्तृत वाणी है
च	और
यस्य	जिसका
वायुः	वायु
प्राणः	प्राण है
विश्वम्	समस्त विश्व
हृदयम्	अन्तःकरण है
पृथिवी	पृथिवी
यस्य	जिसके
पद्भ्याम्	चरणों से
जाता	उत्पन्न हुई है
एषः	वही सविशेष पुरुष
हि	निश्चय करके
सर्वभूतान्तरात्मा	संपूर्ण भूतों का अंतरात्मा है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

अग्निरिति ॥ विराट्रूपकरके सम्पूर्ण जगत्रूप ईश्वर रूप है, इसी वार्त्ता को अब दिखलाते हैं ॥ अग्निः ॥ जिस विराट्रूप परमेश्वर का स्वर्गलोक शिर है, चन्द्रमा और सूर्य्य जिसके नेत्र हैं, प्राच्यादि दिशा जिसके कान हैं, ऋगादि चारों वेद जिसके वागिन्द्रिय हैं, वायु जिसके प्राण हैं, और सम्पूर्ण विश्व जिसका हृदय है, और पृथिवी जिसके पाद है, ऐसा जिस परमात्मा का शरीर है, वही संपूर्ण भूतों का अन्तरात्मा है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

तस्मादग्निः समिधो यस्य सूर्यः सोमात्पर्जन्य ओषधयः पृथिव्याम् पुमान् रेतः सिञ्चति योषिता यां बह्वीः प्रजाः पुरुषात् सम्प्रसूताः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मात् अग्निः समिधः यस्य सूर्यः सोमात् पर्जन्यः ओषधयः पृथिव्याम् पुमान् रेतः सिञ्चति योषितायाम् बह्वीः प्रजाः पुरुषात् सम्प्रसूताः ॥

अन्वयः	पदार्थ
यस्य	जिसके
सूर्यः	सूर्य
च	और
सोमात् सोमः	चन्द्र
समिधः	समिध हैं ऐसा
अग्निः	स्वर्गरूप प्रथम अग्नि
तस्मात्	उस

अन्वयः	पदार्थ
पुरुषात्	परमपुरुष से
+सम्प्रसूतः	उत्पन्न होता है
च	और
ततः	उस स्वर्गरूप प्रथम अग्नि से
पर्जन्यः	मेघरूप द्वितीय अग्नि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रसूयते=उत्पन्न होताहै

ततः=तिस मेघरूपद्वितीय अग्नि से

पृथिव्याम्=पृथिवीरूप तृतीय अग्निविषे

ओषधयः=अन्नादि ओषधिमान्

+ च=और

ततः=ओषधियों के परिणाम से

पुमान्=पुरुषरूप चतुर्थ अग्नि

+प्रसूयन्ते=उत्पन्न होताहैजो

रेतः=वीर्यको

योषितायाम्=स्त्रीरूपपंचम अग्निविषे

सिञ्चति=सिंचन करताहै

+ एवं क्रमेण=इस क्रमसे

बह्वीः= बह्वयः=बहुत याने असंख्य

प्रजाः=ब्राह्मणादि सब प्रजा

सम्प्रसूताः=सम्यक्प्रकार उत्पन्न होती हैं

भावार्थ ॥

तस्मादिति ॥ पूर्वोक्त परमात्मा से प्रथम द्युलोकरूपी अग्नि उत्पन्न होती है जिसकी समिध सूर्य और चन्द्रमाहैं, उसी प्रथम अग्नि से द्वितीय अग्नि मेघ उत्पन्न होते हैं, मेघों से पृथिवीरूपी तृतीय अग्निबिषे अन्नादि ओषधियां उत्पन्न होती हैं ओषधियों से वीर्यरूपी चतुर्थ अग्निपुरुष द्वारा उत्पन्न होताहै, तिस वीर्य को स्त्रीरूपी पंचम अग्नि बिषे सिंचन करनेसे बहुतसी प्रजा उत्पन्न होती हैं ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

तस्मादृचः सामयजूंषि दीक्षा यज्ञाश्च सर्वे क्रत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वो दक्षिणाश्च संवत्सरश्च यजमानश्च लोकाः सोमो यत्र पवते यत्र सूर्य्यः ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मात् ऋचः सामयजूंषि दीक्षाः यज्ञाः च सर्वे क्रतवः दक्षिणाः च संवत्सरः च यजमानः च लोकाः सोमः यत्र पवते यत्र सूर्य्यः ॥

अन्वयः	पदार्थ
तस्मात्	उसी पुरुषसे
ऋचः	ऋग्वेद के मन्त्र
साम	सामवेदके मन्त्र
यजूंषि	यजुर्वेदकेमन्त्र
दीक्षा	यज्ञकर्ता के नियम
सर्वेयज्ञाः	अग्निहोत्रआदि सबयज्ञसुवर्णखदिरादि स्तम्भरहित
च	और
क्रतवः	अश्वमेधआदियज्ञ स्वर्ण खदिरआदि स्तम्भसहित

अन्वयः	पदार्थ
दक्षिणाः	एक गोदानसे लेकरसर्व्वस्व दानतक दक्षिणा
+ च	और
संवत्सरः	दिनरात आदिकालरूपसंवत्सर जिसकर केयज्ञादिकर्मों के काल का ज्ञान होता है
च	और
यजमानः	यज्ञादिकर्मोंका कर्ता यजमान
जायन्ते	उत्पन्न होते हैं
च	और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यत्र=जिस लोक बिषे
सोमः=चन्द्रमा
पवते=रहता है याने जो लोक दक्षिणायनमार्गकरकेप्राप्त होने योग्य है
+च=और
यत्र=जिस लोक बिषे
सूर्यः=सूर्य
+तपति=तपताहैयाने जोलोकउत्तरायण मार्ग करके प्राप्त होनेयोग्यहैं
+ ते=वे
लोकाः=सबलोक
+ तस्मात्=उसी
+ पुरुषात्=पुरुष से
+ जायन्ते=उत्पन्नहोते हैं

भावार्थ ॥

तस्माद्दचइति ॥ उसी परमात्मा से ऋग्वेद के मंत्र, सामवेद के मंत्र, यजुर्वेद के मंत्र, दीक्षा जिसमें यज्ञोपवीत मौञ्जीबंधन का नियम विशेष है, अग्निहोत्रादि रूप यज्ञस्तम्भराहित, अश्वमेधादि यज्ञस्तभ साहित, दक्षिणा जो यज्ञमें ब्राह्मणों के प्रति दी जाती है, संवत्सर जिसकरके यज्ञादि कर्मोंके करने के मुहूर्त का ज्ञानहोता है, कर्मों के करनेवाला जो यजमान है और दक्षिणायन उत्तरायण मार्ग करके प्राप्त होने के योग्य जो लोकहैं सब उत्पन्न होते हैं ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

तस्माच्च देवा बहुधा संप्रसूताः साध्या मनुष्याः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पशवो वयांसि प्राणापानौ व्रीहियवौ तपश्च श्रद्धा सत्यं ब्रह्मचर्यं विधिश्च ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

तस्मात् च देवाः बहुधा संप्रसूताः साध्याः मनुष्याः पशवः वयांसि प्राणापानौ व्रीहियवौ तपः च श्रद्धा सत्यम् ब्रह्मचर्यम् विधिः च ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
च	=और	पशवः	=यज्ञों के अंगभूत पशुमात्र
तस्मात्	=उसीपुरुषसे	वयांसि	=सबजातिकेपक्षी
देवाः	=यज्ञादिकर्मोंके अंगभूतऔर यज्ञभागकोग्रहणकरकेफल दानदेनेमेंसमर्थ ऐसे देवता	प्राणापानौ	=सब प्राणियों के जीवनभूत प्राण औरअपान वायु
बहुधा	=इन्द्र वसुरुद्र आदि अनेक प्रकारके	व्रीहियवौ	=यज्ञोंबिषेहविर्द्रव्य के अर्थ धान्यऔरयव
सम्प्रसूताः	=उत्पन्न होते हैं		
साध्याः	=साध्य नामक देवता	तपः	=यज्ञआदिकर्म के अंगभूत और पुरुषोंके शरीरशोधक स्वाश्रमधर्म्म का आचरण
मनुष्याः	=कर्मद्वारादेवतों को भाग देने वाले मनुष्य		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रद्धा= पुरुषार्थसाधकयज्ञादिकर्मों बिषे आस्तिक्यबुद्धि	विधिः=सब कर्म्मों का विधान
सत्यम्=सत्यवचन और सत्याचरण	+एतत्सर्वम्=यह सब
ब्रह्मचर्यम्=ब्रह्मचर्य	+तस्मात् पुरुषात्=उसी पुरुष से
च=और	सम्प्रसूयन्ते=सम्यक्प्रकार उत्पन्न होताहै

भावार्थ ॥

तस्मादिति ॥ तिसी पूर्वोक्त परमात्मा से कर्मों के अंगभूत, इन्द्रादि देवता, संपूर्ण कर्मों के अधिकारी मनुष्य, यज्ञों में बलिप्रदान देने के योग्य मृगादि पशु, सब जाति के पक्षी, प्राणीमात्र के जीवन के हेतु प्राणाऽपान वायु, व्रीहियवादिरूप अन्न, चांद्रायणादिरूप तप, पुरुषार्थ साधक यज्ञादिक कार्य्य बिषे सत्यभाषण और सत्य आचरण और ब्रह्मचर्य्य जो आठ प्रकार के मैथुन के त्याग का नाम है, उत्पन्न होते हैं ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

सप्त प्राणाः प्रभवन्ति तस्मात् सप्तार्चिषः सप्त समिधः सप्त होमाः सप्त इमे लोका येषु चरन्ति प्राणा गुहाशया निहिताः सप्त सप्त ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

सप्त प्राणाः प्रभवन्ति तस्मात् सप्त अर्चिषः सप्त समिधः सप्त होमाः सप्त इमे लोकाः येषु चरन्ति प्राणाः गुहाशयाः निहिताः सप्त सप्त ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सप्त	सात	लोकाः	इन्द्रियों के स्थान
प्राणाः	मस्तक गत प्राण याने चक्षुरादि ज्ञानइन्द्रियां	येषु	जिनके बिषे
+ च	और	गुहाशयाः	स्वप्नावस्थामें हृदयाकाश बिषे शयन करनेवाले
सप्त	सात	प्राणाः	प्राण
अर्चिषः	ज्योतियां याने स्व स्वविषयज्ञान	+ यान्	जिनको
+ च	और	सप्तसप्त	सातसातप्रकार से प्रतिदेह
सप्त	सात	निहिताः	स्थापितकिया है स्रष्टाने
समिधः	विषय	चरन्ति	विचरते हैं
+ च	और	+ ते	सो
सप्त	सात	इमे	ये सब
होमाः	होम याने विषय भोग	तस्मात्	उसीपुरुष से
+ च	और	प्रभवन्ति	उत्पन्न होते हैं
सप्त	सात		

भावार्थ ॥

सप्तप्राणाइति ॥ दो कान, दो नेत्र, दो नासिका, एक वाक्, ये सात जो शिरमें द्वार हैं, इन्हीं का नाम सप्तप्राण है, और इन्हीं सप्तप्राणों की जो वृत्तियां हैं, उन्हीं का नाम सप्तार्चिष है, और सप्त जो विषय हैं, सोई समिध हैं, याने ईंधन हैं, अर्चिष नाम अग्नि की ज्वाला का है, सप्तप्राणरूपी अग्नि के सप्त वृत्तिरूपी लाट हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्हीं में सप्तविषयरूपी समिध हवन की जाती हैं, इन्हीं का नाम सप्तहोम भी है, और सातही पूर्वोक्त इन्द्रियों के जो गोलक हैं याने रहने के स्थान हैं, इन्हीं का नाम सप्तलोक है इन्हींमें सप्त इन्द्रियां संचारको करती हैं, येही सप्तप्राण जीवों के शिररूपी गुहामें शयन करतेहैं, ये सब उसी परमात्मासे उत्पन्न होते हैं॥८॥

मूलम् ॥

अतः समुद्रा गिरयश्च सर्वेऽस्मात्स्यन्दन्ते सिन्धवः सर्वरूपाः अतश्च सर्वा ओषधयो रसाश्च येनैष भूतैस्तिष्ठते ह्यन्तरात्मा ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

अतः समुद्राः गिरयः च सर्वे अस्मात् स्यन्दन्ते सिन्धवः सर्वरूपाः अतः च सर्वाः ओषधयः रसाः च येन एषः भूतैः तिष्ठते हि अन्तरात्मा ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अतः	=उसीपुरुष से	सर्वरूपाः	=गंगायमुना आदिअनेक प्रकारकी
सर्वे	=सब क्षारादि सात	सिन्धवः	=नदियां
समुद्राः	=समुद्र	स्यन्दन्ते	=निकलती हैं
च	=और	च	=और
सर्वे	=सबसुवर्णाचल हिमाचलादि	अतः	=उसीपुरुषसे
गिरयः	=पर्वत	सर्वाः	=सब व्रीहि यवादि
+प्रभवन्ति	=उत्पन्न होते हैं	ओषधयः	=ओषधियां
च	=और	+प्रभवन्ति	=उत्पन्नहोती हैं
अस्मात्	=उसीपुरुषसे		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च=और
+अस्मात्=उसीपुरुष से
रसाः=मधुरआदि छै प्रकार का रस
येन=जिस करके
एषः=यह
अन्तरात्मा=यह अन्तर आत्मायानी लिंगशरीर
हि= निःसन्देह
भूतैः=स्थूलपंच महाभूतों करके परिवेष्टित
तिष्ठते=सबके मध्य बिषे स्थित होकर वर्द्धमान है
उत्पद्यते=उत्पन्न होताहै

भावार्थ ॥

अतइति ॥ उसी परमात्मा से सम्पूर्ण समुद्र, सम्पूर्ण पर्वत सम्पूर्ण नदियां, अनेक रूपों को धारण किये हुये उत्पन्न होती हैं, उसी परमात्मा से सम्पूर्ण व्रीहियवादिरूपी औषधियां उत्पन्न होती हैं और उसी परमात्मा से मधुरादि छःप्रकार के रस उत्पन्न होते हैं जिस करके पांचों भूत व्याप्त होरहे हैं और स्थूल सूक्ष्मादि शरीरों में परमात्माही अन्तरात्मा होकरके स्थित है॥९॥

मूलम् ॥

पुरुष एवेदं विश्वं कर्म तपो ब्रह्म परामृतम् एतद्यो वेद निहितं गुहायां सोऽविद्याग्रन्थिं विकिरतीह सौम्य ॥ १० ॥

इति द्वितीयमुण्डके प्रथमःखण्डः ॥

पदच्छेदः ॥

पुरुषः एव इदम् विश्वम् कर्म तपः ब्रह्म परामृतम् एतत् यः वेद निहितम् गुहायाम् सः अविद्याग्रन्थिम् विकिरति इह सौम्य ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
सौम्य	हे सौम्य !
इदम्	यह दृश्यमान
विश्वम्	सब जगत्
पुरुषः	बाह्याभ्यन्तर सत्यात्मक पुरुषरूप
एव	ही
+अस्ति	है
+अन्यत् नामरूपा-त्मकंमिथ्या	औरनामरूप सब मिथ्याहै
कर्म	निष्काम कर्म करके प्राप्य
च	और
तपः	तपरूप ज्ञान करके प्राप्य
+यत्	जो
परामृतम्	परम अमृत
ब्रह्म	ब्रह्महै
च	सोई
एतत्	यह ब्रह्म
गुहायाम्	सब प्राणियों के हृदय बिषे
निहितम्	स्थितहै
इति	ऐसा
यः	जो पुरुष
वेद	अभेद से जानता है
सः	वह
इह	इसी शरीर बिषे
अविद्या ग्रन्थिम्	चिद्जड़ ग्रन्थिको याने वासनाको
विकिरति	नाशकरता है अर्थात् जीवन्मुक्त होता है

इति द्वितीयमुण्डके प्रथमःखण्डः ॥

भावार्थ ॥

पुरुषइति ॥ मायाविशिष्ट परमात्मा के रूपको दिखलाकर अब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिसी परमात्मा के शुद्ध स्वरूप को दिखलाते हैं ॥ पुरुषः ॥ यह जो परमात्मासे उत्पन्न हुआ जगत् है सो परमात्मा काही स्वरूप है, क्योंकि परमात्मा मेंही कल्पित है, और कल्पित वस्तु जो होती है, सो अधिष्ठान से भिन्न नहीं होती है, इसी हेतु से सम्पूर्ण जगत् परमात्माका रूपही है। यह जो प्रश्न था कि किस एकके जाननेसे सब जानाजाता है उसी का यह उत्तर है कि एक परमात्मारूपी कारण के जानने से सम्पूर्ण कार्यरूपी जगत् आप से आप जाना जाता है, यह जगत् क्या है इसके उत्तर में कहते हैं कि अग्निहोत्र आदिरूप जो कर्म हैं और उपासनारूपी जो तप है और कर्म और उपासना का प्रकाशक जो वेद है इन्हीं तीनों का नाम जगत् या विश्व है अर्थात् एतद्रूपही विश्व है, सो विश्व ब्रह्म में अध्यस्त होने से ब्रह्मरूपही है, इसलिये ब्रह्म सम्पूर्ण प्राणियों के हृदय में स्थित है, तिस ब्रह्मको जो अधिकारी अपना आत्मारूप करके जानता है सो विद्वान् अविद्यारूपी ग्रन्थिको इसी जीवित शरीर में नाश करदेता है ॥ १० ॥

इति द्वितीयमुण्डके प्रथमः खण्डः ॥

मूलम् ॥

आविः सन्निहितं गुहाचरन्नाम महत्पदमत्रैतत्समर्पितम् एजत्प्राणन्निमिषच्च यदेतज्जानथ सदसद्वरेण्यं परं विज्ञानाद्यद्वरिष्ठं प्रजानाम् ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

आविः सन्निहितम् गुहाचरन् नाम महत्पदम् अत्र एतत् समर्पितम् एजत् प्राणत् निमिषत् च यत् एतत् जानथ सदसत् वरेण्यम् परम् विज्ञानात् यत् वरिष्ठम् प्रजानाम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
हे शिष्य	अहो शिष्य !
यत्	जो कुछ
एतत्	यह
एजत्	चलायमान
प्राणत्	प्राणवान्
निमिषत्	क्रियावान्
सदसत्	मूर्त और अमूर्त पदार्थ है
तत्सर्वम्	सो सब
अत्र	उसउक्तपरब्रह्म बिषे
समर्पितम्	सम्यक्प्रकार स्थित है
+अतः	इसी कारण
+तत्	वह ब्रह्म
महत्पदम्	सब विश्व का निधान है
आविः	बाह्याभ्यन्तर प्रकाशमान है
च	और
सन्निहितम्	हृदयाकाश बिषे सम्यक्प्रकार स्थित है और
गुहाचरन्नाम	गुहाबिषे विचरनेवालाप्रसिद्ध है
च	और
यत्	जो कुछ
प्रजानाम्	मनुष्यों के
विज्ञानात्	ज्ञान से
परम्	परे है याने दिव्यज्ञानकरके ही जानने योग्य है
एतत्	उसको
+यूयम्	तुम सब
वरिष्ठम्	श्रेष्ठ
वरेण्यम्	नित्यजाननेयोग्य ब्रह्म
जानथ	जानो

भावार्थ ॥

आविरिति ॥ एक बार कथन करने से जिसको आत्मबोध उत्पन्न नहीं होता है तिसके प्रति प्रकारान्तर करके ब्रह्मबोधका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निरूपण करते हैं ॥ आविः ॥ पूर्वोक्त ब्रह्म प्रकाश स्वरूप है, और वही ब्रह्म जीव रूप होकरके सम्पूर्ण प्राणियों के हृदय में स्थित है,इसी ब्रह्म में सम्पूर्ण जगत् इस तरह से अर्पित है, जैसे रथके पहियों में अरे अर्पित होते हैं, और जो कुछ चर अचर जगत् है वह ब्रह्म में समर्पित है, हे शिष्य ! पूर्वोक्त ब्रह्म कोही सर्व जगत् का कारण जानो, क्योंकि जितना स्थूल सूक्ष्म जगत् है,वह ब्रह्म से भिन्न नहीं है, वह ब्रह्म सब से श्रेष्ठ है, फिर वह इन्द्रियजन्य ज्ञान का विषय भी नहीं है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

यदर्चिमद्यदणुभ्योऽणु च यस्मिँल्लोका निहिता लोकिनश्च तदेतदक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदु वाङ्मनः तदेतत्सत्यं तदमृतं तद्वेद्धव्यं सौम्य विद्धि ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

यत् अर्चिमत् यत् अणुभ्यः अणु च यस्मिन् लोकाः निहिताः लोकिनः च तत् एतत् अक्षरम् ब्रह्म सः प्राणः तत् उ वाङ्मनः तत् एतत् सत्यम् तत् अमृतम् तत् वेद्धव्यम् सौम्य विद्धि ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सौम्य	=हे सौम्य !	अणु	=अतिही सूक्ष्म है कि
यत्	=जो	यस्मिन्	=जिसविषे
अर्चिमत्	=स्वयंप्रकाश है	लोकाः	=चतुर्दशलोक
च	=और	च	=और
यत्	=जो	लोकिनः	=लोकनिवासी
अणुभ्यः	=परमाणुवोंसे भी		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निहिताः=स्थितहैं
तत्=सोई
एतत्=यह
ब्रह्म=ब्रह्म
अक्षरम्=अविनाशी है
सः=सोई
प्राणः=सूत्रात्माप्राणहै
उ=और
तत्=सोई
वाङ्मनः=वाणी और मनहै
तत्=सोई
एतत्=यह
सत्यम्=सत्यस्वरूप है
तत्=सोई
अमृतम्=अमृत है
तत्=सोई
वेद्धव्यम्=भेदने याने चित्तसे भावना करने योग्य है
\+ इति=ऐसा
\+ त्वम्=तू
विद्धि=जान

भावार्थ ॥

अर्चिमदिति ॥ फिर वही ब्रह्म प्रकाशमान है, सूर्य्यादिकों के प्रकाश से विलक्षण उसका प्रकाश है, सूक्ष्म जो परमाणु हैं वह उन से भी सूक्ष्म है, और स्थूल जो पृथिवी आदिक भूत हैं उन्न से भी स्थूलहै, जिस ब्रह्म में चतुर्दश लोक और लोकनिवासी मनुष्यादि जीव स्थित हैं सोई संपूर्ण जगत् का आधारभूत अक्षर है, याने नाश से रहित है, और वही ब्रह्म बृहद्रूप भी है वही प्राणाऽपानादिरूप भी है, वही वागादि इन्द्रियरूप भी है, और मनरूप भी है, और प्राणादिकों के अन्तर चेतन रूप भी है, वही सत्यरूप भी है, हे सौम्य ! पूर्वोक्त प्रकार ब्रह्मकी उपासना को करो ॥ २ ॥

मूलम् ॥

धनुर्गृहीत्वौपनिषदं महास्त्रं शरं ह्युपासानिशि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तं सन्धयीत आयम्य तद्भावगतेन चेतसा लक्ष्यं तदेवाक्षरं सौम्य विद्धि ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

धनुः गृहीत्वा औपनिषदम् महास्त्रम् शरम् हि उपासानिशितम् सन्धयीत आयम्य तद्भावगतेन चेतसा लक्ष्यम् तत् एव अक्षरम् सौम्य विद्धि ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
सौम्य	हे सौम्य !	सन्धयीत, सन्धय	रखकर
त्वम्	तु	तत्	उस
औपनिषदम्	उपनिषदों के विचार से उत्पन्न हुये	अक्षरम्	अक्षर परब्रह्म को
महास्त्रम्	अस्त्रों विषे श्रेष्ठ ऐसे	लक्ष्यम्	लक्ष्य
धनुः	धनुष को	+ कृत्वा	करके
गृहीत्वा	ग्रहण करके	+ च	और
हि	और	तद्भावगतेन	उसकी भावना करके तन्मय हुये
उपासानिशितम्	तीव्र उपासना से उत्पन्न हुये तीक्ष्ण	चेतसा	एकाग्रचित्त से
शरम्	बाण को	एव	भलीप्रकार
+ तत्र	उस धनुष में	आयम्य	खैंचके
		+ तस्य	उसका
		विद्धि	वेधनकर

भावार्थ ॥

जो पुरुष आत्मज्ञान की प्राप्ति में असमर्थ है उसके लिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रणव की उपासना को कहते हैं ॥ धनुरिति ॥ प्रणवरूपी धनुष में बाणरूपी चित्तको जो लगावै अर्थात् उपनिषद् में प्रसिद्ध महान् अस्त्ररूपी जो ॐकारहै, उसको धनुष बनावै, और उसमें चित्त रूपी बाणको जोड़े, यह ऐसा बाण है जो निरंतर ब्रह्मकी उपासना करके तीक्ष्ण कियागया है, याने शुद्धहुआ है, फिर उसबाण को विषयों से हटा करके लक्ष्यरूपी अविनाशी परमात्मा को वेधनकरै जैसे बाण लक्ष्य में जाकर सरटजाता है, तैसे चित्त भी आत्मा में जाकर लगजावै, हे सौम्य! अब तूभी अपने चित्तरूपी बाण को ऐसे लक्ष्यरूपी ब्रह्ममें ॐकार रूपी धनुष के द्वारा लगादे ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

प्रणवोधनुः शरोह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयोभवेत् ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

प्रणवः धनुः शरः हि आत्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यम् उच्यते अप्रमत्तेन वेद्धव्यम् शरवत् तन्मयः भवेत् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
हि	इसलक्ष्यरूपक बिषे निश्चय करके	शरः	बाण है
प्रणवः	प्रणव याने ओंकार	तल्लक्ष्यम्	उनदोनोंका लक्ष्य
धनुः	धनुष है	ब्रह्म	ब्रह्म
आत्मा	बुद्धिविशिष्ट चैतन्य	उच्यते	कहाजाताहै
		+तत्	वह लक्ष्य
		अप्रमत्तेन	प्रमादरहित पुरुषकरके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेद्धव्यम्=वेधनेयोग्य है
+एवंवेद्धा=ऐसा वेधनेवाला मुमुक्षु
शरवत्=बाणवत्

तन्मयः=तन्मय याने तदाकार
भवेत्=होजाता है

भावार्थ ॥

प्रणाव इति ॥ ॐकाररूपी धनुष में चित्तरूपी बाण को रख करके चेतनरूपी लक्ष्य में सटा देवे, इस उपासना में ॐकार तो धनुष है, शुद्धचित्त बाणहै, और अक्षर ब्रह्म लक्ष्य है, अथवा पूर्वोक्त लक्षणोंकरके लक्षित जो ब्रह्महै, उस लक्ष्य में बाह्य विषयों की उपलब्धिरूपी प्रमाद से रहित होकर जितेन्द्रिय पुरुष अपने जीवआत्मारूपी ब्रह्ममें चित्तरूपी बाणको लगादेवै,अर्थात् उसके साथ अभेदभावको प्राप्त करदेवै, याने वह ब्रह्मरूपही होजावै॥४॥

मूलम् ॥

यस्मिन् द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षमोतं मनः सह प्राणैश्च सर्वैस्तमेवैकं जानथ आत्मानमन्या वाचो विमुञ्चथ अमृतस्यैषसेतुः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

यस्मिन् द्यौः पृथिवी च अन्तरिक्षम् ओतम् मनः सह प्राणैः च सर्वैः तम् एव एकम् जानथ आत्मानम् अन्याः वाचः विमुञ्चथ अमृतस्य एषः सेतुः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
+हेशिष्याः	=अहोशिष्यो	द्यौः	=स्वर्ग
यस्मिन्	=जिसविषे	पृथिवी	=पृथिवी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च=और
अन्तरिक्षम्=आकाश
च=और
सर्वैः=सब
प्राणैः=प्राणों
सह=सहित
मनः=मन
ओतम्=समर्पितहै या-
ने ओतप्रोतहै
तम्=उस
एव=ही
आत्मानं=अक्षरआत्मा
को
+यूयम्=तुमसब
एकम्=अद्वितीयब्रह्म
जानथ=जानो
यतः=क्योंकि
एषः=यह पराविद्या
की उपासना
अमृतस्य=मोक्षकी प्राप्ति
बिषे
सेतुः=भवसागर से पारकरने-वाली सेतुहै
अन्याः=और
वाचः=अपराविद्या विषयक वा-णीको यानी कर्म्मकाण्ड को
विमुञ्चथ=त्यागो

भावार्थ ॥

यस्मिन्निति ॥ अक्षर ब्रह्म का जानना अति कठिन होने से बार २ तिसी का निरूपण करते हैं ॥ यस्मिन् ॥ हे शिष्य ! जिस में आकाशलोक पृथिवीलोक अन्तरिक्षलोकादि ओतप्रोत हैं, और जिसमें वागादि संपूर्ण इंद्रिया और प्राणों के साहित संकल्प विकल्परूपी मन भी ओतप्रोत है उसी को तुम अद्वितीय ब्रह्म जानो, क्योंकि यह पराविद्याकी उपासना मोक्षकी प्राप्ति बिषे संसारसागर से पार करनेवाली सेतु है, इसलिये मुमुक्षु सम्पूर्ण जगत्के अधिष्टानभूत आत्मा को अपना स्वरूप जानकर आत्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से अतिरिक्त पदार्थों को प्रतिपादन करनेवाली जितनी विद्या हैं, उन सबको त्याग देवै ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

अराइव रथनाभौ संहता यत्र नाड्यः स एषोऽन्तश्चरते बहुधा जायमानः ॐमित्येवं ध्यायथ आत्मानं स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

अराः इव रथनाभौ संहताः यत्र नाड्यः सः एषः अन्तः चरते बहुधा जायमानः ॐम् इति एवम् ध्यायथ आत्मानम् स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात् ॥

अन्वयः	पदार्थ
हे शिष्याः	अहोशिष्यो
रथनाभौ	रथचक्रनाभि पिण्डिकामध्ये
अराः	अरा
इव	वत्
यत्र	जिस हृदय बिषे
नाड्यः	सबदेहकी नाड़ियां
निहिताः	समर्पित हैं

अन्वयः	पदार्थ
+तत्र	उस हृदयके
अन्तः	मध्यभाग बिषे
सः	वह पूर्वोक्त
एषः	यह अविनाशीपरमात्मा
बहुधा	हर्ष दीनता आदिअनेक उपाधियों के साथ अनेक प्रकारका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जायमानः = होताहुवा
चरते = विचरता है
एवम् = इसप्रकार
+यूयम् = तुम
+तम् = उस
आत्मानम् = अविनाशी परमात्माको
ओम् = प्रणव
इति = करके
ध्यायथ = ध्यानकरो
+ममआशीः = मेराआशीर्वाद है कि
वः = तुमसबको
तमसः = अविद्याके
परस्तात् = पछे
पाराय = पारजाने के लिये
स्वस्ति = निर्विघ्न कल्याणहोवै

भावार्थ ॥

अराइवरथनाभाविति ॥ जैसे रथकी नाभि में काष्ठकी बनी हुई पतली २ जो लकड़ियां लगी रहती हैं उनका नाम अरा है, और जैसे अरे पहियों की नाभि के बीचमें लगे रहते हैं तैसेही पुरुषके हृदय में हज़ारों नाड़ियें लगी हैं, तिसी हृदयदेश में यह आत्मा रहता है, यद्यपि आत्मा सम्पूर्ण शरीर में व्यापक होकरके रहता है, तथापि हृदयाकाश अति शुद्ध होनेके कारण उस बिषे आत्मा विशेष अंशको प्राप्तहोकर स्थितहै, जैसे सूर्यका प्रतिबिंब शुद्ध जलमें अतिप्रकाशमान होताहै, और मैले जलमें पड़ते हुये भी दिखलाई नहीं देता है, यह आत्मा सदा उत्पत्ति से रहितहै पर शरीररूपी उपाधियों के उत्पन्न होनेसे उत्पत्तिवाला कहाजाताहै, तिस आत्मा को ॐअक्षर आलम्बन करके अज्ञान से रहित परब्रह्म की प्राप्ति के लिये पुरुष चिन्तन करे, इसप्रकार आचार्य्य शिष्यों के प्रति उपदेश करते हैं ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्यैष महिमा भुवि दिव्ये ब्रह्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरेह्येष व्योम्न्यात्मा प्रतिष्ठितः मनोमयः प्राणशरीरनेता प्रतिष्ठितोऽन्ने हृदयं सन्निधाय तद्विज्ञानेन परिपश्यंति धीरा आनन्दरूपममृतं यद्विभाति ॥ ७॥

पदच्छेदः ॥

यः सर्वज्ञः सर्ववित् यस्य एषः महिमा भुवि दिव्ये ब्रह्मपरे हि एषः व्योम्नि आत्मा प्रतिष्ठितः मनोमयः प्राणशरीरनेता प्रतिष्ठितः अन्ने हृदयम् सन्निधाय तत् विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीराः आनन्दरूपम् अमृतम् यत् विभाति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यः	= जो	+ च यः	= और जो
आत्मा	= परमात्मा	हृदयम्	= बुद्धिको
सर्वज्ञः	= सर्वज्ञ है	सन्निधाय	= हृदयकमल बिषेस्थापित करके
सर्ववित्	= सर्ववेत्ता है	अन्ने	= भुक्तअन्न के परिणामरूपवीर्यबिषे
च	= और	+ स्थितः	= स्थितहोकर
यस्य	= जिसका	+ प्रतिष्ठितः	= स्थूलदेहसे सूक्ष्मदेहमें जाने को प्रस्थानकिये हुवे हैं
एषः	= यह पूर्वोक्त		
महिमा	= ऐश्वर्य		
भुवि	= लोकबिषे		
विख्यातः	= प्रख्यात है		
+च यः	= और जो		
मनोमयः	= मनोमय है		
प्राणशरीरनेता	= प्राणऔरशरीरका प्रेरक है		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

\+ च = और
यत् = जो
आनन्दरूपम् = आनंदरूप
अमृतम् = अमृतरूप
विभाति = प्रकाशमान है
एषः = वह
दिव्ये = सूक्ष्मचैतन्यविशिष्ट बुद्धिकरके प्रकाशमान
ब्रह्मपुरे व्योम्नि = हृदयपुण्डरीक के आकाश बिषे
हि = निश्चय करके
प्रतिष्ठितः = स्थित है
तत् = उसको
धीराः = विवेकी पुरुष
विज्ञानेन = अनुभवसिद्ध ज्ञानद्वारा
परिपश्यन्ति = सम्यक्प्रकार देखते हैं

भावार्थ ॥

यः सर्वज्ञइति ॥ वह परमात्मा सर्वज्ञ है अर्थात् संपूर्ण वस्तुवों में समान्य ज्ञान से स्थित है, और सर्ववित् भी है, अर्थात् सम्पूर्ण वस्तुवों बिषे विशेष ज्ञान से भी स्थित है। उस आत्मा की यह सृष्टिरूपी विभूति इस लोक में प्रसिद्ध है, वही मनका, प्राण का और शरीर का प्रेरकहै, वही हृद्याकाश में रहता है, वही आकाशवत् सर्वव्यापक है, वही बीज में स्थित होकर लिंग शरीर के साथ पुरुष के मरते समय गमन करता है, और प्राणों के सहित लिंग शरीर को एक स्थूल शरीर से दूसरे स्थूल शरीर में प्राप्त करनेवाला भी है, और अन्नमय स्थूल देह के अन्तर बुद्धि को हृदयरूपी कमल में स्थापन करके उसके अन्तर उस का अधिष्ठानरूप होकरके भी वही स्थित है, और शमदमादिक साधनों करके जनित जो आत्मज्ञान है, तिसी आत्मज्ञान करके विवेकी पुरुष सर्वत्र आत्मा कोही देखते हैं, और सोई आत्मा आनन्दरूप है, अमृत रूपहै और साक्षीरूप है ७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

भिद्यते हृदयग्रन्थिः छिद्यन्ते सर्वसंशयाः क्षीयन्ते चास्य कर्म्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

भिद्यते हृदयग्रन्थिः छिद्यन्ते सर्वसंशयाः क्षीयन्ते च अस्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥

अन्वयः	पदार्थ
परावरे	= कारणकार्यरूप
तस्मिन् दृष्टे	= उसब्रह्मके अनुभवसिद्धज्ञान द्वारा साक्षात्कार होनेपर
अस्य	= इसज्ञानी के
हृदयग्रन्थिः	= अविद्यासे उत्पन्नहुये कामरूपहृदयग्रन्थि
भिद्यते	= नाशकोप्राप्त होती है
+च	= और
+तत्नाशे	= उसके नाश होने पर
सर्वसंशयाः	= अज्ञानविषयक सर्व संशय
छिद्यन्ते	= नष्ट होते हैं
च	= और
+तत्नाशे	= उस संशयके नाश होनेपर
कर्माणि	= आदिसे लेकर ज्ञानोत्पत्ति पर्यंत सब कर्म
क्षीयन्ते	= क्षयको प्राप्त होते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

अब आत्मज्ञान के फल को दिखाते हैं ॥ भिद्यते ॥ सम्पूर्ण जगत् कार्य है कारणरूप परमात्मा का, क्योंकि वह परमात्मा अभिन्निमित उपादान कारण माना जाता है, और कार्य्य कारण रूप परमात्मा के साक्षात्कार होने पर आत्मवित् विद्वान् की जड़ चेतन की तादात्म्याऽध्यासरूपी ग्रन्थी नाशको प्राप्त होती है, और ज्ञेय वस्तु अर्थात् जानने के योग्य जो आत्मवस्तु है, तद्विषयक सम्पूर्ण संशय भी इस विद्वान् के नाश हो जाते हैं फिर इस विद्वान् के प्रारब्ध कर्मों से अतिरिक्त जितने कर्म हैं वह सब नष्ट हो जाते हैं ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलं तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

हिरण्मये परे कोशे विरजम् ब्रह्म निष्कलम् तत् शुभ्रम् ज्योतिषाम् ज्योतिः तत् यत् आत्म-विदः विदुः ॥

अन्वयः	पदार्थ
यत्	जो चैतन्य
हिरण्मये	बुद्धिकरके प्रकाशमान
कोशे	हृदयकमल विषेस्थितहै
विरजम्	अविद्यामल से रहितहै
निष्कलम्	प्राणादिसबकलावोंसे पृथक् है
तत्	वही
शुभ्रम्	शुद्धहै
+ च तत्	और वही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्योतिषाम् = अग्नि सूर्यादि ज्योतियों का
ज्योतिः = प्रकाशक है
तत् = उस
ब्रह्म = ब्रह्मको
ये = जो
विदुः = जानते हैं
ते = वे
आत्मविदः = आत्मवेत्ता हैं

भावार्थ ॥

हिरण्मये इति ॥ हिरण्मय याने प्रकाशरूप जो सम्पूर्ण जीवोंके अन्तर है वह आनन्दमय कोश है, जैसे खड्ग का कोश खड्ग को आच्छादन करलेता है, तैसेही आनन्दमय कोश भी आत्मा को आच्छादन करता है, आनन्दमय कोश के भीतर वह आत्मा विराजमानहै, वही आत्मा अविद्यादि मल से रहित है, वही महान् है, याने सब से बड़ा है, निर्विषय है, और मायामल से रहित होने के कारण शुद्ध है, और जगत् को प्रकाश करनेवाले जो सूर्य्यादिक हैं उनका भी वह प्रकाशक है, वही बुद्धिविषे स्थित है, और विवेकी पुरुष उसी को अपना आत्मा जानता है, और इसी से वह आत्मवेत्ताकहलाता है ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

न तत्र सूर्योभाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोयमग्निः तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

न तत्र सूर्य्यः भाति न चन्द्रतारकम् न इमाः विद्युतः भान्ति कुतः अयम् अग्निः तम् एव भान्तम् अनुभाति सर्वम् तस्य भासा सर्वम् इदम् विभाति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
यत्र	जिसपरब्रह्म बिषे
सूर्यः	सूर्य
न	नहीं
भाति	प्रकाश कर-सक्ता है
च	और
चन्द्रतारकम्	तारोंकेसहित चन्द्रमा
नभाति	प्रकाशनहीं करसक्ता है
च	और
इमाः	येआकाश में चमकतीहुई
विद्युतः	बिजलियां
नभान्ति	नहीं प्रकाश करसक्ती हैं
तत्र	उसबिषे
अयम्	यहदृश्यमान
अग्निः	अग्नि

अन्वयः	पदार्थ
कुतः	कैसे
+भास्वति	प्रकाशकर सकेगा
+यतः	जिसकारण
इदम्	यहसूर्यच-न्द्रमाआदि
सर्वम्	सब
तम्	उस
भान्तम्	प्रकाशमान के
अनु	पीछे
भाति	प्रकाशते हैं
+ अतः	इसीलिये
इदम्	यह
सर्वम्	सबजगत्
तस्य	उसब्रह्म के
भासा	प्रकाशकरके
एव	ही
विभाति	प्रकाशितहो-ताहै

भावार्थ ॥

नतत्रेति ॥ उस ब्रह्मात्मा को सम्पूर्ण जगत् का प्रकाशक सूर्य प्रकाश नहीं करसक्ता है, न चन्द्रमा न तारे आदिक जिस ब्रह्मका प्रकाश करसक्ते हैं, और यह जो बड़ी प्रकाशवाली बिजुली है व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी उसको प्रकाश नहीं कर सक्ती है, और यह जो हमारी दृष्टि का विषय अग्नि है, सो भी तिसको प्रकाश नहीं कर सक्ती है, उसी ब्रह्मके प्रकाश कर के सूर्य्यादिक सब प्रकाशमान होते हैं, स्वतः इनमें प्रकाश करने की सामर्थ्य नहीं है ॥ १० ॥

मूलम् ॥

ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्ताद्ब्रह्म पश्चाद्ब्रह्म दक्षिणत श्चोत्तरेण अधश्चोर्द्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरिष्ठम् ॥ ११ ॥ द्वितीयमुण्डके द्वितीयखंडः ॥

पदच्छेदः ॥

ब्रह्म एव इदम् अमृतम् पुरस्तात् ब्रह्म पश्चात् ब्रह्म दक्षिणतः च उत्तरेण अधः च ऊर्ध्वम् च प्रसृतम् ब्रह्म एव इदम् विश्वम् इदम् वरिष्ठम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
यतः	= जिसकारण	पुरस्तात्	= आगे
इदम्	= यह	ब्रह्म	= ब्रह्म है
ब्रह्म	= ब्रह्म	पश्चात्	= पीछे
अमृतम्	= अमृतरूपहै	ब्रह्म	= ब्रह्म है
च	= और	दक्षिणतः	= दहिने
इदम्	= यह ब्रह्म	ब्रह्म	= ब्रह्म है
प्रसृतम्	= सर्वगत है	उत्तरेण	= बायें
च	= और	+ ब्रह्म	= ब्रह्म है
वरिष्ठम्	= सबसे श्रेष्ठहै	अधः	= नीचे
अतः	= इसीलिये	+ ब्रह्म	= ब्रह्म है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊर्ध्वम् = ऊपर		ब्रह्मएव = ब्रह्मरूपही	
+ ब्रह्म = ब्रह्म है		अस्ति = है	
इदम् = यह		+ इतिवेदा नुशासनम् =	यह वेदका उपदेश है
विश्वम् = साराजगत्			

इति द्वितीयमुण्डके द्वितीयः खंडः
इति द्वितीयमुण्डकं समाप्तम् ॥

भावार्थ ॥

ब्रह्मैवेति ॥ यह ब्रह्म सर्वगत है, इसलिये जितनी वस्तु आगे पीछे दाहिने बायें ऊपर नीचे वर्तमान हैं, सब ब्रह्मही रूप हैं, बहुत कथन करने से क्या प्रयोजन है, यह जितना दृष्टि का गोचर वर्त्तमान जगत् दिखाई पड़ता है सब ब्रह्मरूपही है, (प्र०) दृष्टिका गोचर पदार्थ तो सब नाशी है, सो कैसे ब्रह्म होसक्ता है (उ०) पूर्व कथन कर आये हैं कि कल्पित वस्तु अधिष्ठान से भिन्न नहीं होती है, जैसे रज्जुमें कल्पित सर्प रज्जु से भिन्न नहीं है, किन्तु रज्जुरूपही है, तैसे ब्रह्म में कल्पित जगत् भी ब्रह्मरूप ही है, ब्रह्म से भिन्न नहीं, इसी युक्ति को लेकर संपूर्ण जगत् को ब्रह्मरूप कहा है ॥ ११ ॥

इति द्वितीयमुण्डके द्वितीयःखण्डः २ ॥

मूलम् ॥

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो ऽभिचाकशीति ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानम् वृक्षम् परिषस्वजाते तयोः अन्यः पिप्पलम् स्वादु अत्ति अनश्नन् अन्यः अभिचाकशीति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
सखाया = सखायौ	= परस्परमित्र
सयुजा=सयुजौ	=एक स्थान में मिलकर रहनेवाले
सुपर्णा-सुपर्णौ	=शोभायमानहैं पक्ष जिनके ऐसे
द्वा = द्वौ	= दोपक्षी यानी एकलिंगोपाधि क्षेत्रज्ञ आत्मा दूसरा ईश्वर
समानम्	= एकही
वृक्षम्	= शरीररूपी वृक्षविषे
परिषस्वजाते	= स्थित हैं
तयोः	=उन में से

अन्वयः	पदार्थ
अन्यः	= एक तो क्षेत्रज्ञात्मा
स्वादु	= कामनोंकर के स्वादिष्ट
पिप्पलम्	= कर्मफल को
अत्ति	= अज्ञानता से भोक्ता है
+ च	= और
अन्यः	= दूसरा ज्ञानसंयुक्त ईश्वर
अनश्नन्	= कर्मफलकोन भोक्ता हुआ
अभिचाकशीति	= भोग्य और भोक्ता दोनों का प्रेरकहोके केवल साक्षी रूप से देखता है

भावार्थ ॥

द्वासुपर्णा इति ॥ पूर्वोक्त ब्रह्म अति दुर्विज्ञेय होनेके कारण उसी को और प्रकार से निर्णय करते हैं ॥ द्वासुपर्णा ॥ दोपक्षी हैं, और वे सर्वदा काल इकट्ठेही रहते हैं, और परस्पर सखा भी हैं, अर्थात् चेतनरूप करके दोनों समान हैं, उनमें से एक तो जीव है, दूसरा ईश्वर है, दोनों एकही शरीररूपी वृक्ष पर रहते हैं, एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो जीवरूपी पक्षी है, वह कर्मों के फल का भोक्ताहै, दूसरा ईश्वर है, वह कर्मों के फल को न भोक्ता हुआ भोग्य और भोक्ता दोनों का साक्षी है, और उनका प्रेरक भी है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

समाने वृक्षे पुरुषोनिमग्नोऽनीशया शोचति मुह्यमानः जुष्टं यदा पश्यत्यन्यमीशस्य महि मानामिति वीतशोकः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

समाने वृक्षे पुरुषः निमग्नः अनीशया शोचति मुह्यमानः जुष्टम् यदा पश्यति अन्यम् ईशस्य महिमानम् इति वीतशोकः ॥

अन्वयः	पदार्थ
समाने	पूर्वोक्त एकही
वृक्षे	शरीर रूपी वृक्ष बिषे
निमग्नः	विषयस्वादमें डूबाहुआ
पुरुषः	अविद्याआधीन जीव आत्मा
मुह्यमानः	अविवेक से मोहको प्राप्त होता हुआ
अनीशया	इष्टानिष्टफल की प्राप्तिबिषे अपनी असमर्थतासे
शोचति	शोक करताहै
परन्तु	परन्तु
यदा	जब
ईशस्य	ईश्वरके
महिमानम्	योग ऐश्वर्य्य को
यत्	जो कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जुष्टम्=योगियों करके सेवित किया गया है	पश्यति=देखता है
	इति=तब
	वीतशोकः=शोकरहित
अन्यम्=विलक्षण	+ भवति=होता है

नोट—ईश्वर विलक्षण है याने अकर्ता और अभोक्ता हुआ भी कर्ता और भोक्ता उपाधि के सम्बन्ध से प्रतीत होता है–

भावार्थ ॥

समान इति ॥ एकही शरीररूपी वृक्षमें कर्मों के फल का भोग नेवाला जो जीव है, वह शरीर के साथ तादात्म्य अध्यास करके इष्ट फल की प्राप्ति में और अनिष्ट फल की निवृत्ति में सामर्थ्य से हीन होकर नाना प्रकार की चिंता को प्राप्त होता है, और जिस कालमें यह जीव योगियों याने ब्रह्मवित् पुरुषों की संगति करके अपने को सबका नियंता जो ईश्वर है उससे अभिन्न पाताहै, तिसी काल में शोक से रहित होजाता है ॥ २ ॥

मूलम् ॥

यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णं कर्त्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिं तदा विद्वान्पुण्यपापे विधूय निरञ्जनः परमं साम्यमुपैति ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णम् कर्तारम् ईशम् पुरुषम् ब्रह्मयोनिम् तदा विद्वान् पुण्यपापे विधूय निरञ्जनः परमम् साम्यम् उपैति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः पदार्थ	अन्वयः पदार्थ
यदा=जब	पश्यते=पश्यति=देखताहै
पश्यः=पूर्वोक्तप्रकार ईश्वरके ऐश्वर्यको देखनेवालायहजीवात्मा	तदा=तब
	+ सः=वह
	विद्वान्=ज्ञानीपुरुष
	पुण्यपापे=पुण्य औरपाप दोनोंकर्मोंको
कर्तारम्=सबका कर्ता	विधूय=दग्धकरके
ईशम्=सबका ईश्वर	निरञ्जनः=मायामलसेनिर्मलहोताहुआ
ब्रह्मयोनिम्=हिरण्यगर्भकाभीउत्पत्तिस्थान	परमम्=उत्कृष्ट
रुक्मवर्णम्=स्वयंप्रकाश	साम्यम्=अद्वैतरूपसमताको
पुरुषम्=परमपुरुषको	उपैति=प्राप्तहोताहै

भावार्थ ॥

यदेति ॥ जो सब का ईश्वर और हिरण्यगर्भका भी उत्पत्ति स्थान है, उस स्वयं प्रकाश परम पुरुष को जब जीव अपना आत्मा करके जानता है, उसी ज्ञानकाल में वह ज्ञानवान् शुभ अशुभ कर्मों को दग्ध करके मायामल से निर्मल होकर ब्रह्मभाव को प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

मूलम् ॥

प्राणोह्येष यः सर्वभूतैर्विभाति विजानन् विद्वान् भवते नातिवादी आत्मक्रीड आत्मरतिः क्रियावा नेष ब्रह्मविदां वरिष्ठः ॥ ४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

प्राणः हि एष यः सर्वभूतैः विभाति विजानन् विद्वान् भवते न अतिवादी आत्मक्रीडः आत्मरतिः क्रियावान् एषः ब्रह्मविदाम् वरिष्ठः ॥

अन्वयः पदार्थ

यः=जोपरमईश्वर
हि=निश्चयकरके
प्राणः=प्राणकाभीप्राणहै
एषः=वही
सर्वभूतैः=ब्रह्मासेलेकरतृणपर्यंतसबभूतों के बाह्याभ्यंतरव्याप्यव्यापकभावकरके
विभाति=अनेकप्रकारसेभासमानाहोरहाहै
ईदृशंईश्वरम्=ऐसेईश्वरको
विजानन्=“अहंब्रह्मास्मि” इसभावसे जानताहुआ

अन्वयः पदार्थ

सः=वह
विद्वान्=विद्वान् कि
आत्मक्रीडः=आत्मामें हीहै क्रीड़ा जिसकी
आत्मरतिः=आत्माही बिषेहै प्रीतिजिसकी
+च=और
क्रियावान्=ज्ञान ध्यान वैराग्यादिकोंसेसंपन्न है जो
अतिवादी=द्वैतवादी
न=नहीं
भवते=भवति=होता है
+किन्तु=किंतु
एषः=वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मविदाम्=ब्रह्मवेत्तों के मध्य विषे	वरिष्ठः=श्रेष्ठ
	भवति=होता है

भावार्थ ॥

प्राणइति ॥ प्राणोपाधिक चेतन परमात्मा ब्रह्मा से लेकर स्तंबपर्यंत सम्पूर्ण भूतों का आत्मा होकर प्रकाशमान होरहा है, तिस प्राणोपाधिक ब्रह्म को जो विद्वान् आत्मभाव करके साक्षात्कार कर लेता है वह अपने आत्मा से भिन्न किसी को नहीं देखता है, और न वह अतिवादी होता है, जो अपने से भिन्न ब्रह्म को जानता है, वही अतिवादी कहा जाता है, और जो अपने से भिन्न ब्रह्म को नहीं जानता है वह अतिवादी नहीं होता है, आत्मा में ही है क्रीड़ा जिसकी उसका नाम है आत्मक्रीड़ा, और आत्मामेंही है प्रीति जिसकी उसीका नाम है आत्मरति अर्थात् बाह्य स्त्री पुत्रादिकों के शरीरों में जिसकी रति नहीं है परन्तु उनके अभ्यन्तर जो चेतन आत्मा है, और जिसकी वजहसे ये शरीर प्रकाशमानहैं, उसमेंहै क्रीड़ा जिसकी वही आत्मरति है ऐसा जो पुरुष ज्ञान, ध्यान, वैराग्यादिकों से युक्त है वही ब्रह्मवेत्तावों के मध्य विषे श्रेष्ठ है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्य्येण नित्यम् अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रोयं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

सत्येन लभ्यः तपसा हि एषः आत्मा सम्यक् ज्ञानेन ब्रह्मचर्य्येण नित्यम् अन्तःशरीरे ज्योतिर्मयः हि शुभ्रः अयम् पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
नित्यम्	नित्य
सत्येन	सत्यवचन और सत्य आचरण करके
तपसाहि	इन्द्रिय और मनकी एकाग्रतारूपी तप करके
सम्यक् ज्ञानेन	यथार्थ परिपूर्ण ज्ञान करके
ब्रह्मचर्य्येण	नित्यब्रह्मचर्य करके
एषः	यह पूर्वोक्त
आत्मा	परमात्मा
लभ्यः	प्राप्त होने योग्य है
+च	और
हि	निश्चय करके
अयम्	यह परमात्मा
शुभ्रः	शुद्ध
ज्योतिर्मयः	स्वयंप्रकाशमान
अन्तः शरीरे	हृदयाकाश बिषे
वर्तते	वर्तमान है
तम्	उस परमात्मा को
क्षीणदोषाः	दोषरहित
यतयः	तीक्ष्ण व्रत धारणकरने वाले यतिलोक
पश्यन्ति	आत्मभावसे देखते हैं

भावार्थ ॥

सत्येनेति ॥ पूर्वोक्त ज्ञान के साधनों को अब कहते हैं ॥ सत्येन ॥ यह जो प्रसिद्ध आत्मा है अर्थात् वेदशास्त्र करके और विद्वानों के अनुभव करके जो आत्मा प्रसिद्ध है तिस आत्मा का लाभ सत्य भाषण से और मन इन्द्रियों की एकाग्रतारूपी तप करके होता है, जिसके मन इन्द्रिय अपने वश में नहीं हैं उसको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मज्ञान का लाभ नहीं होता है, और आठ प्रकार के मैथुन के त्याग का नाम ब्रह्मचर्य्य है, तिस ब्रह्मचर्य्य में जो पूरा है उसी को आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है, और तत् व त्वं पदों के विचार से आत्मज्ञान का लाभ होता है (प्र०) पूर्वोक्तसाधनों करके किस आत्मा की प्राप्ति होती है (उ०) जो शरीर के भीतर हृद्याकाश में प्रकाशमान है, और शुद्ध है, और जिसको तीव्र बुद्धिवाले यतिलोक अपने में देखते हैं ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

सत्यमेव जयति नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः येनाक्रमन्त्यृषयोह्याप्तकामा यत्र तत्स त्यस्य परमं निधानम् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

सत्यम् एव जयति न अनृतम् सत्येन पन्थाः विततः देवयानः येन आक्रमंति ऋषयः हि आप्त कामाः यत्र तत् सत्यस्य परमम् निधानम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
देवयानः	=स्वर्गआदि लोकोंका	ऋषयः	=सत्यदर्शी ऋषीश्वरआदि
पन्थाः	=मार्ग	तम्	=उसलोक को
सत्येन	=सत्यही करके	आक्रमन्ति	=प्राप्तहोते हैं
विततः	=व्याप्तहै	+ च	=और
येन	=जिस मार्ग्ग द्वारा	यत्र	=जहां
आप्तकामाः	=तृष्णारहित	सत्यस्य	=सत्यका
		निधानम्	=निधान है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत्=वही
परम्=परब्रह्म है
+ अस्मात्=इस वेद प्रमाणसे
सत्यम्=सत्यपुरुष
जयते=जयति=जयको

पाता है
अनृतम्=मायावी पुरुष
हि=कभी
न=नहीं
+ जयति=जयको प्राप्त होता है

भावार्थ ॥

सत्यमेवेति ॥ और वासना के त्याग से शुद्ध हुआ है अन्तःकरण जिनका, और सत्को धारण किया है जिसने, वे देवमार्ग द्वारा उसलोक को प्राप्त होते हैं जो सत्यकरके व्याप्त है, और जो सतका निधान है, और जहां परब्रह्म सत्स्वरूप से स्थित है, ऐसे पुरुष मृत्युलोक में भी जय को प्राप्त होते हैं, झूठे कपटीलोक जय को नहीं प्राप्त होते हैं ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

बृहच्च तद् दिव्यमचिन्त्यरूपं सूक्ष्माच्च तत् सूक्ष्मतरं विभाति दूरात्सुदूरे तदिहान्तिके च पश्यत्स्विहैव निहितं गुहायाम् ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

बृहत् च तत् दिव्यम् अचिन्त्यरूपम् सूक्ष्मात् च तत् सूक्ष्मतरम् विभाति दूरात् सुदूरे तत् इह अन्तिके च पश्यत्सु इह एव निहितम् गुहायाम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
च=और		तत्=वह ब्रह्म	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बृहत्=सर्वव्यापी होने के कारण सब से बड़ा है
दिव्यम्=स्वयंप्रकाश है
अचिन्त्य रूपम्=मनबुद्धिकरके भी अचिंत्यहै
च तत्=और वह
सूक्ष्मात्=आकाश आदि सूक्ष्मसे भी
सूक्ष्मतरम्=अतिसूक्ष्म है
इह=इसजगत्बिषे
विभाति=सूर्य चन्द्रआदि रूप से अनेक प्रकारका भासताहै
च=और
तत्=वह
दूरात्सुदूरे=अविद्वानों कोदूरसेभी दूर है
+च=और
पश्यत्सु=विद्वानों को
इह=इसी देह के
अन्तिके=समीप
एव=ही
गुहायाम्=बुद्धिरूपीगुहा बिषे
निहितम्=स्थितहै

भावार्थ ॥

बृहच्चेति ॥ अब फिर तिसी ब्रह्म के स्वरूप को दिखाते हैं ॥ बृहच्च ॥ वह ब्रह्म सबसे बड़ा है, क्योंकि वह आकाशादिकों का भी आधार है, वह स्वप्रकाश भी है, और उसका स्वरूप इदंता करके मन बुद्धि द्वारा चिंतन नहीं किया जासक्ता है, और सबसे सूक्ष्म जो परमाणु आदिक हैं, उनसे भी वह सूक्ष्म है, क्योंकि परमाणुवों के भी भीतर वह रहता है, और नानारूपों करके वह प्रकाशमान है, अविद्वानों को वह दूर से भी दूर है, और एकाग्र चित्तवाले विद्वानों को वह अत्यंत समीप है, क्योंकि वह उनके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुद्धिरूपी गुहाविषे स्थित है, और इसीलिये वह ब्रह्म उनको अपना आत्मा प्रतीत होता है ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

न चक्षुषा गृह्यते न अपि वाचा न अन्यैः देवैः तपसा कर्मणा वा ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वः ततः तु तम् पश्यते निष्कलम् ध्यायमानः ॥

अन्वयः	पदार्थ
सः	वह ईश्वर
चक्षुषा	चक्षुकरके
न	नहीं
गृह्यते	ग्रहण किया जासक्ता है
वाचा	वाणीकरके
न	नहीं
गृह्यते	ग्रहण किया जासक्ता है
च	और
अन्यैः	अन्य
देवैः	इन्द्रियोंकरके
न	नहीं
गृह्यते	ग्रहण किया जासक्ता है
तपसा	तपकरके
च	और
कर्मणा	अग्निहोत्रादिकर्मकरके
अपि	भी
न	नहीं
गृह्यते	ग्रहण किया जासक्ता है
वा	परन्तु
ज्ञानप्रसादेन	ज्ञानके प्रसाद से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विशुद्धसत्त्वः = { अतिशुद्ध हुआ है अन्तःकरण जिसका ऐसा पुरुष

ध्यायमानः = मननकरता हुआ

ततः = तदनन्तर

तम् = उस

निष्कलं = { प्राणादिककलारहितपरमात्मा को

तु = अवश्य

पश्यते = पश्यति = देखता है

भावार्थ ॥

नचक्षुषेति ॥ पूर्व जिस आत्मवस्तु के स्वरूप का निरूपण किया है वह आत्मतत्त्व चक्षु इन्द्रिय करके ग्रहण नहीं किया जासक्ता है अर्थात् कोई भी पुरुष उसको चक्षु इन्द्रिय करके नहीं देखसक्ता है, क्योंकि वह रूपादिक गुणों से रहित है, और वाणी करके भी इदंता का विषय नहीं है, और स्पर्श से रहित होने से त्वगिन्द्रिय का भी विषय नहीं है, और न बाकी किसी इन्द्रियों का वह विषय है, और कृच्छ्र चान्द्रायणरूपी तप करके भी वह विषय नहीं किया जासक्ता है ॥ और अग्निहोत्रादिरूप कर्मों करके भी नहीं जाना जाता है ॥ (प्र०) फिर किस करके उसका ग्रहण होता है (उ०) शुद्धअन्तःकरण करके उस ब्रह्मको विद्वान् लोक अपरोक्षता करके जान लेते हैं याने साक्षात्कार करलेते हैं ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यो यस्मिन्प्राणः पञ्चधा संविवेश प्राणैश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां यस्मिन्विशुद्धे विभवत्येष आत्मा ॥ ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

एषः अणुः आत्मा चेतसा वेदितव्यः यस्मिन् प्राणः पञ्चधा संविवेश प्राणैः चित्तम् सर्वम् ओतम् प्रजानाम् यस्मिन् विशुद्धे विभवति एषः आत्मा ॥

अन्वयः	पदार्थ
यस्मिन्	जिसशरीर बिषे
प्राणः	प्राण
पञ्चधा	पांचप्रकार का होकर
संविवेश	दुग्धबिषे घृतवत् और काष्ठबिषे अग्निवत् सम्यक् प्रकार प्रविष्ट है
+च	और
+यस्मिन्	जिस शरीर बिषे
प्राणैः	प्राण और इन्द्रियोंकेसाथ
प्रजानाम्	लोकों का
सर्वम्	संपूर्ण
चित्तम्	अन्तःकरण
ओतम्	व्याप्त है
+च	और
यस्मिन्	जिस
विशुद्धे	निर्मलअन्तःकरण बिषे
एषः	यह पूर्वोक्त
आत्मा	ईश्वर
विभवति	प्रकाशमान है
एषः	वही
अणुः	सूक्ष्म से भी सूक्ष्म और प्राणकाभीप्राण
आत्मा	चैतन्यरूप आत्मा
चेतसा	चित्तद्वारा
वेदितव्यः	जानने योग्य है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

एषइति ॥ अब फिर तिसी ब्रह्मकी उपलब्धि के असाधारण साधन को कहते हैं ॥ एषः ॥ जिस शरीर में प्राणवायु पांच प्रकार को प्राप्त होकर प्रविष्ट हुई है उसी शरीर के हृद्याकाश विषे यह सूक्ष्म चैतन्य भी आत्मा प्रकाशमान है, वह सब प्राणों में और इन्द्रियों में ओतप्रोत, है यही केवल शुद्ध चित्त करके जानने के योग्य है, याने जिसका चित्त शुद्ध है तिसको आत्मा का प्रकाश स्पष्ट प्रतीत होता है, दूसरे को नहीं होता है ॥ ९ ॥

मूलम् ॥

यं यं लोकं मनसा संविभाति विशुद्धसत्त्वः कामयते यांश्च कामान् तं तं लोकं जायते तांश्च कामांस्तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेद्भूतिकामः ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

यम् यम् लोकम् मनसा संविभाति विशुद्धसत्त्वः कामयते यान् च कामान् तम् तम् लोकम् जायते तान् च कामान् तस्मात् आत्मज्ञम् हि अर्चयेत् भूतिकामः ॥

इति तृतीयमुण्डके प्रथमःखण्डः ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
विशुद्धसत्त्वः =	पूर्वोक्तप्रकारसे निर्मल अंतःकरण द्वाराआत्मज्ञानीपुरुष	मनसा =	चित्तकरके
		यम् =	जिस
		यम् =	जिस
		लोकम् =	स्वर्गादिलोक को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संविभाति=अपने निमित्त या दूसरे के निमित्त सङ्कल्प करता है
च=और
यान्=जिन
कामान्=कामनाओं को
कामयते=इच्छा करता है
तम्तम्=उस उस
लोकम्=लोकको
च तान्=और उन उन
कामान्=कामनाओं को
जायते=प्राप्त होता है
तस्मात्=इसलिये
भूतिकामः=आत्मश्रेय चाहनेवाला पुरुष
आत्मज्ञं=आत्मज्ञानी को
हि=निश्चय करके
अर्चयेत्=सत्कार शुश्रूषा नमस्कार आदि से पूजा करे

भावार्थ ॥

यंयमिति ॥ जिस जिस लोक या कामनाओं की प्राप्ति की इच्छा शुद्ध अन्तःकरणवाला आत्मवित् करता है, उस उस लोक और कामनाओं को वह प्राप्त होता है, और इसी कारण वह विद्वान् सत्य संकल्पवाला कहा जाता है, जिस पुरुष को विभूतिकी इच्छाहो वह आत्मवित् ज्ञानीकाही पूजनकरे ॥१०॥

इति तृतीयमुण्डके प्रथमःखण्डः ॥ १ ॥

मूलम् ॥

सवेदैतत्परमं ब्रह्म धाम यत्र विश्वं निहितं भाति शुभ्रम् उपासते पुरुषं ह्यकामास्ते शुक्रमतदेति वर्तन्ति धीराः ॥ १ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

सः वेद एतत् परमम् ब्रह्म धाम यत्र विश्वम् निहितम् भाति शुभ्रम् उपासते पुरुषम् ये हि अकामाः ते शुक्रम् एतत् अतिवर्तन्ति धीराः ॥

अन्वयः	पदार्थ
यत्र	जिसब्रह्म विषे
विश्वम्	समस्त जगत्
निहितम्	ओतप्रोतहै
च	और
यत्	जो
ब्रह्म	ब्रह्म
परमम्	सर्वोत्कृष्ट
धाम	सबका आश्रयस्थान
शुभ्रम्	शुद्ध
च	और
भाति	स्वयंप्रकाश है
एतत्	उसको
सः	वह पूर्वोक्त शुद्धअन्तःकरणवाला आत्मज्ञानी पुरुष
वेद	जानता है और उसी के तद्रूप होताहै
ये	जो
धीराः	विवेकीजन
ईदृशम्	ऐसे
पुरुषम्	ज्ञानी पुरुष को
अकामाः	निष्काम होतेहुये
उपासते	उपासनाकरते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते=वे एतत्=इस प्रसिद्ध शुक्रम्=	वीर्यको जो कि शरीरान्तरकाउपादानकारणहै	अतिवर्तन्ति=	उल्लंघनकर जातेहैंयाने वीर्य्यद्वारा फिर गर्भवास बिषे नहीं प्राप्त होते हैं

भावार्थ ॥

जिस ब्रह्म बिषे सम्पूर्ण जगत् ओतप्रोत है, और जो सब का आश्रय स्थान है, और स्वयं प्रकाश है, उसको ज्ञानी पुरुष जानकर तद्रूपही होताहै, जो पुरुष निष्काम होकर ऐसे ज्ञानकी उपासना करता है, वह फिर वीर्य द्वारा स्त्री की योनि में प्रवेश को नहीं प्राप्त होता है ॥ १ ॥

मूलम् ॥

कामान् यः कामयते मन्यमानः स कामभिर्जायते तत्र तत्र पर्याप्तकामस्य कृतात्मनस्तु इहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

कामान् यः कामयते मन्यमानः सः कामभिः जायते तत्र तत्र पर्याप्तकामस्य कृतात्मनः तु इह एव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
यः	जो मुमुक्षु
कामान्	दृष्ट अदृष्ट विषयोंकेकामनाओंको
मन्यमानः	स्मरणकरता हुआ
कामयते	भोगकरनेको इच्छाकरताहै
सः	वह
कामभिः	अपनीकामनोंकीवासना करके
तत्रतत्र	अनेकलोकों या योनियों बिषे
जायते	प्राप्त होताहै यानी जन्म मरण भाव से मुक्त नहीं होता है
च	और
तु	इसके विपरीत

अन्वयः	पदार्थ
कृतात्मनः	कृतकृत्य हुआ है आत्मा जिसका याने अपना आत्माही परमात्माभास रहा है जिसको ऐसे
पर्याप्तकामस्य	परिपूर्णकाम को प्राप्तहुये निष्काम मुमुक्षु के
सर्वे	सम्पूर्ण
कामाः	कामना
इह	इसी शरीरबिषे
एव	ही
प्रविलीयन्ते	लीनहोजाते हैं यानी वह जीवन्मुक्त होकर क्लेशों से रहित होजाता है

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

कामानिति ॥ जो पुरुष दृष्टाऽदृष्ट विषयों की प्राप्ति की इच्छा करता है वह अपनी कामनाओं की वासना करके अनेक लोकों या योनि को प्राप्त होता है, अर्थात् जन्म मरण से रहित नहीं होताहै, इसके विपरीत जिस पुरुष का अन्तःकरण शुद्ध हुआ है और जिस को अपना आत्मा परमात्मा होकर भास रहाहै और जिसकी सम्पूर्ण कामना इसी शरीर में लीन होगई हैं अर्थात् बाकी कुछ भी जिसको करनेके लिये नहीं रहाहै, वह जीवनमुक्त होकर क्लेशों से रहित होजाता है ॥ २ ॥

मूलम् ॥

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ॥

न अयम् आत्मा प्रवचनेन लभ्यः न मेधया न बहुना श्रुतेन यम् एव एषः वृणुते तेन लभ्यः तस्य एषः आत्मा विवृणुते तनूम् स्वाम् ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अयम्	यह	न	न
आत्मा	परमात्मा	मेधया	ग्रन्थधारण समर्थ बुद्धिसे
न	न	न	न
प्रवचनेन	वेद और शास्त्र के अध्ययन से	बहुना	बहुत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रुतेन=श्रवणकरने से
लभ्यः=प्राप्त होनेयोग्यहै
+यदा=जब
एषः=यह विद्वान् मुमुक्षु
यम्=जिस परमात्मा को
वृणुते=अभेद दृष्टि करके प्राप्त होने की इच्छा करताहै
एषः=वह
आत्मा=परमात्मा
अपि=भी
तस्य=उस विद्वान्के निमित्त
स्वाम्=अपने
तनूम्=शरीरको
वृणुते=प्रकाशकरता है
+तदा=तब
तेन=उसअभेदपरस्पर संबंधसे
सः=यह परमात्मा
एव=निश्चय करके
लभ्यः=प्राप्त होनेयोग्य है

भावार्थ ॥

नायमिति ॥ यह प्रत्येक अभिन्न ब्रह्मरूप आत्मा शरीराभ्यन्तर न वेद के अध्ययन से न ग्रन्थके अर्थ धारण करनेवाली बुद्धि से, न अनेक ग्रन्थों के बहुत सुनने से प्राप्त होने योग्य है, जो मुमुक्षु श्रवण मननादिकों करके आत्मा की प्राप्ति की इच्छा करता है, और अहं ब्रह्मास्मि ऐसा अभेद चिन्तन भी करता है, उसी विद्वान् को परमात्मा अपने शरीर को प्रकाश करता है, और तबहीं उस मुमुक्षुके हृदय में ऐसा अनुभव होता है "कि मैं ब्रह्मस्वरूप हूँ"॥ और फिर वह शान्त आनन्द अवाच्य होजाता है ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो न च प्रमादात्तप सोवाप्यलिंगात् एतैरुपायैर्यतते यस्तु विद्वांस्तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्म धाम ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ॥

न अयम् आत्मा बलहीनेन लभ्यः न च प्रमादात् तपसः वा अपि अलिंगात् एतैः उपायैः यतते यः तु विद्वान् तस्य एषः आत्मा विशते ब्रह्म धाम ॥

अन्वयः	पदार्थ
न	न
बलहीनेन	ब्रह्मविषेनिष्ठारूपी बल हीनपुरुषसे
च	और
न	न
प्रमादात्	विषयसंग के प्रमादसे
वा	और
न	न
अलिंगात्	संन्यासरहित
तपसः	ज्ञानसे
अयम्	यह
आत्मा	परमात्मा
अपि	कभी
लभ्यः	प्राप्तहोने योग्य है
तु	परन्तु
यः	जो
विद्वान्	ब्रह्मनिष्ठ
एतैः	इन
+चतुर्भिः	चारों
उपायैः	उपायों से याने बल अप्रमाद त्याग और ज्ञान से
यतते	उसकी प्राप्ति के साधनों में यत्न करता है
तस्य	उसको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एषः=यह आत्मा=जीवात्मा धाम=सर्वकाआश्रय ब्रह्म=ब्रह्मविषे	विशते=	प्रवेशकरताहैया- नेउसकाआत्मा परमात्मा के साथ तन्मयहोजाता है

भावार्थ ॥

नायमिति ॥ श्रवण मननादिक बलसे जो पुरुष हीनहै, और विषयों में आसक्त है चित्त जिसका, और ज्ञान विना वैराग्य के है जिसको, और प्रमादी है जो उस करके यह आत्मा अलभ्य है, परन्तु जो विद्वान् साधनचतुष्टय सम्पन्न है, और आत्मा की प्राप्ति का यत्न करता है, उसी का आत्मा परमात्मा के साथ तन्मय होजाता है ॥ ४ ॥

मूलम् ॥

संप्राप्यैनमृषयोज्ञानतृप्ताः कृतात्मानोवीतरागाः प्रशान्ताः ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीरा युक्तात्मानः सर्वमेवाविशन्ति ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

सम्प्राप्य एनम् ऋषयः ज्ञानतृप्ताः कृतात्मानः वीतरागाः प्रशान्ताः ते सर्वगम् सर्वतः प्राप्य धीराः युक्तात्मानः सर्वम् एव आविशन्ति॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
युक्तात्मानः=	योग विषे आरूढ़ है चित्तजिनका	कृतात्मानः=	कृतार्थ किया है याने अपने आत्माको परमात्मासमझा है जिन्हों ने
धीराः=	अत्यन्त है विवेक जिनका		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वीतरागाः = दूर होगया है विषयोंमें राग जिनका

शान्तात्मा = शान्तहुये हैं मनआदिइन्द्रियांजिनके

ज्ञानतृप्ताः = आत्मज्ञान से परिपूर्ण हैं जे

ते = वे

एनम् = उस

सर्वगम् = सर्व व्यापी परमात्माको

सर्वतः = सबओर से

सम्प्राप्य = सम्यक् प्रकार प्राप्तहोके

च = और

+देहावसानम् = देहावसान को

प्राप्य = पाकर

सर्वम् = समस्त विश्व बिषे

एव = निश्चय पूर्वक

आविशन्ति = सर्वात्मभावसेप्रविष्ट होते हैं

भावार्थ ॥

संप्राप्येति ॥ जिनका चित्त योग्य विषय आरूढ़ है, और जिनको विवेक प्राप्त हुआ है, और जिसने अपने आत्मा को परमात्मा समझा है, और जिनके मनआदि इन्द्रियां शान्त होगई हैं, और आत्मज्ञान से परिपूर्ण हैं जो, वे परमात्मा को सब ओर से देखते हुये शरीर पात होने के पश्चात् ब्रह्म में लीन होजाते हैं ॥ ५ ॥

मूलम् ॥

वेदांतविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद्यत-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यः शुद्धसत्त्वाः ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यंतिसर्वे ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ॥

वेदांतविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगात् यतयः शुद्धसत्त्वाः ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
संन्यासयोगात्	सबकर्मों के त्यागरूपी योगसे	ते	वे
शुद्धसत्त्वाः	शुद्धहुआ है अन्तःकरण जिनका	सर्वे	सब
च	और	परामृताः	जीवन्मुक्त होते हुये
वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः	वेदान्त के विचारसेउत्पन्नहुयेआत्मज्ञान बिषे है निश्चय जिनको ऐसे	यतयः	यती लोक
		परान्तकाले	देहके त्यागनेपर
		ब्रह्मलोकेषु	ब्रह्मबिषे
		परिमुच्यन्ति	मुक्त होजाते हैं

भावार्थ ॥

वेदांतविज्ञानेति ॥ जिन्हों ने सब कामनाओं के त्याग से शुद्ध किया है अन्तःकरण अपना, और वेदांत वाक्यों के अर्थात् महावाक्यों के अर्थ का जो ज्ञान है उसको संशय विपर्यय से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहित होकर जिन्हों ने निश्चय करलिया है, वे जीवन्मुक्त यती लोक शरीर के त्याग के पश्चात् ब्रह्मरूप होजाते हैं ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

गताः कलाः पंचदश प्रतिष्ठा देवाश्च सर्वे प्रति देवतासु कर्माणि विज्ञानमयश्च आत्मा परेऽव्य येसर्वएकी भवन्ति ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

गताः कलाः पञ्चदश प्रतिष्ठाः देवाः च सर्वे प्रतिदेवतासु कर्माणि विज्ञानमयः च आत्मा परे अव्यये सर्वे एकीभवन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थ
मोक्षकाले	मोक्षकाल बिषे
पञ्चदश	देहकी उत्पत्तिकेकारण प्राणादिपंद्रह
कलाः	कला
प्रतिष्ठाः	अपने अपने कारणोंको
गताः	प्राप्तहोते हुये
च	और
सर्वे	चक्षुरादिइन्द्रियोंबिषे स्थित हुये सब
देवाः	देवता
प्रतिदेवतासु	अपने कारणआदित्यादि देवताओंबिषे
गताः	प्राप्तहोते हुये
च	और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्माणि=संपूर्ण कर्म और उनके संस्कार
च=और
विज्ञानमयः=चिदाभासविशिष्ट
आत्मा=बुद्धि
एते=ये
सर्वे=सब
अव्यये=अविनाशी
परे=परमात्मा विषे
एकीभवन्ति=एकताको प्राप्त होते हैं

भावार्थ ॥

गताइति ॥ प्राण, श्रद्धा, पञ्चमहाभूत, और ज्ञानेन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मन्त्र, कर्म, लोक, ये पन्द्रह कला देह के आरम्भक हैं अर्थात् इन्हीं पन्द्रह कलोंका देह बना है, सो मोक्षकाल में यह पन्द्रह कला अपने अपने कारण में लय होजाती हैं, और चक्षुरादिक करणोंमें जो देवता स्थित हैं, अर्थात् सूर्य्यादि देवतों की जितनी शक्तियें हैं, वे सब विद्वान् की मोक्षकाल में अपने २ देवता में प्राप्त होजाती हैं, और प्रारब्ध कर्म से अतिरिक्त जितने कर्म हैं वे भी सब नष्टहोजाते हैं, और विज्ञान स्वरूप चिदाभास बुद्धि विशिष्ट जो आत्माहै, वह आनन्दरूप ब्रह्ममें एकताको प्राप्त होजाता है ॥ ७ ॥

मूलम् ॥

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परंपुरुषमुपैति दिव्यम् ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ॥

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे अस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय तथा विद्वान् नामरूपात् विमुक्तः परात्परम् पुरुषम् उपैति दिव्यम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थ
यथा	=जैसे
स्यन्दमानः	=बहतीहुई
नद्यः	=नदियां
समुद्रे	=समुद्रबिषे
नामरूपे	=नाम और रूपदोनोंको
विहाय	=त्याग के
अस्तम्	=अभाव को
गच्छन्ति	=प्राप्त होतीहैं
तथा	=तैसेही
विद्वान्	=ज्ञानीविद्वान्
नामरूपात्	=नाम और रूप दोनोंसे
विमुक्तः	=रहित होता हुआ
दिव्यम्	=प्रकाशमान
परात्परम्	=अविनाशी
पुरुषम्	=पुरुषयानी ब्रह्मको
उपैति	=प्राप्तहोताहै

भावार्थ ॥

यथेति ॥ जैसे गङ्गा और यमुना आदिक नदियें गमन करती हुई अपने अपने नामों और रूपों का त्याग करके समुद्र में जाकर लयभाव को प्राप्त होजाती हैं तैसे आत्मवित् भी मोक्षकाल में नामरूप से रहित होकर परमपुरुष जो परमात्मा ब्रह्म है उस में लयभाव को प्राप्त होजाता है ॥ ८ ॥

मूलम् ॥

सयोह वै तत्परमं ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति नास्या ब्रह्मवित्कुले भवति तरति शोकं तरति पाप्मानं गुहाग्रंथिभ्यो विमुक्तोऽमृतोभवति ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ॥

सः यः ह वै तत् परमम् ब्रह्म वेद ब्रह्म एव भवति न अस्य अब्रह्मवित् कुले भवति तरति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शोकम् तरति पाप्मानम् गुहा ग्रन्थिभ्यः विमुक्तः अमृतः भवति ॥

अन्वयः	पदार्थ
ह वै	निश्चयकरके
यः	जो कोई
तत्	उस
परमम्	परम
ब्रह्म	ब्रह्मको
वेद	अहंब्रह्मास्मिभाव से जानता है
सः	वह
ब्रह्म	ब्रह्म
एव	ही
भवति	होता है
च	और
शोकम्	शोक याने मनके संतापसे
तरति	उत्तीर्णहोता है
पाप्मानम्	धर्म और अधर्मदोनोंसे
तरति	छूटजाता है
च	और
गुहाग्रन्थिभ्यः	हृदयके संशयरूपग्रन्थियों से
विमुक्तः	छुटाहुआ
अमृतः	मरण धर्म रहित
भवति	होता है
अस्य	उस विद्वान् के
कुले	कुल विषे
अब्रह्मवित्	ब्रह्मका न जानने वाला कोई
न	नहीं
भवति	होता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

सयोहवैइति ॥ जो कोई पुरुष निश्चय करके उस परम ब्रह्मको अहं ब्रह्मास्मि भाव से जान लेताहै, और मनके सन्तापसे उत्तीर्ण होजाता है, उस विद्वान्‌के कुलमें या शिष्यादि वंश में ब्रह्मज्ञान से रहित कोई नहीं होता है, अर्थात् कोई न कोई ब्रह्म वित् बनाही रहता है, और वह आत्मवित् संसाररूपी शोक से तर जाता है, यानें जीते जीतेही शोक से रहित होजाता है, और पापों से भी छूट जाताहै, और बुद्धिगत जोकि अविद्या की ग्रन्थि है, उससे भी रहित होजाता है ॥ ६ ॥

मूलम् ॥

तदेतदृचाऽभ्युक्तं क्रियावन्तः श्रोत्रिया ब्रह्मनिष्ठाः स्वयं जुह्वते एकर्षिं श्रद्धयंतस्तेषामेवैतां ब्रह्मविद्यां वदेत शिरोव्रतं विधिवद्यैस्तु चीर्णम् ॥ १० ॥

पदच्छेदः ॥

तत् एतत् ऋचा अभ्युक्तम् क्रियावन्तः श्रोत्रियाः ब्रह्मनिष्ठाः स्वयम् जुह्वते एकर्षिम् श्रद्धयन्तः तेषाम् एव एताम् ब्रह्मविद्याम् वदेत् शिरोव्रतम् विधिवत् यैः तु चीर्णम् ॥

अन्वयः	पदार्थ
+ ये	जो
क्रियावंतः	यथोक्तकर्म के अनुष्ठान करने वालेहैं
श्रोत्रियाः	वेदवेदांग पारङ्गत हैं
ब्रह्मनिष्ठाः	परब्रह्मकेज्ञान में तत्पर हैं
श्रद्धयन्तः	श्रद्धावान् हैं
च	और
स्वयम्	अपने बिषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकर्षिम्=एकर्षि नामक अग्नि को
जुह्वते=जुह्वति=उपासते हैं
तु=और
यैः=जिनों करके
शिरोव्रतम्=शिरोव्रत
विधिवत्=यथाविधान
चीर्णम्=धारणकिया गया है
तेषाम्=ऐसे मुमुक्षुओं के अर्थ
एताम्=इस
ब्रह्मविद्याम्=ब्रह्मविद्याको
+गुरुः=गुरु
एव=अवश्य
वदेत्=उपदेश करै
तत्=इस प्रकार
एतत्=इसब्रह्मविद्या केसंप्रदायका विधान
ऋचा=मन्त्र करके
अभ्युक्तम्=प्रकाशित कियागया है

भावार्थ ॥

तदेतदिति ॥ जो वेद वेदांग के जाननेवाले हैं, और निष्काम कर्मोंको अनुष्ठान करके जिसका चित्त शुद्ध होगया है, और जो श्रद्धालु हैं, और एक ऋषिसंज्ञिक अग्नि को जिसने उपासन किया है, और जिसने शिरोव्रत यथाविधान धारण किया है वह यह ब्रह्मविद्या पानेयोग्य है, उसको ब्रह्मवित् गुरु अवश्य उपदेश करैं, इसप्रकार ब्रह्मविद्या के सम्प्रदाय का विधान मंत्रों करके प्रकाशित किया गया है ॥ १० ॥

नोट—शिरोव्रत एक व्रत है जिसकी उपासनाके बलसे अथर्व वेदवाले अपने शरीराग्निको मस्तकगत करलेते हैं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

तदेतत्सत्यमृषिरंगिराः पुरोवाच नैतदचीर्णव्रतोऽधीते नमः परमऋषिभ्योनमः परमऋषिभ्यः ॥ ११ ॥

पदच्छेदः ॥

तत् एतत् सत्यम् ऋषिः अङ्गिराः पुरा उवाच न एतत् अचीर्णव्रतः अधीते नमः परमऋषिभ्यः नमः परमऋषिभ्यः ॥

अन्वयः	पदार्थ
तत्	इस प्रकार
एतत्	इस
सत्यम्	सत्यअविनाशी पुरुष को
अङ्गिराः	अंगिरानामक
ऋषिः	ऋषि
पुरा	पहले
उवाच	शौनकऋषि के अर्थ कहता भया
एतत्	इस सत्यबोधकशास्त्रको
अचीर्णव्रतः	व्रत रहित पुरुष
नअधीते	अध्ययन करनेकेयोग्यनहीं है
नमःपरमऋषिभ्यः	विद्यासंप्रदायकेचलानेवाले जोब्रह्माआदि ऋषीश्वरहैंउनकेअर्थनमस्कारहै
नमःपरमऋषिभ्यः	परमऋषियों के अर्थ नमस्कार है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ ॥

तदेतादिति ॥ यह पूर्व कथन कियाहुआ अविनाशी पुरुषस्वरूप है, इसी अक्षर पुरुष को पूर्वकाल में अङ्गिराऋषि ने शौनकऋषि के प्रति उपदेश किया था, यह सत्य बोधक शास्त्र व्रत रहित पुरुष के अध्ययन करने योग्य नहीं है, जो कोई आचार्य के समीप विधिपूर्वक शिष्य भावसे जाय उसके प्रति आचार्य भी उसी अक्षर पुरुष का उपदेश करै, और जिसने विधिपूर्वक पूर्वोक्त अग्नि को शिरपर धारण नहीं किया है, उसके प्रति गुरु उपदेश न करै, परमऋषियों के प्रति नमस्कार हो ॥ ११ ॥

इति तृतीयमुण्डके द्वितीयः खंडः ॥

भद्रङ्करणेभिरितिशान्तिपाठः ॥

नोट—द्वितीयवारनमस्कारअत्यन्त आदरकेअर्थ और उपनिषद् के समाप्तिके अर्थ है ॥

इति तृतीयमुण्डके द्वितीयः खण्डः समाप्तः मुण्डकोपनिषत्

ॐ हरिः ॐम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञापन

भाषाटीका पण्डित यमुनाशंकर ॥

पुस्तक	मूल्य
केनोपनिषद्	=)
ईशावास्य उपनिषद्	-)॥
प्रश्नोपनिषद्	≡)
मांडूक्योपनिषद्	॥=)
कठवल्लीउपनिषद्	≡)॥
तैत्तिरीयोपनिषद्	।-)
ऐतरेयोपनिषद्	=)॥।
मुंडकउपनिषद्	=)
छान्दोग्य उपनिषद्	१-)

भाषाटीका बाबूजालिमसिंह ॥

पुस्तक	मूल्य
१ केनोपनिषद्	=)
२ ईशावास्यउपनिषद्	-)॥
३ प्रश्नोपनिषद्	।-)
४ मांडूक्योपनिषद्	-)॥
५ कठवल्लीउपनिषद्	।=)
६ तैत्तिरीयोपनिषद्	॥)
७ ऐतरेयोपनिषद्	≡)
उपनिषद्सार राजा शिवप्रसाद	-)॥

मिलने का पता

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस लखनऊ,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



माण्डूक्य उपनिषद्

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशी भाषामें रायबहादुर बाबू ज्ञालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद ने परिडत गङ्गादत्त जोशी और परिडत रामदत्त जोशी की सहायता से अनुवाद किया।

उसीको

श्रीमान् परमधार्म्मिक शुभगुणनिधान मुंशी प्रयागनारायणजी ने सर्वलोकहितार्थ

दूसरी बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के यन्त्रालय में मुद्रित हुआ

सन् १९१२ ई० ॥

सर्वाधिकार स्वाधीन है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम् । यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिल सिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्य वीकृतीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः । षट्चक्रादि विचारसारकुशला नन्दन्ति योगीश्वरा तं वन्दे परमात्मरूपम नघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् ॥ २ ॥

दो० करों वन्दना ब्रह्मको, जो अनन्त निजरूप ।
जेहि जाने जगभ्रमसकल, मिटै अन्ध तमकूप ॥
नाम रूप जामें नहीं, नहीं जाति अरु भेद ।
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं, रहित त्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद्, ताका करूं विचार ।
भाषा में तिस अर्थ को, लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो, सो मैं करूं बखान ।
परमानन्द सहाय ते, जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट, अकबरपुर है गांव ।
जन्मभूमि मम जान तू, ज़ालिमसिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होनेके लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौका है जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागर के पार होगये हैं और होतेजाते हैं और भविष्यत्काल में होंगे जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषाटीका रची गई है । इस टीकामें पहिले मूल मन्त्र है फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है और दक्षिण हस्त

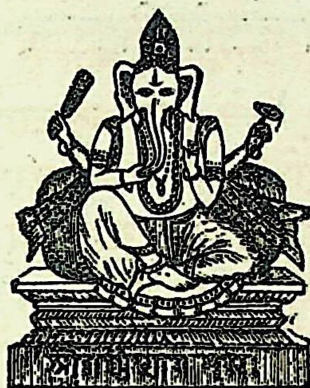
T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की ओर पदार्थसहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफ का लिखा हुआ ऊपर से नीचे तक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्त के तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्र का मध्यदेशीय भाषा में मिलेगा और यदि बायें तरफ से दहिने तरफ को पढ़ाजावे तो हर एक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलेगा जहांतक होसका है प्रत्येक संस्कृतपदका अर्थ विभक्ति के अनुसार लिखागया है इस टीका के पढ़ने से संस्कृतविद्या का भी अभ्यास होगा इस टीका में मूल का कोई शब्द छूटने नहीं पाया है और मन्त्र का पूरा २ अर्थ उसी के शब्दोंही से सिद्ध कियागया है अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है हां कहीं कहीं ऊपर से संस्कृत पद मन्त्र के अर्थ स्पष्ट करनेके लिये रक्खागया है और उस पदके प्रथम यह + चिह्न लगादियागया है ताकि पाठकजनों को विदित होजावे कि यह पद मूल का नहीं है । इस टीका को बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद हेडपोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गङ्गादत्त ज्योतिर्विद् निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद् निवासी अल्मोड़ाख्य नगर के रचकर शुद्ध निर्मलहृदयाकाशवान् पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धता हो उस से टीकाकर्ता को सूचना करें ताकि अशुद्धता दूर होजावे ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



अथ माण्डूक्योपनिषद् सटीक ॥

मूलम् ।

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदायुः ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

भद्रम् कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रम् पश्येम अक्षभिः यजत्राः स्थिरैः अङ्गैः तुष्टुवांसः तनूभिः व्यशेमहि देवहितम् यत् आयुः ॥ १ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।
यजत्राः	= हे पूजन करनेवाले की रक्षा करने वाले
देवाः	= देवताओ
+भवत्प्रसादात्	= तुम्हारे प्रसादसे
कर्णेभिः	= कानोंद्वारा
भद्रम्	= कल्याणको
शृणुयाम	= सुनैं हम
च	= और
अक्षभिः	= नेत्रोंद्वारा
भद्रम्	= कल्याण को
पश्येम	= देखैं हम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च=और
स्थिरैः=स्थिर याने दृढ़
अङ्गैः=अंगों करके
च=और
+स्थिराभिः=स्थिर याने दृढ़
तनूभिः=शरीरों करके
+युष्माकम्=आपकी
तुष्टुवांसः=सदा स्तुति करते हुये
वयम्=हम
आयुः=आयु को
यत्=जोकि
देवहितम्=देवतोंकेलिये हित है याने यज्ञदानादिकों से देवतों का हितकरने वाला है
व्यशेमहि=प्राप्त होवैं
ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः=हमारे तापत्रय याने आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक की शांति होवै

अथ अथर्ववेदीय माण्डूक्योपनिषदारम्भः॥

मूलम् ।

ॐमित्येतदक्षरमिदꣳ सर्वं तस्योपव्याख्यानं भूतं भवद्भविष्यदिति सर्वमोंकारएव यच्चान्यत्त्रि कालातीतं तदप्योंकारएव ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

ॐ इति एतत् अक्षरम् इदम् सर्वम् तस्य उपव्याख्यानम् भूतम् भवत् भविष्यत् इति सर्वम्

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐकारः एव यत् च अन्यत् त्रिकालातीतम् तत् अपि ॐकारः एव ॥ १ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।
+यत्	जो
इदम्	यहवाच्य वाचक अथवा शब्द शब्दार्थ
सर्वम्	सब है
एतत्	वह
ॐ	ॐकार
अक्षरम्	अक्षर
इति	करके है
तस्य	उसीप्रणव के
उपव्याख्यानम्	विशेषज्ञान द्वारा परब्रह्म के प्राप्ति का कथन
+क्रियते	कियाजाताहै
यत्	जो
भूतम्	भूत
भविष्यत्	भविष्यत्
भवत्	वर्त्तमान
इति	करके है
तत्	सो
सर्वम्	सब
ॐकारः	प्रणवरूप
एव	ही
+अस्ति	है
च	और
यत्	जो
त्रिकालातीतम्	कालत्रयसे पृथक्
अन्यत्	अव्याकृतादि है
तत्	वह
अपि	भी
ॐकारः	प्रणवरूप
एव	ही
अस्ति	है

भावार्थः ।

ॐ मित्येतदक्षरमिदं सर्वं ॥ यह जो कुछ प्रत्यक्ष का विषय दृश्यमान प्रपंच जड़ चेतनरूप जगत् है सो सब ॐकाररूप

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही है ॥ अनेक श्रुतियें संपूर्ण जगत् को रज्जु में कल्पित सर्प की तरह ॐकाररूप करकेही कथन करती हैं, याने जैसे रज्जु के ज्ञान से उस बिषे अध्यस्त सर्प का पता नहीं लगता है उसी तरह ॐकारके यथार्थ ज्ञान पश्चात् उस बिषे कल्पित जगत् का पता नहीं लगता है, क्योंकि कल्पित वस्तु अपने अधिष्ठान से भिन्न नहीं होती है ॥ ॐमिति ब्रह्म ॥ ॐमित्येदक्षरम् ॥ ॐकारही ब्रह्म है ऐसी जो श्रुति कहती है इससे यही सिद्ध होता है कि ब्रह्म के आश्रय ॐकार है, और ऊपर के कथन अनुसार ॐकार के आश्रय जगत् है, इसलिये सम्पूर्ण जगत् ब्रह्मके आश्रय है, याने ब्रह्मरूपही है, ब्रह्म से अतिरिक्त नहीं है ॥ प्रश्न ॥ ॐकार शब्दरूप है, और ब्रह्म शब्द से रहित है, तब ॐकार ब्रह्मरूप कैसे होसक्ता है, ॐकार शब्द ब्रह्म का वाचक है, अर्थात् संपूर्ण ब्रह्म के नामों में से उत्तम है, और ब्रह्म उसका वाच्य है, वाच्य वाचक का अभेद होता है, जिस नाम के लेने से जिस वस्तु का बोध हो वह नाम उस वस्तु का वाचक होता है, और वह वस्तु उस नाम का वाच्य कही जाती है, ॐकारके उच्चारण करनेसे ब्रह्मका बोध होता है, इसलिये ॐकार ब्रह्मका वाचक है, और ब्रह्म उसका वाच्य है ॥ और वाच्य वाचक का अभेदहै, क्योंकि वाचक से विना वाच्य पदार्थ की सिद्धि नहीं होती है, और वाच्यसे विना वाचककी सिद्धि नहीं होती है, इस हेतु से दोनों का अभेदही सिद्ध होता है, इसलिये ॐकारही ब्रह्म है, और जितना जगत् में नाम रूप है सो सब वाणी करके कथनमात्र है, सब प्रपंच का आश्रयभूत ब्रह्मही सत्य है, जितना संसार में पदार्थ है वह सब वाचक से भिन्न नहीं है, और वाचक ॐकार से भिन्न नहीं, क्योंकि ॐकार से शब्द व शब्द से आकाशादि पंचमहाभूत उत्पन्न हुये हैं, और उन्हीं से सम्पूर्ण प्रपंच संसार हुआ है, इसलिये संपूर्ण प्रपंच ॐकाररूप है, और उसी पर अपर रूप अक्षर ॐकार काही स्पष्ट कथन है, क्योंकि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐकारही ब्रह्म की प्राप्ति का उपाय है, और भूत भविष्यत् वर्त्त-मान इन तीनों कालों करके जितने पदार्थ परिच्छेदवाले हैं वे भी सब ॐकाररूपही हैं, और जो तीनों कालों से अतीत है अर्थात् काल परिच्छेद से रहित है, और कार्य्यद्वारा जाना जाताहै, वह भी अव्याकृतरूप ॐकारही है, शब्द दो प्रकार का होता है, एक ध्वनिआत्मक दूसरा वर्ण आत्मक, पहिले ध्वनि होती है, फिर उसीसे वर्ण आत्मक शब्द निकलता है, इस लिये दोनों प्रकारके शब्द ॐकाररूप हैं, याने जो कुछ शब्दों करके जाना जाय वह सब ॐकाररूपही है, वाच्य वाचक का अभेद है, इसलिये श्रुति ने एक बार वाचक को प्रधान मान करके यह संपूर्ण जगत् ॐकाररूपही है ऐसा कहती है और दूसरी बार वाच्य को प्रधान करके श्रुति फिर कहती है ॥ १ ॥

मूलम् ।

सर्वंह्येतद्ब्रह्मायमात्मा ब्रह्म सोयमात्मा चतुष्पात् ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

सर्वम् हि एतत् ब्रह्म अयम् आत्मा ब्रह्म सः अयम् आत्मा चतुष्पात् ॥ २ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।	अन्वयः ।	पदार्थः ।
एतत्=	यह	अयम्=	यह
सर्वम्=	सब	ब्रह्म=	ब्रह्म
ब्रह्म=	ॐकाररूप ब्रह्म है	आत्मा=	प्रसिद्ध आत्मा हृदयाकाशवि-षे स्थित है
+तत्=	वही		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च=और
सः=वह
हि=ही
अयम्=यह
आत्मा=आत्मा

चतुष्पात्= { विश्व तैजस प्राज्ञ और तुरीय के भेद से चार पाद वाला है

भावार्थः ।

सर्वंह्येतद्ब्रह्मायमात्मा ॥ संपूर्ण जगत् जो ॐकाररूप सो निश्चय करके ब्रह्मरूपही है, या जो अपना आत्मा अपरोक्ष है सोई ब्रह्म है, और यह आत्माही चतुष्पाद है, ॥ आत्मा किस तरह चतुष्पाद है सो दिखाते हैं ॥ वास्तव से तो आत्मा में पादों का अभाव है, तथापि आत्मज्ञान की प्राप्ति के उपाय करके पादों की कल्पना करते हैं, चारों पादों में प्रथम पाद जागरित है ॥ २ ॥

मूलम् ।

जागरितस्थानोबहिःप्रज्ञः सप्तांगएकोनविंशतिमुखः स्थूलभुग्वैश्वानरः प्रथमः पादः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः ।

जागरितस्थानः बहिःप्रज्ञः सप्ताङ्गः एकोनविंशतिमुखः स्थूलभुक् वैश्वानरः प्रथमः पादः ॥ ३ ॥

अन्वयः । पदार्थः ।

जागरितस्थानः = { जाग्रत् अवस्था है स्थान जिसका

अन्वयः । पदार्थः ।

बहिःप्रज्ञः = { बाह्य विषयोंविषे है बुद्धि जिसकी

सप्ताङ्गः = { सातहैं अंग जिसके

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकोनविंशतिमुखः	= उन्नीस हैं मुखजिसके	+ तत्=सो
		प्रथमः=प्रथम
स्थूलभुक्=	शब्दादि स्थूलविषयों का भोक्ता है जो	पादः=पाद
		वैश्वानरः=वैश्वानर है

नोट—सप्ताङ्गः (१) मस्तक स्थानी स्वर्गलोक (२) नेत्रस्थानी सूर्य (३) प्राणस्थानी वायु (४) मध्य देहस्थानी आकाश (५) मूत्रस्थानी जल (६) पादस्थानी पृथिवी (७) मुखस्थानी अग्नि

एकोनविंशतिमुखः ५ कर्मेन्द्रिय ५ ज्ञानेन्द्रिय ५ प्राण मन बुद्धि चित्त और अहंकार ॥

भावार्थः ।

जागरितस्थानःबहिःप्रज्ञः ॥ बाह्य विषयोंकी तरफ है बुद्धि जिस की, और सात हैं अंग जिसके याने मस्तकस्थानी स्वर्गलोक (१) नेत्रस्थानी सूर्य (२) प्राणस्थानी वायु (३) मध्य स्थानी आकाश (४) मूलस्थानी जल (५) पादस्थानी पृथिवी (६) मुखस्थानी अग्नि (७) और उन्नीस हैं मुख यानी ज्ञान की प्राप्ति का द्वार जिसमें याने पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच कर्मेन्द्रिय और पांच प्राण और मन बुद्धि चित्त अहंकार, और जाग्रत् अवस्था विचरने का है स्थान जिसका, ऐसा जो है वही वैश्वानर नामवाला आत्मा है, वही पूर्वोक्त एकोनविंशतिमुखों करके शब्दादिक स्थूलविषयों को भोगता है, और इसी से उसको स्थूलभुक् भी कहते हैं, सो यह वैश्वानर प्रथम पाद है, और समष्टि स्थूलशरीरों के साथ उसका तादात्म्याऽध्यास होने से उसी को विराट् भी कहते हैं ॥ प्रश्न ॥ विश्व की तैजस से उत्पत्ति होती है इसलिये प्रथम कारणरूप तैजस को कहना उचित था और पश्चात् कार्य को कहना चाहिये था ॥ उत्तर ॥ यहां पर सृष्टि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की प्रक्रिया को लेकरके नहीं कहा है, किंतु लयक्रम को लेकर के कहा है, इसी से वैश्वानर को प्रथमपादरूप करके कहा है, क्योंकि वैश्वानर काही प्रथम तैजस में लय करना होताहै, फिर तैजस को प्राज्ञ में और प्राज्ञ को तुर्य में, और अद्वैत आत्मा की सिद्धि जब होगी जब संपूर्ण प्रपंचका लय होगा ॥ ३ ॥

मूलम् ।

स्वप्नस्थानोऽन्तःप्रज्ञःसप्तांगएकोनविंशतिमुखः प्रविविक्तभुक्तैजसोद्वितीयःपादः ॥ ४ ॥

पदच्छेदः ।

स्वप्नस्थानः अन्तःप्रज्ञः सप्ताङ्गः एकोनविंशति मुखः प्रविविक्तभुक् तैजसः द्वितीयः पादः ॥ ४ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।	अन्वयः ।	पदार्थः ।
स्वप्नस्थानः	=स्वप्न अवस्थाहै स्थान जिसका	प्रविविक्तभुक्	=अंतःकरणकी वृत्ति द्वारा वासनामय सूक्ष्म भोगों का भोक्ता है जो
अन्तःप्रज्ञः	=अन्तर्मुख है प्रज्ञाजिसकी	तत्	=सो
सप्ताङ्गः	=पूर्वोक्त सात हैं अंग जिसके	द्वितीयः	=दूसरा
एकोनविंशतिमुखः	=पूर्वोक्त उन्नीस हैं मुख जिसके	पादः	=पाद
		तैजसः	=तैजस नाम वाला है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोट ॥ तैजसः—अग्नि अथवा सूर्य की अपेक्षा न करके अपने प्रकाशरूप तेज से सूक्ष्म भोगों का भोक्ता स्वप्न अवस्था विषे है जो सो कहिये तैजस—

भावार्थः ।

स्वप्नस्थान इति ॥ स्वप्नअवस्था है स्थान जिसका, अर्थात् स्वप्नअवस्था मेंही जो व्यवहार का करनेवाला है उसी का नाम तैजस आत्मा है, यथार्थ में चेतन आत्मा एकही है, जब वह जाग्रत्अवस्था में स्थूलशरीरके साथ अभिमानवाला होकर बाह्य इन्द्रियों द्वारा व्यवहार करता है तब उसका नाम विश्व है, और जब वही आत्मा सूक्ष्मशरीर के साथ अभिमानवाला होकर स्वप्नअवस्था में व्यवहार करता है तब उसका नाम तैजस है, ॥ उसका नाम अन्तःप्रज्ञभी है, वह मनके विलासमें रमण किया करता है ॥ स्वप्न में जाग्रत्सम्बन्धी चेतन आत्मा की वासना से अनेक प्रकार के प्रपंच को मन रचलेता है, क्योंकि स्वप्नावस्था में मन का लय नहीं होता है, किन्तु बाह्य इन्द्रियों का ही लय होता है, मन बनारहता है, इसी से स्वप्न में मनविशिष्ट चेतन इन्द्रियों को भी रचलेता है, फिर सप्त अंगवाला और उन्नीस मुखवाला होने से अन्तर कल्पना कियेहुये में मानसिक विषयों का भोक्ता है, इसी से वह प्रविविक्तभुक् भी कहाजाता है, अथवा वासनाही मात्र है भोग जिसका उसी का नाम प्रविविक्तभुक् है, ऐसा तैजस नामवाला द्वितीय पाद है, ॥ ४ ॥

मूलम् ।

यत्रसुप्तोन कंचन कामं कामयते न कंचनस्वप्नं पश्यति तत्सुषुप्तम् सुषुप्तस्थानएकीभूतः प्रज्ञानघन एवानन्दमयोह्यानन्दभुक् चेतोमुखः प्राज्ञस्तृतीयःपादः ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः।

यत्र सुप्तः न कञ्चन वेद कामम् कामयते न कञ्चन स्वप्नम् पश्यति तत् सुषुप्तम् सुषुप्तस्थानः एकीभूतः प्रज्ञानघनः एव आनन्दमयः हि आनन्दभुक् चेतोमुखः प्राज्ञः तृतीयः पादः ॥ ५ ॥

अन्वयः।	पदार्थः।	अन्वयः।	पदार्थः।
यत्र	=जिस कालविषे	एकीभूतः	=एकरस है जो
सुप्तः	=सोयाहुआ पुरुष	प्रज्ञान घनः	={ अविद्या करके आच्छादित है प्रज्ञा जिसकी
नकञ्चन	=न किसी स्थूल या सूक्ष्म भोग को	आनन्द मयः	={ आनन्दमय हुआ
वेद	=जानता है	एवहि	=अवश्य
+च	=और	आनन्द भुक्	={ आनन्द का भोक्ता है जो
नकञ्चन	=न किसी	चेतो मुखः	={ बोधस्वरूप है जो
कामम्	=कामना को	तत्	=सो
कामयते	=चाहता है	तृतीयः	=तीसरा
नकञ्चन	=न किसी	पादः	=पाद
स्वप्नम्	=स्वप्नको	प्राज्ञः	=प्राज्ञनाम वाला है
पश्यति	=देखता है		
तत्	=वह		
सुषुप्तम्	=सुषुप्ति अवस्था का लक्षण है		
सुषुप्त स्थानः	={ सुषुप्ति है स्थान जिसका		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थः ॥

यत्रेति ॥ जिस काल में जिस स्थान में सोयाहुआ पुरुष स्वप्न नहीं देखता है, उस अवस्था का नाम सुषुप्ति है, यह सुषुप्तिअवस्था जाग्रत् और स्वप्न से भिन्न है, इस अवस्था में संपूर्ण प्रपंच एकता को प्राप्त होता है, अर्थात् अविद्या में लय होजाता है, क्योंकि जाग्रत् और स्वप्नअवस्था का जितना ज्ञान है वह सब सुषुप्ति अवस्था में एक भाव को प्राप्त होता है, सुषुप्तिअवस्था में किसी तरह का विवेक ज्ञान नहीं रहता है, इससे यह अवस्था प्रज्ञानघन कही जाती है, जैसे रात्री में अन्धकार करके कोई वस्तु भी विभाग करके प्रतीत नहीं होती है किंतु सर्व वस्तु अंधकार करके घनीभूत हुई प्रतीत होती है, अर्थात् घन अन्धकार की तरह सब पदार्थ प्रतीत होते हैं, तैसेही सुषुप्तिअवस्था में भी संपूर्ण वस्तु घनीभूत होजाती हैं, इस वास्ते वह अवस्था प्रज्ञानघन उस काल में कहाजाता है, और मन भी जो सुख दुःख का कारण है, सुषुप्तिअवस्था में लय रहता है, केवल आनंदमात्र सुख सुषुप्ति में होता है, और इस आनन्द का अनुभव करनेवाला आत्मा है, वही आनन्दभुक् कहाजाता है, और वही सुषुप्ति में प्रधान होता है, और वह ज्ञानस्वरूपवाला होने से प्राज्ञ कहाजाता है, ॥ प्रश्न ॥ सुषुप्तिअवस्था में पुरुष को तो आनन्द प्रतीत होता नहीं तो यह कैसे मालूम हो कि उसको उस अवस्था में आनन्द प्राप्त होता है ॥ उत्तर ॥ जब कि सोयाहुआ पुरुष उठता है तब पूछने पर वह कहता है कि बड़े आनन्द से सोया यह उसका ज्ञान स्मृतिज्ञान है, और स्मृतिज्ञान अनुभव कीहुई वस्तु की होती है, इसी से मालूम होता है कि सुषुप्ति में सोया हुआ पुरुष आनन्द को भोगता है, सो यह प्राज्ञ तीसरा पाद है ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ।

एषसर्वेश्वरएषसर्वज्ञएषोऽन्तर्य्याम्येषयोनिः सर्व-
स्यप्रभवाप्ययौहिभूतानाम् ॥ ६ ॥

पदच्छेदः ।

एषः सर्वेश्वरः एषः सर्वज्ञः एषः अन्तर्यामी एषः
योनिः सर्वस्य प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम् ॥ ६ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।	अन्वयः ।	पदार्थः ।
एषः	यही प्राज्ञ जब उपाधि माया को त्यागके अपने चैतन्य स्वरूप बिषे स्थित होता है	एषः	यही
+तदा	तब	अन्तर्यामी	अन्तर्यामी है
सर्वेश्वरः	सब का ईश्वर है	एषः	यही
एषः	यही	सर्वस्य	सब का
सर्वज्ञः	सर्वज्ञ है	योनिः	आदिकारण है
		एषः हि	यही
		भूतानाम्	संपूर्ण भूतोंके
		प्रभवाप्ययौ	उत्पत्ति और लयकास्थान

भावार्थः ।

एषइति ॥ अब प्राज्ञ और अन्तर्यामी का अभेद कहते हैं
एषः ॥ जब यह प्राज्ञ अपने स्वरूप में समष्टिरूप से उपाधि
रहित स्थित है, तब यहही सर्वेश्वर है, याने सर्व का ईश्वर
सबका नियंता है, प्रेरक है, और सर्वज्ञ है, अर्थात् संपूर्ण अवस्था
के भेद का ज्ञाता है, और यही अन्तर्यामी है, याने सं-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूतों के अन्तर प्रवेश करके सर्व का नियंता है, और फिर यही संपूर्ण भूतों का योनि याने कारण है, और संपूर्ण भूतों की उत्पत्ति और लय का स्थान भी है ॥ ६ ॥

मूलम् ।

नान्तःप्रज्ञंनबहिःप्रज्ञं नोभयतःप्रज्ञं न प्रज्ञानघनं नप्रज्ञंनाप्रज्ञं अदृष्टमव्यवहार्य्यमग्राह्यमलक्षणमचिन्त्यमव्यपदेश्यमेकात्म्यप्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं शान्तंशिवमद्वैतंचतुर्थंमन्यन्तेसआत्मासविज्ञेयः ७

पदच्छेदः ।

न अन्तःप्रज्ञम् न बहिःप्रज्ञम् न उभयतःप्रज्ञम् न प्रज्ञानघनम् न प्रज्ञम् न अप्रज्ञम् अदृष्टम् अव्यवहार्यम् अग्राह्यम् अलक्षणम् अचिन्त्यम् अव्यपदेश्यम् एकात्म्यप्रत्ययसारम् प्रपञ्चोपशमम् शान्तम् शिवम् अद्वैतम् चतुर्थम् मन्यन्ते सः आत्मा सः विज्ञेयः ॥ ७ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।
+ यम्	जिस
चतुर्थम्	चतुर्थ पाद तुरीयको
न	न
बहिः प्रज्ञम्	विश्वसंज्ञक
न	न
अन्तः प्रज्ञम्	तैजससंज्ञक
न	न
उभयतः प्रज्ञम्	जाग्रत् स्वप्न दोनों के मध्य अवस्थावाला
न	न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रज्ञानघनम् = प्राज्ञसंज्ञक	अव्यपदेश्यम् = न शब्द करके कहने योग्य
न = न	प्रपञ्चोपशमम् = सृष्टि से पृथक्
प्रज्ञम् = ज्ञानस्वरूप	शान्तम् = रागद्वेषादि रहित
न = न	शिवम् = कल्याणरूप
अप्रज्ञम् = अज्ञानस्वरूप	अद्वैतम् = द्वैतरहित
अदृष्टम् = नदेखनेयोग्य	एकात्म्यप्रत्ययसारम् = जाग्रत् आदि चारों अवस्था बिषे एक
अव्यवहार्यम् = न व्यवहार के योग्य	मन्यन्ते = मानते हैं
अग्राह्यम् = नकर्मेन्द्रियों करके ग्रहण करने योग्य	सः सः आत्मा = वही आत्मा
अलक्षणम् = नलिंगरूप	विज्ञेयः = जानने योग्य
अचिन्त्यम् = न चिन्ताकरने योग्य	

भावार्थः ।

नान्तइति ॥ अब चतुर्थ पाद को दिखलाते हैं ॥ सआत्मा वही आत्मा है,॥ नान्तःप्रज्ञम् ॥ जो अन्तःप्रज्ञ नहीं है अर्थात् मनकी वासना करके जन्य जो अन्तरस्वप्नावस्था का विलास है उसके दर्शन की लालसा नहीं है जिसको ॥ न बहिःप्रज्ञम् ॥ जिसको जाग्रत्अवस्था में इन्द्रियों करके बाह्य विषयों के दर्शन की लालसा नहीं है अर्थात् जो जाग्रत् और स्वप्न दोनों के व्यवहारों से रहित है, ॥ न प्रज्ञानघनं ॥ इस करके सुषुप्ति अवस्था का निषेध किया ॥ नान्तःप्रज्ञम् ॥ इस करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवस्था का निषेध किया ॥ नोभयतःप्रज्ञं ॥ इस करके जाग्रत् स्वप्न के मध्य का निषेध किया और ॥ नप्रज्ञं ॥ वह निर्विकल्पक बोध से भी रहित है, इस करके सम्पूर्ण विषयों की ज्ञातृतता का निषेध किया ॥ अप्रज्ञं ॥ याने बोध का अभाववाला भी नहीं है, इस करके अचेतनता का निषेध किया ॥ अदृष्टं ॥ बाह्य इन्द्रियों करके देखा भी नहीं जाता है ॥ अव्यवहार्य्यं ॥ व्यवहार करने के योग्य भी नहीं है, और ॥ अग्राह्यम् ॥ कर्मेन्द्रियों करके ग्रहण करने योग्य नहीं ॥ अलक्षणं ॥ अचिह्न है याने लिङ्गरहित है ॥ अचिन्त्यं ॥ मन करके भी चिंतन नहीं कियाजाता है ॥ अव्यपदेश्यं ॥ शब्द का विषय भी नहीं है ॥ एकात्मप्रत्यय सारं ॥ जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति इन तीनों अवस्थों में व्यभिचार से रहित है, याने एकही आत्मा तीनों अवस्थाओं में अनुगत है ॥ प्रपञ्चोपशमं ॥ जाग्रदादि अवस्था का अभाव है जिस में ॥ शिवं ॥ कल्याणरूप है जो ॥ अद्वैतं ॥ भेदकल्पना से रहित है जो सोई तुरीयपद आत्मा ॥ विज्ञेयः ॥ जानने के योग्य है ॥ ७ ॥

मूलम् ।

सोऽयमात्मा अध्यक्षरमोंकारोऽधिमात्रं पादा मात्रामात्राश्च पादाअकारउकारोमकार इति ॥ ८ ॥

पदच्छेदः ।

सः अयम् आत्मा अध्यक्षरम् ॐकारः अधिमात्रम् पादाः मात्राः मात्राः च पादाः अकारः उकारः मकारः इति ॥ ८ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।
+यः	= जो
आत्मा	= चतुष्पादवाला आत्माहै
सः	= सोई
अयम्	= यह
ॐकारः	= ॐकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अध्यक्षरम् = अक्षर विषे स्थित है
सः ॐकारः = वही ॐकार
अधिमात्रम् = मात्राविषे स्थित है
+ताः मात्राः = वेमात्रा
अकारः = अकार
उकारः = उकार
मकारः = मकार
इति = करके
+स्थिताः = स्थित हैं
अतः = इसीकारण
मात्राः = मात्राही
पादाः = पाद हैं
च = और
पादाः = पादही
मात्राः = मात्रा हैं

भावार्थः ।

सोयमात्मेति ॥ जिस ॐकार का चतुष्पाद आत्मारूप करके व्याख्यान किया गया है सोई आत्मा अध्यक्षर है, याने ॐकार वाचक का वह वाच्य है और ॐकारही अक्षर (अविनाशी) है और अक्षरही ॐकार है और ॐकारही आत्मा है और यही ॐकार पादों करके विभाग कियाहुआ अधिमात्र कहाजाता है, जो मात्रा को आश्रयण करके वर्तमान हो उसी का नाम अधिमात्र है, अकार उकार मकार यह तीनहीं ॐकार की मात्रा हैं, और इन्हीं को अगले मंत्र विस्तारपूर्वक कहेंगे ॥ ८ ॥

मूलम् ।

जागरितस्थानो वैश्वानरोऽकारः प्रथमामात्राऽऽप्तेरादिमत्वाद्वाऽऽप्नोति हवै सर्वान्कामानादिश्च भवति य एवं वेद ॥ ९ ॥

पदच्छेदः ।

जागरितस्थानः वैश्वानरः अकारः प्रथमा मात्रा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप्तेः आदिमत्वात् वा आप्नोति ह वै सर्वान् कामान् आदिः च भवति यः एवम् वेद ॥ ६ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।
आप्तेः	व्याप्ति के कारण
+ च	और
आदिमत्वात्	प्रथमहोने के कारण
जागरित स्थानः	जाग्रतवाला
वैश्वानरः	वैश्वानर
वा	ही
अकारः	अकाररूप
प्रथमा	प्रथम
मात्रा	मात्रा है
यः	जो प्रथम मात्रा का उपासक

अन्वयः ।	पदार्थः ।
हवै	निश्चय करके
एवम्	इसप्रकार अकार और वैश्वानर के अभेद को
वेद	जानता है
सः	वह
सर्वान्	सम्पूर्ण
कामान्	कामनाओं को
आप्नोति	प्राप्त होता है
च	और
आदिः	ज्येष्ठ श्रेष्ठों के मध्य प्रतिष्ठा वाला
भवति	होता है

भावार्थः ।

जागरितस्थान इति ॥ जाग्रत्अवस्था का जो अभिमानी वैश्वानर संज्ञक जीवात्मा है, सोई ॐकार की प्रथम मात्रा अकार है, दोनों तद्रूप हैं, क्योंकि जैसे अकार करके संपूर्ण वाक् व्याप्त है, तैसेही वैश्वानर करके संपूर्ण जगत् व्याप्त है, जैसे वाक् करके या अक्षर करके जाग्रत् के सब वस्तु सिद्ध होते हैं, तैसे वैश्वानर आत्मा करके सम्पूर्ण जगत की सिद्धि है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और जैसे ॐकार में अकार प्रथम अक्षर है तैसे वैश्वानरपद को जो पुरुष अकार में आरोप करके भजता है और दोनों को एक समुझता है वह संपूर्ण कामना को प्राप्त होता है और महान्पुरुषों में प्रतिष्ठा पाता है ॥ ९ ॥

मूलम् ।

स्वप्नस्थानस्तैजस उकारोद्वितीयामात्रोत्कर्षादुभयत्वाद्वोत्कर्षति हवैज्ञानसन्ततिं समानश्चभवति नास्याऽब्रह्मवित्कुलेभवति यएवंवेद ॥ १० ॥

पदच्छेदः ।

स्वप्नस्थानः तैजसः उकारः द्वितीया मात्रा उत्कर्षात् उभयत्वात् वा उत्कर्षति हवै ज्ञानसन्ततिम् समानः च भवति न अस्य अब्रह्मवित् कुले भवति यः एवम् वेद ॥ १० ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।
स्वप्न स्थानः	=स्वप्नस्थानी
तैजसः	= तैजस
द्वितीया	= दूसरी
मात्रा	= मात्रा है
यः	= जो उपासक
एवम्	= इस प्रकार उकार और तैजस की एकता को
उत्कर्षात्	= प्रथम मात्रा से उत्कृष्ट होने के कारण
वा	= और
उभयत्वात्	= अकार और मकारके मध्य विषे स्थित होनेके कारण
उकारः	= उकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेद = जानता है	भवति = होता है
सः = वह उपासक	+ च = और
ज्ञानसन्ततिम् = ज्ञान की वृद्धि को	अस्य = उसके
उत्कर्षति = बढ़ाता है	कुले = कुल बिषे
च = और	+कश्चित् = कोई
समानः = शत्रु मित्रादिकों से समभाववाला	अब्रह्मवित् = ब्रह्म का न जाननेवाला
	न = नहीं
	भवति = होता है

भावार्थः ।

स्वप्नस्थान इति ॥ स्वप्नअवस्था का अभिमानी जो तैजस नामक जीव यानी आत्मा है सोई ॐकार अक्षर की दूसरी मात्रा उकार है, दोनों तद्रूप हैं, क्योंकि जैसे अकार से उकार में उत्कृष्टता है तैसे विश्व से तैजस में भी उत्कृष्टता है, और जैसे अकार मकार के मध्य में उकार है तैसे विश्व और प्राज्ञके मध्य में तैजस है, इसलिये दोनों एकही हैं, जो पुरुष तैजस नामक जीव आत्मा को उकार अक्षर में आरोप करके जपता है, और इन दोनों को एक समझता है उसके ज्ञान की वृद्धि होती है, उस को मित्र और शत्रुपक्ष तुल्य होता है और उसकी सन्तती ब्रह्मज्ञानी होती है ॥ १० ॥

मूलम् ।

सुषुप्तस्थानःप्राज्ञो मकारस्तृतीयामात्रामितेर पीतेर्वा मिनोति हवा इदꣳ सर्वमपीतिश्च भवति यएवं वेद ॥ ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ।

सुषुप्तस्थानः प्राज्ञः मकारः तृतीया मात्रा मितेः अपीतेः वा मिनोति हवा इदम् सर्वम् अपीतिः च भवति यः एवं वेद ॥ ११ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।
मितेः	अकार और उकार अथवा विश्व और तैजस मकार या प्राज्ञ बिषे लीनहोकर उत्पन्न होने से
वा	और
अपीतेः	अज्ञानरूप कारण तीनों अवस्थाओं बिषे एक होनेसे अथवा अकार उकार मकार की एकता होने से
सुषुप्तस्थानः	सुषुप्तिअवस्था वाला
प्राज्ञः	प्राज्ञ
मकारः	मकाररूप
तृतीया	तीसरी
मात्रा	मात्रा है
यः	जो उपासक
एवम्	इस प्रकार
वेद	जानता है
हवै	निश्चय करके
+ सः	वह
इदम्	इस
सर्वम्	सारे जगत् को
मिनोति	यथार्थ जानता है
च	और
अपीतिः	जगत् का कारणरूपआत्मा
भवति	होता है

भावार्थः ।

सुषुप्तस्थानइति ॥ सुषुप्तिअवस्था का अभिमानी देवता यानी जीवआत्मा जो प्राज्ञ है सो ॐकार अक्षर की तीसरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मात्रा जो मकार है उसके तद्रूप है क्योंकि विश्व और तैजस के तिरोभावका स्थान जैसे प्राज्ञ है तैसेही अकार और उकार के लयका स्थान मकार है, और जैसे ॐकार के उच्चारण करने काल में अन्तिम अक्षर मकार में अकार उकार लयको प्राप्त होजाते हैं तैसे सुषुप्तिकाल में विश्व तैजस भी प्राज्ञ में लय-भाव को प्राप्त होजाते हैं, जो उपासक प्राज्ञ को मकार अक्षर में आरोप करके जपता है और दोनों को एक समुझता है वह सारे जगत् के यथार्थरूपताको जानता है, और अन्त में जगत् का कारण आत्मारूप होजाता है ॥ ११ ॥

मूलम् ।

अमात्रश्चतुर्थोऽव्यवहार्य्यः प्रपञ्चोपशमः शिवोऽद्वैत एवमोंकार आत्मैवसंविशत्यात्मनाऽऽत्मानं य एवं वेद य एवं वेद ॥ १२ ॥

पदच्छेदः ।

अमात्रः चतुर्थः अव्यवहार्य्यः प्रपञ्चोपशमः शिवः अद्वैतः एवम् ॐकारः आत्मा एव संविशति आत्मना आत्मानम् यः एवम् वेद यः एवम् वेद ॥ १२ ॥

अन्वयः ।	पदार्थः ।
एवम् =	उक्तप्रकार
अमात्रः =	अमात्र
चतुर्थः =	तुरीय
अव्यवहार्यः =	मन और वाणी का अगम्य
प्रपञ्चोपशमः =	सकारण प्रपंच का नाशक
शिवः =	कल्याण स्वरूप
अद्वैतः =	द्वैतरहित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मा = आत्मरूप
ॐकारः = ॐकार है
यः = जो उपासक
एवम् = इस प्रकार
वेद = जानता है
यः = जो उपासक
एवम् = इस प्रकार
वेद = जानता है
सः = वह
आत्मना = आत्माकरके
आत्मानम् = आत्मा विषे
एवम् = निःसंदेह
संविशति = लीन होता है याने ब्रह्मरूपही होजाता है

भावार्थः ।

अमात्रइति ॥ मात्रासे जो रहित है उसीका नाम अमात्र है वही अविद्या और अविद्याके कर्म से पृथक् सूत्रात्मा है, वही ॐकार चतुर्थपाद तुरीय आत्मा कहलाता है, और वह मन वाणी का विषय नहीं है, अर्थात् उसमें मन वाणी का व्यवहार नहीं होता है, संपूर्ण प्रपंच उसमें लय हैं, वह कल्याण अद्वैतरूप है, वही अन्तःकरण उपहित चेतन है, वही उपाधिरहित साक्षी है, वही एकरस सदा ज्यों का त्यों है, उसी के साथ जीव की एकता बाद नाश होने अज्ञान और उसके कर्म लिङ्ग शरीर के होती है, यही जानने योग्य वस्तु है, इसी को जानकर पुरुष जीवन्मुक्त कहलाता है, और आवागमन से रहित होकर ब्रह्मरूप होजाता है, यही मात्रारहित ॐकार है, और ॐकार का वाच्य है ॥ १२ ॥

इति श्रीमाण्डूक्योपनिषत्समाप्ता ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इश्तहार॥



निम्नलिखित उपनिषद् पञ्चोली यमुनाशंकर नागर कृत हैं यह उपनिषद् देखने योग्य हैं॥

ईशावास्य उपनिषद् भाषाटीका सहित	-)॥
केनोपनिषद् भाषाटीका सहित	=)
कठवल्ली उपनिषद् भाषाटीका सहित	≡)॥
प्रश्नोपनिषद् भाषाटीका सहित	≡)
मुंडक उपनिषद् भाषाटीका सहित	=)
माण्डूक्योपनिषद् भाषाटीका सहित	॥≡)
तैत्तिरीयोपनिषद् भाषाटीका सहित	।-)
ऐतरेयोपनिषद् भाषाटीका सहित	=)॥
छान्दोग्योपनिषद् भाषाटीका दो जिल्दों में	१-)
तथा पूर्वार्द्ध	।-)
तथा उत्तरार्द्ध	॥)
उपनिषत्सार	-)॥

मिलने का पता—

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,
मालिक नवलकिशोर प्रेस-लखनऊ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



तैत्तरीयोपनिषद्

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशी भाषामें बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैजाबाद ने पण्डित गङ्गादत्त जोशी और पण्डित रामदत्त जोशी की सहायता से अनुवाद किया—

तिसको

श्रीमान् परमधार्म्मिक शुभगुणनिधान मुन्शी प्रयाग नारायणजी ने सर्वलोकहितार्थ

पहिली बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के यन्त्रालय में मुद्रित किया

सन् १६०० ई०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केनोपनिषद् भाषा टीका सहित, क़ीमत =)

सामवेदीय तलबकार शाखीय भाषाटीका सरलमध्यदेशी हिन्दी भाषामें है–जिसको पण्डित यमुनाशङ्कर ने राजशास्त्री मि· हिरचन्द की सहायता से अनुबाद किया इसमेंभी पदों के अन्वय· पूर्वक भावार्थ स्पष्ट कियाहै और ऐसा टीका कियाहै कि अल्पज्ञ मनुष्यों के भी समझ में आजावे ॥

ईशावास्य उपनिषद् भाषाटीकासहित, क़ी०-)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीकासहित–जिस में मन्त्रों के अर्थ समझने के लिये पदों के अन्वय किये गये और फिर पदार्थकी रीति पर समझाकर भावार्थ स्पष्ट किया गया॥

प्रश्नोपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत ≡)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीकासहित–इस में भी सब ऊपर के लिखे हुये अलङ्कारहैं शिष्य के पूछे हुये अच्छे प्रश्नों का उत्तर गुरूने बताकर ब्रह्मरूप लखायाहै ॥

मांडूक्योपनिषद् भाषाटीकासहित, क़ीमत ॥-)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषाटीकासहित- जिसमें ॐकार स्वरूप का प्रतिपादन व ब्रह्म और आत्माकी अ- भेदताका निरूपण चार प्रकरणों में अच्छी तरह से किया है ॥

कठवल्लीउपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत ≡)॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुक्रमणिका

वेदव्यासजी के शिष्य वैशम्पायनऋषि के पास याज्ञवल्क्य आदिक विद्यार्थी ब्रह्मचर्य व्रतको धारण किये हुये यजुर्वेद का अध्ययन करते रहे तिस वैशंपायनऋषि को किसी एक निमित्त करके ब्रह्महत्या प्राप्तहुई उस हत्या के निवारणार्थ वैशंपायन ऋषि याज्ञवल्क्य से इतर अपने शिष्यों से नियमाचरण यानी प्रायश्चित्त कर्म करने को आज्ञा दिया तब याज्ञवल्क्य ने कहा कि हे भगवन् यह व्रत अति कठिन है इन दुर्बल बालक विद्यार्थियों से अशक्य है मैं परिपक्क और शरीर करके दृढ़हूं मैं अकेला ही इस कठिनव्रत को करके आपकी ब्रह्महत्या निवारण करने में समर्थ हूं ताते इस कठिन व्रत के करने की आज्ञा मुझको ही दीजिये इस प्रकार जब याज्ञवल्क्य ने अपने गुरु वैशंपायन से विनय किया तब वह ऋषि ब्रह्महत्या के वश होनेके कारण क्रोधित हो ऐसा कहता भया कि हे याज्ञवल्क्य तू बड़ा गर्विष्ठ है अपने को श्रेष्ठ मानताहै और इन बेचारे ब्राह्मण के बालक विद्यार्थियों का अपमान करताहै अब तू मुझसे पढ़ी हुई विद्याको शीघ्र त्याग दे नहीं तो तुझको मैं मरणसंबंधी शापदूंगा जब इस प्रकार वैशंपायनऋषि ने कहा तब शापके भयसे भयभीत हो याज्ञवल्क्य गजक्रिया के बलसे वमन करके अध्ययन कीहुई विद्याको त्यागता भया तब तिस त्यागीहुई विद्याको अन्य कई एक ब्राह्मणके बालक विद्यार्थियों ने तीतरका रूप धारण करके अपने गुरुकी आज्ञा से ग्रहण करलिया तभी से उस विद्या का नाम तैत्तिरीय विद्या पड़ा तिस तैत्तिरीय विद्या या शाखा का यह उपनिषद् भी तैत्तिरीय उपनिषद् करके विख्यातहै इस उपनिषद् बिषे गुरु शिष्य का संवाद है ॥

ॐतत्सत् ॐतत्सत् ॐतत्सत ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तरीयोपनिषद्.

अथ शिक्षाध्यायरूपा प्रथमावल्ली प्रारभ्यते.

मूलम् ॥

हरिःॐ ॥ शंनोमित्रः शंवरुणः शंनोभवत्वर्यमा शंन इन्द्रो बृहस्पतिः शंनो विष्णुरुरुक्रमः नमोब्रह्मणे नमस्तेवायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मवदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु अवतुमाम् अवतु वक्तारम् ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः १ ॥

इति प्रथमोऽनुवाकः ॥

पदच्छेदः ॥

शम् नः मित्रः शम् वरुणः शम् नः भवतु अर्यमा शम् नः इन्द्रः बृहस्पतिः शम् नः विष्णुः उरुक्रमः नमः ब्रह्मणे नमः ते वायो त्वम् एव प्रत्यक्षम् ब्रह्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असि त्वाम् एव प्रत्यक्षम् ब्रह्म वदिष्यामि ऋतम् वदिष्यामि सत्यम् वदिष्यामि तत् माम् अवतु तत् वक्तारम् अवतु अवतु माम् अवतु वक्तारम् ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ १ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मित्रः	प्राण और दिन अभिमानी देवता
नः	हमको
शम्	सुखकारी
भवतु	होवैं
वरुणः	अपान और रात्री अभिमानी देवता
नः	हमको
शम्	सुखकारी
भवतु	होवैं
अर्यमा	नेत्र और सूर्य अभिमानी दे- देवता
नः	हमको
शम्	सुखकारी

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
भवतु	होवैं
इन्द्रः	बल अभिमानी देवता
नः	हमको
शम्	सुखकारी
भवतु	होवैं
बृहस्पतिः	वाणी और बुद्धि अभिमानी देवता
नः	हमको
शम्	सुखकारी
भवतु	होवैं
उरुक्रमः	बढ़ानेवाला है तीन पाद का जो राजा बलिके यज्ञ विषे ऐसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विष्णुः = चरणोंकाअभिमानी देवता
नः = हमको
शम् = सुखकारी
भवतु = होवै
ब्रह्मणे = व्यापक है जो ऐसेउस ब्रह्मकेलिये
नमः = नमस्कार है
वायो = हे वायु देवता
ते = तेरे अर्थ याने तुझको
नमः = नमस्कार है
त्वम् एव = तू ही
प्रत्यक्षम् = प्रत्यक्ष
ब्रह्म = ब्रह्म
असि = है
त्वाम् = तुझको
एव = ही
प्रत्यक्षम् = प्रत्यक्ष
ब्रह्म = ब्रह्म
वदिष्यामि = मैं कहूंगा
त्वाम् = तुझको
एव = ही
ऋतम् = निश्चयात्मक बुद्धि
वदिष्यामि = मैं कहूंगा
त्वाम् = तुझको
एव = ही
सत्यम् = सद्रूप
वदिष्यामि = मैं कहूंगा
तत् = वह वायुरूप ब्रह्म
माम् = मुझ विद्यार्थी को
अवतु = रक्षा करै याने विद्यासेयुक्तकरै
तत् = वह वायुरूप ब्रह्म
वक्तारम् = आचार्य याने गुरुकी
अवतु = रक्षाकरैयाने वक्तृत्वसामर्थ्य से युक्त करै
माम् = मुझको
अवतु = रक्षितकरै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वक्तारम् =	आचार्य्य को	शान्तिः =	आधिभौतिक विघ्नों से शान्ति हो
अवतु =	रक्षितकरै द्विवचनआदरार्थहै		
ॐशन्तिः =	आध्यात्मिक विघ्नों से शान्ति हो	शान्तिः =	आधि दैविक विघ्नों से शान्ति हो

मूलम् ॥

ॐ शिक्षांव्याख्यास्यामः वर्णःस्वरः मात्रा बलम् सामसन्तानः इत्युक्तःशिक्षाध्यायः शिक्षां पञ्च २ ॥

इति द्वितीयोऽनुवाकः ॥

पदच्छेदः ॥

शिक्षाम् व्याख्यास्यामः वर्णः स्वरः मात्राः बलम् साम सन्तानः इति उक्तः शिक्षाध्यायः ॥ २ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वर्णः =	अक्षर यानी अकारादिवर्ण	मात्राः =	ह्रस्वादियानी ह्रस्वदीर्घ प्लुत
स्वरः =	उदात्त अनुदात्त स्वरितयानेऊंचा नीचामध्यमस्वर से उच्चारणकरना	बलम् =	प्रयत्न यानीशब्दोंकेउच्चारणमें जो यत्न करना पड़ताहै वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साम = { समतायानी वर्णोच्चारबि- षेमध्यमता }

सन्तानः = { संहिता यानीशब्दोंकी सन्धि }

इति = यह

शिक्षाध्यायः = { शिक्षाध्याय }

उक्तः = कहागयाहै

शिक्षाम् = { इस शिक्षा को यानी वेदोचारण बिषे वरण स्वर आदि विवेक को }

व्याख्यास्यामः = { हम अच्छी प्रकारकहैंगे }

मूलम् ॥

सहनौयशः सहनौब्रह्मवर्चसम् अथातःसंहिताया उपनिषदं व्याख्यास्यामः पंचस्वधिकरणेषुअधि लोकमधिज्योतिषमधिविद्यमाधिप्रजमध्यात्मं ता महासंहिता इत्याचक्षते अथाधिलोकम् पृथिवी पूर्वरूपम् द्यौरुत्तररूपम् आकाशःसन्धिः (३) वायुःसन्धानम् इत्यधिलोकम् अथाधिज्योतिषम् अग्निः पूर्वरूपम् आदित्य उत्तररूपम् आपःस न्धिःवैद्युतःसन्धानम् इत्यधिज्योतिषम् अथाधि विद्यम् आचार्य्यःपूर्वरूपम् (४) अन्तेवास्युत्तर रूपम् विद्यासन्धिःप्रवचनं सन्धानम् इत्यधिवि द्यम् अथाधिप्रजम् मातापूर्वरूपम् पितोत्तररूप म् प्रजासन्धिः प्रजननंसन्धानम् इत्यधिप्रजम् (५)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथाध्यात्मम् अधराहनुःपूर्वरूपम् उत्तराहनुरुत्तर रूपम् वाक्सन्धिः जिह्वासंधानम् इत्यध्यात्मम् इतिमहासंहिताः यएवमेतामहासंहिता व्याख्या तावेदसंधीयते प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन स्वर्गेणलोकेनसन्धिराचार्य्यः पूर्वरूपमित्यधिप्र जंलोकेन ॥ ६ ॥

इति तृतीयोऽनुवाकः ॥

पदच्छेदः ॥

सह नौ यशः सह नौ ब्रह्मवर्चसम् अथातः संहि तायाः उपनिषदम् व्याख्यास्यामः पञ्चसु अधिकर णेषु अधिलोकम् अधिज्योतिषम् अधिविद्यम् अ धिप्रजम् अध्यात्मम् ताः महासंहिताः इति आचक्षते अथ अधिलोकम् पृथिवी पूर्वरूपम् द्यौः उत्तररू पम् आकाशः सन्धिः वायुः सन्धानम् इति अधि लोकम् अथ अधिज्योतिषम् अग्निः पूर्वरूपम् आ दित्यः उत्तररूपम् आपः सन्धिः वैद्युतः सन्धानम् इति अधिज्योतिषम् अथ अधिविद्यम् आचार्य्यः पूर्वरूपम् अन्तेवासी उत्तररूपम् विद्यासन्धीः प्रवच नम् सन्धानम् इति अधिविद्यम् अथ अधिप्रजम् माता पूर्वरूपम् पिता उत्तररूपम् प्रजा सन्धिः प्रज ननम् सन्धानम् इति अधिप्रजम् अथ अध्यात्मम् अधरा हनुः पूर्व्वरूपम् उत्तराहनुः उत्तररूपम् वाक् संधिः जिह्वा सन्धानम् इति अध्यात्मम् इति अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ख्यातमम् इमाः महासंहिताः यः एवम् एताः महासंहिताः व्याख्याताः वेद सन्धीयते प्रजया पशुभिः ब्रह्मवर्चसेन अन्नाद्येन स्वर्गेण लोकेन ॥ ३ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
नौ	हम दोनों यानी गुरु शिष्य को
सह	साथही
यशः	यश
अस्तु	होवै
नौ	हम दोनों को
सह	साथही
ब्रह्मवर्चसम्	ब्रह्मतेज
भवतु	होवै
अथातः	अब
संहितायाः	वेदकी
उपनिषदम्	उपासनाको
पञ्चसु	पांच
अधिकरणेषु	ज्ञानाश्रयोंमें

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
व्याख्यास्यामः	हमव्याख्यान करैंगे
अधिलोकम्	लोक सम्बन्धी उपासना
अधिज्योतिषम्	ज्योतिसम्बन्धीउपासना
अधिविद्यम्	विद्यासम्बन्धीउपासना
अधिप्रजम्	प्रजा सम्बन्धीउपासना
अध्यात्मम्	आत्मसम्बन्धीउपासना
ताः	इनपांच ज्ञान सम्बन्धी उपासनाओं को
महासंहिताः	महासंहिता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति = करके
आचार्यः = आचार्यलोक
आचक्षते = कहते हैं
अथ = अब
अधिलोकम् = { लोकआश्रय उपासनाको
कथयामः = हम कहते हैं
पृथिवी = पृथिवी
पूर्वरूपम् = पूर्व रूपहै
द्यौः = स्वर्ग
उत्तररूपम् = उत्तररूपहै
आकाशः = आकाश
सन्धीः = सन्धी है
वायुः = वायु
सन्धानम् = { दोनोंका मिलानेवाला है
इति = इसप्रकार
अधिलोकम् = { अधिलोकउपासना है
अथ = अब
अधिज्योतिषम् = { ज्योतिष विषयक

कथयामः = { उपासनाको कहते हैं
अग्निः = अग्नि
पूर्वरूपम् = पूर्वरूपहै
आदित्यः = सूर्य
उत्तररूपम् = उत्तररूप है
आपः = जल
सन्धीः = सन्धी है
वैद्युतः = बिजुली
सन्धानम् = { दोनोंको मिलानेवाली है
इति = इसप्रकार
अधिज्योतिषम् = { ज्योति उपासनाहै
अथ = अब
अधिविद्यम् = { विद्याश्रय उपासनाको
कथयामः = कहते हैं
आचार्य्यः = आचार्य्य
पूर्वरूपम् = पूर्वरूपहै
अंतेवासी = शिष्य
उत्तररूपम् = { उत्तररूप है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्या = विद्या
सन्धि = सन्धी है
प्रवचनम् = वेद शास्त्र का कथन
सन्धानम् = मिलाने वाला है
इति = इसप्रकार
अधिविद्यम् = विद्योपासना है
अथ = अब
अधिप्रजम् = प्रजाविषयक उपासनाको
कथयामः = कहते हैं
माता = माता
पूर्वरूपम् = पूर्वरूप है
पिता = पिता
उत्तररूपम् = उत्तररूपहै
प्रजा = संतति
सन्धिः = संधी है
प्रजननम् = ऋतुकाल में स्वभार्या को गर्भदान देना

सन्धानम् = संधान है याने मिलानेवालाहै
इति = इसप्रकार
अधिप्रजम् = प्रजाश्रय उपासनाहै
अथाध्यात्मं = अब आत्म सम्बन्धी उपासना को
कथयामः = कहते हैं
अधराहनुः = नीचेकाहोंठ
पूर्वरूपम् = पूर्वरूपहै
उत्तराहनुः = ऊपरकाहोंठ
उत्तररूपम् = उत्तररूपहै
वाक्सन्धिः = वाणीसंधी है
जिह्वा = जिह्वा
सन्धानम् = मिलाने वाली है
इति = इसप्रकार
अध्यात्मम् = आत्माश्रय उपासना है
इति = ऐसी
इमाः = ये पांच उपासना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महासंहिता = महासंहिताकरके कहीगई हैं
यः = जो
एवम् = इसप्रकार
एताः = इनं
व्याख्याताः = कहीहुई
महासंहिताः = महासंहिताओं को
वेद = उपासना करता है

सः = वह
प्रजया = संततिकरके
पशुभिः = पशुवोंकरके
ब्रह्मवर्चसेन = ब्रह्म तेज करके
अन्नाद्येन = अन्नधनादि करके
स्वर्गेण = स्वर्ग
लोकेन = लोक करके
सन्धीयते = युक्तहोताहै

मूलम् ॥

यश्छन्दसामृषभोविश्वरूपः छन्दोभ्योऽध्यमृ
तात्सम्बभूवसमेन्द्रोमेधयास्पृणोतु अमृतस्यदेव
धारणोभूयासम् शरीरंमेविचर्षणम् जिह्वामेमधुम,
त्तमाकर्णाभ्याम् भूरीविश्रवम् ब्राह्मणःकोशोऽसि
मेधयापिहितःश्रुतंमेगोपायआवहन्ति वितन्वाना
(७) कुर्वाणाचिरमात्मनःवासांसिममगावश्च अ
न्नपानेचसर्वदा ततोमेश्रियमावह लोमशांपशुभिः
सहस्वाहा आमायन्तु ब्रह्मचारिणःस्वाहा विमाय
न्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा प्रमायन्तु ब्रह्मचारिणःस्वा
हा दमायन्तुब्रह्मचारिणःस्वाहा शमायन्तुब्रह्मचा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रिणःस्वाहा (८) यशोजनेऽसानिस्वाहा श्रेयान्वस्यसोऽसानिस्वाहातंत्वा भगप्रविशानिस्वाहा समाभगप्रविशस्वाहातस्मिंस्तुसहस्रशाखे निभगाहंत्वयिमृजेस्वाहा यथाऽऽपःप्रवतायन्ति यथामासाअहर्जरम्एवंमांब्रह्मचारिणः धीतरायन्तुसर्वतःस्वाहा प्रतिवेशोसिप्रमाभाहिप्रमापद्यस्व ॥ ९ ॥

इति चतुर्थानुवाकः ॥

पदच्छेदः ॥

यः छन्दसाम् ऋषभः विश्वरूपः छन्दोभ्यः अधिअमृतात् सम्बभूव सः मा इन्द्रः मेधया स्पृणोतु अमृतस्य देव धारणः भूयासम् शरीरम् मे विचर्षणम् जिह्वा मे मधुमत्तमा कर्णाभ्याम् भूरिविश्रुवम् ब्रह्मणः कोशः असि मेधया अपिहितः श्रुतम् मे गोपाय आवहन्ती वितन्वाना कुर्वाणा अचिरम् आत्मनः वासांसि मम गावः च अन्नपाने च सर्वदा ततः मे श्रियम् आवह लोमशाम् पशुभिः सह स्वाहा आमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा विमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा प्रमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा दमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा शमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा यशः जने असानि स्वाहा श्रेयान् वस्यसः असानि स्वाहा तम् त्वा भग प्रविशानि स्वाहा सः मा भग प्रविश स्वाहा तस्मिन् सहस्रशाखे नि भग अहम् त्वयि मृजे स्वाहा यथा आपः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रवता यन्ति यथा मासाः अहर्जरम् एवम् माम् ब्रह्मचारिणः धातः आयन्तु सर्वतः स्वाहा प्रतिवेशः असि प्रमाभाहि प्रमा पद्यस्व ॥ ४ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	जो प्रणव
छन्दसाम्	वेदों बिषे
ऋषभः	श्रेष्ठ
च	और
विश्वरूपः	सर्ववाणीरूप
अस्ति	है
च	और
यः	जो
अभिअमृतात्	अमृतरूप
छन्दोभ्यः	वेदों से
सम्बभूव	उत्पन्न भया है
सः	वह प्रणव
इन्द्रः	सर्वकामना का स्वामी ईश्वर
मा	मुझको
मेधया	प्रज्ञा करके
स्पृणोतु	बलवान् करै

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
देव	हे देव
अमृतस्य	ब्रह्मज्ञानका
धारणः	धारण करनेवाला
भूयासम्	होऊं मैं
मे	मेरा
शरीरम्	देह
विचर्षणम्	ब्रह्मज्ञानधारणयोग्य
भूयात्	होवै
मे	मेरी
जिह्वा	जिह्वा
मधुमत्तमा	अत्यन्तमधुरभाषण करनेवाली
भूयात्	होवे
अहम्	मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्णाभ्याम् = दोनोकर्णों करके
भूरि = बहुत
विश्रुवम् = सुननेवाला
भूयासम् = होऊं
त्वम् = तू
मेधया = लौकिकबुद्धि करके
अपिहितः = ढकाहुवा
ब्रह्मणः = परब्रह्मका
कोशः = कोश
असि = है
मे = मेरे
श्रुतम् = सुनेहुयेआत्म ज्ञानको
गोपाय = तूरक्षाकर
या = जो
श्री = श्री
अचिरं कुर्वाणा = जल्दीकोकरती हुई यानीशीघ्र
मम = मेरे
आत्मनः = शरीरकेलिये
वासांसि = वस्त्रोंको
च = और

गावः = गौवोंको
च = और
अन्नपाने = खानपानको
च = और
लोमशाम् = बालवालीध न यानी अज अवि बकरी भेड़ी इत्यादिकोंको
पशुभिः = अश्वआदि पशुओं
सह = सहित
आवहन्ती = सब ओर से लातीहुई
च और
वितन्वाना = विस्तार करतीहुई याने बढ़ाती हुई
भवति = होती है
तत् = सो
हे इन्द्र = अहोप्रणव
ततः = बुद्धिप्राप्तिके पश्चात्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्वम् = तू
मे = मेरे अर्थ
एवम् = ऐसी
श्रियम् = यागादिसमर्थ लक्ष्मी को
आवह = प्राप्तकर
अतः = इसलिये
ते = तेरे अर्थ
स्वाहा = यह हविर्दा- नहै
च = और
ब्रह्मचारिणः = ब्रह्मचारी लोक
मा = मेरेपास
आयन्तु = आवैं
अतः = इसलिये
ते = तेरे अर्थ
स्वाहा = यह हविर्दा नहै
ब्रह्मचारिणः = ब्रह्मचारी
मा = न
वियन्तु = चलेजावैं
अतः = इसलिये
ते = तेरे अर्थ

स्वाहा = यह हविर्दा नहै
ब्रह्मचारिणः = ब्रह्मचारी
विद्यां = विद्या को
प्रमायन्तु = प्राप्तहोवैं
अतः = इसलिये
ते = तेरे अर्थ
स्वाहा = यह हविर्दा नहै
ब्रह्मचारिणः = ब्रह्मचारी
दमायन्तु = { दमनकोप्रा प्तहोवैं याने इन्द्रियोंका निग्रहकरैं }
अतः = इसलिये
ते = तेरे अर्थ
स्वाहा = यह हविर्दान है
ब्रह्मचारिणः = ब्रह्मचारी
शमायन्तु = शान्ति को प्राप्तहोवैं
अतः = इसलिये
ते = तेरे अर्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वाहा = यह हविर्दान है
च = और
अहम् = मैं
जने = लोकविषे
यशः = यशस्वी
असानि = होऊं
अतः = इसलिये
ते = तेरे अर्थ
स्वाहा = यह हविर्दा-नहै
वस्यसः = और धनवा-नूसे भी
श्रेयान् = श्रेष्ठ
असानि = मैं होऊं
अतः = इसलिये
ते = तेरे अर्थ
स्वाहा = यह हविर्दान है
भग = हे प्रणवरूप भगवन्
तम् = तिस
त्वाम् = तुझ बिषे
प्रविशानि = मैं प्रवेशकरूं

अतः = इसलिये
ते = तेरे अर्थ
स्वाहा = यहहविर्दानहै
भग = हे ॐकाररूप भगवन्
सः = सो
त्वम् = तू
मा = मुझ बिषे
प्रविश = प्रवेशकर
अतः = इसलिये
ते = तेरे अर्थ
स्वाहा = यह हविर्दा नहै
भग = अहोभगवन्
सहस्रशाखे = बहु भेद वाले
तस्मिन् = तिस
त्वयि = तेरे बिषे
अहम् = मैं
पापकृत्याम् = अपने पाप कर्मको
निमृजे = शोधनकरूं
अतः = इसलिये
ते = तेरे अर्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वाहा = यहहविर्दान है
धातः = हेसर्वविधाता हे जगत्कर्त्ता
यथा = जैसे
आपः = जल
प्रवता = ढालवाले देशकरके
यन्ति = बहते हैं
च = और
यथा = जैसे
मासाः = चैत्रादिमास
अहर्जरम् = संवत्सर को = यानेवर्षको
यन्ति = प्राप्त होते हैं
एवम् = इसीप्रकार
ब्रह्मचारिणः = ब्रह्मचारी लोक
माम् = मुझप्रतियाने मेरे पास

सर्वतः = सब ओरसे
आयन्तु = आवें
अतः = इस लिये
ते = तेरे अर्थ
स्वाहा = यहहविर्दानहै
यतः = चूंकि
त्वम् = तू
प्रतिवेशः = उपासकोंके पाप और दुःखके दूरकरनेकास्थानहै
तस्मात् = इस लिये
त्वम् = तू
मा = मुझ उपासके प्रति
प्रभाहि = प्रकाशहो
च = और
माम् = मुझे
प्रपद्यस्व = आत्मभावको प्राप्तकर

मूलम् ॥

भूर्भुवः स्वरितिवा एतास्तिस्रो व्याहृतयः तासामुहस्मैतां चतुर्थीं महाचमस्यः प्रवेदयते मह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति तद्ब्रह्म स आत्माअङ्गान्यन्यादेवताः भूरितिवा अयंलोकः भुव इत्यन्तरिक्षम् स्व इत्यसौलोकः १० मह इत्यादित्यः आदित्येन वावसर्वेलोकामहीयन्तेभूरितिवाअग्निः भुवइतिवायुः स्वरित्यादित्यः मह इतिचन्द्रमाः चन्द्रमसा वावमर्वाणिज्योतींषि महीयन्ते भूरितिवा ऋचःभुवइतिसामानि स्वरितियजूंषि (११) महाइतिब्रह्म ब्रह्मणावावसर्वेवेदा महीयन्ते भूरितिवैप्राणः भुवइत्यपानः स्वरिति व्यानः मह इत्यन्नम् अन्नेनवावसर्वे प्राणामहीयन्तेतावाएताश्चतस्रश्चतुर्द्धा चतुस्रश्चतस्रोव्याहृतयःतायो वेद सवेद ब्रह्म सर्वेऽस्मैदेवाबलिमावहन्तिअसौलोकोयजूंषिवेदद्वेच (१२) इति पञ्चमोऽनुवाकः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

भूः भुवः स्वः इति वै एताः तिस्रः व्याहृतयः तासाम् उ ह स्म एताम् चतुर्थीम् महाचमस्यः प्रवेदयते महः इति तत् ब्रह्म सः आत्मा अङ्गानि अन्याः देवताः भूः इति वै अयम् लोकः भुवः इति अन्तरिक्षम् स्वः इति असौ लोकः महः इति आदित्यः आदित्येन वाव सर्वे लोकाः महीयन्ते भूः इति वै अग्निः भुवः इति वायुः स्वः इति आदित्यः महः इति चन्द्रमाः चन्द्रमसा वाव सर्वाणि ज्योतींषि महीयन्ते भूः इति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वै ऋचः भुवः इति सामानि स्वः इति यजूंषि महः इति ब्रह्म ब्रह्मणा वाव सर्वे वेदाः महीयन्ते भूः इति वै प्राणः भुवः इति अपानः स्वः इति व्यानः महः इति अन्नम् अन्नेन वाव सर्वे प्राणाः महीयन्ते ताः वै एताः चतस्रः चतुर्धा चतस्रः व्याहृतयः ताः यः वेद सः वेद ब्रह्म सर्वे अस्मै देवाः बलिम् आवहन्ति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
भूः	भूः
भुवः	भुवः
स्वः	स्वः
इति	इसप्रकार
एताः	ये
तिस्रः	तीन
व्याहृतयः	व्याहृति
वै	प्रसिद्ध हैं
तासाम्	उनतीनों की
इयम्	यह
चतुर्थी	चौथी
व्याहृतिः	व्याहृति
महःइति	महः करके प्रसिद्ध है
एताम्	इस

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
चतुर्थी	चौथी
महः	महः
इति	व्याहृति को
महाचमस्यः	महाचमस्यनाम कऋषि
उहस्म	अच्छी प्रकार
प्रवेदयते	जानता भया
तत्	वह व्याहृति
ब्रह्म	ब्रह्मरूप है
सः	वह महरूप ब्रह्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मा = { देवलोक वेदादि काशरीर भूत है }
अन्याः = और
देवताः = देवलोक वेदादि
तस्य = उसमहद्ब्रह्म के
अङ्गानि = अवयवभूतहैं
अयम् = यहमनुष्य
लोकः = लोक
भूः = भूः
इति = करके
वै = प्रसिद्धहै
भुवः = भुवः
इति = करके
अन्तरिक्षम् = अन्तरिक्ष लोक
वै = प्रसिद्ध है
स्वः = स्वः
इति = करके
असौ = स्वर्ग

लोकः = लोक
वै = प्रसिद्धहै
महः = महः
इति = करके
आदित्यः = सूर्यलोक
वै = प्रसिद्ध है
आदित्येन = सूर्यसे
वाव = ही
सर्वे = सब
लोकाः = भूरादिलोक
महीयन्ते = वृद्धिको प्राप्त-होते हैं
अग्निः = अग्निदेवता
भूः = भूः
इति = करके
वै = प्रसिद्ध है
वायुः = वायु देवता
भुवः = भुवः
इति = करके
वै = प्रसिद्ध है
आदित्यः = सूर्यदेवता
स्वः = स्वः
इति = करके
वै = प्रसिद्ध है

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चन्द्रमाः = चन्द्रमादेवता
महः = महः
इति = करके
वै = प्रसिद्ध है
वाव = निश्चयकरके
सर्वाणि = ये सब
ज्योतींषि = ज्योतिर्लोक
चन्द्रमाः = चन्द्रमाकरके
महीयन्ते = वृद्धिको प्राप्त होते हैं
ऋचः = ऋग्वेद
भूः = भूः
इति = करके
वै = प्रसिद्ध है
सामानि = सामवेद
भुवः = भुवः
इति = करके
वै = प्रसिद्ध है
यजूंषि = यजुर्वेद
स्वः = स्वः
इति = करके
वै = प्रसिद्ध है
ब्रह्म = प्रणव
महः = महः

इति = करके प्रसिद्ध है
ब्रह्मणा = प्रणवसे
वाव = ही
सर्वे = सब
वेदाः = वेद
महीयन्ते = वृद्धिको प्राप्त होते हैं
प्राणः = प्राणवायु
भूः = भूः
इति = करके
वै = प्रसिद्ध है
अपानः = अपानवायु
भुवः = भुवः
इति = करके
वै = प्रसिद्ध है
व्यानः = व्यानवायु
स्वः = स्वः
इति = करके
वै = प्रसिद्ध है
अन्नम् = अन्न
महः = महः
इति = करके
वै = प्रसिद्ध है
अन्नेन = अन्नसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाव = ही
सर्वे = सब
प्राणाः = प्राणभूतजीव
महीयन्ते = वृद्धिको प्राप्त होते हैं
वै = निश्चयकरके
ताः = वे
एताः = ये
चतस्रः = चार
व्याहृतयः = व्याहृतियां
चतस्रः = प्रत्येकचार चारहोके
चतुर्धा = चारप्रकार की
भवन्ति = होती हैं
यः = जो
ताः = पूर्वोक्तव्याहृतियों को
वेद = जानताहै
सः = सो
ब्रह्म = ब्रह्मको
वेद = जानताहै
अस्मै = इसब्रह्मवेताके अर्थ
देवाः = अंगभूत देवता
बलिम् = भागधर्म यानीखिराजको
आवहन्ति = सब तर्फ से लाते हैं

मूलम् ॥

सय एषोंतर्हृदयआकाशः तस्मिन्नयं पुरुषोमनोमयः अमृतो हिरणमयः अन्तरेण तालुके य एषस्तनइवाव लम्बते सेन्द्रयोनिः यत्रासौ केशान्तो विवर्तते व्यपोह्य शीर्षकपाले भूरित्यग्नौ प्रतितिष्ठति भुवइतिवायौ १३ ॥

स्वरित्यादित्ये मह इति ब्रह्मणि आप्नोति स्वा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राज्यम् आप्नोति मनसस्पतिम् वाक्पतिश्चक्षुष्पतिः श्रोत्रपतिर्विज्ञानपतिः एतत्तदोभवति आकाशशरीरंब्रह्म सत्यात्मप्राणारामं मन आनन्दम् शान्तिसमृद्धममृतं इति प्राचीनयोग्योपास्व वायावमृतमेकंच १४ ॥

पदच्छेदः ॥

सः यः एषः अन्तर्हृदये आकाशः तस्मिन् अयम् पुरुषः मनोमयः अमृतः हिरण्यमयः अन्तरेण तालुके यः एषः स्तनः इव अवलम्बते सा इन्द्रयोनिः यत्र असौ केशान्तः विवर्तते व्यपोह्य शीर्षकपाले भूः इति अग्नौ प्रतितिष्ठति भुवः इति वायौ स्वः इति आदित्ये महः इति ब्रह्मणि आप्नोति स्वाराज्यम् आप्नोति मनसस्पतिम् वाक्पतिः चक्षुष्पतिः श्रोत्रपतिः विज्ञानपतिः एतत्तदः भवति आकाश शरीरम् ब्रह्म सत्यात्म प्राणारामम् मन आनन्दम् शान्तिसमृद्धम् अमृतम् इति प्राचीन योग्य उपास्व ६॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अन्तर्हृदये =	हृदय के मध्यविषे जो ऊर्ध्वनाल अधोमुख कमलाकारमांसपिण्डप्रसिद्ध है उसके भीतर जो	आकाशः =	आकाश है
		तस्मिन् =	तिस बिषे
		यः =	जो
		एषः =	यह
		पुरुषः =	पुरुष है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सः = सो
मनोमयः = विज्ञानरूपमनकरकेप्राप्त होनेयोग्य है
अयम् = यह
अमृतः = मरण रहित
हिरण्मयः = ज्योतिःस्वरूप
प्रतितिष्ठति = प्रतिष्ठितहै
तत्प्राप्तये = तिसकी प्राप्ति के लिये
या = जो
हृदयात् = हृदयसे
प्रवृत्ता = आरम्भ हुई
सुषुम्ना = सुषुम्नायोगशास्त्रमें प्रसिद्ध
नाडी = नाड़ी
अस्ति = है
च = और
तालुके = दोनोंतालुवोंके
अन्तरेण = बीचमें
यः = जो
एषः = यह
स्तनः = स्तनयानीथन
इव = सा
अवलम्बते = लटकता है
तस्य = तिसके
अन्तरेण = मध्यबिषे
गत्वा = निकसके
यत्र = जहां
असौ = प्रसिद्ध
केशान्तः = केशमूल
वर्तते = वर्तमान है यानी जो ब्रह्मरन्ध्रहै
तत्र = तहांपर
शीर्षकपाले = शीर्षकपालों को
व्यपोह्य = विदारणकर के
विनिर्गता = निकली है
सा = सोनारी
इन्द्रयोनिः = ब्रह्मप्राप्तिका मार्ग है
एवंविद्वान् = इस मार्ग का ज्ञाता
भूः = भूःव्याहृति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति = करके
अग्नौ = अग्निविषे
प्रतितिष्ठति = स्थितहोता है याने अग्निवत्तेजस्वीऔर व्यापकहोताहै
भुवः = भुवःव्याहृति
इति = करके
वायौ = वायुविषे
प्रतितिष्ठति = स्थितहोताहै
स्वः = स्वःव्याहृति
इति = करके
आदित्ये = सूर्यविषे
प्रतितिष्ठति = स्थितहोताहै
महः = महःव्याहृति
इति = करके
ब्रह्मणि = ब्रह्मविषे
प्रतितिष्ठति = स्थितहोताहै
च = और
अन्ते = अन्तमें
स्वाराज्यम् = स्वाराजकों
आप्नोति = प्राप्तहोताहै

तदन्तः = तिसकेपीछे
सः = वह
मनस्पतिम् = सर्वमनोमयमात्रको
आप्नोति = प्राप्तहोताहै
च = और
वाक्पतिः = सर्व वाणी का पति
भवति = होताहै
चक्षुष्पतिः = सर्वकाद्रष्टा
भवति = होताहै
श्रोत्रपतिः = सर्वकाश्रोता
भवति = होताहै
विज्ञानपतिः = सर्वकाजाननेवाला
भवति = होताहै
एतत्तदः = सर्वरूप
भवति = होताहै
च = और
आकाश शरीरम् = आकाशवत् सूक्ष्म शरीर है जिस्का
सत्यात्म = सत्यरूपहै आत्मा जिस्का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राणारामम् = प्राणों को सुखस्थान है जो

मनआनंदम् = मनका आनंदब-ढानेवाला है जो

शांतिसमृद्धम् = शान्ति करके पूर्ण है जो

अमृतम् = मरणधर्म रहित है जो

इतिब्रह्म = ऐसाब्रह्महै

प्राचीन योग्य = अहो प्राचीन योग्यनामक शिष्य

तत् = उसको

त्वम् = तू

उपास्व = उपासनाकर

मूलम् ॥

पृथिव्यन्तरिक्षंद्यौर्दिशोऽवान्तरदिशः अग्निर्वायु रादित्यश्चन्द्रमा नक्षत्राणिआपओषधयो वनस्प तयः आकाशआत्मा इत्यधिभूतम् अथाध्यात्म म् प्राणोऽपानोव्यान उदानःसमानः चक्षुःश्रोत्रंम नोवाक्त्वक् चर्म्ममांसंस्नावास्थिमज्जाएतद धिविधाय ऋषिरवोचत्पाङ्क्तंवाइदंसर्वम् पाङ्क्तेनैवपाङ्क्तंस्पृणोतीतिसर्वमेकञ्च ॥ १५ ॥ इति सप्तमोऽनुवाकः ७ ॥

पदच्छेदः ॥

पृथिवी अन्तरिक्षम् द्यौः दिशाः अवान्तरदिशः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अग्निः वायुः आदित्यः चन्द्रमाः नक्षत्राणि आपः ओषधयः वनस्पतयः आकाशः आत्मा इति अधिभूतम् अथ अध्यात्मम् प्राणः अपानः व्यानः उदानः समानः चक्षुः श्रोत्रम् मनः वाक् त्वक् चर्म्म मांसम् स्नावा अस्थि मज्जा एतत् अधिविधाय ऋषिः अवोचत् पांक्तम् वै इदम् सर्वम् पांक्तेन एव पांक्तम् स्पृणोति इति ७॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पृथिवी	= पृथिवीलोक
अन्तरिक्षम्	= अन्तरिक्ष लोक
द्यौः	= स्वर्गलोक
दिशः	= दिशा
अन्तरदिशः	= विदिशा यानीचारोकोने
+ एतत्लोकपञ्चकम्	= ये पांचलोकपंचकहैं
अग्निः	= अग्नि
वायुः	= वायु
आदित्यः	= सूर्य
चन्द्रमाः	= चन्द्रमा

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
नक्षत्राणि	= नक्षत्र
+ एतत्देवपञ्चकम्	= ये पांचदेवपंचक हैं
आपः	= जल
ओषधयः	= औषधी
वनस्पतयः	= वनस्पति
आकाशः	= आकाश
च	= और
आत्मा	= विराट्रूप
एततभूतपञ्चकम्	= ये पांचभूत पंचक हैं
इति	= इसप्रकार तीनोपंचक
अधिभूतम्	= अधिभूत हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ = और
प्राणः = प्राण
अपानः = अपान
व्यानः = व्यान
उदानः = उदान
समानः = समान
एतत्वायुः पञ्चकम् = ये पांचवायु पंचकहैं

चक्षुः = नेत्र
श्रोत्रम् = कर्ण
मनः = मन
वाक् = वाणी
त्वक् = त्वचा
+एतत् इन्द्रियपञ्चकम् = ये पांच इन्द्रियपंचक हैं

च = और
चर्म = चर्म
मांसम् = मांस
स्नावा = नाड़ी
अस्थि = हाड़
मज्जा = मज्जा
एतद्धातुपञ्चकम् = ये पांच धातु पंचक हैं

इति = इस प्रकार ये तीनों पंचक
अध्यात्मम् = अध्यात्महैं
एतत् = उस पूर्वोक्त अधिभूतऔर अध्यात्मको
अधिविधाय = कल्पना करके
इदम् = यह
सर्वम् = सब बाह्याभ्यंतर
वै = निश्चय करके
पांक्तम् = पांक्त याने पंचात्मक हैं

एवम् = इसप्रकार
विद्वान् = बुद्धिमान् पुरुष
पांक्तम् = अधिभूत बाह्य पंचात्मक को
पांक्तेन = अध्यात्मिक पंचात्मक करके
एव = ही
स्पृणोति = एकाकारता से अनुभव करता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एवम् = ऐसा
ऋषिः = वेदने
अवोचत् = कहा है ॥

मूलम् ॥

ओमितिब्रह्म ओमितीदꣳ सर्वम् ओमित्येतदनुकृतिर्हस्म वा अप्योंश्रावयेत्याश्रावयन्ति ओमिति सामानिगायन्ति ओं शोमितिशस्त्राणिशꣳसन्तिओमित्यध्वर्युः प्रतिगरंप्रतिगृणाति ओमिति ब्रह्माप्रसौतिओमित्यग्निहोत्रमनुजानाति ओमिति ब्राह्मणःप्रवक्ष्यन्नाह ब्रह्मोपाप्नुवानीतिब्रह्मैवोपाप्नोतिओंदश १६ इत्यष्टमोऽनुवाकः ८ ॥

पदच्छेदः ॥

ओम् इति ब्रह्म ओम् इति इदम् सर्वम् ओम् इति एतत् अनुकृतिः ह स्म वै अपि ओं श्रावय इति आश्रावयन्ति ओम् इति सामानि गायन्ति ओम् शोम् इति शस्त्राणि शंसन्ति ओम् इति अध्वर्युः प्रतिगरम् प्रति गृणाति ओम् इति ब्रह्मा प्रसौति ओम् इति अग्निहोत्रम् अनुजानाति ओम् इति ओम् इति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन् आह ब्रह्म उपाप्नुवानि इति ब्रह्म एव उपाप्नोति इत्यष्टमोऽनुवाकः ८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+यतः	= चूंकि
सर्वम्	= सब
इदम्	= यह जगत्
ॐम्	= ॐम्
इति	= शब्द करके
व्याप्तम्	= व्याप्तहै
अतः	= इस लिये
ह,स्म,वै	= निश्चयकरके
ॐम्	= ॐम्
इति	= ऐसा
एतत्	= यह शब्द
अनुकृतिः	= सब बाणी में अनुकरण है याने प्रतिध्वनिरूपहै
च	= और
अपि	= यज्ञेषु अपि = यज्ञोंबिषेभी
ॐवै	= ॐ प्रसिद्धहै
ॐ	= ॐ

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
श्रावय इति	= सुनावतू (यह यजुर्वेदीय अध्वर्युहोता जब कहताहै)
+तदा	= तब
आश्रावयन्ति	= देवताओं को मंत्रसुनाते हैं वे यह ऋत्विक्लोक बोलते हैं
च	= और
ॐम्	= ॐम् शब्द
इति	= उच्चारणकरके
सामानि	= सामवेदको
गायन्ति	= गायनकरते हैं
च	= और
ओम्	= ओम्
शोम्	= शोम् शब्द
इति	= करके
शस्त्राणि	= ऋग्वेदकी ऋचाओं को
शंसंति	= उच्चारण करते हैं

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च = और
ॐम् = ॐम् शब्द
इति = उच्चारण करके
अध्वर्युः = यजुर्वेदी
प्रति गरम् = यजुर्वेदको
प्रति गृणाति = पठनकरताहै
च = और
ॐम् = ॐम् शब्द
इति = उच्चारणकरके
ब्रह्मा = ब्रह्मा (यज्ञबिषे)
प्रसौति = प्रेरणाकरताहै
च = और
ॐम् = ॐम् शब्द
इति = उच्चारणकरके
अग्नि होत्रम् = अग्निहोत्रको
अनुजानाति = होमकरनेकी आज्ञा होताको देताहै
च = और

+यदा = जब
प्रवक्ष्यन् = वेदपढ़नेकी इच्छावाला
ब्राह्मणः = ब्राह्मण
इति = ऐसाविचार करके कि
ब्रह्म = वेदको
उपाप्नुवानि = मैंप्राप्तहोजाऊं
पूर्वम् = आरम्भविषे
ओम्इति = ओम्शब्द को
आह = उच्चारणकरताहै
तदा = तब
सः = वहब्राह्मण
ब्रह्म = वेद को
एव = निश्चयकरके
उपाप्नोति - प्राप्त होताहै
ततः = इसीलिये
ॐम् = ॐम् शब्द
इति = करके
ब्रह्म = शब्दब्रह्मको
उपासीत = उपासनाकरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

ऋतंचस्वाध्यायप्रवचनेच सत्यंचस्वाध्यायप्रवचनेचतपश्च स्वाध्यायप्रवचनेच दमश्चस्वाध्यायप्रवचनेचशमश्चस्वाध्यायप्रवचनेच अग्नयश्चस्वाध्यायप्रवचनेच अग्निहोत्रञ्च स्वाध्यायप्रवचनेच अतिथयश्चस्वाध्यायप्रवचनेच मानुषञ्चस्वाध्यायप्रवचनेचप्रजा।चस्वाध्यायप्रवचनेच प्रजनश्चस्वाध्यायप्रवचनेचप्रजापतिश्चस्वाध्यायप्रवचनेच सत्यमितिसत्यवचाराथीतरः तपइतितपोनित्यः पौरुशिष्टिः स्वाध्यायप्रवचनेएवेतिनाकोमौद्गल्यः तद्धितपस्तद्धितपः १७॥ इतिनवमोऽनुवाकः ९॥

पदच्छेदः ॥

ऋतम् च स्वाध्यायप्रवचने च सत्यम् च स्वाध्यायप्रवचनेच तपः च स्वाध्यायप्रवचने च दमः च स्वाध्यायप्रवचने च शमः च स्वाध्यायप्रवचने च अग्नयः च स्वाध्यायप्रवचने च अग्निहोत्रम् च स्वाध्यायप्रवचने च अतिथयः च स्वाध्यायप्रवचने च मानुषम् च स्वाध्यायप्रवचने च प्रजा च स्वाध्याय प्रवचने च प्रजनः च स्वाध्यायप्रवचने च सत्यम् इति सत्यवचाः राथीत्तरः तपः इति तपो नित्यः पौरुशिष्टिः स्वाध्यायप्रवचने एव इति नाकः मौद्गल्यः तत् हि तपः तत् हि तपः ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ऋतम्	वेदके सूक्ष्म अर्थ का विचारकरना
च	और
सत्यम्	सत्यबोलना
च	और
स्वाध्यायप्रवचने	वेदका पढ़ना और पढ़ाना
च	और
तपः	तपकरना
च	और
स्वाध्यायप्रवचने	वेदका पढ़ना और पढ़ाना
च	और
तपः	तप करना
च	और
स्वाध्यायप्रवचने	वेदका पढ़ना और पढ़ाना
च	और
दमः	बाह्य इंद्रियों का रोकना
च	और
स्वाध्यायप्रवचने	वेदका पढ़ना और पढ़ाना
च	और
शमः	मनका रोकना
च	और
स्वाध्यायप्रवचने	वेदका पढ़ना और पढ़ाना
च	और
अग्नयः	अग्नि धारण करना
च	और
स्वाध्यायप्रवचने	वेदका पढ़ना और पढ़ाना
च	और
अग्निहोत्रम्	अग्निहोत्र करना
च	और
स्वाध्यायप्रवचने	वेदका पढ़ना और पढ़ाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च = और

अतिथयः = अभ्यागतोंका पूजन करना

च = और

स्वाध्याय प्रवचने = वेदका पढ़ना और पढ़ाना

च = और

मानुषम् = लौकिक व्यवहार याने विवाह आदिकर्मकरना

च = और

स्वाध्याय प्रवचने = वेदकापढ़ना और पढ़ाना

च = और

प्रजा = सन्तति का उत्पन्नकरना

च = और

स्वाध्याय प्रवचने = वेदका पढ़ना और पढ़ाना

च = और

प्रजनः = स्वभार्या विषे गर्भदान ऋतुकालमेंदेना

च = और

स्वाध्याय प्रवचने = वेदका पढ़ना और पढ़ाना

च = और

प्रजातिः = विवाह पुत्र पौत्रकी उत्पत्तिकेलियेकरना

च = और

स्वाध्याय प्रवचने = वेदका पढ़ना और पढ़ाना

+एता निवेद विहित कर्माणि = ये सब ऊपर लिखेहुये वेद विहित कर्म

अवश्यकर्तव्यानि = अवश्य करने योग्य हैं

च = और

रथीतरः = रथीतर गोत्र में उत्पन्नहुवा

सत्यवचने = सत्यवचा-नामकऋषि

सत्यम् = सत्यको

इति = ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनुते = श्रेष्ठमानता है	पौरुशिष्टि = पुरुशिष्टगोत्र विषेउत्पन्नहुवा

मूलम् ॥

अहंवृक्षस्यरेरिवा कीर्त्तिःपृष्ठंगिरेरिव ऊर्ध्वपवित्रो वाजिनीव स्वमृतमस्मि द्रविणछं सुवर्चसम् सुमेधा अमृतोऽक्षितः इति त्रिशङ्कोर्वेदानुवचनम् अहछंषट् १८ इतिदशमोऽनुवाकः १० ॥

पदच्छेदः ॥

अहम् वृक्षस्य रेरिवा कीर्त्तिः पृष्ठम् गिरेः इव ऊर्ध्वपवित्रः वाजिनि इव स्वमृतम् अस्मि द्रविणम् सुवर्चसम् सुमेधाः अमृतोऽक्षितः इति त्रिशङ्कोः वेदानुवचनम् १० दशमोऽनुवाकः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अहम्	= मैं	मे	= मेरा
वृक्षस्य	= संसाररूपी वृक्षका	कीर्त्तिः	= यश
रेरिवा	= प्रेरकअन्तर्यामी	गिरेः	= पर्वतके
अस्मि	= हूं	पृष्ठम्	= शिखर
च	= और	इव	= समान
		उन्नतम्	= ऊंचाहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च = और
इव = जैसे
वाजनि = सूर्यबिषे
स्वमृतम् = शुद्धअमृतहै
तद्र् = है.सेही
अहम् = मैं
ऊर्ध्वपवित्रः = निर्मलब्रह्म ज्ञानस्वरूप
अस्मि = हूं
च = और
सुवर्चसम् = प्रकाशमान
द्रविणम् = ब्रह्मरूपीद्रव्य
मया = मुझकरके
प्राप्तम् = पायागयाहै
च = और
अहम् = मैं

सुमेधाः = कार्यकारणात्मकजगत्काआदिमध्यांतजाननेवाला
अस्मि = हूं
अतएव = इसीकारण
अहम् = मैं
अमृतोक्षितः = अमृतसेसिंचितकियाहुआ
अस्मि = हूं
इति = इसप्रकार
त्रिशङ्कोः = त्रिशंकुमुनिका
वेदानुवचनम् = आत्मानुभवकेपश्चात्यहवाक्य
अस्ति = है (जैसेवामदेवऋषि का अनुभववाक्यगर्भबिषेहीउत्पन्न हुवाथा)॥

मूलम् ॥

वेदमनूच्याचार्य्योऽन्तेवासिनमनुशास्तिसत्यं वदधर्म्मञ्च २ स्वाध्यायान्माप्रमदः आचार्याय

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रियंधनमाहृत्य प्रजातन्तुंमाऽव्यवच्छेत्सीः सत्या
न्न प्रमदितव्यम् धर्म्मान्नप्रमदितव्यम् कुशलान्न
प्रमदितव्यम् भूत्यैनप्रमदितव्यम् स्वाध्यायप्रव
चनाभ्यांनप्रमदितव्यम् १९ देवपितृकार्य्याभ्यां
नप्रमदितव्यम् मातृदेवोभवपितृदेवोभव आचा
र्य्यदेवोभव अतिथिदेवोभव यान्यनवद्यानिकर्मा
णितानिसेवितव्यानि नोइतराणि यान्यनवद्यानि
कर्माणितानिसेवितव्यानिनोइतराणियान्यस्माक
ंसुचरितानि तानित्वयोपास्यानिनोइतराणि २०
एकेचास्मच्छ्रेया ंसो ब्राह्मणाः तेषांत्वयासने
नप्रश्वसितव्यम् श्रद्धयादेयम् अश्रद्धयाऽदेयम्
श्रियादेयम् ह्रियादेयम् भियादेयम् संविदादेयम्
अथयदितेकर्म्म विचिकित्सावावृत्तविचिकित्सा
वास्यात् २१ येतत्रब्राह्मणाःसम्मर्शिनः युक्ताअलू
क्षाधर्म्मकामाःस्युः यथातेतत्रवर्तेरन् तथातत्रवर्ते
थाःअथाभ्याख्यातेषु येतत्रब्राह्मणाः सम्मर्शिनः
युक्ताअयुक्ताः अलूक्षाधर्म्मकामाःस्युः यथातेतेषुव
र्तेरन् तथातेषुवर्तेथाःएषआदेशः एषउपदेशःएषा
वेदोपनिषद् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम्
एवमुचैतदुपास्यम् स्वाध्यायप्रवचनाभ्याम् नप्र
मदितव्यम् तानित्वयोपास्यानि विचिकित्सावा
स्यातेषुवर्तेरन् २२ इत्येकादशोऽनुवाकः ॥ ११ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

वेदम् अनूच्य आचार्य्यः अन्तेवासिनम् अनुशास्ति सत्यम् वद धर्म्मम् चर स्वाध्यायात् माप्रमदः आचार्य्याय प्रियम् धनम् आहृत्य प्रजातन्तुम् माऽव्यवच्छेत्सीः सत्यात् न प्रमदितव्यम् धर्म्मात् न प्रमदितव्यम् कुशलात् न प्रमदितव्यम् भूत्यै न प्रमदितव्यम् स्वाध्यायप्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम् देवपितृकार्य्याभ्याम् न प्रमदितव्यम् मातृदेवः भव पितृदेवः भव आचार्य्यदेवः भव अतिथिदेवः भव यानि अनवद्यानि कर्म्माणि तानि सेवितव्यानि नोइतराणि यानि अस्माकम् सुचरितानि तानि त्वया उपास्यानि नो इतराणि ये के च अस्मच्छ्रेयांसः ब्राह्मणाः तेषाम् त्वया आसनेन प्रश्वसितव्यम् श्रद्धया देयम् अश्रद्धया अदेयम् श्रिया देयम् ह्रियादेयम् भिया देयम् संविदा देयम् अथ यदि ते कर्म्मविचिकित्सा वा वृत्त विचिकित्सा वा स्यात् ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः युक्ताः अयुक्ताः अलूक्षाः धर्म्मकामाः स्युः यथा ते तत्र वर्त्तेरन् तथा तत्र वर्त्तेथाः अथ अभ्याख्यातेषु ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः युक्ताः अयुक्ताः अलूक्षाः धर्म्मकामाः स्युः यथा ते तेषु वर्त्तेरन् तथा तेषु वर्त्तेथाः एषः आदेशः एषः उपदेशः एषा वेदोप निषत् एतत्, अनुशासनम्, एवम्, उपासितव्यम् एवम्, उ, च, एतत् उपास्यम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
आचार्य्यः	= गुरु
अन्तेवासिनम्	= शिष्यको
वेदम्	= वेद
अनूच्य	= पढाके
अनुशास्ति	= कर्त्तव्य की शिक्षादेताहै
हे शिष्य	= हे सौम्य
त्वम्	= तू
सत्यम्	= सत्य
वद	= बोल
धर्मम्	= धर्म
चर	= कर
स्वाध्यायात्	= वेदपाठसे
माप्रमदः	= प्रमादयाने भूल मतकर
आचार्याय	= गुरुके अर्थ
धनम्	= धनकोयाने गुरुदक्षिणा को
आहृत्य	= देकर

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
प्रजातन्तुम्	= संतानरूपी तंतुको
माव्यवच्छेत्सीः	= उच्छेद मत कर याने वंश रूपीतागे को मततोड़याने गृहस्थाश्रम कर
सत्यात्	= सत्यसे
प्रमदितव्यम्	= प्रमादकरना योग्य
न	= नहीं है
धर्मात्	= धर्मसे
प्रमदितव्यम्	= प्रमादकरना योग्य
न	= नहीं है
कुशलात्	= देहरक्षार्थ कर्म से
प्रमदितव्यम्	= प्रमादकरना योग्य
न	= नहीं है
भूत्यै	= संपत्ति के लिये

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रमदितव्यम् = प्रमादकरना योग्य
न = नहीं है
स्वाध्यायप्रवचनाभ्याम् = वेदके पठन और पाठन से
प्रमदितव्यम् = प्रमादकरना योग्य
न = नहीं है
देवपितृकार्याभ्याम् = यज्ञश्राद्ध तर्पणादिकर्मसे
प्रमदितव्यम् = प्रमादकरना योग्य
न = नहीं है
हे शिष्य = हे सौम्य
त्वम् = तू
मातृदेवः = माताको देवता तुल्य माननेवाला
भव = हो
पितृदेवः = पिताकोदेवता तुल्य माननेवाला
भव = हो

आचार्यदेवः = आचार्य्यको देवताके तुल्य पूजनकरनेवाला
भव = हो
अतिथिदेवः = अभ्यागतों को देवतातुल्य पूजनकरनेवाला
भव = हो
यानि = जे
अनवद्यानि = अनिन्दित
कर्माणि = कर्म हैं
तानि = वे
त्वया = तुझकरके
सेवितव्यानि = सेवन करने योग्य हैं
इतराणि = निन्दितकर्म
नो = सेवनकरनेयोग्य नहीं हैं
च = और
यानि = जे कर्म
अस्माकम् = हमारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुचरितानि = अच्छीतरह से सेवनकियेहुये हैं
तानि = वे कर्म
त्वया = तुझकरके
उपास्यानि = उपासनाकरने योग्य हैं
इतराणि = हमारे त्याग कियेहुये कर्म
त्वया = तुझकरके
नो = नहीं सेवनकरने योग्यहैं
च = और
ये = जो
के = कोई
ब्राह्मणाः = ब्राह्मण
अस्मच्छ्रेयांसः = आचार्य्यादिकर्म करके हमसे विशेष हैं
तेषाम् = उनका
आसनेन = आसनदानादि सत्कारसे
त्वया = तुझकरके

प्रश्वसितव्यम् = आश्वासन करनायोग्य है
श्रद्धया = श्रद्धाकरके
देयम् = दान करना चाहिये
अश्रद्धया = अश्रद्धाकरके
अदेयम् = दाननहीं देना चाहिये
श्रिया = आत्मश्री के अनुसार यानीयथाशक्ति
देयम् = देना चाहिये
ह्रिया = लज्जाकरके
देयम् = देना योग्य है
भिया = डरकरके
देयम् = देना योग्यहै
संविदा = मित्रादिकार्य करकेयाने मित्रप्रभृति के कार्य में
देयम् = देना योग्यहै
अथ = जब
यदि = कभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते = तुझको

कर्मविचिकित्सा = श्रौतस्मार्त्त कर्म बिषे संदेह

वा = अथवा

वृतिविचिकित्सा = आचार लक्षणवृत्त बिषे संदेह

स्यात् = होवै

तदा = तब

तत्र = तिससमयमें

ये = जो

सम्मर्शिनः = विचारवान्

युक्ताः = लौकिक कर्म युक्त

आयुक्ताः = शास्त्रोक्तकर्म युक्त

अलूक्षाः = अक्रूरबुद्धि वाले

धर्मकामाः = धर्मबिषे काम नारखनेवाले

ब्राह्मणाः = ब्राह्मण

स्युः = होवैं

ते = वे

यथा = जैसे

तत्र = उस संशय बिषे

वर्त्तेरन् = बर्तावकरैं

तत्र = तिस संशय बिषे

त्वम् = तू

अपि = भी

तथा = तैसाही

वर्तेथाः = वर्तावकर

अथ = और

तत्र = उन

अभ्याख्यातेषु = अतिप्रसिद्ध ब्राह्मणोंबिषे

ये = जो

ब्राह्मणाः = ब्राह्मण

सम्मर्शिनः = विचारवान्

युक्ताः = लौकिककर्म युक्त

आयुक्ताः = वैदिककर्म्म युक्त

अलूक्षाः = अक्रूरबुद्धि वाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्मकामाः = धर्मबिषेकामना रखनेवाले
स्युः = होवें
ते = वे
यथा = जैसे
तेषु = उन संशयों बिषे
वर्त्तेरन् = वर्तैं
तथा = वैसाही
त्वम् = तू
अपि = भी
तेषु = उन संशयों बिषे
वर्तेथाः = वर्तावकर
एषः = यही
आदेशः = बुद्धिहै
एषः = यही
उपदेशः = पुत्र शिष्य आदिकोंको उपदेशहै
एषा = यही
वेदोपनिषत् = वेदका सूक्ष्म और गोप्य अर्थ है
एतत् = यही
अनुशासनम् = ईश्वरवचन है
एवम् = इसप्रकार
उपासितव्यम् = उपासनाकरने योग्यहै
च = और
उ = निश्चयकरके
एवम् = इसप्रकार
एतत् = यह
उपास्यम् = उपासनाकरने योग्य है

मूलम् ॥

शन्नोमित्रःशंवरुणः शन्नोभवत्वर्य्यमा शन्न इन्द्रोबृहस्पतिः शन्नोविष्णुरुरुक्रमः नमोब्रह्मणे नमस्तेवायोत्वमेव प्रत्यक्षंब्रह्मासित्वामेवप्रत्यक्षंब्रह्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वादिषम् ऋतमवादिषम् सत्यमवादिषम् तन्मा मावीत् तद्वक्तारमावीत आवीन्माम् आवीद्वक्तारम् सत्यमवादिषंपञ्चच ॥ ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ २३ ॥

इति शिक्षाध्यायः प्रथमावल्ली ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

शम् नः मित्रः शम् वरुणः शम् नः भवतु अर्य्यमा शम् नः इन्द्रः बृहस्पतिः शम् नः विष्णुः उरुक्रमः नमः ब्रह्मणे नमः ते वायो त्वम् एव प्रत्यक्षम् ब्रह्म असि त्वाम् एव प्रत्यक्षम् ब्रह्म अवादिषम् ऋतम् अवादिषम् सत्यम् अवादिषम् तत् माम् आवीत् तत् वक्तारम् आवीत् आवीत् माम् आवीत् वक्तारम् ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इतिद्वादशोऽनुवाकः । इतिशिक्षाध्यायःप्रथमावल्ली १ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मित्रः	प्राण और दिन अभिमानीदेवता
नः	हमको
शम्	सुखकारी
भवतु	होवैं
वरुणः	अपानऔर रात्रीअभिमानीदेवता
नः	हमको
शम्	सुखकारी
भवतु	होवैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्यमा = नेत्र और सूर्य अभिमानीदेवता
नः = हमको
शम् = सुखकारी
भवतु = होवैं
इन्द्रः = बलअभिमानी देवता
नः = हमको
शम् = सुखकारी
भवतु = होवैं
बृहस्पतिः = वाणी और बुद्धिअभिमानी देवता
नः = हमको
शम् = सुखकारी
भवतु = होवैं
उरुक्रमः = बढ़ानेवालाहै तीनपादका जो राजाबलि के यज्ञबिषे ऐसा
विष्णुः = चरणोंका अभिमानी देवता

नः = हमको
शम् = सुखकारी
भवतु = होवैं
ब्रह्मणे = व्यापकहै जो ऐसे ब्रह्म के लिये
नमः = नमस्कारहै
वायो = हे वायुदेवता
ते = तेरे अर्थ
नमः = नमस्कारहै
त्वम् = तू
प्रत्यक्षम् = प्रत्यक्ष
ब्रह्म = ब्रह्म
असि = है
त्वाम् = तुझको
एव = ही
प्रत्यक्षम् = प्रत्यक्ष
ब्रह्म = ब्रह्म
अवादिषम् = मैंने कहाहै
त्वाम् = तुझको
एव = ही
ऋतम् = निश्चयात्मक बुद्धि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवादिषम् = मैंने कहाहै

त्वाम् = तुझको

एव = ही

सत्यम् = सत्य

अवादिषम् = मैंने कहाहै

तत् = उस वायुरूप ब्रह्मने

माम् = मुझविद्यार्थी को

आवीत् = रक्षित किया है यानेविद्या से संयुक्त कियाहै

तत् = उस वायुरूप ब्रह्मने

वक्तारम् = आचार्य्ययाने गुरुको

आवीत् = रक्षितकिया है याने वक्तृत्वशक्ति से युक्त किया है

माम् = मुझको

आवीत् = उसने रक्षित कियाहै

वक्तारम् = आचार्य्यको

आवीत् = उसने रक्षित कियाहै

ॐम्शान्तिः = आध्यात्मिकविघ्नों से शान्तिहोवै

शान्तिः = आधिभौतिक विघ्नों से शान्तिहोवै

शान्तिः = आधिदैविकविघ्नों से शान्तिहोवै

इति प्रथमाऽध्यायः शिक्षा वल्लीसमाप्ता ॥

मूलम् ॥

हरिः ॐम् सहनाववतु सहनौभुनक्तु सहवीर्य्यंक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

पदच्छेदः ॥

सह नौ अवतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यम् करवावहै तेजस्विनौ अधीतम् अस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+सः	= वह ईश्वर
नौ	= हम दोनोंको याने गुरु और शिष्य को
सह	= साथ
+एव	= ही
अवतु	= रक्षाकरै
नौ	= हम दोनों को
सह	= साथ
+एव	= ही
भुनक्तु	= भोगप्राप्तकरै
+आवाम्	= हम दोनों
सह	= साथ
एव	= ही
वीर्यम्	= विद्यादान और विद्या ग्रहण सामर्थ्य को
करवावहै	= प्राप्त होवैं
नौ	= हम दोनों का
अधीतम्	= पढ़ा हुआ
तेजस्वि	= अर्थ ज्ञान योग्ययानीसफल
अस्तु	= होवै
आवाम्	= हम दोनों

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मावविद्वि षावहै = { पठन पाठन में प्रमादरूपविद्वेषकोन प्राप्त होवैं

ॐ शन्तिः = आध्यात्मिक

शान्तिः = आधि भौतिक

शान्तिः = { आधिदैवक ये त्रिविधताप हमारे शान्त होवैं ॥

मूलम् ॥

ॐ ब्रह्मविदाप्नोतिपरम् तदेषाऽभ्युक्ता सत्यंज्ञानमनन्तं ब्रह्मयोवेद निहितं गुहायां परमेव्योमन् सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्राह्मणा विपश्चितेति तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथवी पृथिव्या ओषधयः ओषधीभ्योऽन्नम् अन्नाद्रेतः रेतसः पुरुषः सवाएष पुरुषोऽन्नरसमयः तस्येदमेव शिरः अयं दक्षिणः पक्षः अयमुत्तरः पक्ष अयमात्मा इदं पुच्छं प्रतिष्ठा तदप्येष श्लोको भवति १ ॥ १ । २५ इतिप्रथमोऽनुवाकः ॥ १ ॥

पदच्छेदः ॥

ब्रह्मवित् अप्नोति परम् तत् एषा अभ्युक्ता सत्यम् ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म यः वेद निहितम् गुहायाम् परमे व्योमन् सः अश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्राह्मणा विपश्चिता इति तस्मात् वै एतस्मात् आत्मनः आकाशः सम्भूतः आकाशात् वायुः वायोः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अग्निः अग्नेः आपः अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्याः ओषधयः ओषधीभ्यः अन्नम् अन्नात् पुरुषः सः वै एषः पुरुषः अन्नरसमयः तस्य इदम् एव शिरः अयम् दक्षिणः पक्षः अयम् उत्तरः पक्षः अयम् आत्मा इदम् पुच्छम् प्रतिष्ठा तत् अपि एषः श्लोकः भवति ॥ १ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ब्रह्मवित्	ब्रह्मवेत्ता
परम्	निरतिशय ब्रह्म को
आप्नोति	प्राप्त होताहै यानेस्वयंब्रह्मरूपहोजाता है
तत् = तत्र	उसब्रह्मके ज्ञान बिषे
एषा	यह ऋचा
अभ्युक्ता	वेदने कही है कि
सत्यम्	विकारशून्य
ज्ञानम्	ज्ञानस्वरूप

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अनन्तम्	त्रिविधपरिच्छेदशून्ययानीकालदिक्देशके अवधिसे शून्य
इति	ऐसा
ब्रह्म	ब्रह्म है
परमे	उत्कृष्ट
व्योमन्	हृदयाकाशमें
गुहायाम्	बुद्धिरूपीगुहाबिषे
+ यत्	जो
निहितम्	साक्षिरूपसे स्थितहै
+ तत्	उस ब्रह्मको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यः = जो
वेद = जानता है
सः = वह
विपश्चिता = सर्वज्ञ
ब्रह्मणा = ब्रह्मस्वरूप
सहैव = एककालबिषे हीयानेतत्कालही
सर्वान् = संपूर्ण
कामान् = कामानओंको
अश्नुते = प्राप्तहोताहै यानेसर्वात्मा हो जाता है

तस्मात् = तिस
एतस्मात् = उसपूर्वोक्त
आत्मनः = आत्मासे
आकाशः = आकाशशब्द गुणवाला
वै = प्रसिद्ध
सम्भूतः = उत्पन्नहोताहै

आकाशात् = आकाशसे
वायुः = वायुशब्दस्पर्श गुणवाला
सम्भूतः = उत्पन्नहोता है

वायोः = वायुसे
अग्निः = अग्निशब्द स्पर्शरूपगुणवाला
सम्भूतः = उत्पन्नहोता है

अग्नेः = अग्निसे
आपः = जलशब्द स्पर्शरूपरस गुणवाले
सम्भूताः = उत्पन्नहोते हैं

अद्भ्यः = जलों से
पृथिवी = पृथिवी शब्द स्पर्श रूप रस गंधगुणवाली
सम्भूता = उत्पन्न होती है

पृथिव्याः = पृथिवी से
ओषधयः = अन्नवृक्ष
सम्भूताः = उत्पन्न होते हैं

ओषधीभ्यः = अन्नवृक्षों से
अन्नम् = अन्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्भूतम् = उत्पन्न होताहै
अन्नात् = वीर्यरूपअन्नसे
पुरुषः = पुरुष
सम्भूतः = उत्पन्न होताहै
एषः = यह
वै = प्रसिद्ध है कि
सःपुरुषः = वह पुरुष
अन्नरसमयः = अन्नरससे
अस्ति = सिद्धहै याने उत्पन्न हुआ है
तस्य = उस पुरुष का
इदम् = यह
शिरः = शिरहै
अयम् = यह
दक्षिणः = दहना
पक्षः = भुजा है
अयम् = यह
उत्तरः = वाम
पक्षः = भुजाहै
अयम् आत्मा = यह कंठसे कटिपर्यन्त अंगीमध्यभाग आत्मा है
इदम् = यहकटिसेनीचे पादतलपर्यंत
पुच्छम् = पूंछहै
तत् = वह पूंछ
प्रतिष्ठा = ऊर्ध्व देह का आधार है
तत्=तत्र = ऐसे अन्नमय कोशविषे
अपि = ही
एषः = यह आगेवाला
श्लोकः = मंत्र
भवति = प्रमाण है

मूलम् ॥

अन्नाद्वैप्रजाःप्रजायन्ते याःकाश्चपृथिवीᳯश्रिताः अथोअन्नेनैवजीवन्ति अथैनदपियन्त्यन्ततः अन्नᳯहिभूतानां ज्येष्ठम् तस्मात्सर्वौषधमुच्यते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वं वैतेऽन्नमाप्नुवन्ति येऽन्नंब्रह्मोपासते अन्नछंहि भूतानां ज्येष्ठम् तस्मात्सर्वौषधमुच्यते अन्नाद्भू तानिजायन्ते जातान्यन्नेनवर्द्धन्ते अद्यतेऽत्तिचभू तानि तस्मादन्नं तदुच्यते इति तस्माद्वा एतस्माद न्नरसमयात् अन्योऽन्तरात्मा प्राणमयः तेनैषपू र्णः सवाएषपुरुषविधएव तस्य पुरुषविधताम् अ न्वयंपुरुषविधः तस्य प्राणएवशिरः व्यानोदक्षिणः पक्षः अपान उत्तरपक्षः आकाश आत्मा पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा तदप्येषश्लोकोभवति = इतिद्विती योऽनुवाकः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

अन्नात् वै प्रजाः प्रजायन्ते याः काः च पृथिवीम् श्रिताः अथो अन्नेन एव जीवन्ति अथ एनत् अपि यन्ति अन्ततः अन्नम् हि भूतानाम् ज्येष्ठम् तस्मात् सर्वौषधम् उच्यते सर्वम् वा एते अन्नम् आप्नुवन्ति ये अन्नम् ब्रह्म उपासते अन्नम् हि भू- तानाम् ज्येष्ठम् तस्मात् सर्वौषधम् उच्यते अन्नात् भूतानि जायन्ते जातानि अन्नेन वर्द्धन्ते अद्यते अत्ति च भूतानि तस्मात् अन्नम् तत् उच्यते इति तस्मात् वै एतस्मात् अन्नरसमयात् अन्यः अन्त- रात्मा प्राणमयः तेन एषः पूर्णः सः वै एषः पु- रुषविधः एव तस्य पुरुषविधताम् अनु अयम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरुषविधः तस्य प्राणः एव शिरः व्यानः दक्षिणः पक्षः अपानः उत्तरः पक्षः आकाशः आत्मा पृथिवी पुच्छम् प्रतिष्ठा तत् अपि एषः श्लोकः भवति ॥ २॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	और
यः	जो
काः	कोई
प्रजाः	प्रजा
पृथिवीम्	पृथिवी के
श्रिताः	आश्रय हैं
+ ताः	वेसब
अन्नात्	रसपरिणामी अन्न से
वै	ही
प्रजायन्ते	उत्पन्न होती हैं
च	और
अथो	उत्पत्ति के पश्चात्
अन्नेन	अन्नसे
एव	ही
जीवन्ति	जीतीहैं और बढ़ती हैं

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अथ	जीवन वर्धन के पश्चात्
अन्ततः	अन्तसमय यानेजीवन त्यागके समय
एनत्	इस अन्नही
अपि	में
यन्ति	लीन होती हैं
तस्मात्	इसीकारण
अन्नम्	अन्न
हि	निश्चयकरके
भूतानाम्	प्राणियों का
ज्येष्ठम्	प्रथमतत्त्व है
च	और
सर्वौषधम्	सबके लिये क्षुधानिवारणार्थ औषध

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उच्यते = कहाजाताहै
ये = जे
अन्नम् = अन्नको
ब्रह्म = ब्रह्म
+ इति = करके
उपासते = उपासना करतेहैं
ते = वे
सर्वम् = सब
अन्नम् = अन्नको
वा = निश्चयकरके
आप्नुवन्ति=प्राप्त होते हैं

यस्मात् = जिसकारण
अन्नम् = अन्न
हि = ही
भूतानाम् = प्राणियों का
ज्येष्ठम् = प्रथमतत्त्व है
तस्मात् = तिसी कारण
सर्वौषधम् = सब देहधारियों के देह दाहका याने क्षुधा शान्त करनेवाला
उच्यते = कहाजाता है

भूतानि = सम्पूर्णभूत
अन्नात् = अन्नसे
जायन्ते = उत्पन्न होते हैं
+ च = और
जातानि = उत्पन्नभये
अन्नेन = अन्नकरके
वर्द्धन्ते = वृद्धिको प्राप्त होते हैं

+ यतः = जिसकारण
तत् = वह अन्न
भूतैः = भूतोंकरके
अद्यते = खायाजाता है
+ परम् = और वह
भूतानि = भूतों को
च = भी
अत्ति = खाताहै
तस्मात् = तिसीकारण
अन्नम् = अन्न
उच्यते = कहाजाताहै
इति = यह अन्नमय कोशकी उपासना का मन्त्र है

वै = स्मरणरहै कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तस्मात् = तिस
एतस्मात् = पूर्वोक्त
अन्नरसमयात् = अन्नरसकर के बनेहुये देहसे याने अन्नमयकोशसे
अन्यः = पृथक्
अन्तरात्मा = अभ्यन्तरी शरीर
प्राणमयः = प्राणमयकोश
+ अस्ति = है

तेन = उस प्राणमय कोश करके
एषः = यह अन्नमय कोश
पूर्णः = पूरितहै याने भराहुआ है जैसे हवासे धौंकनी भरी होती है

वै = पुनः स्मरण रहै कि
सः = वह
एषः = यह प्राणमय कोश
+ अपि = भी
पुरुषविधः = पुरुषाकार
एव = ही
+ अस्ति = है

तस्य = उसपूर्वोक्तअन्नमयकोश
पुरुषविधताम् = पुरुषाकारके
अनु = समान
अयम् = यहप्राणमय कोश
अपि = भी
पुरुषविधः = पुरुषाकार है

तस्य = उसप्राणमय शरीरका
प्राणः = प्राण
एव = ही
शिरः = शिर है

व्यानः = व्यानवायु
दक्षिणः = दहना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पक्षः = भुजा है

अपानः = अपानवायु
उत्तरः = वाम
पक्षः = भुजा है

आकाशः = अभ्यंतरआकाश याने समानवायु
आत्मा = शरीरहै याने धड़ है

पृथिवी = अपानवायुके रहनेकास्थान
\+ तस्य = उसका
पुच्छम् = पूंछहैयानेनीचेकाधड़ है
\+ तत् = वह पुच्छस्थानरूपपृथिवी
प्रतिष्ठा = उसप्राणमयशरीरका आधारस्थान है

तत् = तत्र = उसप्राण मयकोशकीउपासना बिषे
अपि = ही
एषः = यह
श्लोकः = मंत्र प्रमाण
भवति = है (जिसका व्याख्यान आगेकिया जावैगा)

इति द्वितीयोऽनुवाकः २॥

मूलम् ॥

प्राणंदेवाअनुप्राणन्तिमनुष्याःपशवश्चये प्राणोहिभूतानामायुःतस्मात्सर्वायुषमुच्यते सर्वमेव आयुर्यन्तियेप्राणंब्रह्मोपासते प्राणोहिभूतानामायुस्तस्मात्सर्वायुषमुच्यतइति तस्यैषएवशारीर आत्मायःपूर्वस्य तस्माद्वा एतस्मात्प्राणमयात्अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्योऽन्तरात्मामनोमयः तेनैषपूर्णः सवाएषपुरुष विधएव तस्यपुरुषविधताम् अन्वयं पुरुषविधः तस्ययजुरेवशिरः ऋग्दक्षिणःपक्षः सामोत्तरःपक्षः आदेशआत्माऽथर्वांगिरसः पुच्छंप्रतिष्ठातदप्येष श्लोकोभवति २७ ॥

इति तृतीयोऽनुवाकः ३ ॥

पदच्छेदः ॥

प्राणम् देवाः अनु प्राणन्ति मनुष्याः पशवः च ये प्राणः हि भूतानाम् आयुः तस्मात् सर्वायुषम् उच्यते सर्वम् एवते आयुः यन्ति ये प्राणम् ब्रह्म उपासते प्राणः हि भूतानाम् आयुः तस्मात् सर्वायुषम् उच्यते इति तस्य एषः एव शरीरः आत्मा यः पूर्वस्य तस्मात् वै एतस्मात् प्राणमयात् अन्यः अन्तरः आत्मा मनोमयः तेन एषः पूर्णः सः वै एषः पुरुषविधः एव तस्य पुरुषविधताम् अनु अयम् पुरुषविधः तस्य यजुः एव शिरः ऋक् दक्षिणः पक्षः साम उत्तरः पक्षः आदेशः आत्मा अथर्वाङ्गिरसः पुच्छम् प्रतिष्ठा तत् अपि एषः श्लोकः भवति ॥ ३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये = जो
देवाः = इन्द्रियाभिमानी देवताहैं
च = और
+ ये = जो
मनुष्याः = मनुष्य
पशवः = पशु आदि प्राणीहैं
+ ते = वे सब
प्राणम् = प्राणके
अनु = पश्चात्
प्राणन्ति = चेष्टावान् होते हैं
हि = क्योंकि
प्राणः = प्राण
भूतानाम् = सर्व भूतों का
आयुः = जीवन है
तस्मात् = इसी कारण से (वह)
सर्वायुषम् = सबकाजीवन
उच्यते = कहाजाता है
ये = जो कोई
प्राणम् = प्राणको

ब्रह्म = ब्रह्म
इति = करके
उपासते = उपासना करते हैं
ते = वे
सर्वम् = पूर्णयाने सौ वर्षतक
आयुः = आयुको
एव = अवश्य
यन्ति = प्राप्तहोतेहैं याने अल्प मृत्यु और अपमृत्यु से रहित होते हैं
हि = जिस कारण
प्राणः = प्राण
भूतानाम् = सब प्राणियोंका
आयुः = आयुहै
तस्मात् = तिस कारण
सर्वायुषम् = सबका जीवन
उच्यते = कहाजाता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ च = और
पूर्वस्य = अन्नमय कोशका
यः = जो
आत्मा = चिदात्मा
शारीरः = शरीर बिषे स्थित
+ अस्ति = है
एषः = वह
एव = ही
तस्य = इसप्राणमय कोशका
अपि = भी
आत्मा = चिदात्मा
+ अस्ति = है
इति = यहप्राणमय कोशकी उपासना का मंत्रहै

वै = पुनःस्मरणार्थ है कि
तस्मात् = उस
एतस्मात् = इस
प्राणमयात् = प्राणमय कोशके
अन्तरः = अभ्यन्तर
+ च = और
अन्यः = पृथक्
आत्मा = शरीर
मनोमयः = मनोमयकोशकरके प्रसिद्ध

+ अस्ति = है
तेन = इस मनोमय कोश करके
एषः = यह प्राणमय कोश
पूर्णः = पूरित है याने व्याप्तहै

वै = स्मरण रहै कि
सः = सो
एषः = यह मनोमय कोश
अपि = भी
पुरुषविधः = पुरुषाकार
एव = ही
अस्ति = है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तस्य = उसप्राणमय कोश के
पुरुषविधताम् = पुरुष प्रकारके
अनु = समान
अयम् = यह मनोमय कोश
\+ अपि = भी
पुरुषविधः = पुरुषाकारहै
तस्य = इस मनोमय शरीरका
यजुः = यजुर्वेद
एव = निश्चय करके
शिरः = शिरहै
ऋक् = ऋग्वेद
दक्षिणः = दक्षिण
पक्षः = भुजा है
साम = सामवेद
उत्तरः = वाम
पक्षः = भुजाहै
आदेशः = ब्राह्मणग्रन्थया नेब्राह्मणभाग
आत्मा = मध्य शरीरहै
अथर्वाङ्गिरसः = अथर्वणवेद
पुच्छम् = पूछ है
\+तत् = सोई
प्रतिष्ठा = उसमनोमयकोशकाअधिष्ठान
\+अस्ति = है
तत्=तत्र = इसमनोमय कोशकीउपासनाविषे
अपि = भी
एषः = यह
श्लोकः = मंत्र प्रमाण
भवति = है

मूलम् ॥

यतोवाचोनिवर्त्तन्ते अप्राप्यमनसासह आनंदं ब्रह्मणोविद्वान् नबिभेति कदाचनेति तस्यैषएवशारीरआत्मायः पूर्वस्य तस्माद्वा एतस्माद्वा एतस्मान्मनोमयात् अन्योऽन्तर आत्मा विज्ञानमयः ते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नैषपूर्णः सवाएषपुरुष विध एवतस्य पुरुषविधताम् अन्वयं पुरुषविधः तस्यश्रद्धैवशिरः ऋतंदक्षिणः पक्षःसत्यमुत्तरःपक्षः योगआत्मामहःपुच्छंप्रतिष्ठा तदप्येषश्लोकोभवति २८ इतिचतुर्थोऽनुवाकः ४॥

पदच्छेदः ॥

यतः वाचः निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसा सह आनन्दम् ब्रह्मणः विद्वान् न बिभेति कदाचन तस्य एषः एव शारीरः आत्मा यः पूर्वस्य तस्मात् वै एतस्मात् मनोमयात् अन्यः अन्तरः आत्मा विज्ञानमयः तेन एषः पूर्णः सः वै एषः पुरुषविधः एव तस्य पुरुषविधताम् अनु अयम् पुरुषविधः तस्य श्रद्धा एव शिरः ऋतम् दक्षिणः पक्षः सत्यम् उत्तरः पक्षः योगः आत्मा महः पुच्छम् प्रतिष्ठा तत् अपि एषः श्लोकः भवति ॥ ४ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वाचः	= वाणीरूपवेद
मनसासह	= मनद्वारा
यतः	= जिस ब्रह्मको
अप्राप्य	= न प्राप्त होकर के अर्थात् घटादिवत् नसाक्षातकार करके
निवर्तन्ते	= लौट आते हैं याने प्रत्यक्ष नहीं करसक्ते हैं
तस्य	= उस
ब्रह्मणः	= ब्रह्मके
आनन्दम्	= आनन्दको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ यः = जो मनोमयकोशका उपासक
विद्वान् = वेदजानताहै
सः = वहउपासक
कदाचन = जन्म मरण आदिसेकभी
न = नहीं
विभेति = डरताहैयाने आवागमन सेरहित होकरस्वयंब्रह्म होजाताहै

तस्य = उस
पूर्वस्य = पूर्वोक्त प्राणमयकोशका
यः = जो
शारीरः = शरीर विषे स्थित
आत्मा = चिदात्मा है
एषः = वह
एव = ही
× अस्य = इस मनोमय कोश का
× अपि = भी
× आत्मा = आत्माहै
इति = यह मनोमय कोशके उपासनाकामंत्रहै

वै = स्मरण रहै कि
तस्मात् = उस
एतस्मात् = इस
मनोमयात् = मनोमय कोशके
अन्तरः = अभ्यन्तर
च = और
अन्यः = पृथक्
आत्मा = शरीर
विज्ञानमयः = विज्ञानमय कोश
× अस्ति = है

तेन = इसविज्ञानमय कोशसे
एषः = वहपूर्वोक्त मनोमयकोश
पूर्णः = व्याप्त है

वै = पुनःस्मरणरहै कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सः = वह
एषः = यह विज्ञानमयकोश
पुरुषविधः = पुरुषाकार
एव = ही
अस्ति = है

तस्य = उस मनोमय कोशके
पुरुष विधताम् = पुरुषप्रकार के
अनु = समान
अयम् = यह विज्ञानमयकोश
पुरुषविधः = पुरुषाकार है

तस्य = उसविज्ञानमयशरीरका
श्रद्धा = याागादि उपासना विषे श्रद्धा
एव = निश्चयकरके
शिरः = शिरहै

ऋतम् = मानासिक निश्चय सत्य

दक्षिणः = दहना
पक्षः = भुजा है
सत्यम् = कायकवाचिक सत्य
उत्तरः = वाम
पक्षः = भुजाहै
योगः = मनका समाधान
आत्मा = मध्यशरीर है

महः = महतत्त्व
पुच्छम् = पूंछहै
तत् = वह पूंछयाने महतत्त्व
प्रतिष्ठा = विज्ञानमयशरीरकाआधारहै
तत् = तत्र = उस विज्ञानमय शरीर की उपासना विषे
अपि = भी
एषः = यह
श्लोकः = मंत्र प्रमाण
भवति = है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

विज्ञानंयज्ञंतनुतेकर्माणितनुते पिचविज्ञानंदेवाः सर्वे ब्रह्मज्येष्टमुपासते विज्ञानंब्रह्मचेद्वेदतस्माच्चेन्न प्रमाद्यति शरीरे पाप्मनोहित्वा सर्वान् कामान् समश्नुत इति तस्यैष एव शारीर आत्मा यःपूर्वस्य तस्माद्वा एवस्माद्विज्ञानमयातअन्योऽन्तरआत्मा ऽऽनन्दमयः तेनैष पूर्णःसवाएषपुरुषविधएवतस्य पुरुष विधताम अन्वयं पुरुष विधः तस्यप्रियमेव शिरः मोदोदक्षिणःपक्षःप्रमोद उत्तरः आनन्दात्मा ब्रह्मपुच्छंप्रतिष्ठतिदप्येषश्लोकोभवति ॥ २४ ॥ इति पंचमोऽनुवाकः ॥

पदच्छेदः ॥

विज्ञानम् यज्ञम् तनुते कर्माणि तनुते अपि च विज्ञानम् देवाः सर्वे ब्रह्म ज्येष्टम् उपासते विज्ञानम् ब्रह्म चेत् वेद तस्मात् चेत् न प्रमाद्यति शरीरे पाप्मनः हित्वा सर्वान् कामान् समश्नुते इति तस्य एषः एव शारीरः आत्मा यः पूर्वस्य तस्मात् वै एतस्मात् विज्ञानमयात् अन्यः अन्तरः आत्मा आनन्दमयः तेन एषः पूर्णः सः वै एषः पुरुषविधः एव तस्य पुरुष विधताम् अनु अयम् पुरुषविधः तस्य प्रियम् एव शिरः मोदः दक्षिणः पक्षः प्रमोदः उत्तरः पक्षः आनन्दः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मा ब्रह्म पुच्छम् प्रतिष्ठा तत् अपि एषः श्लोकः भवति ॥ ५ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
विज्ञानम्	= निश्चयपूर्बक ज्ञान
यज्ञम्	= यज्ञको
अपि	= अवश्य
तनुते	= विस्तारकरताहै
च	= और
कर्माणि	= संपूर्ण कर्मोंको
तनुते	= विस्तारकरता है
यतः	= जिसकारण
सर्वे	= सब
देवाः	= इन्द्रियादि देदेवता
ज्येष्ठम्	= प्रथम उत्पन्न हुये
विज्ञानम्	= विज्ञानरूप
ब्रह्म	= ब्रह्मको
उपासते	= उपासना करते हैं
ततः	= तिसीकारण
चेत्	= जब
विज्ञानम्	= विज्ञानको
ब्रह्म	= ब्रह्म
+ इति	= करके
+ यः	= जो
वेद	= जानता है
चेत्	= और
तस्मात्	= उसविज्ञानमय ब्रह्म से
न	= नहीं
प्रमाद्यति	= चूकताहै या ने दृढ़ निश्चय करके उसकी उपासनाकरताहै
+ सः	= वह उपासक
शरीरे	= शरीरके
पाप्मनः	= पापोंको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हित्वा = नाशकरके
सर्वान् = सम्पूर्ण
कामान् = कामनाओं को
समश्नुते = सम्यक्प्रकार भोक्ता है
तस्य = उस
पूर्वस्य = पूर्वोक्त मनोमय कोशका
यः = जो
आत्मा = चिदात्मा
शारीरः = शरीरमें स्थित है
एषः = वह
एव = ही
+ अस्य = इस विज्ञानमय कोशका
+ अपि = भी
+ अस्ति = आत्मा है

वै = पुनः स्मरण रहै कि
तस्मात् = उस
एतस्मात् = इस
विज्ञानमयात् = विज्ञानमय कोशके
अन्तरः = आभ्यन्तर
च = दूसरा
अन्यः = पृथक्
आत्मा = शरीर
आनन्दमयः = आनन्दमयकोश करके प्रसिद्ध
× अस्ति = है
तेन = इस आनन्दमय कोशकरके
एषः = वह विज्ञानमय कोश
पूर्णः = पूरित है याने व्याप्त है

वै = स्मरण रहै कि
सः = वही
एषः = यह आनन्दमयकोश
पुरुषविधः = पुरुषाकार
एव = ही
+ अस्ति = है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तस्य = उसपूर्वोक्त विज्ञान मयकोशके
पुरुषविधताम् = पुरुषाकार के
अनु = समान
अयम् = यहआनन्द मय कोश
+ अपि = भी
पुरुषविधः = पुरुषाकारहै

तस्य = इसआनन्द मयपुरुषका
प्रियम् = पुत्र धनआदि इष्टवस्तु केदर्शनसेउत्पन्नभयाप्रेम
एव = ही
शिरः = शिर है
मोदः = प्रिय पदार्थ के लाभसे उत्पन्नहुआहर्ष
दक्षिणः = दहना
पक्षः = भुजा है
प्रमोदः = पूर्वोक्त अत्यन्त हर्ष
उत्तरः = बाम
पक्षः = भुजा है
आनन्दः = जोसबप्रकार से आनन्द है
सः = वही
आत्मा = मध्यशरीरहै

ब्रह्म = ब्रह्म
पुच्छम् = पूंछ है
तत् = वह ब्रह्मरूप पूंछ
प्रतिष्ठा = आनन्दमय शरीर काआधार स्थान है

तत् = तत्र = इसआनंदमयकोश की उपासनाविषे
अपि = भी
एषः = यह
श्लोकः = मन्त्रप्रमाण
भवति = है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

असन्नेवभवतिअसद्ब्रह्मेतिवेदचेत्अस्तिब्रह्मेति चेद्वेदसन्तमेनं ततो विदुरिति तस्यैष एव शरीरआत्माय: पूर्वस्य अथातोऽनुप्रश्नाः उताविद्वानमुंलोकंप्रेत्य कश्चन गच्छति (३) अहोविद्वानमुंलोकं प्रेत्य कश्चित्समश्नुता (३) उशोऽकामंयत वहु स्यां प्रजायेयेति स तपोऽतप्यत सतपस्तप्त्वाइद छं सर्वमसृजत यदिदंकिञ्च तत सृष्ट्वातदेवानु प्राविशत् तदनुप्रविश्य सच्चत्यच्चा भवत् निरुक्तञ्चा निरुक्तञ्च निलयनञ्चानिलयनञ्च विज्ञानञ्चा विज्ञानञ्च सत्यञ्चानृतञ्च सत्यमभवत् यदिदं किञ्च तत्सत्यमित्याचक्षते तदप्येषश्लोकोभवति ३० इतिषष्ठोऽनुवाकः ६ ॥

पदच्छेदः ॥

असन् एव भवति असत् ब्रह्म इति वेद चेत् अस्ति ब्रह्म इति चेत् वेद सन्तम् एनम् ततः विदुः इति तस्य एषः एव शारीरः आत्मा यः पूर्वस्य अथ अतः अनु प्रश्नाः उत अविद्वान् अमुम् लोकम् प्रेत्य कश्चन गच्छती आहो विद्वान अमुम् लोकम् प्रेत्य कश्चित् समश्नुता उ सः अकामयत वहु स्याम् प्रजायेय इति. सः तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा इदम् सर्वम् असृजत यत्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इदम् किञ्च तत् सृष्ट्वा तत् एव अनुप्राविशत् तत् अनुप्रविश्य सत् च त्यत च अभवत् निरुक्तम् च अनिरुक्तं च निलयनम् च अनिलयनम् च विज्ञानम् च अविज्ञानम् च सत्यम् च अनृतम् च सत्यम् अभवत् यत् इदम् किञ्च तत् सत्यम् इति आचक्षते तत् अपि एषः श्लोकः भवति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
चेत =	अगर
ब्रह्म =	ब्रह्म
असत् =	नहीं है
इति =	ऐसा
वेद =	जानता है जो तो
+सः =	वह ब्रह्मका नहीं जाननेवाला
एव =	आपही
असन् =	नास्तिक याने सत्ता शून्यहोताहै
चेत् =	अगर
ब्रह्म =	ब्रह्म
अस्ति =	है
इति =	ऐसा
वेद =	जानता है जो
ततः =	तो

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एनम् =	उसको याने ब्रह्मसत्ता माननेवाले को
सन्तम् =	सत्तासहित आस्तिक सज्जन
इति =	करके
विदुः =	जानते हैं संसारीलोक
तस्य =	उस पूर्वोक्त
पूर्वस्य =	विज्ञानमयकोशका
यः =	जो
आत्मा =	चिदात्मा
शारीरः=	शरीरबिषेस्थितहै
एषः =	वह
एव =	ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

× आत्मा = आत्मा
× अस्य = इस आनंद मय कोशका
+ अपि = भी
+ अस्ति = है
अथ = अब
अनु = इसकेपश्चात्
प्रश्नाः = प्रश्न
भवन्ति = उत्पन्न होते हैं कि
अतः = ब्रह्महै अथवा ब्रह्म नहीं है
उत = अगर ब्रह्महै
+ तदा = तो (क्या)
कश्चन = कोई
अविद्वान् = अज्ञपुरुष
अपि = भी
प्रेत्य = देहत्यागकरके
अमुम् = उस
लोकम् = ब्रह्मभाव को
गच्छतिइ = प्राप्तहोताहै (यह बिचार करना योग्यहै)

अहो = अगर पहले कहे हुए के बिपरीत ब्रह्म नहीं है
+ तदा = तौ (क्या)
कश्चन = कोई
विद्वान् = विद्वान्पुरुष
उ = भी
प्रेत्य = देह त्यागकरके
अमुम् = उस
लोकम् = ब्रह्मभावको
समश्नुते = नहीं प्राप्तहोताहै (यहभी विचार करनायोग्यहै)

इस प्रकार शिष्योंकी शंका पर सिद्धान्ती "सत्यं ज्ञानमनंतंब्रह्म" इस पूर्वोक्त महावाक्यको प्रधान रखके आत्माकी सत्यताके निमित्त आगे ग्रन्थ का आरम्भ करते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सः = { वह आत्मा जिससे आकाशआदि पंचमहाभूत उत्पन्न हुये हैं }
इति = इसप्रकार
अकामयत = कामना करताभया कि
+ अहम् = मैं
अप्रजायेय = { अप्रजायेयम् = नाम रूप प्रकट करके }
बहु = बहुत
स्याम् = होऊं

सः = वह आत्मा
तपः = { सृष्टिकी उत्पत्तिकी इच्छा विषे }
अतप्यत = विचार करता भया
सः = वह आत्मा
एवम् = इसप्रकार

तपः = विचार
तप्त्वा = करके
इदम् = इस
सर्वम् = सर्वनामरूपात्मकजगत्को
असृजत = सृजताभया

यत् = जो
किञ्च = कुछ
इदम् = यह दृश्यमान जगत् है
तत् = उसको
सृष्ट्वा = सृजकरके
तत् = उसमें
×स्वयम् = आप
एव = ही
अनु = पश्चात्
प्राविशत् = { चैतन्य कलासे प्रवेश करताभया }

तत् = तिस जगत विषे
प्रविश्य = प्रवेश करके
अनु = फेर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत् = मूर्त्तद्रव्ययाने पृथिवी जल तेजरूप
च = और
त्यत् = अमूर्त्त याने वायु आकाश रूप
च = भी
+स्वयमेव = आपही
अभवत् = होता भया

निरुक्तम् = निकृष्ट याने नीच जाती
च = और
अनिरुक्तम् = ऊंचजाति
च = भी
×स्वयमेव = आपही
अभवत् = होताभया

निलयनम् = आश्रय
च = और
अनिलयनम्=अनाश्रय
च = भी
×स्वयमेव = आपही
×अभवत् = होताभया

विज्ञानम् = चेतन
च = और
अविज्ञानम्=अचेतन
च = भी
+स्वयमेव = आपही
+अभवत् = होताभया

सत्यम् = सत्य
च = और
अनृतम् = असत्य
च = भी
×स्वयमेव = आपही
×अभवत् = होताभया

यत्सत्यात् = जिसकी सत्यतासे
यत् = जो
किञ्च = कुछ
इदम् = यहकार्यरूप जगत् है
तत् = सोभी
सत्यम् = सत्य
अभवत = होता भया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् =	उस सत्य ज्ञानानन्द रूपब्रह्मको	तत्-तत्र =	उस परमार्थ सत्यकी उपासना विषे
सत्यम् =	परमार्थ से सत्य	अपि =	भी
इति =	करके	एषः =	यह
आचक्षते =	कहते हैं (ब्रह्मवेत्तालोक)	श्लोकः =	मंत्र प्रमाण
		भवति =	है

मूलम् ॥

असद्वाइदमग्रआसीत्ततोवैसदजायततदात्मन छंस्वयमकुरुततस्मात्तत्सुकृतमुच्यत इतियद्वैतत्सुकृतम्रसोवैसःरस छंह्येवायंलब्ध्वाऽऽनन्दीभवतिकोह्येवान्यात्कःप्राण्यातण्यात यदेषआकाशआनन्दोनस्यात् एषह्येवानन्दयातियदाह्येवैषएतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभयंप्रतिष्ठाबिन्दते अथसोऽभयंगतोभवतियदाह्येवैषएतस्मिन्नुदरमन्तरंकुरुते अथतस्यभयंभवतितत्त्वमेवभयंविदुषोमन्वानस्य तदप्येषश्लोकोभवति ३१ ॥
इतिसप्तमोऽनुवाकः ॥

पदच्छेदः ॥

असत् वै इदम् अग्रे आसीत् ततः वै सत्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अजायत् तत् आत्मानम् स्वयम् अकुरुत तस्मा त् तत् सुकृतम् उच्यते इति यत् वा एतत् सुकृतम् रसः वैसः रसम् हि एव त्रयम् लब्धा आन्दीभवति कः हि एव अन्यात् कः प्राएयात् यत् एषः आकाश आनन्दः न स्यात् एषः हि एव आनन्दयाति यदा हि एव एषः एतस्मिन् अदृश्ये अनात्म्ये अनिरुक्ते अनिलयने अभ्यामृ प्रतिष्ठाम् विन्दते अथ सः अभयम् गतः भवति-यदा हि एव एषः एतस्मिन् उत अरम् अन्नरम कुरुते अथ तस्य भयम् भवति तत् उ एव भयम् विदुषः अमन्वानस्य तत् अपि एषः श्लोकः भवति ॥ ७ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अग्रे	= उत्पत्तिसे पूर्व
इदम्	= यह जगत्
असत्	= अव्यक्त याने ब्रह्मस्वरूप
वै	= ही
आसीत्	= था
ततः	= उस अव्यक्त ब्रह्मसे
सत्	= नाम रूपात्म-

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
	क यह जगत्
वै	= निश्चयकरके
अजायत	= उत्पन्न होता भया
सत्	= वह एकाकार ब्रह्म
स्वयम्	= आपहीयानेअपनी कामनासे
आत्मानम्	= अपने को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एव = ही
अकुरुत = जगत्‌रूप करताभया

तस्मात् = इसलिये
तत् = वह ब्रह्म
सुकृतम् = सुकृत
उच्यते = { कहाजाताहै क्योंकि कारण से कार्य्य को प्राप्त होकर भी विकारको नहीं प्राप्त हुआहै }

यत् = चूंकि
वा = निश्चयकरके
एतत् = यह ब्रह्म
सुकृतम् = कारणात्मक सत्यरूपहै
वै = इसलिये
सः = वह
रसः = साररूप है
हि = क्योंकि
अयम् = यहजीवात्मा
रसम् = रसरूप ब्रह्म को

लब्ध्वा = पा करके
एव = निःसंदेह
आनन्दी भवति = { पूर्णानन्द होताहै }

यत् = यदि=अगर
आकाशे = { हृदयाकाश बुद्धिरूपी गुहा विषे स्थित }
एषः = यह
आनन्दः = { परमानन्द स्वरूप परमात्मा }
नस्यात् = नहो
+ तदा = तो
+ लोके = लोक विषे
हि = निश्चय करके
कःएव = कौन
अन्यात् = { अपानादि क्रियाकेकरनेमेंसमर्थ होवै }
× च = और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कः = कौन

प्राण्यात् = प्राणादि क्रिया के करने में समर्थ होवै याने बिना आत्मशक्ति के अपान और प्राणादि किसी अपने कार्य के करने में समर्थ नहीं होसक्ते हैं

तस्मात् = इसलिये

हि = निश्चय करके

एषः = यह परमात्मा

एव = ही

× लोकम् = लोक को

आनन्दयति = आनन्दित करता है याने विषय सुख को प्राप्त करता है

हि = क्योंकि

अदृश्ये = इन्द्रियों का अगोचर

अनात्म्ये = शरीरशून्य

अनिरुक्ते = विशेषशून्य

× च = और

अनिलयने = आधारशून्य ऐसा जो ब्रह्म है

एतस्मिन् = उस विषे

यदाएषः = जब यह उपासक

अभयम् = भय रहित याने द्वैत भावशून्य

प्रतिष्ठाम् = स्थिति को

विन्दते = प्राप्त होता है

अथ = तब

सः = वह उपासक

अभयम् = अभयपद को

गतः = प्राप्त

भवति = होता है

हि = ज्ञात रहै कि

यदा = जब

एषः = यह विद्वान्

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एतस्मिन् = उसब्रह्मविषे
अरम् = कुछ
अपि = भी
अन्तरम् = भेद
कुरुते = रखताहै
अथ = तब
तस्य = उसको
भयम् = भय
एव = अवश्य
भवति = होताहै
अमन्वानस्य = अद्वैत न माननेवाले
विदुषः = विद्वान्को
एव = भी
तत् = वहब्रह्म
भयम् = भयका हेतु
तु = होताहै
तत्-तत्र = ब्रह्मके उसभयके हेतुविषे
अपि = भी
एषः = यह
श्लोकः = मंत्रप्रमाण
भवति = है

मूलम् ॥

भीषाऽस्माद्वात्तःपवते भीषोदेतिसूर्य्यः भीषाऽस्मादग्निश्चेन्द्रश्चमृत्युर्धावतिपञ्चमइति सैषाऽऽनन्दस्यमीमांसाभवति युवास्यात्साधुयुवाऽध्यायिकः आशिष्टोद्दढिष्टोबलिष्टः तस्येयंपृथिवीसर्वा वित्तस्यपूर्णास्यात् सएकोमानुषआनन्दः सएकोमनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः सएकोदेवगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंदेवगन्धर्वाणामानन्दाः सएको देवगन्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

णामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्यतेयेशतंदेव
गन्धर्वाणामानन्दाः सएकःपितॄणांचिरलोकलोका
नामानन्दःश्रोत्रियस्यचाकामहतस्यतेयेशतं पितॄ
णांचिरलोकलोकानामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकाम
हतस्य तेयेशतंपितॄणां चिरलोकलोकानामानन्दाः
सएकअजानजानांदेवानामानन्दः श्रोत्रियस्यचा
कामहतस्यते येशतमजानजानांदेवानामानन्दाः
सः एकःकर्म्मदेवानामानन्दः येकर्मणादेवानपि
यन्ति श्रोत्रियस्यचाकामहतस्यतेयेशतंकर्म्मदेवा
नामानन्दाः सएकोदेवानामानन्दः श्रोत्रियस्य
चाकामहतस्यतेयेशतंदेवानामानन्दाः सएकइन्द्र
स्यानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्यतेयेशतमिन्द्र
स्यानन्दाः सएकोबृहस्पतेरानन्दः श्रोत्रियस्यचा
कामहतस्यतेयेशतंबृहस्पतेरानन्दाः सएकः प्रजा
पतेरानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्यतेयेशतंप्रजा
पतेरानन्दः सएकोब्राह्मणआनन्दः श्रोत्रियस्यचा
कामहतस्यसयश्चायंपुरुषेयश्चासावादित्ये सएकः
सयएवंवित् अस्माल्लोकात्प्रेत्यएतमन्नमयमात्मा
नमुपसंक्रामति एतंप्राणमयमात्मानमुपसंक्रामति
एतंमनोमयमात्मानमुपसंक्रामति एतंविज्ञानमय
मात्मानमुपसंक्रामति एतमानन्दमयमात्मानमु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पसंक्रामतितदप्येषश्लोकोभवति ३२ इत्यष्टमोऽनुवाकः ८ ॥

पदच्छेदः ॥

भीषा अस्मात् वातः पवते भीषा उदेति सूर्यः भीषा अस्मात् अग्निः च इन्द्रः च मृत्युः धावति पञ्चमः इति सा एषा आनन्दस्य मीमांसा भवति युवा स्यात् साधुयुवाध्यापकः आशिष्टः दृढिष्ठः बलिष्ठः तस्य इयम् पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात् सः एकः मानुषः आनन्दः ते ये शतम् मानुषाः आनन्दाः सः एकः मनुष्यगन्धर्वाणाम् आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ते ये शतम् मनुष्यगन्धर्वाणाम् आनन्दाः सः एकः देवगन्धर्वाणाम् आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ते ये शतम् देवगन्धर्वाणाम् आनन्दाः सः एकः पितॄणाम् चिरलोकलोकानाम् आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ते ये शतम् पितॄणाम् चिरलोकलोकानाम् आनन्दाः सः एकः अजानजानाम् देवानाम् आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ते ये शतम् अजानजानाम् देवानाम् आनन्दाः सः एकः कर्म्मदेवानाम् आनन्दः ये कर्म्मणा देवान् अपि यन्ति श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ते ये शतम् कर्म्मदेवानाम् आनन्दाः सः एकः इन्द्रस्य आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ते ये शतम् इन्द्रस्य आनन्दाः सः एकः बृहस्पतेः आनन्दः श्रोत्रियस्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च अकामहतस्य ते ये शतम् बृहस्पतेः आनन्दाः सः एकः प्रजापतेः आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य ये ते शतम् प्रजापतेः आनन्दाः सः एकः ब्रह्मणः आनन्दः श्रोत्रियस्य च अकामहतस्य सः यः च अयम् पुरुषे यः च असौ आदित्ये सः एकः सः यः एवंवित् अस्मात् लोकात् प्रेत्य एतम् अन्नमयम् आत्मानम् उपसंक्रामति एतम् प्राणमयम् आत्मानम् उपसंक्रामति एतम् मनोमयम् आत्मानम् उपसंक्रामति एतम् विज्ञानमयम् आत्मानम् उपसंक्रामति एतम् आनन्दमयम् आत्मानम् उपसंक्रामति तत् अपि एषः श्लोकः भवति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अस्मात् अस्य	उस ब्रह्मके
भीषा	भिया=भयसे
वायुः	वायु
पवते	चलता है
अस्मात्	उसके
भीषा	भयसे
सूर्य्यः	सूर्य
उदेति	उदय होताहै

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	और
अस्मात्	उसके
भीषा	भयसे
अग्निः	अग्निदेव
धावति	दहनकर्मबिषे प्रवृत्त होता है
च	और
अस्मात्	उसके
भीषा	भयसे
इन्द्रः	इन्द्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धावति = { पालनकर्मबिषे प्रवृत्त होताहै

इति = इसीप्रकार
अस्मात् = उसके
भीषा = भयसे
पञ्चमः = पांचवां
मृत्युः = मृत्यु
धावति = { मारणकर्म बिषे प्रवृत्त होताहै

सा = वह
एषा = यह
मीमांसा = विचार
आनंदस्य = आनन्दका
+ अग्रे = आगे
भवति = है

+ यः = जो
+अस्मिन् लोके = { इस मनुष्य लोकबिषे
साधुयुवा = अच्छाजवान
स्यात् = होवै
+ च = और
युवाध्यायिकः = { यौवन अवस्थाबिषेही विद्यासम्पन्नहोवै

+ च = और
आशिष्टः = { आज्ञाकरके युक्तहोयाने साहबअख्त्यारहो
+ च = और
द्रढिष्ठः = { अत्यन्तदृढ़याने शूरबीर हो
+ च = और
बलिष्ठः = { अतिबलवानूहो
वित्तस्य = वित्तकरके
पूर्णा = { पूरण याने भरपूरहो
+च = और
इयम् = यह
सर्वा = संपूर्ण
पृथिवी = पृथिवी
तस्य = { उसके आधीन
स्यात् = हो
+तस्यचक्रवर्त्तेराज्ञः = ऐसेचक्रवर्त्तीराजाका
यः = जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनन्दः = आनन्दहै
सः = सो
मानुषः = मनुष्यसम्बन्धी
एकः = एकअंश
आनन्दः = आनन्दहै

च = और ऐसे
ते = वे
ये = जो
शतम् = सौगुना
मानुषाः = मनुष्यसंबंधी
आनन्दाः = आनन्दहैं
सः = सो
मनुष्यगन्धर्वाणाम् = मानुषभाव से कर्मानुसार जो गन्धर्व भयेहैं उनका
एकः = एक अंश
आनन्दः = आनन्दहै

च = और
अकामहतस्य = निष्काम
श्रोत्रियस्य = विद्वान्का
च = भी
सआनन्दः = वही आनन्द है

च = और ऐसे
ते = वे
ये = जो
शतम् = सौगुना
मनुष्यगन्धर्वाणाम् = मनुष्य गन्धर्वोंके
आनन्दाः = आनन्दहैं
सः = सो
देवगन्धर्वाणाम् = देवयोनि गन्धर्वोंका
एकः = एक अंश
आनन्दः = आनन्दहै

+ च = और
सएवानन्दः = वही आनन्द
अकामहतस्य = निष्काम
श्रोत्रियस्य = विद्वान्का
च = भी
+ अस्ति = है

च = और ऐसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते = वे
ये = जो
शतम् = सौगुना
देवगन्धर्वाणाम् = देवयोनि गन्धर्वों के
आनन्दाः = आनन्दहैं
सः = सो
चिरलोकलोकानाम् = चिरकाल स्थायि हैं लोकजिनके ऐसे
पितॄणाम् = पितरोंका
एकः = एकअंश
आनन्दः = आनन्दहै

अकामहतस्य = निष्काम
श्रोत्रियस्य = विद्वान्‌का
च = भी
तद्वदानंदः = उसीके समान आनन्दहै
चिरलोकलोकानाम् = चिरकाल स्थायि हैं लोकजिनके ऐसे

पितॄणाम् = पितरों के
ते = वे
ये = जो
शतम् = सौगुना
आनन्दाः = आनन्दहैं
सः = सो
अजानजानाम् = स्मार्तकर्मद्वारा जोदेवयोनिकोप्राप्त हुये हैं ऐसे
देवानाम् = देवताओंका
एकः = एक अंश
आनन्दः = आनन्दहै
+ सःएव = सोई आनन्द
अकामहतस्य = निष्काम
श्रोत्रियस्य = विद्वान्‌का
च = भी
+ अस्ति = है
अजानजानाम् = स्मार्तकर्म्मद्वाराजोदेवयोनिकोप्राप्त हुएहैं ऐसे
देवानाम् = देवताओं के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते = वे
ये = जो
शतम् = सौगुना
आनन्दाः = आनन्द हैं
सः = सो
एकः = एक अंश
आनन्दः = आनन्द है
तेषाम् = उन
कर्मदेवानाम् = कर्म देवोंका
ये = जो
कर्मणा = अग्निहोत्रादिश्रौतकर्म करके
देवान् = देवभावको
अपियंति = प्राप्त होते हैं
+च = और
+तेषाम्ये आनन्दाः = उनको जोआनन्द है
+सःएव = वहीआनन्द
अकामहतस्य = निष्काम
श्रोत्रियस्य=विद्वान्का
च = भी

अस्ति = है

कर्मदेवानाम् = कर्म देवोंके
ते = वे ऐसे
ये = जो
शतम् = सौगुना
आनन्दाः = आनन्द हैं
सः = सो
देवानाम्= वसुआदि देवताओंका
एकः = एकअंश
आनन्दः = आनन्द है
+ सःएव = वही आनन्द
अकामहतस्य=निष्काम
श्रोत्रियस्य = विद्वान्का
च = भी
+ अस्ति = है
देवानाम्= वसुआदि देवताओं के
ते = वे
ये = जो
शतम् = सौगुना
आनन्दाः = आनन्द हैं
सः = सो
इन्द्रस्य = इन्द्रका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकः = एकअंश
आनन्दः = आनन्द है
+ सःएव = सोई आनन्द
अकाम-हतस्य = निष्काम
श्रोत्रियस्य = विद्वान् का
च = भी
+ अस्ति = है

इन्द्रस्य = इन्द्रके
ते = वे
ये = जो
शतम् = सौगुना
आनन्दः = आनन्द हैं
सः = सो
बृहस्पतेः = बृहस्पति देवगुरुका
एकः = एक अंश
आनन्दः = आनन्द है
+ सःएव = सोईआनन्द
अकाम-हतस्य = निष्काम
श्रोत्रियस्य = विद्वान्का
च = भी
+ अस्ति = है

बृहस्पतेः = बृहस्पति देवगुरुके
ते = वे
ये = जो
शतम् = सौगुना
आनन्दः = आनन्द हैं
सः = वही
प्रजापतेः = ब्रह्माका
एकः = एकअंश
आनन्दः = आनन्दहै
+ सःएव = सोई आनंद
अकाम-हतस्य = निष्काम
श्रोत्रियस्य = विद्वान्का
च = भी
+ अस्ति = है

प्रजापतेः = ब्रह्माके
ते = वे
ये = जो
शतम् = सौगुना
आनन्दाः = आनन्द हैं
सः = वही
ब्रह्मणः = ब्रह्मका
एकः = एकअंश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनन्दः = आनन्दहै
+ सःएव = सोईआनंद
अकाम-हतस्य = निष्काम
श्रोत्रियस्य = विद्वान्का
च = भी
अस्ति = है

च = और
यः = जो
सः = वह
अयम् = यहआनन्द
पुरुषे = पुरुष बिषे है
च = और
यः = जो
आदित्ये = सूर्य्य बिषे
असौ = यहआनंदहै

सः = सो
एकः = एक अंश
आनन्दः = आनन्द है

यः = जो
एवंवित् = इस प्रकार जाननेवालाहै
सः = वह

अस्मात् = इस
लोकात् = लोकसे
प्रेत्य = मरकर
एतम् = पूर्वोक्त
अन्नमयम् = अन्नमय
आत्मानम् = शरीरको
उपसंक्रामति = उल्लंघनकरताहै
एतम् = पूर्वोक्त
प्राणमयम् = प्राणमय
आत्मानम् = शरीर को
उपसंक्रामति = उल्लंघनकरताहै
एतम् = पूर्वोक्त
मनोमयम् = मनोमय
आत्मानम् = शरीर को
उपसंक्रामति = उल्लंघनकरताहै
एतम् = पूर्वोक्त
विज्ञानमयम् = विज्ञानमय
आत्मानम् = शरीर को
उपसंक्रामति = उल्लंघनकरताहै
एतम् = पूर्वोक्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनन्दमयम् = आनन्दमय
आत्मानम् = शरीरको
उपसंक्रामति = उल्लंघनकरता है यानेपंचकोशातीत स्वयंब्रह्म हो जाता है

तत्=तत्र = इस बिषे
अपि = भी
एषः = यह
श्लोकः = मन्त्रप्रमाण
भवति = है

मूलम् ॥

यतोवाचोनिवर्तंते अप्राप्यमनसासह आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चनेति एतꣳहवाव नतपति किमहꣳसाधुनाकरवम् किमहंपापमकरवमिति सयएवंविद्वानेते आत्मानꣳस्पृणुतेउभेह्येवैषएते आत्मानꣳस्पृणुते यएवंवेद इत्युपनिषत्॥ ३३ ॥ इतिनवमोऽनुवाकः ९ ॥

पदच्छेदः ॥

यतः वाचः निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसा सह आनन्दम् ब्रह्मणः विद्वान् न बिभेति कुतश्चन इति एतम् ह वाव न तपति किम् अहम् साधु न अकरवम् किम् अहम् पापम् अकरवम् इति सः यः एवम् विद्वान् एते आत्मानम् स्पृणुते उभेहि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एव एषः एते आत्मानम् स्पृणुते यः एवम् वेद इति उपनिषत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वाचः	वाणीरूपवेद
मनसासह	मनद्वारा
+ यम्	जिसको
अप्राप्य	प्राप्त न होकर
यतः	जिससे
निवर्त्तन्ते	लौटआते हैं याने प्रत्यक्ष निरूपण नहींकरसक्ते हैं
तम्	उस
ब्रह्मणः	ब्रह्मके
आनन्दम्	आनन्द का
विद्वान्	जाननेवाला
कुतश्चन	जन्ममरण भय आदि से कभी
न	नहीं
बिभेति	डरताहै
इति	पूर्वोक्त यह बार्ता सत्यहै

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
किम्	हा अफसोस है कि
अहम्	मैं
साधु	सत्कर्म को
न	नहीं
अकरवम्	करताभया
च	और
किम्	हा अफसोस है कि
अहम्	मैं
पापम्	पापकर्मको
अकरवम्	करताभया
इति	इसप्रकारके
एवम्	ऐसे
तापः	पश्चात्ताप को
यः	जो
विद्वान्	जाननेवालाहै
सः	वह
एते	पुण्य पाप दोनोंकर्मोंको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मानम् = परमात्मरूप
स्पृणुते = देखताहै
हि = क्योंकि
एषः = यह विद्वान्
इमे = इन
उभे = दोनोंको याने पुण्य पाप कर्मों को
आत्मानम् = आत्मरूप
एव = ही
स्पृणुते = देखताहै
यः = जो
एवम् = उक्तप्रकार अखण्ड अद्वैतब्रह्म को
वेद = जानता है
सस्वयम् जरामृत्यु रहितो ब्रह्मैवभवति = वहस्वयंपापपुण्यजरामृत्युरहित अखंडानंद पूर्णब्रह्म होताहै
+एवंप्रकारं व्याख्यानम् = इसप्रकारका व्याख्यान
उपनिषत् = ब्रह्मविद्या
इति = करके
उक्ता = कहागयाहै

इति ब्रह्मानंदवल्ली समाप्ता ॥

अथ भृगुवल्लीप्रारभ्यते ॥

मूलम् ॥

हरिः ॐ ॥ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्य्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु माविद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+च = और
इति = ऐसा
+उवाच = कहताभयाकि
भगवः = भगवन् = हे भगवन्
ब्रह्म = ब्रह्मको
अधीहि = अध्यापय=बतावो
+सः = वह वरुण
तस्मै = उस भृगुनामक पुत्र से
एतत् = यह
प्रोवाच = कहताभयाकि
अन्नम् = अन्नको याने अन्नमयशरीरको
प्राणम् = प्राणको
चक्षुः = नेत्रको
श्रोत्रम् = कर्णको
मनः = मनको
वाचम् = वाणीको
इति = ब्रह्मकी प्राप्तिकाद्वारजानतू
+पुनः = फिर

तमह = उससे
उवाच = कहताभया कि
वै = निश्चयकरके
यतः = जिससे
इमानि = ब्रह्मादि तृण पर्यंत
भूतानि = सर्वभूत
जायन्ते = उत्पन्न होतेहैं
+ च = और
जातानि = उत्पन्न भये
जीवन्ति = प्राणको धारण करते हैं और बढ़तेहैं
च = और
+विनाशकाले = विनाशकाल बिषे
यत् = जिसप्रति
प्रयन्ति = प्रवेश करते हैं
+च = और
अभिसंविशन्ति = तदात्मभावको प्राप्त होतेहैं याने एकरूप होजाते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतियत् = ऐसा जो ब्रह्म है
तत् = उस
ब्रह्म = ब्रह्मको
+त्वम् = तू हे सौम्य
विजिज्ञासस्व = विशेष करके जानने की इच्छाकर
+इतिश्रुत्वा = ऐसा सुनकर
सः = वह भृगु
तपः = मन और इन्द्रियोंकी समाधानताको
अतप्यत = एकाग्र करके विचारताभया
सः = वह भृगु
तपः = विचारको
तप्त्वा = भलीभांति विचार करके

नोट—इसका सम्बन्ध आगेवाले अनुवाकके साथ है ॥

मूलम् ॥

अन्नंब्रह्मेति व्यजानात् अन्नाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते अन्नेन जातानि जीवन्ति अन्नं प्रयन्त्यभि संविशन्तीति तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मेति तꣳहोवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपो ब्रह्मेति स तपोऽतप्यत सतपस्तप्त्वा । २ । ३५ । इति द्वितीयो अनुवाकः ॥ २ ॥

पदच्छेदः ॥

अन्नम् ब्रह्म इति व्यजानात् अन्नात् हि एव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

सह नौ अवतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यम् करवावहै तेजस्विनौ अधीतम् अस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अन्वयः — पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

सः = वह ईश्वर
नौ = हम दोनोंको यानी गुरु और शिष्यको
सह = साथ
+एव = ही
अवतु = रक्षाकरै
नौ = हम दोनोंको
सह = साथ
+एव = ही
भुनक्तु = भोगप्राप्तकरै
+आवाम् = हम दोनों
सह = साथ
एव = ही
वीर्यम् = विद्यादान और विद्या ग्रहण साम-र्थ्यको

अन्वयः — पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

करवावहै = प्राप्तहोवैं
नौ = हम दोनोंका
अधीतम् = पढाहुआ
तेजस्वि = अर्थ ज्ञान योग्यहो यानी सफल
अस्तु = होवै
+आवाम् = हमदोनों
माविद्विषावहै = पठन पाठनमें प्रमादरूप वि-द्वेषको न प्राप्त होवैं
ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः = हमारे ताप-त्रयोंकीशान्ति होवै ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

भृगुर्वै वारुणिः वरुणंपितरमुपससार अधीहि भगवोब्रह्मेति तस्मा एतत्प्रोवाच अन्नं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं मनोवाचमिति तछंहोवाच यतोवा इमानि भूतानि जायन्ते येनजातानिजीवन्ति यत्प्रयन्त्य भिसंविशन्तीति तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्मेति सतपो ऽतप्यत सतपस्तप्त्वा ॥ १ ॥ इति प्रथमोऽनुवाकः १॥

पदच्छेदः ॥

भृगुः वै वारुणिः वरुणं पितरम् उपससार अधीहि भगवः ब्रह्म इति तस्मै एतत् प्रोवाच अन्नम् प्राणम् चक्षुः श्रोत्रम् मनः वाचम् इति तम् ह उवाच यतः वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति तत् विजिज्ञासस्व तत् ब्रह्म इति तपः अ- तप्यत सः तपः तप्त्वा ॥ १ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वै	प्रसिद्ध है कि
वारुणिः	वरुणका पुत्र
भृगुः	भृगु
ब्रह्मजिज्ञासुर्भूत्वा	ब्रह्मजिज्ञासु होके

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ स्वं	अपने
पितरम्	पिता
वरुणम्	वरुण के
उपससार	समीप जाता भया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतप्यत = विचार करता भया
सः = वह भृगु

तपः = तपको
तप्त्वा = विचार करके

नोट–इसका सम्बन्ध अगले अनुवाक से है ॥

मूलम्

प्राणोब्रह्मेति व्यजानात् प्राणाद्ध्येवखल्विमानि भूतानि जायन्ते प्राणेनजातानिजीवन्ति प्राणं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार अधीहिभगवोब्रह्मेतितꣳहोवाच तपसाब्रह्मविजिज्ञासस्वतपो ब्रह्मेतिसतपोऽतप्यतसतपस्तप्त्वा ३।३६ ॥ इति तृतीयोऽनुवाकः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

प्राणः ब्रह्म इति व्यजानात् प्राणात् हि एव खलु इमानि भूतानि जायन्ते प्राणेन जातानि जीवन्ति प्राणम् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति तत् विज्ञाय पुनः एव वरुणम् पितरम् उपससार अधीहि भगवः ब्रह्म इति तम् ह उवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपः ब्रह्म इति सः तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा ३ ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

इति = ऐसा

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

व्यजानात् = जानताभया कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

भृगुर्वै वारुणिः वरुणंपितरमुपससार अधीहि भगवोब्रह्मेति तस्मा एतत्प्रोवाच अन्नं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं मनोवाचमिति तछंहोवाच यतोवा इमानि भूतानि जायन्ते येनजातानिजीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्मेति सतपोऽतप्यत सतपस्तप्त्वा ॥ १ ॥ इति प्रथमोऽनुवाकः १॥

पदच्छेदः ॥

भृगुः वै वारुणिः वरुणं पितरम् उपससार अधीहि भगवः ब्रह्म इति तस्मै एतत् प्रोवाच अन्नम् प्राणम् चक्षुः श्रोत्रम् मनः वाचम् इति तम् ह उवाच यतः वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति तत् विजिज्ञासस्व तत् ब्रह्म इति तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा ॥ १ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वै	प्रसिद्ध है कि
वारुणिः	वरुणाका पुत्र
भृगुः	भृगु
ब्रह्मजिज्ञासुर्भूत्वा	ब्रह्मजिज्ञासु होके
+ स्वं	अपने
पितरम्	पिता
वरुणम्	वरुण के
उपससार	समीप जाता भया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतप्यत = विचार करता भया
सः = वहभृगु

तपः = तपको
तप्त्वा = विचार करके

नोट—इसका सम्बन्ध अगले अनुवाक से है ॥

मूलम्

प्राणोब्रह्मेति व्यजानात् प्राणाद्ध्येवखल्विमानि भूतानि जायन्ते प्राणेनजातानिजीवन्ति प्राणं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार अधीहिभगवोब्रह्मेतितꣳहोवाच तपसाब्रह्मविजिज्ञासस्वतपो ब्रह्मेतिसतपोऽतप्यतसतपस्तप्त्वा ३।३६ ॥ इति तृतीयोऽनुवाकः ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

प्राणः ब्रह्म इति व्यजानात् प्राणात् हि एव खलु इमानि भूतानि जायन्ते प्राणेन जातानि जीवन्ति प्राणम् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति तत् विज्ञाय पुनः एव वरुणम् पितरम् उपससार अधीहि भगवः ब्रह्म इति तम् ह उवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपः ब्रह्म इति सः तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा ३ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इति	= ऐसा

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
व्यजानात्	=जानताभया कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राणः = प्राणही
ब्रह्म = ब्रह्म है
हि = क्योंकि
खलु = निश्चय करके
प्राणात् = प्राणसे
एव = ही
इमानि = ये
भूतानि = सर्वभूत
जायन्ते = उत्पन्न होते हैं
\+ च = और
जातानि = उत्पन्नभये
प्राणेन = प्राणकरके
\+ एव = ही
जीवन्ति = जीते हैं और बढते हैं
\+ च = और
\+ अन्ते = विनाशकाल बिषे
प्राणम् = प्राणप्रति
प्रयन्ति = प्रवेशकरतेहैं
\+ च = और
अभिसंविशन्ति = तद्रूप होजाते हैं

इति = ऐसा तीन लक्षणयुक्त पिताकरके बतायेहुये
तत् = उस प्राणरूप ब्रह्मको
\+ सः = वह भृगु
विज्ञाय = जानकरके
पुनरेव = फिर संशय युक्तहो
\+ स्वं = अपने
पितरम् = पिता
वरुणम् = वरुणके
उपससार = समीपजाता भया
\+ च = और
\+ उवाच = कहता भया कि
भगवः = भगवन् = हे भगवन्
ब्रह्म = ब्रह्मको
\+ मह्यम् = मेरेअर्थ
अधीहि = अध्यापय=कहिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खलु इमानि भूतानि जायन्ते अन्नेन जातानि जीवन्ति अन्नम् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति तत् विज्ञाय पुनः एव वरुणम् पितरम् उपससार अधीहि भगवः ब्रह्म इति तम् ह उवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपः ब्रह्म इति सः तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इति	ऐसा
व्यजानात्	जानता भया कि
अन्नम्	अन्नही
ब्रह्म	ब्रह्महै
हि	क्योंकि
खलु	निश्चयकरके
इमानि	ब्रह्मासे तृण पर्यन्त
भूतानि	सर्वभूत
अन्नात्	अन्नसे
एव	ही
जायन्ते	उत्पन्न होतेहैं
च	और
जातानि	उत्पन्नहुये
अन्नेन	अन्नकरके
एव	ही

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
जीवन्ति	जीते हैं और बढ़ते हैं
च	और
+विनाशकाले	विनाशकाल बिषे
अन्नम्	अन्नप्रति
प्रयन्ति	प्रवेश करते हैं
+ च	और
अभिसंविशन्ति	तादात्म्य भावको प्राप्त होते हैं याने लीन होते हैं
इति	इसलिये पिताकेबतायेहुये यहतीनलक्षणयुक्त ऐसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् = उस अन्नको
ब्रह्म = ब्रह्म
विज्ञाय = जानके
सः = वह भृगु
पुनः = फिर
एव = भीसंशययुक्त हो
पितरम् = पिता
वरुणम् = वरुणके
उपससार = समीप जाता-भया
च = और
इति = इसप्रकार
+उवाच = कहता भया कि
भगवः = भगवन् = हे भगवन्
ब्रह्म = ब्रह्मको
+मह्यम् = मेरे प्रति
अधीहि = अध्यापय = कहिये
+तदा = तब
सः = वह वरुण
तमह = उसभृगुप्रति
प्रोवाच = कहताभयाकि
सौम्य = हे सौम्य
तपः = इन्द्रियों की बाह्यवृत्तिको अन्तर्मुख करना और मनको एकाग्रकरना
एव = ही
ब्रह्म = ब्रह्मप्राप्तिका द्वारहै
+तस्मात् = इसलिये
+त्वम् = तू
तपसा = इन्द्रिय और मनके समाधानरूप तप करके
ब्रह्म = ब्रह्मको
विजिज्ञासस्व = भलीभांति जाननेकी इच्छाकर
+इतिश्रुत्वा = ऐसा सुनकर
सः = वह भृगु
तपः = तपको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ तदा = तब
+ सः = वह वरुण
तमह = उस भृगुप्रति
उवाच = कहताभयाकि
तपः = विचार
इति = ही
ब्रह्म = ब्रह्मप्राप्तिका द्वारहै
त्वम् = तू
तपसा = सूक्ष्मविचार करके
एव = अवश्य
ब्रह्म = ब्रह्मको
विजिज्ञासस्व = भलीप्रकार जानने की इच्छाकर
+ एवंश्रुत्वा = ऐसा सुन करके
सः = वह भृगु
तपः = विचारको
अतप्यत = विचारकरता भया
सः = वह
तपः = विचारको
तप्त्वा = विचार करके

नोट॥ इसका सम्बन्ध अगलेअनुवाकसे है॥

मूलम्॥

मनोब्रह्मेति व्यजानात् मनसोह्येवखल्विमानि भूतानि जायन्ते मनसा जातानि जीवन्ति मनः प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवोब्रह्मेति तꣳहोवाच तपसाब्रह्मविजिज्ञासस्व तपो ब्रह्मेति सतपोऽतप्यत सतपस्तप्त्वा॥ ४। ३७ इति चतुर्थोऽनुवाकः ४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः॥

मनः ब्रह्म इति व्यजानात् मनसः हि एव खलु इमानि भूतानि जायन्ते मनसा जातानि जीवन्ति मनः प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति तत् विज्ञाय पुनः एव वरुणं पितरम् उपससार अधीहि भगवः ब्रह्म इति तम् ह उवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपः ब्रह्म इति सः तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा ४॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इति	ऐसा
व्यजानात्	जानता भया कि
मनः	मनही
ब्रह्म	ब्रह्म है
हि	क्योंकि
खलु	निश्चयकरके
मनसः	मनसे
एव	ही
इमानि	सर्वभूत
जायन्ते	उत्पन्नहोते हैं
च	और
जातानि	उत्पन्न भये

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
मनसा	मनकरके
एव	ही
जीवन्ति	जीते हैं और बढ़ते हैं
+च	और
+अन्ते	विनाशकाल बिषे
मनः	मनप्रति
प्रयन्ति	प्रवेश करतेहैं
+च	और
अभिसंविशन्ति	तन्मय होजाते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति = ऐसातीनलक्षण युक्तपिताकरके उपदेश किये हुये
तत् = उस मनोमय ब्रह्मको
+सः = वह भृगु
विज्ञाय = जान करके
पुनरेव = फिर भी संशय युक्तहो
+स्वं = अपने
पितरम् = पिता
वरुणम् = वरुणके
उपससार = समीप जाता भया
+च = और
उवाच = कहताभयाकि
भगवः = भगवन् = हे भगवन्
ब्रह्म = ब्रह्मको
+मह्यम् = मेरे अर्थ
अधीहि = अध्यापय = कहिये

+तदा = तब
+सः = वह वरुण
तमह = उसभृगुकेप्रति
इति = ऐसा
उवाच = कहताभयाकि
+हे सौम्य = हे सौम्य
तपः = विचार
इति = ही
ब्रह्म = ब्रह्मकी प्राप्तिका द्वारहै
+त्वम् = तू
तपसा = विचार करके
एव = अवश्य
ब्रह्म = ब्रह्मको
विजिज्ञासस्व = भलेप्रकार जानने की इच्छाकर
+इतिश्रुत्वा = ऐसा सुनकर
सः = वह भृगु
तपः = विचारको
अतप्यत = विचारकरता भया
सः = वह भृगु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तपः = विचारको	तप्त्वा = विचारकरके

नोट ॥ इसका सम्बन्ध अगले अनुवाकसे है ॥

मूलम् ॥

विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात् विज्ञानाद्ध्येव ख ल्विमानि भूतानि जायन्ते विज्ञानेन जातानि जीवन्ति विज्ञानं प्रयन्त्यभि संविशन्तीति तद्वि ज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मेति तꣳहोवाच तपसा ब्रह्मविजिज्ञासस्व तपो ब्रह्मेति सतपोऽतप्यत सतपस्तप्त्वा । ५ । ३८ । इति पंचमोऽनुवाकः ॥ ५ ॥

पदच्छेदः ॥

विज्ञानम् ब्रह्म इति व्यजानात् विज्ञानात् हि एव खलु इमानि भूतानि जायन्ते विज्ञानेन जा- तानि जीवन्ति विज्ञानम् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति तत् विज्ञाय पुनः एव वरुणम् पितरम् उ- पससार अधीहि भगवः ब्रह्म इति तम् ह उवाच तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तपः ब्रह्म इति सः तपः अतप्यत सः तपः तप्त्वा ॥ इति पञ्चमोऽनुवाकः ५ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इति = ऐसा		व्यजानात्=जानताभया कि	

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विज्ञानम् = विज्ञानही
ब्रह्म = ब्रह्महै
हि = क्योंकि
खलु = निश्चयकरके
विज्ञानात् = विज्ञानसे
+ एव = ही
इमानि = ये
भूतानि = सर्वभूत
जायन्ते = उत्पन्न होते हैं
+ च = और
जातानि = उत्पन्नहुये
विज्ञानेन = विज्ञानकरके
+ एव = ही
जीवन्ति = जीते हैं और बढते हैं
+ च = और
+ अन्ते = विनाशकाल बिषे
विज्ञानम् = विज्ञानप्रति
प्रयन्ति = प्रवेशकरते हैं
+ च = और
अभिसंविशन्ति = तन्मय होजाते हैं

इति = ऐसे तीनलक्षण करके युक्त पिताके उपदेश कियेहुये
तत् = उस विज्ञानरूप ब्रह्मको
+ सः = वह भृगु
विज्ञाय = जान करके
पुनरेव = फिर भी संशय युक्तहो
+ स्वं = अपने
पितरम् = पिता
वरुणम् = वरुण के
उपससार = समीपजाता भया
+ च = और
+ उवाच = कहताभयाकि
भगवः = भगवन्=हे भगवन्
ब्रह्म = ब्रह्मको
+ मह्यम् = मेरे अर्थ
अधीहि = अध्यापय=कहिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+ तदा = तब
+ सः = वह वरुण
तमूह = उसभृगुप्रति
इति = ऐसा
उवाच = कहताभया कि
+ हे सौम्य = हे सौम्य
तपः = विचार
इति = ही
ब्रह्म = ब्रह्मकीप्राप्ति काद्वारहै
+ त्वम् = तू
तपसा = विचार कर के

एव = ही
ब्रह्म = ब्रह्मको
विजिज्ञासस्व = भलीप्रकार जानने की इच्छाकर
+ एवंश्रुत्वा = ऐसासुनकर
सः = वहभृगु
तपः = विचारको
अतप्यत = विचारकरता भया
सः = वह भृगु
तपः = विचार को
तप्त्वा = विचार करके

नोट ॥ इसका सम्बन्ध अगले अनुवाक से है ॥

मूलम् ॥

आनन्दोब्रह्मेतिव्यजानात् आनन्दाद्ध्येवख ल्विमानिभूतानिजायन्ते आनन्देन जातानि जीव न्ति आनन्दंप्रयन्त्यभिसंविशन्तीतिसैषाभार्गवी वारुणी विद्यापरमेव्योमन्प्रतिष्ठिता सयएवंवेद प्रतितिष्ठति अन्नवानन्नादोभवतिमहान् भवति प्र जयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ६ । ३६ ॥
इति षष्ठोऽनुवाकः ॥ ६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

आनन्दः ब्रह्म इति व्यजानात् आनन्दात् हि एव खलु इमानि भूतानि जायन्ते आनन्देन जातानि जीवन्ति आनन्दम् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति इति सा एषा भार्गवी वारुणी विद्या परमे व्योमन् प्रतिष्ठिता सः यः एवम् वेद प्रतितिष्ठति सः यः एवम् वेद प्रतितिष्ठति अन्नवान् अन्नादः भवति महान् भवति प्रजया पशुभिः ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ॥ ६ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इति	= ऐसा
व्यजानात्	= जानता भया कि
आनन्दः	= आनन्दही
ब्रह्म	= ब्रह्महै
हि	= क्योंकि
खलु	= निश्चयकरके
आनन्दात्	= आनन्दसे
एव	= ही
इमानि	= ये
भूतानि	= सर्वभूत
जायन्ते	= उत्पन्न होते हैं
+ च	= और
जातानि	= उत्पन्नहुये
आनन्देन	= आनन्दकरके
+ एव	= ही
जीवन्ति	= जीते हैं और बढ़ते हैं
+ च	= और
+ अन्ते	= विनाशकाल बिषे
आनन्दम्	= आनन्दप्रति
प्रयन्ति	= प्रवेश करते हैं
च	= और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिसंविशन्ति = तन्मयहोजाते हैं

इति = इसप्रकार वारंवारविचार करके सर्वान्तर आनन्दको वहभृगु ब्रह्मही जानताभया

सा = वही

एषा = यह

विद्या = ब्रह्मविद्या

भार्गवी = भृगुकरकेविदित

+ च = और

वारुणी = वरुण करके कथित

परमे = उत्कृष्ट

व्योमन् = व्योम्नि = हृदयाकाश बुद्धिरूपी गुहाबिषे

प्रतिष्ठिता = स्थितहैं

यः = जो

एवम् = इसप्रकार ब्रह्मविद्याको

वेद = जानताहै

सः = वह

प्रतितिष्ठति = आनन्दरूप पर ब्रह्मबिषे स्थितहोता है याने स्वयं ब्रह्म होजाताहै

+ च = और

+दृष्टंचफलं तस्य एवंप्रकारेण अस्मिन्शरीरे एवभवति = दृश्यमान फल भी उस को इसी शरीरबिषे इस प्रकार प्राप्त होताहै कि

सः = वह

+अन्नवान् = विशेष अन्नवाला

+ च = और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्नादः = अन्नके भक्षण करनेको समर्थ
भवति = होताहै
+ च = और
प्रजया = सन्तानकरके
पशुभिः = गवाश्वादि पशुवों करके
ब्रह्मवर्चसेन = ब्रह्मतेज करके
महान् = ऐश्वर्यवान्
भवति = होताहै
+ च = और
कीर्त्या = कीर्तिकरके
अपि = भी
महान् = श्रीमान्
भवति = होताहै–

मूलम् ॥

अन्नंननिंद्यात्तद्व्रतम् प्राणोवाऽन्नमृशरीरमन्नादम्प्राणे शरीरंप्रतिष्ठितम् शरीरेप्राणःप्रतिष्ठितःतदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम् सय एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेदप्रतितिष्ठति अन्नवानन्नादोभवति महान्भवतिप्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनमहान् कीर्त्या ७।४१ इति सप्तमोऽनुवाकः ॥ ७॥

पदच्छेदः ॥

अन्नम् न निन्द्यात् तत् व्रतम् प्राणः वै अन्नम् शरीरम् अन्नादम् प्राणे शरीरम् प्रतिष्ठितम् शरीरे प्राणः प्रतिष्ठितः तत् एतत् अन्नम् अन्ने प्रतिष्ठितम् सः यः एतत् अन्नम् अन्ने प्रतिष्ठितम् वेद प्रतितिष्ठति अन्नवान् अन्नादः भवति महान् भवति प्रजया पशुभिः ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एवंपञ्चकोशविचारेण	= इसप्रकार पञ्चकोशके विचारद्वारा
+ब्रह्मविदः	= ब्रह्मवेत्ता का
तत्	= यह
व्रतम्	= नियमहै कि
अन्नम्	= अन्न की
+कदापि	= कभी
न	= नहीं
निन्द्यात्	= निन्दाकरै

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अन्नम्	= अन्न
वा	= ही
प्राणः	= प्राणहै
+ च	= और
+शरीरम्	= प्राणयुक्तशरीर
अन्नादम्	= अन्नका भक्षण करनेवाला है
+ च	= और
यत्	= चूंकि
शरीरम्	= शरीर
प्राणे	= प्राणबिषे
प्रतिष्ठितम्	= स्थित है
च	= और
प्राणः	= प्राण
शरीरे	= शरीरबिषे
प्रतिष्ठितः	= स्थितहै
तत्	= इसलिये
एतत्	= यह
अन्नं	= अन्न
अन्ने	= अन्नबिषे
प्रतिष्ठितम्	= स्थित है

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यः	= जो उपासक
एतत्	= इस
अन्नम्	= अन्नको
अन्ने	= अन्नबिषे
प्रतिष्ठितम्	= स्थित
वेद	= जानता है
सः	= वह
प्रतितिष्ठति	= ब्रह्मबिषेस्थित होताहै या ने स्वयंब्रह्म होजाता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृष्टंचफ-
लं तस्य
अस्मिन्
शरीरेए-
वं प्रकारे
णभवति = { दृश्यमान फ-
लभी उस्को
इसप्रकार इ-
सीशरीरबिषे
होताहै कि }

\+ सः = वह
अन्नवान्=विशेष अन्नवाला
\+ भवति=होताहै
\+ च = और

अन्नादः = { अन्नके भक्ष-
णकरने में
समर्थ }
भवति = होताहै

\+ च = और
\+ सः = वह
प्रजया = सन्तति करके
पशुभिः = गवाश्वादि प-
शुवों करके
ब्रह्मवर्चसेन=ब्रह्मतेजकरके
महान् = ऐश्वर्यवान्
भवति = होताहै
\+ च = और
कीर्त्या = कीर्त्तिकरके
\+ अपि = भी
महान् = श्रीमान्
\+ भवति = होताहै

मूलम् ॥

अन्नं न परिचक्षीत तद्व्रतम् आपोवाऽन्नम् ज्योतिरन्नादम् अप्सुज्योतिः प्रतिष्ठितम् ज्योतिष्यापः प्रतिष्ठिताः तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम् सयएतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम् वेद प्रतितिष्ठति अन्नवानन्नादो भवति महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ॥ ८ । ४२ ॥ इत्यष्टमोऽनुवाकः ८ ॥

पदच्छेदः ॥

अन्नम् न परिचक्षीत तत् व्रतम् आपः वा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्नम् ज्योतिः अन्नादम् अप्सु ज्योतिः प्रतिष्ठितम् ज्योतिषि आपः प्रतिष्ठिताः तत् एतत् अन्नम् अन्ने प्रतिष्ठितम् सः यः एतत् अन्नम् अन्ने प्रतिष्ठितम् वेद प्रतितिष्ठति अन्नवान् अन्नादः भवति महान् भवति प्रजया पशुभिः ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ॥ ८ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+एवं पञ्चकोशविद्याद्वारेण	इसप्रकार पंचकोशोंके विचारद्वारा
+ब्रह्मविदः	ब्रह्मवेत्ताका
तत्	यह
व्रतम्	नियमहै कि
अन्नम्	अन्नको
+ कदापि	कभी
न	नहीं
परिचक्षीत	त्यागकरै
च	क्योंकि
आपः	जल
वा	ही
अन्नम्	अन्नहै
+च	और
ज्योतिः	ज्योति

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अन्नादम्	अन्नका भक्षण करनेवालाहै
+ यत्	चूंकि
ज्योतिः	ज्योति
अप्सु	जलोंबिषे
प्रतिष्ठितम्	स्थितहै
च	और
आपः	जल
ज्योतिषि	ज्योतिबिषे
प्रतिष्ठिताः	स्थितहैं
तत्	इसलिये
एतत्	यह
अन्नम्	अन्न
अन्ने	अन्नबिषे
प्रतिष्ठितम्	स्थितहै
यः	जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एतत् = इस
अन्नम् = अन्नको
अन्ने = अन्नबिषे
प्रतिष्ठितम्=स्थित
वेद = जानताहै
सः = वह
प्रतितिष्ठति= ब्रह्मबिषेस्थित होताहै यानी स्वयंब्रह्म होजाताहै
च = और
दृष्टंचफलं तस्य एवं अस्मिन् शरीरे एव भवति =दृश्यमान फल भी उसकोइसी शरीरबिषे इस प्रकार होताहै कि
+ सः = वह
अन्नवान् = विशेष अन्नवाला
भवति = होताहै
च = और
अन्नादः = अन्नके भक्षण करने में सामर्थी
भवति = होताहै
+ च = और
प्रजया = संतति करके
पशुभिः = गवाश्वादि पशुवों करके
ब्रह्मवर्चसेन = ब्रह्मतेज करके
महान् = ऐश्वर्यवान्
भवति = होताहै
+ च = और
कीर्त्या = कीर्तिकरके
महान् भवति = श्रीमान् होताहै

मूलम् ॥

अन्नंबहुकुर्वीत तद्व्रतम्पृथिवीवाऽन्नम् आकाशोऽन्नादः पृथिव्यामाकाशः प्रतिष्ठितः आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम् सय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम् वेद प्रतितिष्ठति अन्नवानन्नादो भवति महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन महान्कीर्त्या॥४॥४३॥इतिनवमोऽनुवाकः९॥

पदच्छेदः ॥

अन्नम् बहु कुर्वीत् तत् व्रतम् पृथिवी वा अन्नम् आकाशः अन्नादः पृथिव्याम् आकाशः प्रतिष्ठितः आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता तत् एतत् अन्नम् अन्ने प्रतिष्ठितम् सः यः एतत् अन्नम् अन्ने प्रतिष्ठितम् वेद प्रतितिष्ठति अन्नवान् अन्नादः भवति महान् भवति प्रजया पशुभिः ब्रह्मवर्चसेन महान् कीर्त्या ॥ इति नवमोऽनुवाकः ॥ ९ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+एवं पञ्चकोशविचारेण	= इसप्रकार पंच कोशोंकेविचारद्वारा
+ब्रह्मविदः	= ब्रह्म वेत्ताका
तत्	= यह
व्रतम्	= नियमहै कि
अन्नम्	= अन्नकोही
बहु	= श्रेष्ठ

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
कुर्वीत	= समझै
पृथिवी	= पृथिवी
वा	= ही
अन्नम्	= अन्नहै
आकाशः	= आकाश
अन्नादः	= अन्न का भक्षक है
+यत्	= चूंकि
पृथिव्याम्	= पृथिवी विषे

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आकाशः = आकाश
प्रतिष्ठितः = स्थितहै
+च = और
आकाशे = आकाश बिषे
पृथिवी = पृथिवी
प्रतिष्ठिता = स्थितहै
तत् = इसलिये
एतत् = यह
अन्नम् = अन्न
अन्ने = अन्नबिषे
प्रतिष्ठितम् = स्थितहै
यः = जो
एतत् = इस
अन्नम् = अन्नको
अन्ने = अन्नबिषे
प्रतिष्ठितम् = स्थित
वेद = जानताहै
सः = वह
प्रतितिष्ठति = ब्रह्मबिषे-स्थितहोताहै याने स्वयंब्रह्म होजाताहै

दृष्टंचफलंतस्यएवं अस्मिन्शरीर एवभवति = दृश्यमान फलभी उसको इस प्रकार इसी शरीर बिषेहोताहै कि
सः = वह
अन्नवान् = विशेष अन्न वाला
+ भवति = होताहै
च = और
अन्नादः = अन्नकेभक्षणकरनेबिषे सामर्थ
भवति = होताहै
+ च = और
प्रजया = संतति करके
पशुभिः = पशुवों करके
ब्रह्मवर्चसेन = ब्रह्मतेज करके
महान् = श्रीमान्
भवति = होताहै
+ च = और

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कीर्त्या = कीर्ति करके	महान् = ऐश्वर्य्यवान्
+ अपि = भी	+ भवति = होता है ॥

मूलम् ॥

नकञ्चनवसतौप्रत्याचक्षीत तद्व्रतम्तस्माद्यया कयाचविधया बह्वन्नंप्राप्नुयात् अराध्यस्माअन्नमि त्याचक्षते एतद्वैमुखतोऽन्नꣳराद्धम् मुखतोऽस्मा अन्नंराध्यते एतद्वैमध्यतोअन्नꣳराद्धम्मध्यतो ऽस्माअन्नꣳराध्यते एतद्वाअन्ततोऽन्नꣳराद्धम् अ- न्ततोऽस्माअन्नꣳराध्यते ॥ ४४ ॥ यएवंवेदक्षेमइति वाचियोगक्षेमइतिप्राणापानयोः कर्मेतिहस्तयोःग तिरितिपादयोः विमुक्तिरितिपायौ इतिमानुषीः समाज्ञाः अथदैवीःतृप्तिरितिवृष्टौ बलमिति विद्यु ति ४५ यशइतिपशुषुज्योतिरिति नक्षत्रेषुप्रजाति रमृतमानन्दइत्युपस्थे सर्वमित्याकाशेतत्प्रतिष्ठे त्युपासीत प्रतिष्ठावान् भवति तन्महइत्युपासीत महान्भवतितन्मनइत्युपासीतमानवान्भवति४६ तन्नमइत्युपासीत नम्यंतेऽस्मैकामाः तद्ब्रह्मेत्युपा सीत ब्रह्मवान्भवति तद्ब्रह्मणःपरिमर इत्युपासी त पर्य्येणंम्रियंते द्विषन्तः सपत्नः परियेऽप्रियाभ्रा तृव्याःसयश्चायंपुरुषे यश्चासावादित्येसएकः ४७॥ सयएवंवित्अस्माल्लोकात्प्रेत्य एतमन्नमयमात्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नमुपसंक्रम्य एतंप्राणमयमात्मानमुपसंक्रम्यएतं मनोमयमात्मानमुपसंक्रम्य एतं विज्ञानमयमा त्मानमुपसंक्रम्य एतमानन्दमयमात्मानमुपसंक्र म्य इमाँल्लोकान् कामान्नीकामरूप्यनुसञ्चरन् एतत्सामगायन्नास्ते हा३वुहा३वुहा३ वु ४८ ॥

अहमन्नमहमन्नमहमन्नम् अहमन्नादो ३ अहमन्नादो ३ अहमन्नादः अहछं श्लोककृदहछं श्लोककृतदहछं श्लोककृतअहमस्मि प्रथमजोऋ ता ३ स्यपूर्वं देवेभ्योऽमृतस्यना ३ भायियोमाददा ति स इहदेवमा३वाः अहमन्नमन्नमदन्तमा३ द्मि अहं विश्वं भुवनमभ्यवां ३ सुवर्णज्योतिःय एवंवेद इत्युपनिषत् राध्यते विद्युति मानवान् भवत्येकोहा ३वुयएवंवेदैकञ्च ४९ भृगुस्तस्मै यतोविशन्ति त द्विजिज्ञासस्व तत्त्रयोदशान्नं प्राणंमनो विज्ञान मिति विज्ञायततंतपसा द्वादशानन्द इति सैषादशा न्नंननिन्द्यात् प्राणःशरीरमन्नं नपरिचक्षीतापोज्यो तिरन्नं बहुकुर्वीत पृथिव्यामाकाश एंकदशैकाद नकञ्चनैकषष्टिरेकान्नविंछंशांतिरेकान्नविंछंशतिः सहनाववतुसहनौभुनक्तुसहवीर्यंकरवावहै तेजस्वि नावधीतमस्तुमाविद्विषावहैछंशान्तिः शान्तिःशा न्तिः इतितृतीयाभृगुवल्लीसमाप्ता ३ ॥

इति तैत्तरीयोपनिषत्संपूर्णम् ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः ॥

न कञ्चन वसतौ प्रत्याचक्षीत तत् व्रतम् त स्मात् यया कया च विधया बह्वन्नम् प्राप्नुयात् आराधि अस्मै अन्नम् इति आचक्षते एतत् वै मुखतः अन्नम् राद्धम् मुखतः अस्मै अन्नम् राध्यते एतत् वै मध्यतः अन्नम् राद्धम् मध्यतः अस्मै अन्नम् राध्यते एतत् वै अन्ततः अन्तम् राद्धम् अन्ततः अस्मै अन्नम् राध्यते यः एवम् वेद क्षेम इति वाचि योगक्षेम इति प्राणापानयोः कर्म इति हस्तयोः गतिः इति पादयोः विमुक्तिः इति पायौ इति मानुषीः समाज्ञाः अथ दैवीः तृप्तिः इति वृष्टौ बलम् इति विद्युति यशः इति पशुषु ज्योतिः इति नक्षत्रेषु प्रजातिः अमृतम् आनन्दः इति उपस्थे सर्वम् इति आकाशे तत् प्रतिष्ठा इति उपासीत प्रतिष्ठावान् भवति तत् महः इति उपासीत महान् भवति तत् मनः इति उपासीत मानवान् भवति तत् नमः इति उपासीत नम्यन्ते अस्मै कामाः तत् ब्रह्म इति उपासीत ब्रह्मवान् भवति तत् ब्रह्मणः परिमरः इति उपासीत परि एनम् म्रियन्ते द्विषन्तः सपत्नाः परि ये अप्रियाः भ्रातृव्याः सः यः च अयम् पुरुषे यः च असौ आदित्ये सः एक सः यः एवंवित् अस्मात् लोकात् प्रेत्य एतम् अन्नमयम् आत्मानम् उपसंक्रम्य एतम् प्राणमयम् आत्मानम् उपसंक्रम्य एतम् म-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोमयम् आत्मानम् उपसंक्रम्य एतम् विज्ञानमयम् आत्मानम् उपसंक्रम्य एतम् आनन्दमयम् आत्मानम् उपसंक्रम्य इमान् लोकान् कामान्नीकाम रूपी अनुसचरन् एतत् साम गायन् आस्ते हा ३ वुहा ३ वुहा ३ वु अहम् अन्नम् अहम् अन्नम् अहम् अन्नम् अहम् अन्नादः अहम् अन्नादः अहम् अन्नादः अहम् श्लोककृत् अहम् श्लोक कृत् अहम् श्लोककृत् अहम् अस्मि प्रथमजः ऋता ३ स्य पूर्वम् देवेभ्यः अमृतस्य ना ३ भायि यः मा ददाति सः इत् एव मा ३ वाः अहम् अन्नम् अहम् अन्नम् अदन्तम् आ ३ द्मि अहम् विश्वम् भुवनम् अभ्यवभवाँ ३ सुवर्ण ज्योतिः यः एवम् वेद इति उपनिषत् दशमोऽनुवाकः ॥ १० ॥

इति भृगुवल्ली ३ समाप्ता च तैत्तरीयोपनिषद् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
पंचकोशोपासकस्य	पञ्चकोशों के उपासकका
तत्	यह
व्रतम्	नियमहै कि
वसतौ स्वगृहे आगतम्	अपने घरबिषे आयेहुये

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
कञ्चन	किसीको
न	न
प्रत्याचक्षीत	इनकारकरै
+ च	और
तस्मात्	इसीलिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यया कया विधया = जिसकिसविधिसे याने किसी न किसी तरहसे
बह्वन्नम् = विशेष अन्न
प्राप्नुयात् = प्राप्तकरै

च = और
अस्मै = उस अतिथि के लिये
अन्नम् = अन्नको
आराधि = सिद्धकरै याने तैयार करके अर्पण करै
इति = ऐसा
आचक्षते = वृद्धलोगकहगये हैं याने कहतेआये हैं
+ यदि = अगर
एतत् = यह
अन्नम् = अन्न
मुखतः = प्रथमवयमें सत्कारपूर्वक
राद्धम् = दियागयाहै
+ ततः = तौ
अस्मै = उस दाता के लिये
मुखतः = प्रथम वय बिषेही सत्कारपूर्वक
एव = निश्चयकरके
अन्नम् = अन्न
राध्यते = मिलताहै
वै = अगर
एतत् = यह
अन्नम् = अन्न
मध्यतः = मध्यवय बिषे सत्कार पूर्वक अतिथिको
राद्धम् = दियागयाहै
ततः = तो
अस्मै = उसअन्नदाता के लिये
मध्यतः = मध्यवयबिषे सत्कारपूर्वक
अन्नम् = अन्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राध्यते = मिलता है

वै = अगर
एतत् = यह
अन्नम्अन्न अन्ततः = { अंतवय बिषे सत्कारपूर्वक अतिथिको }
राद्धम् = दियागया है
+ तदा = तो
अस्मै = उसअन्नदाता के लिये
अन्ततः = अंतवय बिषे सत्कारपूर्वक
अन्नम् = अन्न
राध्यते = मिलता है

यः = जो
एवम् = इसप्रकार अन्न दान और तिस के फलको
वेद = जानता है
सः = वह
+ यथोक्तं फलमाप्नोति = { यथोक्तफलको प्राप्तहोता है }

इदानींब्रह्मोपासनप्रकार उच्यते = { अब ब्रह्म की उपासना का विधान कहाजाता है ॥ }
क्षेम = कल्याणरूप ब्रह्म
वाचि = वाणीबिषेस्थित है
इति = ऐसीउपासना करनी योग्यहै

योगक्षेम = { अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति(योग)औरप्राप्त वस्तुकी रक्षा (क्षेम) ये दोनों ब्रह्मरूप }
प्राणापानयोः = { प्राण और अपान बिषे स्थितहैं }
इति = ऐसी उपासना करनीयोग्यहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्म = कर्मरूपब्रह्म
हस्तयोः = दोनों हाथों बिषे स्थितहै
इति = ऐसी उपासना करनी योग्यहै

गतिः = गमनरूपब्रह्म
पादयोः = चरणों बिषे स्थितहै
इति = ऐसी उपासना करनी योग्यहै

विमुक्तिः = मल मूत्र विसर्जनरूप ब्रह्म
पायौ = गुदाबिषे स्थितहै
इति = ऐसी उपासना करनी योग्यहै

इति = इसप्रकार
एताः = ये उक्त पांच उपासना
मानुषीः मानुष्यः = मनुष्यलोक सम्बन्धी

समाज्ञः = उपासना हैं
अथ = अब
दैवीः = देवलोक सम्बन्धिनी
समाज्ञाः = उपासना
उच्यते = कहीजाती हैं
तृप्तिः = अन्नोत्पत्ति द्वारा तृप्तिरूप ब्रह्म
वृष्टौ = वृष्टिबिषे स्थितहै
इति = ऐसी उपासना करनी योग्य है

बलम् = बलरूप ब्रह्म
विद्युति = विद्युत बिषे स्थितहै
इति = ऐसी उपासना करनी योग्यहै

यशः = दुग्ध और आरोहणादि यशरूप ब्रह्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पशुषु = गवाश्वादिपशुवों बिषे स्थितहै

इति = { ऐसी उपासना करनी योग्यहै

ज्योतिः = तेजोरूप ब्रह्म

नक्षत्रेषु = { सूर्य चन्द्र आदिकों बिषे स्थितहै

इति = { ऐसी उपासना करनी योग्यहै

प्रजातिः = पुत्रोत्पत्तिरूप ब्रह्म और

अमृतम् = { पुत्रपौत्रोत्पत्तिद्वारा ऋणत्रयकी निर्मुक्तिरूप अमृत तुल्य ब्रह्म और

आनन्दः = { आनन्दरूप ब्रह्म जो स्त्रीग मनबिषेप्राप्त होताहै वह

उपस्थे = { उपस्थ इन्द्रिय बिषे स्थितहै

इति = { ऐसी उपासनाकरनी योग्य है

सर्वम् = सर्वात्मकरूप ब्रह्म

आकाशे = आकाश बिषे स्थितहै

इति = { ऐसी उपासना करनी योग्य है

तत् = वह ब्रह्म

प्रतिष्ठा = सबकाअधिष्ठानहै

+ यदि = अगर

इति = ऐसी

उपासीत = उपासना करै

+ततः = तो

प्रतिष्ठावान्=स्वयं सर्वाधिष्ठानरूपब्रह्म

भवति = होताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् = वह ब्रह्म
महः = महत् = सबसे श्रेष्ठहै
यदि = अगर
इति = ऐसी
उपासीत = उपासनाकरै
+ततः = तो
महान् = स्वयंश्रेष्ठ
भवति = होताहै
तत् = वह ब्रह्म
मनः = मनरूप है
+यदि = अगर
इति = ऐसी
उपासीत = उपासनाकरै
+ततः = तो
मानवान् = मनन याने ईश्वर के आराधन में समर्थ
भवति = होताहै

तत् = वह सर्वभूतस्थित ब्रह्म
नमः = नमस्कार करने योग्यहै
+यदि = अगर
इति = ऐसी
उपासीत = उपासना करै
+ततः = तो
मानवान् = मनन याने ईश्वर के आराधनमें समर्थ
भवति = होता है
तत् = वह सर्वभूतस्थित ब्रह्म
नमः = नमस्कार करने योग्य है
यदि = अगर
इति = ऐसा
उपासीत = उपासनाकरै
ततः = तो
अस्मै = उस उपासक के लिये
कामाः = विषयभोग
नम्यन्ते = स्वतःउपस्थित होते हैं

तत् = वह ब्रह्म
ब्रह्म = व्यापकरूपहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

+यदि = अगर
इति = ऐसी
उपासीत = उपासना करै
+ततः = तो
ब्रह्मवान् = स्वयंव्यापक रूप
भवति = होताहै
तत् = वह वायुरूप
ब्रह्मणः = ब्रह्मका
परिमरः = परिमर है याने जिस विषे पांच देवता विद्युत, पृथिवी, चन्द्रमा, आदित्य, अग्निर्लीन होते हैं सो वायुब्रह्मका परिमर है
+यदि = अगर
इति = ऐसी
उपासीत = उपासना करै
ततः = तो

एनम् = उससे
विद्विषन्तः = द्वेष करतेहुये
सपत्नाः = शत्रु
इति = आपही आप
परिम्रियन्ते = मरणको प्राप्तहोते हैं
+ च = और
अद्विषन्तोपि = द्वेष न करने वाले भी
ये = जो
अप्रियाः = अप्रिय
भ्रातृव्याः = भ्रातृ पुत्रादि हैं
तेचपरिम्रियन्ते = वेभी आप ही मरण कोप्राप्तहोते हैं

च = और
यः = जो
पुरुषे = पुरुष बिषे आनन्द है
च = और
यः = जो
असौ = यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदित्ये = सूर्य विषे
आनन्दः = आनन्द है
सः = सोई
+एकः = निरतिशयानंद
+ब्रह्मविदो ऽवइयंभवति। = ब्रह्मवेत्ता को अव-श्यहोताहै

+च = और
कामान्नी = इच्छामात्र से प्राप्त है अन्नभोग जिसको
कामरूपी = इच्छामात्र से प्राप्त है स्थूलसूक्ष्म रूपजिसको याने जोस्व इच्छाकरके अनेकरूप धारण कर सक्ताहै ऐसा
+ब्रह्मविदः = ब्रह्मवेत्ता
इमान् = इनभूरादि
लोकान् = लोकोंविषे

अनुसञ्चरन् = अपनीइच्छा से विचरता हुवा
च = और
एतत् = इस
साम = सामवेदकेगीतको
एवम् = इसप्रकार
गायन् = गाताहुआ
आस्ते = रहताहै
हाइवु = अहोउ=बड़ा आश्चर्य है
हाइउ = अहोउ=बड़ा आश्चर्य है
हाइउ = अहोउ=बड़ा आश्चर्य है
अहमन्नम्=मैं अन्नहूं
अहमन्नम्=मैं अन्नहूं
अहमन्नम्=मैं अन्नहूं
अहमन्नादः=मैं अन्नका भोक्ताहूं
अहमन्नादः=मैं अन्नका भोक्ताहूं
अहमन्नादः=मैं अन्नका भोक्ताहूं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अहंश्लोककृत् = मैं कार्यकारणरूपहूं
अहंश्लोककृत् = मैं कार्यकारणरूपहूं
अहंश्लोककृत् = मैं कार्यकारणरूपहूं
अहम् = मैं
ऋताऽस्य = मूर्त्तअमूर्त्तयाने कार्यकारणके
प्रथमजः = पूर्व उत्पन्नहुवा
अस्मि = हूं
च = और
देवेभ्यः = इन्द्रियाभिमानी देवताओं से
+अपि = भी
पूर्वम् = पहिले
+ जातोऽस्मि = उत्पन्नहुवाहूं
च = और
अमृतस्य = मोक्षका
नाऽभायि = नाभिः मध्यस्थान याने निधान
अस्मि = हूं

च = और
यः = जो
मा = माम् = मुझअन्नरूपको
अन्नार्थिने = अन्नार्थी के लिये
ददाति = देताहै
सः = वह
इत् = इति = ऐसेदानधर्मसे
एव = अवश्य
मा = माम् = मुझको
अवाः = अवति = रक्षाकरताहै
च = और
अन्नम् = अन्नको
+अन्नार्थिनेऽदत्वा = अन्नार्थिके लिये न देके
अन्नमदन्तम् = अन्नभक्षण करतेहुयेको
अहम् = मैं
आऽद्मि = अद्मि = भक्षण कर जाताहूं
च = और
अहम् = मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुवर्ज्योतिःनः=सूर्यइव=सूर्यकीतरह प्रकाशमान होकर
विश्वम्=ब्रह्मासेतृणपर्यन्त
भवनम् = लोकको
अभिभवाँई= अभिभवामि= तिरस्कार करताहूं

उपनिषत् = "सत्यंज्ञान मनंतंब्रह्म" इसमहा वाक्य का तात्पर्य
यः = जो
एवम् = इसप्रकार
वेद = जानताहै
च = और
यः = जो
एवंवित् = ऐसा जानने वालाहै
सः = वह
अस्मात् = इस
लोकात् = लोकसे
प्रेत्य = मरके
च = और
एतम् = पूर्वोक्त
अन्नमयमात्मानम् = अन्नमय शरीरको
उपसंक्रम्य = उल्लंघनकरके
च = और
एतम् = पूर्वोक्त
मनोमयमात्मानम् = मनोमय शरीरको
उपसंक्रम्य=उल्लंघनकरके
च = और
एतम् = पूर्वोक्त
विज्ञानमयमात्मानं = विज्ञानमय शरीर को
उपसंक्रम्य=उल्लंघनकरके
च = और पूर्वोक्त
आनन्दमयमात्मानम् = आनन्दमय शरीरको
उपसंक्रम्य=उल्लंघन करके
+ब्रह्मरूपो भवति =ब्रह्मरूप हो जाताहै

इति दशमोऽनुवाकः भृगुवल्ली समाप्ता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

सहनाववतुसहनौभुनक्तुसहवीर्यंकरवावहैतेजस्विनावधतिमस्तुमाविद्विषावहै ॐशान्तिःशान्तिः शान्तिः ॥

पदच्छेदः ॥

सह नौ अवतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यम् करवावहै तेजस्वि नौ अधीतम् अस्तु माविद्विषावहै ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ सः	= वह ईश्वर
नौ	= हम दोनोंको याने गुरु और शिष्य को
सह	= साथ
एव	= ही
अवतु	= रक्षाकरै
नौ	= हम दोनोंको
सहएव	= साथही
भुनक्तु	= भोग प्राप्तकरै
+ आवाम्	= हमदोनों

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सह	= साथ
+ एव	= ही
वीर्यम्	= विद्यादान और विद्या ग्रहण सामर्थ्यको
करवावहै	= प्राप्तहोवैं
नौ	= हम दोनोंका
अधीतम्	= पढ़ाहुआ
तेजस्वि	= अर्थज्ञान योग्य याने सफल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्तु = होवै
+आवाम् = हमदोनों

माविद्विषावहै = पठन पाठन में प्रमाद रूप द्वेषको न प्राप्तहोवैं

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

इति तैत्तरीयोपनिषद् सम्पूर्णम् ॥

शुभमस्तु

———

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीकासहित-इसमें भी ऊपर लिखे हुये के अनुसार भावार्थ स्पष्ट कियागया और समझने की सुगमताके लिये गुरुशिष्यसम्बादपूर्वक पूर्ण ज्ञान लखाया है ॥

तैत्तिरीयोपनिषद् भाषाटीका सहित, क़ीमत ।-)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीकासहित-जिसमें तैत्तिरीय शाखा के प्रकट होनेका उदाहरण और स्वरमात्रा व वर्णों के उच्चारणकी शिक्षाका नियम व वर्णों के संबन्धरूप संहिताकी उपासना व बुद्धि व लक्ष्मीकी कामनावाले पुरुषोंके अर्थ साधन जप और हवनादि की क्रियायें वर्णित हैं ॥

ऐतरेयोपनिषद् भाषाटीकासहित, क़ीमत =)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित-जिसमें आत्मा व ब्रह्मका निरूपण और प्राण व प्रणवकी उपासना की व्याख्या व संन्यासादि आश्रमों के लक्षण व धर्म अच्छे प्रकार वर्णित हैं ॥

उपनिषद्सार, क़ीमत -)॥ पु०

मुंडक, मांडूक्य, तैत्तरीय, ऐतरेय, श्वेताश्वर, ईशावास्य, केन कठ, प्रश्न, छांदोग्य, बृहदारण्यक, कौषीतकि, ब्राह्मण और मैत्री की भाषा टीका राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्दने रचनाकर अपने पुत्र पौत्र मित्र बान्धव योग्य अधिकारियों के निमित्त छपवायाहै॥

छान्दोग्य उपनिषद् भाषा टीका, क़ीमत॥=)॥

पंडित यमुनाशङ्करजी कृत टीका भाषा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मधर्मदोखंड में ग़ैरमतबा, क़ीमत १) पु०
तथा प्रथमखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ॥=) पु०
तथा द्वितीयखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ।=) पु०

यह अत्युत्तम उपनिषद् है इसको पंडित लक्ष्मणप्रसादजी ने बंगाली भाषा से हिन्दी भाषा में उल्थाकिया है मूलश्लोक और भाषाटीकासमेत है ॥

(वेदान्त)

योगवाशिष्ठ दोभागों में, क़ीमत ५॥) पु०
श्रीमद्भागवत भाषाटीकासंयुक्त ७) रु० पु० ॥

इस ग्रन्थ के उत्तम होनेमें कदापि सन्देह नहींहै—इसका भाषा तिलक ब्रजबोली में बहुतही प्याराहै आशय प्रत्येक श्लोकों का है क्यों न हो इस के तिलककार महात्मा ब्रजवासी अङ्गदजी शास्त्रीहैं—यह तिलक ऐसा सरलहै कि इसके द्वारा अल्प संस्कृतज्ञ पुरुषों का पूराकार्य निकल सक्ताहै—संस्कृत पाठकभी इससे श्लोकोंका पूराआशय समझ सक्तेहैं इसबार यह ग्रन्थ टैपके अक्षरों में उम्दा काग़ज़ सफ़ेद चिकना में छापागयाहै और विशेष विद्वान् शास्त्रियों के द्वारा शुद्ध कराया गया है जिससे बम्बई की छपीहुई पुस्तकसे किसी काम में न्यून नहीं है उम्दा तसावीर भीप्रत्येक स्कन्धमें युक्तहैं—आशाहै कि इस अमूल्य रत्न के लेने में महाशय लोग विलम्ब न करेंगे ॥

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



ऐतरेयोपनिषद्

जिसका भाषाटीका

मध्यदेशी भाषामें बाबूज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद ने पण्डित गङ्गादत्त जोशी और पण्डित रामदत्त जोशी की सहायता से अनुवाद किया—

तिसको

श्रीमान् परमधार्म्मिक शुभगुणनिधान मुन्शी प्रयाग नारायणजी ने सर्वलोकहितार्थ

पहिली बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के यन्त्रालय में मुद्रित किया
सन् १९०० ई०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केनोपनिषद् भाषा टीका सहित, क़ीमत =)

सामवेदीय तलबकार शाखीय भाषा टीका सरल मध्य देशी हिन्दी भाषामें है–जिसको पण्डित यमुनाशङ्कर ने राजशास्त्री मि: हिरचन्द की सहायता से अनुबाद किया इसमेंभी पदों के अन्वय पूर्वक भावार्थ स्पष्ट कियाहै और ऐसा टीका कियाहै कि अल्पज्ञ मनुष्यों के भी समझ में आजावे ॥

ईशावास्य उपनिषद् भाषा टीकासहित, क़ी०–)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित–जिसमें मन्त्रों के अर्थ समझने के लिये पदों के अन्वय किये गये और फिर पदार्थकी रीति पर समझाकर भावार्थ स्पष्ट किया गया ॥

प्रश्नोपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत ≡)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीका सहित–इसमें भी सब ऊपर के लिखे हुये अलङ्कारहैं शिष्य के पूछे हुये अच्छे प्रश्नों का उत्तर गुरुने बताकर ब्रह्मरूप लखायाहै ॥

मांडूक्योपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत ॥=)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषा टीका सहित–जिसमें ॐकार स्वरूप का प्रतिपादन व ब्रह्म और आत्माकी अभेदताका निरूपण चार प्रकरणों में अच्छी तरह से किया है ॥

कठवल्लीउपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत ≡)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीका सहित–इसमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदौ मङ्गलाचरणम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ वन्दे शैलसुतापतिम्भयहरं मोक्षप्रदं प्राणिनां मोहध्वान्तसमूहभञ्जनविधौ प्राभास्करं चान्वहम्। यद्बोधोदयमात्रतः प्रविलयं विघ्नस्य शैलव्रजा यान्त्येवाखिलसिद्धयः प्रतिदिनं चाद्यन्तहीनं परम् ॥ १ ॥

यन्ध्यायन्ति मुनीश्वराः प्रतिदिनं संयम्य सर्वेन्द्रियाण्यर्वाक् तीर्थजलाभिषिक्तशिरसो नित्यक्रियानिर्वृताः। षट्चक्रादिविचार-सारकुशला नन्दन्ति योगीश्वराः तंवन्दे परमात्मरूपमनघं विश्वेश्वरं ज्ञानदम् २ ॥

दो० करौं वन्दना ब्रह्मको। जो अनन्त निजरूप ॥
जेहिजानेजगभ्रमसकल। मिटै अन्ध तमकूप ॥
नाम रूप जामें नहीं। नहीं जाति अरु भेद ॥
सो मैं पूरण ब्रह्म हूं। रहितत्रिविध परिछेद ॥
ब्रह्मभाग जो उपनिषद। ताका करूं विचार ॥
भाषामें तिस अर्थको। लखै सकल संसार ॥
सन्त संग से जो लख्यो। सो मैं करूं बखान ॥
परमानन्द सहाय ते। जाने सकल जहान ॥
पुरी अयोध्या के निकट। अकबर पुरहै गांव ॥
जन्मभूमि मम जान तू। जालिम सिंहहि नांव ॥

यह संसार असार महाअपार समुद्र है इसके पार होनेके लिये उपनिषत् अद्भुत अलौकिक अद्वितीय नौकाहै जिसमें बैठकर असंख्य सज्जन मुमुक्षुजन विना प्रयासही ऐसे दुस्तर सागरके पार होगये हैं और होते जाते हैं और भविष्यत्कालमें होंगे जो मुमुक्षुजन हैं उनके हितार्थ यह भाषा टीका रचीगई है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसटीका में पहिले मूलमन्त्र है फिर पदच्छेद है फिर वामहस्त की ओर संस्कृत अन्वय दिया है और दक्षिण हस्तकी ओर पदार्थसहित भाषार्थ लिखा है यदि वाम तरफका लिखा हुआ ऊपर से नीचेतक पढ़ाजावे तो उत्तम संस्कृत मिलेगा और यदि दक्षिण हस्तके तरफवाला पढ़ाजावे तो पूरा अर्थ मन्त्रका मध्यदेशिय भाषा में मिलेगा और यदि बायेंतरफ से दहिने तरफ को पढ़ाजावे तो हर एक संस्कृत पदका अर्थ भाषा में मिलैगा जहांतक होसकाहै प्रत्येक संस्कृत पदका अर्थ विभक्तिके अनुसार लिखागया है इस टीका के पढ़ने से संस्कृत विद्याका भी अभ्यास होगा इस टीका में मूलका कोई शब्द छूटने नहीं पायाहै और मन्त्रका पूरा २ अर्थ उसी के शब्दोंहीं से सिद्ध कियागयाहै अपनी कल्पना कुछ नहीं कीगई है हां कहीं कहीं ऊपरसे संस्कृत पद मन्त्रके अर्थ स्पष्ट करने के लिये रखागया है और उसपदके प्रथम यह + चिह्न लगा दिया गयाहै ताकि पाठक जनोंको विदित होजावै कि यह पद मूलका नहीं है । इस टीकाको बाबू ज़ालिमसिंह निवासी ग्राम अकबरपुर ज़िला फैज़ाबाद हेड पोस्टमास्टर नैनीताल सहित अत्यन्त सहायता पण्डित गंगादत्त ज्योतिर्विद निवासी मुरादाबादाभिधपत्तन और पण्डित रामदत्त ज्योतिर्विद निवासी अल्मोड़ाख्य नगरके रचकर शुद्ध निर्मल हृदयाकाशवान पुरुषों के चरणकमल में अर्पण करता है और आशा रखता है कि जहां कहीं अशुद्धताहो उससे टीकाकर्ता को सूचनाकरें ताकि अशुद्धता दूर होजावे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐतरेयोपनिषद् ॥



मूलम् ॥

ॐ आत्मावाइदमेकएवाग्रआसीन्नान्यत्किञ्चन मिषत्सईक्षतलोकान्नुसृजाइति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

आत्मा वै इदम् एकः एव अग्रे आसीत् न अन्यत् किञ्चन मिषत् सः ईक्षत् लोकान् नु सृजै इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वै	= निश्चय करके
इदम्	= यह नामरूपात्मक
जगत्	= जगत्
एकः	= एक
आत्मा	= आत्मा
एव	= ही
अग्रे	= सृष्टिसेपूर्व
आसीत्	= विद्यमानथा
च	= और
अन्यत्	= आत्मासेइतर
मिषत्	= चैतन्य

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
किञ्चन	= कुछ
न	= नहींथा
नु	= और
लोकान्	= लोकोंकोयानी पंचभूतोंको
सृजै	= मैंसृजूं
इति	= ऐसा
सः	= वहआत्मा
ईक्षत	= विचार करताभया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

सइमाँल्लोकानसृजताम्भोमरीचीर्मरमापोऽदोऽम्भः परेणदिवन्द्यौः प्रतिष्ठाऽन्तरिक्षंमरीचयःपृथिवीमरोया अधस्तात्ताआपः ॥ २ ॥

पदच्छेदः

सः इमान् लोकान् असृजत अम्भः मरीचीः मरम् आपः अदः अम्भः परेण दिवम् द्यौः प्रतिष्ठा अन्तरिक्षम् मरीचयः पृथिवी मरः याः अधस्तात् ताः आपः ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	वहआत्मा
इमान्	इन
लोकान्	लोकोंकोयानी
अम्भः	महदादिलोक को
मरीचीः	अन्तरिक्षलोकोंको
मरम्	पृथिवीलोक को
+ च	और
आपः	पृथिवी से अधोलोकोंको
असृजत	सृजताभया
द्यौःप्रतिष्ठा	स्वर्गहै आश्रय जिसका ऐसे
देवंपरेण	देवलोकसे परे
अदः	ये महदादिलोक
अम्भः	अम्भलोकहैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्तरिक्षं = { अन्तरिक्षलोकयानी वह लोक जो पृथिवीसेऊपर और स्वर्गसे नीचे है. सो }

मरीचयः = मरीचिलोकहै

पृथिवी = भूलोक

मरः = मरलोकहैमरणधर्मी होनेसे

च = और

याः = जो लोक

अधस्तात् = पृथिवी से नीचे हैं

ताः = वे

आपः = आपःशब्द से प्रसिद्धहैं

मूलम् ॥

सईक्षतेमेनुलोकालोकपालान्नुसृजाइति सोऽद्भ्यएवपुरुषंसमुद्धृत्यामूर्च्छयत् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

सः ईक्षत इमे नु लोकाः लोकपालान् नु सृजै इति सः अद्भ्यः एव पुरुषम् समुद्धृत्य अमूर्च्छयत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
इमेलोकाः	= ये अम्भादि लोक	लोकपालान्	= { लोकपालों को यानी लोकाभिमानी देवगणों को
नु	= होनेपर		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नु = निश्चयकर के
सृजै = मैं सृजूं
इति = ऐसा
सः = वहईश्वर
ईक्षत = विचार करता भया
+ च = और
+ सः = सो ईश्वर
अद्भ्यः = जलादिपञ्च महाभूतोंसे
एव = ही
पुरुषम् = विराट्रूप पिण्डको
समुद्धृत्य = ग्रहण करके
अमूर्च्छयत् = रचताभया

मूलम् ॥

तमभ्यतपत्तस्याभितप्तस्यमुखं निरभिद्यतय थाण्डम्मुखाद्वाग्वाचोऽग्निर्नासिके निरभिद्येतांना सिकाभ्यांप्राणः प्राणाद्वायुरक्षिणी निरभिद्येताम क्षीभ्यांचक्षुश्चक्षुष आदित्यः कर्णौ निरभिद्येतां क र्णाभ्यांश्रोत्रं श्रोत्राद्दिशस्त्वङ्निरभिद्यत त्वचोलो मानिलोमभ्य ओषधिवनस्पतयोहृदयंनिरभिद्यत- हृदयान्मनोमनसश्चन्द्रमानाभिर्निरभिद्यतनाभ्या अपानोऽपानान्मृत्युः शिश्नंनिरभिद्यतशिश्नाद्रे तोरेतस आपः ४ इति प्रथमः खण्डः ॥ १ ॥

पदच्छेदः

तम् अभ्यतपत् तस्य अभितप्तस्य मुखम् नि- रभिद्यत यथा अण्डम् मुखात् वाक् वाचः अग्निः नासिके निरभिद्येताम् नासिकाभ्याम् प्राणः प्राणा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त् वायुः अक्षिणी निरभिद्येताम् अक्षिभ्याम् चक्षुः चक्षुषः आदित्यः कर्णौ निरभिद्येताम् कर्णाभ्याम् श्रोत्रम् श्रोत्रात् दिशः त्वक् निरभिद्यत त्वचः लोमानि लोमंभ्यः औषधिवनस्पतयः हृदयम् निरभिद्यत हृदयात् मनः मनसः चन्द्रमाः नाभिः निरभिद्यत नाभ्याः अपानः अपानात् मृत्युः शिश्नम् निरभिद्यत शिश्नात् रेतः रेतसः आपः

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तम्	= तिस विराट् पुरुषाकार पिंडको	निरभिद्यत	= निकलता भया
अभ्यतपत्	= ईश्वरअपनेज्ञानरूप तप करके तपाता भया	यथाऽण्डम्	= जैसे पक्षीका अण्डा फूटता है
तस्य	= तिस	+ च	= और
अभितप्तस्य	= ईश्वरसंकल्प से अभितप्त पुरुष का	मुखात्	= उस मुखसे
मुखम्	= मुखाकार छिद्र	वाक्	= वाणी इन्द्रिय उत्पन्न भया
		वाचः	= वाणी से
		अग्निः	= अग्निदेवता होता भया
		नासिके	= दोनों नासिकाके छिद्र

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निराभिद्येताम् = निकलते भये
नासिकाभ्याम् = नासिकाके छिद्रों से
प्राणः = घ्राण इन्द्रिय होता भया
प्राणात् = घ्राणइन्द्रियसे
वायुः = वायुदेवता होता भया
अक्षिणी = दोनों नेत्र
निरभिद्येताम् = निकलतेभये
अक्षिभ्याम् = उन नेत्रों से
चक्षुः = दर्शन इन्द्रिय होता भया
चक्षुषः = दर्शनेन्द्रियसे
आदित्यः = सूर्य होता भया
कर्णौ = दोनों कर्ण
निरभिद्येताम् = निकलते भये
कर्णाभ्याम् = दोनों कर्णोंसे
श्रोत्रम् = श्रवणेन्द्रिय होता भया

श्रोत्रात् = श्रवणेन्द्रियसे
दिशः = दिशाऽभिमानी देवते होते भये
त्वक् = त्वचा
निरभिद्यत = निकलतीभई
त्वचः = त्वचासे
लोमानि = लोमसहचारीस्पर्शेंद्रिय होताभया
लोमभ्यः = स्पर्शइन्द्रिय से
औषधीवनस्पतयः = औषधिवनस्पतियों का अधिष्ठातावायुदेवताहोताभया
हृदयम् = हृदय कमल
निरभिद्यत = निकलता भया
हृदयात् = हृत्कमलसे
मनः = मनहोताभया
मनसः = मनसे
चन्द्रमाः = चन्द्रमाहोता भया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाभिः = नाभिस्थान
निरभिद्यत = निकलता भया
नाभ्याः = नाभिसे
अपानः = गुदेन्द्रियउत्पन्नहोताभया
अपानात् = गुदेन्द्रियसे
मृत्युः = मृत्युदेवता उत्पन्न भया
शिश्नम् = उपस्थेन्द्रिय स्थान
निरभिद्यत = निकलता भया
शिश्नात् = उपस्थेन्द्रिय से
रेतः = वीर्य होता भया
रेतसः = वीर्यसे
आपः = जलाभिमानी देवताहोताभया

मूलम् ॥

ताएतादेवताः सृष्टाअस्मिन् महत्यर्णवेप्रापतं-स्तमशनायापिपासाभ्यामन्ववार्जत्ताएनमब्रुवन्नायतनंनः प्रजानीहि यस्मिन् प्रतिष्ठिताअन्नमदामेति ॥ १ ॥

पदच्छेदः

ताः एताः देवताः सृष्टाः अस्मिन् महति अर्णवे प्रापतन् तम् अशनायापिपासाभ्याम् अन्ववार्जत् ताः एनम् अब्रुवन् आयतनम् नः प्रजानीहि यस्मिन् प्रतिष्ठिताः अन्नम् अदाम इति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ताः	वे
एताः देवताः	येलोकाऽभिमानी देवता अग्निआदि
सृष्टाः	उत्पन्नकियेहुये
अस्मिन्	इस
महति	बड़े
अर्णवे	संसाररूपीसमुद्र में
प्रापतन्	गिरतेभये
तम्	उस प्रथमउत्पादितपुरुषको
अशनायापिपासाभ्याम्	भूख और प्यासकरके

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ ईश्वरः	ईश्वर
अन्ववाजंत्	युक्त करता भया
ताः	वे देवता
इति	इसप्रकार
एनम्	इसईश्वरसे
अब्रुवन्	कहतेभये कि
नः	हमारेलिये
आयतनम्	कोईस्थान
प्रजानीहि	विधानकर
यस्मिन्	जिसमें
प्रतिष्ठिताः	रहतेहुये
अन्नम्	भोग्यवस्तुको
अदाम	भोगैं हम

मूलम् ॥

ताभ्यो गामानयत्ता अब्रुवन्न वै नो यमलमिति ताभ्योऽश्वमानयत्ता अब्रुवन्न वै नोऽयमलमिति ॥ ६ ॥

पदच्छेदः

ताभ्यः गाम् आनयत् ताः अब्रुवन् न वै नः अयम् अलम् इति ताभ्यः अश्वम् आनयत् ताः अब्रुवन् न वै नः अयम् अलम् इति ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ताभ्यः	= तिन अग्नि आदिदेवताओं के लिये
गाम्	= गवाकार पिण्ड को
+ईश्वरः	= ईश्वर
आनयत्	= दिखाता भया
ताः	= वे देवता
इति	= इस प्रकार
अब्रुवन्	= कहते भये कि
नः	= हमारे लिये
अयम्	= यह गवाकृति पिण्ड
वै	= निश्चय करके
अलम्	= योग्य
न	= नहीं है

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ताभ्यः	= तिनकेअर्थ
+पुनः	= फिर
अश्वम्	= अश्वाकृतिपिण्डको
ईश्वरः	= ईश्वर
आनयत्	= दिखाताभया
ताः	= वे देवता
इति	= इसप्रकार
अब्रुवन्	= कहतेभये कि
नः	= हमारेलिये
अयम्	= यह अश्वाकृतिपिण्ड
वै	= निश्चयकरके
अलम्	= योग्य
न	= नहीं है

मूलम् ॥

ताभ्यःपुरुषमानयत् ताअब्रुवन्सुकृतं वतेति पुरुषोवावसुकृतम् ताअब्रवीद्यथाऽऽयतनम्प्रविशतेति ॥ ३ ॥ ७ ॥

पदच्छेदः ॥

ताभ्यः पुरुषम् आनयत् ताः अब्रुवन् सु-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृतम् वत इति पुरुषः वाव सुकृतम् ताः अब्रवीत् यथायतनम् प्रविशत इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
ताभ्यः	तिन देवताओं के लिये
+ पुनः	फिर
पुरुषम्	पुरुष शरीरको
आनयत्	दिखाताभया
ताः	वे देवता
इति	इसप्रकार
अब्रुवन्	कहतेभये कि
सुकृतम्	शोभन यहअधिष्ठान है
वत	इसमें हम सन्तुष्ट हैं
ताः	तिनदेवताओं से
+ ईश्वरः	ईश्वर
इति	इसप्रकार
अब्रवीत्	कहताभयाकि
यथायतनं	अपने २ योनिस्थान में
प्रविशत	तुमसब प्रवेशकरो
तस्मात्	इसीलिये
पुरुषः	पुरुष
वाव	ही
सुकृतम्	सुकृतहै याने पुण्य का हेतु है

मूलम् ॥

अग्निर्वाग्भूत्वामुखंप्राविशद्वायुःप्राणोभूत्वानासिके प्राविशदादित्यश्चक्षुर्भूत्वाऽक्षिणीप्राविशद्दिशः श्रोत्रंभूत्वा कर्णौ प्राविशन्नोषधिवनस्पतयोलोमानिभूत्वात्वचम्प्राविशंश्चन्द्रमामनोभूत्वाहृदयं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राविशन्मृत्युरपानोभूत्वा नाभिम्प्राविशदापोरेतोभूत्वाशिश्नम्प्राविशन् ॥ ४ । ८ ॥

पदच्छेदः ॥

अग्निः वाक् भूत्वा मुखम् प्राविशत् वायुः प्राणः भूत्वा नासिके प्राविशत् आदित्यः चक्षुः भूत्वा अक्षिणी प्राविशत् दिशः श्रोत्रम् भूत्वा कर्णौ प्राविशन् ओषधिवनस्पतयः लोमानि भूत्वा त्वचम् प्राविशन् चन्द्रमाः मनः भूत्वा हृदयम् प्राविशत् मृत्युः अपानः भूत्वा नाभिम् प्राविशत् आपः रेतः भूत्वा शिश्नम् प्राविशन् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अग्निः	= अग्निदेवताईश्वरकीआज्ञासे
वाक्	= वाणीरूप
भूत्वा	= हो करके
मुखम्	= स्वयोनि मुख बिषे
प्राविशत्	= प्रवेशकरता भया
वायुः	= वायुदेवता
प्राणः	= प्राणरूप
भूत्वा	= होके

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
नासिके	= नासिकाकेदोनोंछिद्रोंबिषे
प्राविशत्	= प्रवेश करता भया
आदित्यः	= सूर्यदेवता
चक्षुः	= दर्शनइन्द्रिय
भूत्वा	= होके
अक्षिणी	= दोनों नेत्रों बिषे
प्राविशत्	= प्रवेश करता भया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिशः = दिग्देवते
श्रोत्रम् = श्रवणेन्द्रिय
भूत्वा = होके
कर्णौ = कानोंके दोनों छिद्रों बिषे
प्राविशन् = प्रवेश करते भये
औषाधिवनस्पतयः = औषधीओं-रवनस्पति अभिमानी देवते
लोमानि = रोमरूप
भूत्वा = होके
त्वचम् = त्वचा बिषे
प्राविशन् = प्रवेश करते भये
चन्द्रमाः = चंद्रमादेवता
मनः = मनरूप
भूत्वा = होके
हृदयम् = हृदय कमल बिषे
प्राविशत् = प्रवेश करता भया
मृत्युः = मृत्युदेवता
अपानः = अपानरूप
भूत्वा = होके
नाभिम् = नाभिबिषे
प्राविशत् = प्रवेश करता भया
आपः = जलदेवते
रेतः = वीर्यरूप
भूत्वा = होके
शिश्नम् = शिश्नस्थान बिषे
प्राविशन् = प्रवेश करते भये

मूलम् ॥

तमशनायापिपासेअब्रूतामावाभ्यामभिप्रजानीहीति सते अब्रवीदेतास्वेववांदेवतास्वाभजाम्येतासुभागिन्यौ करोमीति तस्माद्यस्यै कस्यैचदेवतायैहविर्गृह्यते भागिन्यावेवास्यामशनायापिपासेभवतः ५ ॥ ९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

तम् अशनायापिपासे अब्रूताम् आवाभ्याम् अभिप्रजानीहि इति सः ते अब्रवीत् एतासु एव वाम् देवतासु आभजामि एतासु भागिन्यौ करोमि इति तस्मात् यस्यै कस्यै च देवतायै हविः गृह्यते भागिन्यौ एव अस्याम् अशनायापिपासे भवतः॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अशनाया पिपासे	भूख और प्यास दोनों
तम्	तिस ईश्वर से
इति	इस प्रकार
अब्रूताम्	कहती भई कि
आवाभ्याम्	हम दोनों के लिये
अभिप्रजानीहि	अधिष्ठान बना
सः	वह ईश्वर
ते	उन क्षुधा पिपासा से
इति	इस प्रकार
अब्रवीत्	कहता भया कि
एतासु	इन
एव	ही
देवतासु	अग्नि आदि देवताओंविषे
वाम्	तुमदोनोंको
आभजामि	जीविका देताहूं मैं
+च	और
एतासु	इन देवताओं विषे
+वाम्	तुम दोनोंको
भागिन्यौ	भागपाने योग्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करोमि = करताहूं मैं
च = और
तस्मात् = इसी कारण
यस्यै = जिस
कस्यै = किसी
देवतायै = देवताके देने के अर्थ
हविः = होमद्रव्य
गृह्यते = ग्रहण किया जाता है
अस्याम् = उस देवता बिषे
अशनाया पिपासे = भूख और प्यास दोनों
भागिन्यौ = भागपाने वाली
एव = निश्चयकरके
भवतः = होती हैं

मूलम् ॥

सईक्षतेमेनुलोकाश्च लोकपालाश्चान्नमेभ्यःसृजाइति ॥ १० ॥

पदच्छेदः

सः ईक्षत इमे नु लोकाः च लोकपालाः च अन्नम् एभ्यः सृजै इति ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

सः = वह ईश्वर
इति = इस प्रकार
नु = फिर
ईक्षत = विचार करतां भया कि
+ये = जो
इमे = ये
लोकाः = लोक
च = और
लोकपालाः = लोकपाल
+सन्ति = हैं
एभ्यः = इनके लिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च = निश्चयकरके	सृजै = सृजूं मैं
अन्नम् = भोग्यवस्तुको	

मूलम् ॥

सोऽपोऽभ्यतपत्ताभ्योऽभितप्ताभ्यो मूर्त्तिरजायत यावैसामूर्त्तिरजायतान्नं वै तत् ॥ २॥ ११ ॥

पदच्छेदः

सः अपः अभ्यतपत् ताभ्यः अभितप्ताभ्यः मूर्त्तिः अजायत या वै सा मूर्त्तिः अजायत अन्नम् वै तत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	सो ईश्वर	अभितप्ताभ्यः	ईश्वर करके भावितहुये
अपः	जल आदिपंचमहाभूतोंको	ताभ्यः	उन पञ्चमहाभूतों से
अभ्यतपत्	अन्नभावना सेभावित करताभया यानेपञ्चमहाभूतों से अन्न उत्पन्न होऐसासंकल्पकरता भया	मूर्त्तिः	घनअर्थात्कठिनरूपचराचरअन्न
		अजायत	उत्पन्न होता भया
		च	और
		या	जो

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामूर्त्तिः = { वह चराचर लक्षण वाली मूर्त्ति घनरूप
अजायत = उत्पन्न भई
तत् = सो
एव = ही
वै = निश्चय करके
अन्नम् = अन्न यानी भोग्यवस्तु है

नोट—चराचर = चर चलने फिरने वाला जो भोग्य है जैसे चूहा भोग्यहै बिल्ली का। अचर स्थिर वस्तु जो भोग्य है जैसे वनस्पति आदिक भोग्यहैं मनुष्यों के ॥

मूलम् ॥

तदेतदभिसृष्टंपराङत्यजिघांसत्तद्वाचाऽजिघृक्षत्तन्नाशक्नोद्वाचागृहीतुं सयद्धैनद्वाचाऽग्रहैष्यदभिव्याहृत्यहैवान्नमत्रप्स्यत् ॥ ३ ॥

पदच्छेदः

तत् एतत् अभिसृष्टम् पराङ् अत्यजिघांसत् तत् वाचा अजिघृक्षत् तत् न अशक्नोत् वाचा गृहीतुम् सः यद्ध एनत् वाचा अग्रहैष्यत् अभिव्याहृत्य हा एव अन्नम् अत्रप्स्यत्

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

तत् = सो
अभिसृष्टम् = सृजाहुआ
एतत् = यह अन्न
पराङ् = विमुखहुवा यानी मुँह मोड़कर
अत्याजिघांसत् } = भागनेको चाहता भया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् = तिस अन्नको
वाचा = वाक् इन्द्रिय से याने मुख करके
सः पुरुषः = वह पुरुष
अजिघृक्षत् = ग्रहणकरनेको चाहता भया
+परन्तु = परन्तु
+तत् = तिस अन्नको
वाचा = वाक्इन्द्रियसे
गृहीतुम् = ग्रहणकरने को
न = नहीं
अशक्नोत् = समर्थ होता भया

यद्वा = अगर
सः = वह आदिपुरुष
एनत् = इस अन्नको
वाचा = वागिन्द्रियसे
अग्रहैष्यत् = ग्रहण कर सक्ता
हा = तो
अन्नम् = भोग्य वस्तु अन्नको
अभिव्याहृत्य = वाणी के उच्चारणमात्र सेही
अत्रप्स्यत् = लोक तृप्त होजाता

मूलम् ॥

तत्प्राणेनाजिघृक्षत् तन्नाशक्नोत्प्राणेनगृहीतुम् स यद्धैनत्प्राणेनाऽग्रहैष्यदभिप्राण्यहैवान्नमत्रप्स्यत् ॥ ४ ॥ १३ ॥

पदच्छेदः

तत् प्राणेन अजिघृक्षत् तत् न अशक्नोत् प्राणेन गृहीतुम् सः यद्धा एनत् प्राणेन अग्रहैष्यत् अभिप्राण्य हा एव अन्नम् अत्रप्स्यत् १३ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
तत्	तिस अन्नको
प्राणेन	घ्राणेन्द्रिय द्वारा
+ सः	वह आदिपुरुष
अजिघृक्षत्	ग्रहण करने को इच्छता भया
+ परन्तु	परन्तु
तत्	तिस अन्नको
प्राणेन	घ्राण इन्द्रिय करके
ग्रहीतुम्	ग्रहणकरनेको
न	नहीं
अशक्नोत्	समर्थ होता भया
यद्वा	अगर
सः	वह आदिपुरुष
एनत्	इस भोग्य अन्न को
प्राणेन	घ्राणेन्द्रियद्वारा
अग्रहैष्यत्	ग्रहणकरसक्ता
ह	तो
अन्नम्	भोग्यवस्तुको
अभिप्राण्य	सूंघ करके
एव	ही
अत्रप्स्यत्	लोक तृप्त होजाता

मूलम् ॥

तच्चक्षुषाऽजिघृक्षत् तन्नाशक्नोच्चक्षुषा ग्रहीतुम् स यद्धैनच्चक्षुषाऽग्रहैष्यत दृष्ट्वा हैवान्नमत्रप्स्यत् ॥ ५ ॥ १४ ॥

पदच्छेदः

तत् चक्षुषा अजिघृक्षत् तत् न अशक्नोत् चक्षुषा ग्रहीतुम् सः यद्वा एनत् चक्षुषा अग्रहैष्यत् दृष्ट्वा ह एव अन्नम् अत्रप्स्यत् ॥ १४ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ सः	वह आदि पुरुष
तत्	तिस अन्नको
चक्षुषा	नेत्रेन्द्रिय द्वारा
अजिघृक्षत्	ग्रहणकरने की इच्छा करताभया
+ परन्तु	परन्तु
तत्	तिस भोग्य अन्न को
चक्षुषा	चक्षु इन्द्रिय करके
ग्रहीतुम्	ग्रहण करने को
न	नहीं

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अशक्नोत्	समर्थ होता भया
यद्धा	अगर
सः	वह पुरुष
एनत्	इस भोग्य अन्न को
चक्षुषा	नेत्र इन्द्रिय करके
अग्रहैष्यत्	ग्रहण कर सक्ता
हा	तो
अन्नम्	भोग्यवस्तु को
दृष्ट्वा	देखकरके
एव	ही
अत्रप्स्यत्	लोक तृप्त होजाता

मूलम् ॥

तच्छ्रोत्रेणाजिघृक्षत् तन्नाशक्नोच्छ्रोत्रेणग्रहीतुम् सयद्धैनच्छ्रोत्रेणाग्रहैष्यच्छ्रुत्वा हैवान्नमत्रप्स्यत् ६ ॥ १५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

तत् श्रोत्रेण अजिघृक्षत् तत् न अशक्नोत् श्रोत्रेण गृहीतुम् सः यद्धा एनत् श्रोत्रेण अग्रहैष्यत् श्रुत्वा हा एव अन्नम् अत्रप्स्यत्

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्	तिस अन्नको
श्रोत्रेण	श्रवणेन्द्रिय द्वारा
+ सः	वह आदि पुरुष
अजिघृक्षत्	ग्रहण करना चाहता भया
+ परन्तु	परन्तु
तत्	तिस भोग्य अन्नको
श्रोत्रेण	श्रवणेन्द्रिय करके
गृहीतुम्	ग्रहण करने को
न	नहीं
अशक्नोत्	समर्थ होता भया
यद्धा	अगर
सः	वह
एनत्	इस भोग्य अन्नको
श्रोत्रेण	श्रवणेन्द्रिय द्वारा
अग्रहैष्यत्	ग्रहण करसक्ता
हा	तो
अन्नम्	अन्नको
श्रुत्वा	सुनकरके
एव	ही
अत्रप्स्यत्	लोकतृप्त हो जाता

मूलम् ॥

तत्त्वचाऽजिघृक्षत्तन्नाशक्नोत्त्वचागृहीतुम् स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यद्धैनत्त्वचाऽग्रहैष्यत्स्पृष्ट्वा हैवान्नमत्रप्स्यत् ॥७॥१६

पदच्छेदः

तत् त्वचा अजिघृक्षत् तत् न अशक्नोत् त्वचा ग्रहीतुम् सः यद्धा एनत् त्वचा अग्रहैष्यत् स्पृष्ट्वा हा एव अन्नम् अत्रप्स्यत्

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्	तिसअन्नको
त्वचा	स्पर्शनेन्द्रिय द्वारा
+ सः	वह आदिपुरुष
अजिघृक्षत्	ग्रहण करनेको इच्छाकरता भया
+ परन्तु	परंतु
तत्	तिसअन्नको
त्वचा	स्पर्शनेन्द्रिय करके
ग्रहीतुम्	ग्रहणकरनेको
न	नहीं
अशक्नोत्	समर्थ होता भया
यद्धा	अगर
सः	वह पुरुष
एनत्	इस भोग्य अन्नको
त्वचा	स्पर्शनेन्द्रिय करके
अग्रहैष्यत्	ग्रहणकरसक्ता
हा	तो
अन्नम्	भोग्यअन्नको
स्पृष्ट्वा	स्पर्शकरके
एव	ही
अत्रप्स्यत्	लोकतृप्तहोजाता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

तन्मनसाऽजिघृक्षत् तन्नाशक्नोन्मनसाग्रहीतुम् सयद्धैनन्मनसाऽग्रहैष्यद्ध्यात्वाहैवान्नमत्रप्स्यत् ८ ॥ १७ ॥

पदच्छेदः

तत् मनसा अजिघृक्षत् तत् न अशक्नोत् मनसा ग्रहीतुम् सः यद्वा एनत् मनसा अग्रहैष्यत् ध्यात्वा हा एव अन्नम् अत्रप्स्यत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्	तिसअन्नको	अशक्नोत्	समर्थहोता भया
मनसा	मनसे	यद्वा	अगर
+ सः	वहआदिपुरुष	सः	वहपुरुष
अजिघृक्षत्	ग्रहणकरनेको इच्छाकरताभया	एनत्	इसभोग्य अन्नको
+ परंतु	परंतु	मनसा	मनसे
तत्	तिसभोग्य अन्नको	अग्रहैष्यत्	ग्रहणकरसक्ता
मनसा	मनकरके	हा	तो
ग्रहीतुम्	ग्रहणकरनेको	अन्नम्	भोग्यवस्तुको
न	नहीं		

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्यात्वा = ध्यानकरके
एव = ही
अन्नप्स्यत् = लोकतृप्तहो जाता

मूलम् ॥

तच्छिश्नेनाजिघृक्षत्तन्नाशक्नोच्छिश्नेनगृहीतुम् सयद्धैनच्छिश्नेनाग्रहैष्यद्विसृज्यहैवान्नमत्रप्स्यत् ॥ ९ ॥ १८ ॥

पदच्छेदः

तत् शिश्नेन अजिघृक्षत् तत् न अशक्नोत् शिश्नेन गृहीतुम् सः यद्वा एनत् शिश्नेन अग्रहैष्यत् विसृज्य हा एव अन्नम् अत्रप्स्यत् ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्	तिसअन्न को
शिश्नेन	प्रजननइन्द्रियद्वारा
+ सः	वहआदिपुरुष
अजिघृक्षत्	ग्रहणकरने को इच्छता भया
+ परन्तु	परन्तु
तत्	तिसअन्नको
शिश्नेन	प्रजनन इन्द्रिय करके
गृहीतुम्	ग्रहणकरनेको
न	नहीं
अशक्नोत्	समर्थहोंता भया
यद्वा	अगर
सः	वह
एनत्	इसअन्नको
शिश्नेन	प्रजननेन्द्रियसे

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अग्रहैष्यत् = ग्रहणकरसक्ता	विसृज्य = त्यागकरके
हा = तो	एव = ही
अन्नम् = भोग्यवस्तुको	अत्रप्स्यत् = लोकतृप्तहोजाता

मूलम् ॥

तदपानेनाजिघृक्षत् तदावयत्सएषोऽन्नस्यग्रहोयद्वायुरन्नायुर्वाएषयद्वायुः १० ॥ १९ ॥

पदच्छेदः

तत् अपानेन अजिघृक्षत् तदा आवयत् सः एषः अन्नस्य ग्रहः यद्वायुः अन्नायुः वै एषः यद्वायुः ॥ १९ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तत्	तिस अन्न को	अजिघृक्षत्	ग्रहण करने की इच्छा करताभया
अपानेन	अपानवायु से यानी मुखद्वारा	तदा	तब
सः	वह आदिपुरुष	सः	वह
		आवयत्	ग्रहण कर सक्ताभया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यद्वायुः = जो अपान वायु है
सः = सो
एषः = यह
अन्नस्य = अन्नका
ग्रहः = ग्राहक है
च = और
एषः = यह
यद्वायुः = जो अपान वायु है
सः = सो
वै = निश्चय करके
अन्नायुः = अन्न भोग द्वारा भोक्ता का आयुर्वृद्धि करनेवाला है

मूलम् ॥

स ईक्षत कथं न्विदं मदृते स्यादिति स ईक्षत कतरेण प्रपद्या इति स ईक्षत यदि वाचाऽभिव्याहृतम् यदि प्राणेनाभिप्राणितं यदि चक्षुषा दृष्टं श्रोत्रेण श्रुतं यदि त्वचा स्पृष्टं यदि मनसा ध्यातं यद्यपानेनाभ्यपानितं यदि शिश्नेन विसृष्टमथ कोहमिति ॥ ११ ॥ २० ॥

पदच्छेदः

सः ईक्षत कथम् नु इदम् मदृते स्यात् इति सः ईक्षत कतरेण प्रपद्यै इति सः ईक्षत यदि वाचा अभिव्याहृतम् यदि प्राणेन अभिप्राणितम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि चक्षुषा दृष्टम् यदि श्रोत्रेण श्रुतम् यदि त्वचा स्पृष्टम् यदि मनसा ध्यातम् यदि अपानेन अभ्यवपानितम् यदि शिश्नेन विसृष्टम् अथ कः अहम् इति ॥ २० ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
सः	= सो ईश्वर
इति	= ऐसा
नु	= पुनः
ईक्षत	= विचार करता भया कि
इदम्	= यह कार्यकारणरूपपिंड
मदृते	= मुझ विना
कथम्	= कैसे
स्यात्	= रहेगा
च	= और
कतरेण	= किस मार्गसे
प्रपद्यै	= मैं प्रवेश करूं इस पिण्डरूप पुरमें
इति	= ऐसा
सः	= वह ईश्वर

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्मभावार्थ
ईक्षत	= विचार करता भया
अथ	= फिर
इति	= इस प्रकार
सः	= वह ईश्वर
ईक्षत	= विचार करता भया कि
यदि	= अगर
+इन्द्रियाभिमानीदेवः	= इन्द्रियाभिमानी देवता
वाचा	= वाणी करके
अभिव्याहृतम्	= बोला
यदि	= अगर
घ्राणेन	= घ्राणेन्द्रिय करके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिघ्राणितम् = सूंघा
यदि = अगर
चक्षुषा = नेत्र करके
दृष्टम् = देखा
यदि = अगर
श्रोत्रेण = श्रोत्रेन्द्रिय करके
श्रुतम् = सुना
यदि = अगर
त्वचा = स्पर्शेन्द्रिय करके
स्पृष्टम् = स्पर्श किया
यदि = अगर
मनसा = मनकरके
ध्यातम् = ध्यान किया
यदि = अगर
अपानेन = अपानवायु करके
अभ्यवपानितम् = अशनकिया याने खाया
यदि = अगर
शिश्नेन = शिश्नेन्द्रिय करके
विसृष्टम् = विसर्जनकिया यानेत्याग किया
+ तु = तो
अहम् = मैं
कः = कौनहूं

मूलम् ॥

सएतमेवसीमानंविदार्य्यैतयाद्वारा प्रापद्यत सैषाविदृतिर्नामद्वास्तदेतन्नान्दनंतस्य त्रयआवसथास्त्रयः स्वप्नाअयमावसथोऽयमावसथोऽयमावसथ इति १२ ॥ २१ ॥

पदच्छेदः

सः एतम् एव सीमानम् विदार्य एतया द्वारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रापद्यत सा एषा विद्दतिः नाम द्वाः तदेतत् नान्दनम् तस्य त्रयः आवसथाः त्रयः स्वप्नाः अयम् आवसथः अयम् आवसथः अयम् आवसथः इति

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

सः = वह ईश्वर
एतम् = इस
एव = ही
सीमानम् = त्रिकपाल संधि ब्रह्मरन्ध्र को
विदार्य = छिद्रकरके
एतया = उसी
द्वारा = मार्गसे
प्रापद्यत = प्रवेशकरता भया
सा = सो
एषा = यह
द्वाः = मार्ग
विद्दतिः = विद्दति किया हुआ याने छेदा हुआ
तदेतत् = वह यह

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

नान्दनम् = ब्रह्मानंदप्राप्ति काद्वारहै यानी आनन्दकादेने वाला है
तस्य = तिसपुराधीश ईश्वरके
त्रयः = तीन
आवसथाः = स्थान हैं
त्रयः = तीन
स्वप्नाः = स्वप्न हैं
सः = वह
अयम् = यही
आवसथः = स्थान है
अयम् = यही
आवसथः = स्थान है
अयम् = यही
आवसथः = स्थान है
अयम् = यही
आवसथः = स्थान है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नोट–जो कि श्रुतिने आवसथ याने स्थान तीनबार दिखाया इसका अभिप्राय यह है कि जाग्रत् अवस्था में दक्षिण नेत्र और स्वप्न में कंठस्थ प्राण सुषुप्ति में हृदयकमल ये तीन स्थान हैं परमात्मा के रहने का ॥

मूलम् ॥

सजातो भूतान्यभिव्यैक्षत् किमिहान्यंवावदिषदिति सएतमेव पुरुषंब्रह्मतत्तममपश्यादिदमदर्शमिति ॥ १३ । २२ ॥

पदच्छेदः

सः जातः भूतानि अभिव्यैक्षत् किम् इह अन्यम् वा अवदिषत् इति सः एतम् एव पुरुषम् ब्रह्म तत् तमम् अपश्यत् इदम् अदर्शम् इति ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः =	वहपुरुष यानेअंतःकरण विशिष्टचैतन्य आत्मा	अभिव्यैक्षत् =	भली प्रकार विचार करता भया कि
जातः =	उत्पन्नहुआ	इति =	ऐसे
भूतानि =	भूतों को	इह =	शरीर बिषे
		अन्यम् =	अपने से भिन्न औरों को

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किम् = क्या
वा = निश्चय करके
अवदिषत् = कहै
+अतः = इसलिये
एतम् एव = इसही
पुरुषम् = पुरुषको याने अपने आपको ही
ततमम् = अत्यन्त करके व्याप्त
ब्रह्म = ब्रह्मरूप
अपश्यत् = देखता भया और कहता भया कि
इति = वारंवार इस प्रकार
इदम् = इस ब्रह्मको याने अपने आपको
अदर्शम् = मैं साक्षात् देखता भया

मूलम् ॥

तस्मादिदन्द्रोनामेदन्द्रोहवैनामतमिदन्द्रंसन्तमिन्द्रमित्याचक्षते परोक्षेणपरोक्षप्रियाइवहिदेवाः परोक्षप्रियाइवहिदेवाः ॥ १४ । २३ ॥

इति तृतीयखण्डः ॥

पदच्छेदः

तस्मात् इदन्द्रः नाम इदन्द्रः हवै नाम तम् इदन्द्रम् सन्तम् इन्द्रम् इति आचक्षते परोक्षेण परोक्षप्रियाः इव हि देवाः परोक्षप्रियाः इव हिदेवाः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
तस्मात्	तिस कारण से
इदन्द्रः	इदन्द्रनाम
नाम	प्रसिद्ध है परमात्मा
+च	और
इदन्द्रः	इदन्द्र नाम
हवै	निश्चय करके
नाम	प्रसिद्धहैलोकमें
तम्	तिस
इदन्द्रम्	इदन्द्र नाम
सन्तम्	होतेहुये को
परोक्षेण	परोक्ष से
इन्द्रम्	इन्द्रनाम
इति	करके
आचक्षते	कहते हैं ब्रह्मवेत्ता आचार्य
हि	क्योंकि
इव	प्रत्यक्ष है कि
देवाः	पूज्यपुरुष
परोक्षप्रियाः	परोक्ष नाम से प्रसन्नहोते हैं

नोट–परोक्षप्रियाः इव देवाः=इस वाक्यको द्वितीयबार कहने से यह अभिप्राय है कि कहीहुई बात सत्यहै और अध्याय की समाप्तिभी है इदम् द्रः=इदंपश्यति यः=इसको देखता है जो याने इस शरीर को जो भली प्रकारसे देखता सो इदन्द्रःहै अर्थात् क्षेत्रज्ञ है उस इदन्द्रको परोक्षतासे याने भयसे या लज्जासे एक अक्षर कम करके इन्द्र ऐसा उसको बोलते हैं ॥

इति तृतीयखण्डः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूलम् ॥

पुरुषेहवाअयमादितोगर्भोभवति यदेतद्रेतस्तदे तत सर्वेभ्योऽङ्गेभ्यस्तेजः सम्भूतमात्मन्येवात्मा नंबिभर्तितद्यदास्त्रियां सिञ्चत्यथैनञ्जनयति त दस्यप्रथमंजन्म १ ॥ २४ ॥

पदच्छेदः

पुरुषे हवै अयम् आदितः गर्भः भवति यत् एतत् रेतः तत् एतत् सर्वेभ्यः अङ्गेभ्यः तेजः सम्भूतम् आत्मनि एव आत्मानम् बिभर्ति तत् तदा स्त्रियाम् सिञ्चति अथ एनम् जनयति तत् अस्य प्रथमम् जन्म ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अयम्	यह संसारी जीव
हवै	निश्चयकरके
पुरुषे	पुरुष विषे
आदितः	पहिले
गर्भः	वीर्यरूप
भवति	होता है
यत्	जो
एतत्	यह
रेतः	वीर्यहै
तत्	सो
एतत्	यह
तेजः	साररूप
सर्वेभ्यः अङ्गेभ्यः	अन्नमयपिंड केसबअंगोंसे
सम्भूतम्	उत्पन्नहुआ
आत्मानम्	पुरुषकोयानी जीवको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मनि = अपने शरीर बिषे
एव = ही
बिभर्ति = धारणकरताहै
तत् = तिस वीर्यको
यदा = जब ऋतु-काल बिषे
पुरुषः = पुरुष
स्त्रियाम् = स्त्रीरूप अ-ग्नि में
सिञ्चति = सिंचनकरता है
अथ = तब
एवम् = इस पुरुष को याने जीवको
जनयति = उत्पन्नकरताहै
तस्मात् = तिसकारण
अस्य = इस जीवका
तत् = वह सिंचन
प्रथमम् = पहिला
जन्म = जन्म है

मूलम् ॥

तत् स्त्रिया आत्मभूयं गच्छति यथा स्वमङ्गं तथा तस्मादेनां न हिनस्ति साऽस्यैतमात्मानमत्र गतं भावयति ॥ २ ॥ २५ ॥

पदच्छेदः

तत् स्त्रियाः आत्मभूयम् गच्छति यथा स्वम् अङ्गम् तथा तस्मात् एनाम् न हिनस्ति सा अस्य एतम् आत्मानम् अत्र गतम् भावयति ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यथा = जैसे
स्वम् = अपना
अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
अंगम् = अंग है
तथा = तैसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत् = वह वीर्य
स्त्रियाः = स्त्री के
आत्मभूयम् = आत्मभाव याने शरीरभाव को
गच्छति = प्राप्त होता है
तस्मात् = तिस कारण
एनाम् = इस माता को
तत् = वह वीर्य
न = नहीं
हिनस्ति = पीड़ित करता है

सा = वह गर्भवती स्त्री
अत्र = अपने गर्भरूप आत्मा में
अस्य = इस भर्ता के
एतम् = इस वीर्यरूप
गतम् = प्राप्त हुये
आत्मानम् = आत्मा को
भावयति = पालन पोषण करती है

मूलम् ॥

सा भावयित्री भावयितव्या भवति तं स्त्रीगर्भं बिभर्ति सोऽग्रएव कुमारं जन्मनोऽग्रेऽधिभावयति सयत् कुमारं जन्मनोऽग्रेऽधिभावयति आत्मानमेव तद्भावयंत्येषां लोकानां सन्तत्या एवं सन्तता हीमे लोकास्तदस्य द्वितीयं जन्म ३ ॥ २६ ॥

पदच्छेदः

सा भावयित्री भावयितव्या भवति तम् स्त्रीगर्भम् बिभर्ति सः अग्रे एव कुमारम् जन्मनः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अग्रे अधिभावयति सः यत् कुमारम् जन्मनः अग्रे अधिभावयति आत्मानम् एव तत् भावयति एषाम् लोकानाम् सन्तत्यै एवम् सन्तताः हि इमे लोकाः तत् अस्य द्वितीयम् जन्म ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
+ यावत्	= जबतक	सन्तत्यै	= वृद्धिके अर्थ
स्त्री	= स्त्री	सः	= वह पिता
तम्	= उस	अग्रे	= पूर्व
गर्भम्	= गर्भको	एव	= ही याने गर्भ में ही
बिभर्ति	= धारण करती है	कुमारम्	= बच्चे को
+ तावत्	= तबतक	जन्मनः	= उत्पत्ति से
सा	= वह	अग्रे	= पहले
भावयित्री	= गर्भवती स्त्री	यत्	= जो पुंसवनादि
भावयितव्या	= भर्ता करके पालन पोषण करने योग्य	अधिभावयति	= संस्कार करता है
		च	= और
भवति	= होती है	जन्मनः	= जन्म के
एषाम्	= इन	अग्रे	= पीछे
लोकानाम्	= लोकों की	सः	= वह पिता
		कुमारम्	= बालक को
		यत्	= जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिभावयति = जातकर्मादि संस्कार करता है
तत् = सो
सः = वह पिता
आत्मानम् = अपने को
एव = ही
भावयति = संस्कार करता है
हि = क्योंकि
इमेलोकाः = ये लोक
एवम् = इसी प्रकार
सन्तताः = वृद्धिको प्राप्त हुये हैं
तत् = तिस लिये
अस्य = इस संसारी जीव का
इदम् = यह
द्वितीयम् = दूसरा
जन्म = जन्म है ॥

मूलम् ॥

सोऽस्यायमात्मापुण्येभ्यः कर्मभ्यःप्रतिधीयतेऽथास्यायमितरआत्मा कृत्यकृत्योवयोगतः प्रैतिसइतः प्रयन्नेवपुनर्जायते तदस्यतृतीयंजन्म ४ ॥ २७ ॥

पदच्छेदः

सः अस्य अयम् आत्मा पुण्येभ्यः कर्मभ्यः प्रतिधीयते अथ अस्य अयम् इतरः आत्मा कृत्यकृत्यः वयोगतः प्रैति सः इतः प्रयन् एव पुनः जायते तत् अस्य तृतीयम् जन्म २७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः	= वह
अयम्	= यह पुत्र
आत्मा	= आत्मारूप
अस्य	= इस पिताके स्थान बिषे
पुण्येभ्यः	= पुण्य
कर्मभ्यः	= कर्म करने के अर्थ
प्रतिधीयते	= स्थापित कियाजाता है
अथ	= इसके पीछे
अस्य	= इसका पिता
अयम्इतरः	= यह दूसरा
आत्मा	= शरीर
कृतकृत्यः	= कृतकार्य होता हुआ

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
च	= और
वयोगतः	= वृद्ध होता हुआ
प्रैति	= मरण को प्राप्त होताहै
च	= और
सः	= वह लिंग शरीर
इतः	= इस लोकसे-
प्रयन्	= गयाहुआ
एव पुनः	= फिर भी
जायते	= उत्पन्नहोताहै
तत्	= सो
अस्य	= इस जीवका
तृतीयम्	= तीसरा
जन्म	= जन्म है ॥

मूलम् ॥

तदुक्तमृषिणागर्भेनुसन्नन्वेषामवेदमहं देवानां जनिमानिविश्वाः शतंमापुरआयसीररक्षन्नधःश्ये नोजवसानिरदीयमिति गर्भएवैतच्छयानोवामदेवएवमुवाच ५ ॥ २८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पदच्छेदः

तत् उक्तम् ऋषिणा गर्भे नु सन् ननु एषाम् अवेदम् अहम् देवानाम् जनिमानि विश्वाः शतम् मा पुरः आयसीः अरक्षन् अधः श्येनः जवसा निरदीयम् इति गर्भे एव एतत् शयानः वामदेवः एवम् उवाच २८ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
गर्भे	गर्भ में
नु	ही
सन्	स्थितहोता हुआ
वामदेवः	वामदेव-ऋषि
एवम्	इस प्रकार
उवाच	कहता भया कि
ननु	निश्चयकरके
अहम्	मैं
एषाम्	इन
देवानाम्	अग्नि आदि देवों के
विश्वाः	सम्पूर्ण
जनिमानि	जन्मोंको
अवेदम्	जानताभया
मा	मुझको
शतम्	अनेक
आयसीः	लोहेके तुल्य बनेहुये
पुरः	शरीरें
अधः	अधोगतिके प्रति
अरक्षन्	रक्षा करते भये याने अपने अन्दर रखते भये
परन्तु	परंतु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ = अब
अहम् = मैं
श्येनःइति = बाज चिड़ियां की तरह
जवसा = वेगसे
एतत् = इस
गर्भेएव = गर्भमेंही
शयानः = सोताहुआ
निरदीयम् = ज्ञानवैराग्य केबलकरके निकलआयाहूं यानी मुक्तहुआहूं
तत् = सोई
ऋषिणा = मंत्रकरके
उक्तम् = कहागया है ॥

मूलम् ॥

सएवंविद्वानस्माच्छरीरभेदादूर्ध्व उत्क्रम्यामुष्मिन्स्वर्गेलोकेसर्वान् कामानाप्त्वाऽमृतः समभवत्समभवत् ६ ॥ २९ ॥

इति चतुर्थःखण्डः ॥

पदच्छेदः

सः एवम् विद्वान् अस्मात् शरीरभेदात् ऊर्ध्वः उत्क्रम्य अमुष्मिन् स्वर्गे लोके सर्वान् कामान् आप्त्वा अमृतः समभवत् समभवत् ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

एवम् = इसप्रकार
सः = वह

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ

विद्वान् = विद्वान्वामदेव

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्मात् = इस
शरीरभेदात् = शरीरनाश के पीछे
ऊर्ध्वः = ऊर्ध्वगतिक होताहुआ
उत्क्रम्य = अधोगति को उल्लंघन करके
अमुष्मिन् = इस
स्वर्गे = ब्रह्मानंदरूप
लोके = स्वर्गलोकमें
सर्वान् = सम्पूर्ण
कामान् = कामनाओं को
आप्त्वा = प्राप्त होके
अमृतः = जन्म मरण रहित
समभवत् = होता भया ॥

इति चतुर्थःखण्डः ॥

अथ ऐतरीयउपनिषद्गततृतीयोऽध्यायः ॥

मूलम् ॥

कोऽयमात्मेति वयमुपास्महे कतरः स आत्मा येन वा रूपम्पश्यति येन वा शब्दं शृणोति येन वा गन्धानाजिघ्रति येन वाचं व्याकरोति येनवा स्वादु चास्वादु च विजानाति ॥ १ ॥ ३० ॥

पदच्छेदः

कः अयम् आत्मा इति वयम् उपास्महे कतरः सः आत्मा येन वा रूपम् पश्यति येन वा शब्दम् शृणोति येन वा गन्धान् आजिघ्रति येन वा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाचम् व्याकरोति येन वा स्वादु च अस्वादु च विजानाति ॥ ३० ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
कः	कौन
अयम्	यह
आत्मा	आत्मा है
+ यम्	जिसको
वयम्	हमलोक
इति	इस प्रकार
उपास्महे	उपासनाकरैं
कतरः	कौन
सः	वह
आत्मा	आत्मा है
येन	जिसकरके
वा	ही
पुरुषः	पुरुष
रूपम्	रूपको
पश्यति	देखता है
येन	जिस करके
वा	ही
शब्दम्	शब्द को
शृणोति	सुनता है
येन	जिस करके
वा	ही
गन्धान्	गन्धोंको
आजिघ्रति	सूंघताहै
येन	जिस करके
वा	ही
वाचम्	वाणी को
व्याकरोति	प्रकट करता है
च	और
येन	जिसकरके
वा	ही
स्वादु	स्वादु को
च	अथवा
अस्वादु	अस्वादु को
विजानाति	अनुभवकरता है

मूलम् ॥

यदेतद्धृदयं मनश्चैतत् संज्ञानमाज्ञानं विज्ञानं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रज्ञानं मेधा दृष्टिर्धृतिर्मतिर्मनीषा जूतिः स्मृतिः सङ्कल्पः क्रतुरसुः कामोवशइति सर्वाण्येवैतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति १॥ ३१॥

पदच्छेदः

यत् एतत् हृदयम् मनः च एतत् सञ्ज्ञानम् आज्ञानम् विज्ञानम् प्रज्ञानम् मेधा दृष्टिः धृतिः मतिः मनीषा जूतिः स्मृतिः सङ्कल्पः क्रतुः असुः कामः वशः इति सर्वाणि एव एतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति॥ ३१॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
यत्	= जो
एतत्	= यह
हृदयम्	= हृदय है
च	= सोई
एतत्	= यह
मनः	= मन है
सञ्ज्ञानम्	= सम्यक् ज्ञप्तिरूप चैतन्य भाव
आज्ञानम्	= सबओर से ज्ञप्तिरूपईश्वर भाव

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
विज्ञानम्	= चौंसठ कला यानेविद्यासे जन्यलौकिक व्यवहारज्ञान
प्रज्ञानम्	= तत्काल जन्य भावरूप ज्ञान
मेधा	= ग्रन्थार्थधारण की शक्तिज्ञान
दृष्टिः	= इन्द्रिय द्वारा सर्व विषयों का ज्ञान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धृतिः = वहज्ञानशक्ति जिसकरकेशरीरकी शिथिलता सावधानकी जावै

मतिः = वहज्ञानशक्ति जिसकरकेमननयानेविचार कियाजावै

मनीषाः = मननजन्य स्वतन्त्रतायामनकानियामकपनाजिसज्ञानशक्तिकरके सिद्धहो

जूतिः = जिसज्ञानशक्तिकरकेचित्तके रोगादिनिमित्तसेदुखित होनाहो

स्मृतिः = स्मरणज्ञान

संकल्पः = जिसज्ञानशक्तिकरकेरूपादिकोंकाशुक्लकृष्णादिभावसे कल्पना की जावै

क्रतुः = निश्चयकरनेका ज्ञान

असुः = वहज्ञानशक्ति जिसकरकेप्राणधारणकरनेका उद्यमकियाजाय

कामः = वहज्ञानशक्ति जिसकरकेदूरस्थितवस्तु कीइच्छाकी जावै

वशः = वहशक्तिजिसकरके स्त्रीसंगादिकोंकी इच्छाहो

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति = इसप्रकार
एतानि = ये
सर्वाणि = सब
प्रज्ञानस्य = ज्ञानके
एव = ही
नामधेयानि = नाम
भवन्ति = हैं

मूलम् ॥

एषब्रह्मैषइन्द्रएषप्रजापतिरेतेसर्वेदेवाइमानि च पञ्चमहाभूतानि पृथिवीवायुराकाशआपोज्योतींषीत्येतानीमानि चक्षुद्रमिश्राणीव बीजानीतराणिचेतराणिचाण्डजानिच जरायुजानिच स्वेदजानिचोद्भिज्जानिचाश्वागावः पुरुषाहस्तिनोयत्किञ्चेदं प्राणिजंगमंच पतत्रिचयच्चस्थावरम्सर्वं तत् प्रज्ञानेत्रम् प्रज्ञाने प्रतिष्ठितम् प्रज्ञानेत्रोलोकः प्रज्ञा प्रतिष्ठिताप्रज्ञानंब्रह्म ३ ॥ ३२ ॥

पदच्छेदः

एषः ब्रह्म एषः इन्द्रः एषः प्रजापतिः एते सर्वे देवाः इमानि च पञ्चमहाभूतानि पृथिवी वायुः आकाशः आपः ज्योतींषि इति एतानि इमानि च क्षुद्रमिश्राणि इव बीजानि इतराणि च इतराणि च अण्डजानि च जरायुजानि च स्वेदजानि च उद्भिज्जानि च अश्वाः गावः पुरुषाः हस्तिनः यत्किञ्च इदम् प्राणिजंगमम् च पतत्रि च यच्च

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थावरम् सर्वम् तत् प्रज्ञानेत्रम् प्रज्ञाने प्रतिष्ठितम् प्रज्ञानेत्रः लोकः प्रज्ञा प्रतिष्ठता प्रज्ञानम् ब्रह्म ॥ ३२ ॥

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
एषः	यह प्रज्ञान रूपात्मा
ब्रह्म	ब्रह्म है
+च	और
एषः	यही
इन्द्रः	इन्द्र है
च	और
एषः	यही
प्रजापतिः	प्रजापति है
च	और
सर्वे	सब
एते	ये
देवाः	अग्न्यादि देवता
ब्रह्म	ब्रह्म हैं
+ च	और
पञ्चमहा भूतानि	पंचमहा भूत यानी
पृथिवी	पृथिवी

अन्वयः	पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
वायुः	वायु
आकाशः	आकाश
आपः	जल
ज्योतींषि	तेज
इमानि	ये सब
ब्रह्म	ब्रह्महैं
च	और
क्षुद्रमि श्राणि	सर्पादिक कीडेमकोड़े
अपि	भी
च	और
बीजानि	कारण
इतराणि	कार्य
च	और
इतराणि	अलावा इन के
अण्डजानि	अंडासेउत्पन्नहुये पक्षी आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च = और
जारुजानि = जरायुज सृष्टियाने नृगवादि (नर गऊ आदि)
च = और
स्वेदजानि = स्वेदजयाने पसीनेसे है उत्पत्तिजिनकी जैसे कीड़े मछर आदि
च = और
उद्भिजानि = उद्भिजसृष्टि याने जो पृथिवी को फोड़केउत्पन्नहोते हैं जैसे वृक्षवल्ली आदि
इमानि = ये सब
ब्रह्म = ब्रह्मही हैं
च = और

अश्वाः = घोड़े
गावः = गऊ और बैल
पुरुषा = मनुष्य
हस्तिनः = हाथी
च = और
यत्किञ्च = जो कुछ
इदम् = यह दृश्यमान
प्राणिजंगमम् = प्राणवाला चरजीवहै
च = और
पतत्रि = परवाला
च = और
यत् = जो
स्थावरम् = अचरपदार्थ है याने स्थिरवृक्षादि
तत् = सो
सर्वम् = सब
प्रज्ञानेत्रम् = प्रज्ञानरूप नेत्रवाला
च = और
प्रज्ञाने = प्रज्ञानविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिष्ठितम् = स्थित है	जगतः = जगत् का
च = और	प्रतिष्ठा = आश्रयभूत है
लोकः = लोक	तस्मात् = तिस कारण
प्रज्ञानेत्रः = प्रज्ञानेत्र हैं	प्रज्ञानम् = प्रज्ञान
च = और	एव = ही
प्रज्ञा = प्रज्ञा	ब्रह्म = परब्रह्म है

मूलम् ॥

स एतेन प्रज्ञेनात्मनाऽस्माँल्लोकादुत्क्रम्य,मुष्मिन्स्वर्गे लोकेसर्वान् कामानाऽऽप्त्वाऽमृतः समभवत्समभवत् इत्योम् ४ । ३३ ॥

पदच्छेदः

सः एतेन प्रज्ञेन आत्मना अस्मात् लोकात् उत्क्रम्य अमुष्मिन् स्वर्गे लोके सर्व्वान् कामान् आप्त्वा अमृतः समभवत् समभवत् इति ओम् ॥ ३३ ॥

अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ	अन्वयः पदार्थसहित सूक्ष्म भावार्थ
सः = वह वामदेव ऋषि	आत्मना = आत्माकरके
	अस्मात् = इस
एतेन = इस	लोकात् = लोक से
प्रज्ञेन = ज्ञानस्वरूप	उत्क्रम्य = देहत्यागकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमुष्मिन् = उसब्रह्मानंद
स्वर्गे = स्वर्ग
लोके = लोक में
सर्वान् = संपूर्ण
कामान् = कामनाओं को
आप्त्वा = प्राप्तहोकर
अमृतः = जन्म मरण रहित
समभवत् = होताभया
समभवत् = होताभया ॥

इति ऐतरेयारण्यकेषष्ठोऽध्यायः ॥

उपनिषत्सुतृतीयोध्यायः समाप्तः ओं तत्सत्

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐतरेयोपनिषद्

शुद्धिपत्रिका

अशुद्धिः	शुद्धिः	मंत्र	मू.वा भा.	पृष्ठ
महदादिलो कको	महदादिलो. कोंको	२	भा०	२
हैवन्न	हैवान्न	३	मू०	१६
संघकरकेहा	संघकरकेही	४	भा०	१८

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी ऊपर लिखे हुये के अनुसार भावार्थ स्पष्ट कियागया और समझने की सुगमताके लिये गुरु शिष्य सम्बाद पूर्वक पूर्ण ज्ञान लखाया है ॥

मुंडकउपनिषद्भाषाटीका सहित, क़ीमत =)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित-जिसमें वादी प्रतिवादी के प्रश्नोत्तर से ब्रह्मका निर्णय व जगदुत्पत्ति व प्रत्येक अन्नादि का संभव व अग्निहोत्रादि क्रियाओंका विधान मन्त्रों द्वारा वर्णित है ॥

तैत्तिरीयोपनिषद्भाषाटीका सहित,क़ीमत।-)।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषा टीकासहित-जिसमें तैत्तिरीय शाखा के प्रकट होनेका उदाहरण और स्वरमात्रा व वर्णों के उच्चारणकी शिक्षाका नियम व वर्णों के संबन्धरूप संहिताकी उपासना व बुद्धि व लक्ष्मीकी कामनावाले पुरुषोंके अर्थ साधन जप और हवनादि की क्रियायें वर्णित हैं ॥

ऐतरेयोपनिषद्भाषाटीकासहित, क़ीमत =)॥।

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मणकी भाषाटीका सहित-जिसमें आत्मा व ब्रह्मका निरूपण और प्राण व प्रणवकी उपासना की व्याख्या व संन्यासादि आश्रमों के लक्षण व धर्म अच्छे प्रकार वर्णित हैं ॥

उपनिषद्सार, क़ीमत -)॥ पु०

मुंडक, मांडूक्य, तैत्तरीय, ऐतरेय, श्वेताश्वर, ईशावास्य, केन, कठ, प्रश्न, छांदोग्य,बृहदारण्यक, कौषीतकि, ब्राह्मण और मैत्री की भाषा टीका राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्दने रचनाकर अपने पुत्र पौत्र मित्र बान्धव योग्य अधिकारियों के निमित्त छपवायाहै।

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छान्दोग्य उपनिषद् भाषा टीका, क़ीमत ॥=)॥

पंडित यमुनाशङ्करजी कृत टीका भाषा ॥

ब्राह्मधर्मदोखंड में ग़ैरमतबा, क़ीमत १) पु०

तथा प्रथमखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ॥=) पु०

तथा द्वितीयखंड ग़ैर मतबा क़ीमत ।=) पु०

यह अत्युत्तम उपनिषद है इसको पंडित लक्ष्मणप्रसादजी ने बंगाली भाषा से हिन्दी भाषा में उल्थाकिया है मूलश्लोक और भाषा टीका समेत है ॥

(वेदान्त)

योगवाशिष्ठ दोभागों में, क़ीमत ५॥) पु०

श्रीमद्भागवत भाषाटीकासंयुक्त ७) रु० पु० ॥

इस ग्रन्थ के उत्तम होनेमें कदापि सन्देह नहींहै--इसका भाषा तिलक ब्रजबोली में बहुतही प्याराहै आशय प्रत्येक श्लोकों का है क्यों न हो इस के तिलककार महात्मा ब्रजवासी अङ्गदजी शास्त्रीहैं—यह तिलक ऐसा सरलहै कि,इसके द्वारा अल्प संस्कृतज्ञ पुरुषों का पूराकार्य निकल सक्ताहै—संस्कृत पाठकभी इससे श्लोकोंका पूराआशय समझ सक्तेहैं इसबार यह ग्रन्थ टैपके अक्षरों में उम्दा काग़ज़ सफ़ेद चिकना में छापागयाहै और विशेष विद्वान् शास्त्रियों के द्वारा शुद्ध कराया गया है जिससे बम्बई की छपीहुई पुस्तकसे किसी काम में न्यून नहीं है उम्दा तसावीर भीप्रत्येक स्कन्धमें युक्तहैं—आशाहै कि इस अमूल्य रत्न के लेने में महाशय लोग विलम्ब न करैंगे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

T

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri